

नक्षत्र ज्योतिष

रघुनन्दन प्रसाद गौड़

नक्षत्र ज्योतिष

रघुनन्दन प्रसाद गौड़

मनोज
पॉकेट
बुक्स

नाक्षत्र ज्योतिष

(कृष्णमूर्ति पद्धति सहित)

लेखक
रघुनन्दन प्रसाद गौड़
एम.ए., बी.एड, 'साहित्य विशारद'
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य

मनोज पॉकेट बुक्स

प्रकाशक
मनोज पॉकेट बुक्स
761, मेन रोड, बुराड़ी,
दिल्ली-110084
© 27615430, 27619638, 27619639, 27616745
फैक्स: 27615430 मोबाइल: 9212036444, 9811328815
email: camford@sify.com web: www.manojpocketbooks.com
होल-सेल एवं रिटेल शोरूम
1673-74, नई सड़क, दिल्ली-110006
© 65755767, 9891174741

मुद्रक
जय माया ऑफसेट
झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110095

मूल्य
पेपर बैक संस्करण: 100/-

अपनी बात

मानव को आदिकाल से अपना शुभाशुभ भविष्य जानने की उत्कंठा रही है। इस उद्देश्य से उसने आकाश का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। अनन्त आकाश में फैले हुए देदीप्यमान पिण्डों से प्रसारित ***रश्मियों*** द्वारा मानव पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन ज्योतिर्विज्ञान अथवा ज्योतिष विज्ञान (Astrological Science) है। असंख्य देदीप्यमान आकाशीय पिण्डों (तारों व नक्षत्रों) से प्रसारित रश्मियों का सीधा प्रभाव तो मानव पर पड़ता ही है, साथ ही उनके क्षेत्र में भ्रमणरत विभिन्न ग्रहों द्वारा परावर्तित रश्मियों का शुभाशुभ प्रभाव भी मानव के विभिन्न क्रियाकलापों पर पड़ता है। तीव्रता तथा कोणात्मक भिन्नता के कारण ये रश्मियां भिन्न-भिन्न जातकों को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभावित करती हैं अर्थात् किसी जातक के लिए शुभ होती हैं तो दूसरे जातक के लिए अशुभ एवं हानिकारक हो सकती हैं।

प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने अपनी दिव्य दृष्टि एवं सूझबूझ द्वारा क्रान्तिपथ (Ecliptic) के इर्द-गिर्द फैले हुए उन नक्षत्र-समूहों (Constellations) का उच्च-स्तरीय ज्ञान प्राप्त कर लिया था जो मानव को प्रभावित करते हैं। वैदिक तथा महाभारत काल तक भारतीय ज्योतिष में राशियों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। उस समय ज्योतिष विज्ञान केवल नक्षत्र विज्ञान ही था। नक्षत्रों के आधार पर ही विभिन्न ग्रहों का शुभाशुभ फलकथन किया जाता था।

ईसा की प्रारम्भिक सदियों में जब बेबीलोन तथा खल्दियाई ज्योतिष जगत से भारत में राशियों का आगमन हुआ तब धीरे-धीरे नक्षत्र-विज्ञान का स्थान राशि विज्ञान ने ले लिया। आज अधिकांश ज्योतिर्विद केवल राशियों के आधार पर ही फलकथन करते हैं, नक्षत्रों का ध्यान नहीं रखते। इसी कारण अनेक फलकथन केवल राशि-संदर्भ में सही प्रतीत होते हुए भी सत्य घटित नहीं हो पाते क्योंकि राशि तो भचक्र का एक स्थूल विभाग है जबकि नक्षत्र एक सूक्ष्म विभाग है। एक राशि का एक स्वामी ग्रह होता है परन्तु एक राशि में पूर्ण एवं आंशिक रूप से तीन नक्षत्रों का समावेश होता है। जिनमें से प्रत्येक का स्वामी अलग-अलग ग्रह होता है। जैसे वृषभ राशि का स्वामी शुक्र है जबकि वृषभ राशि में कृतिका, रोहिणी तथा मृगशिर नक्षत्र सम्मिलित हैं, जिनके स्वामी क्रमशः सूर्य, चन्द्र तथा मंगल हैं। अतः वृषभ राशि के जातक पर न केवल शुक्र का प्रभाव पड़ेगा वरन् सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल का प्रभाव भी पड़े बिना नहीं रह सकता।

आज हम नक्षत्र के आधार पर फलकथन की विधा को भूल से गए हैं। हां, फलकथन के अतिरिक्त अधिकांश ज्योतिषीय कार्य नक्षत्रों के आधार पर ही करते आ रहे हैं। जन्म नक्षत्र के आधार पर ही जातक का नामकरण किया जाता है। जातक की योनि, तारा, गण, नाड़ी, युंजा, पाया आदि का आधार भी नक्षत्र ही है। सभी प्रकार की महादशाओं का निर्धारण चन्द्र नक्षत्र के आधार पर ही किया जाता है। मुहूर्त, शुभाशुभ योग, विवाह

एवं संस्कारादि भी नक्षत्रों के आधार पर ही होते हैं। परन्तु फलकथन में नक्षत्रों का महत्व समाप्त सा हो गया है। फलकथन में राशियां प्रमुख और नक्षत्र गौण हो गए।

अधिकांश ज्योतिर्विद नक्षत्रों के आधार पर ज्योतिषीय कार्य तो कर रहे हैं परन्तु वे शायद ही इस बात से भिज्ञ हों कि अमुक नक्षत्र आकाश में कहां है? उस नक्षत्र समूह में कितने तारे हैं? ये तारे किस कांतिमान के हैं? इनसे क्या आकृति बनती है तथा ये किस माह रात्रि में आकाश में दिखाई दे सकते हैं? नक्षत्र किस क्रम में उदय होते हैं? आदि। यद्यपि यह जानकारी खगोलशास्त्र (Astronomy) से सम्बन्धित है तथापि एक ज्योतिर्विद को इसका सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है ताकि उसका उद्देश्य 'रटने' तक ही सीमित न रहे।

प्रस्तुत पुस्तक में नक्षत्रों से सम्बन्धित सामान्य जानकारी के साथ-साथ आकाश में नक्षत्र समूहों की वास्तविक स्थिति खगोल-शास्त्र के परिपेक्ष्य में मानचित्रों व रेखाचित्रों की सहायता से समझाई गई है तथा नक्षत्रों के आधार पर राशि-सापेक्ष फल में परिवर्तन को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है कि राशि के आधार पर जो ग्रह शुभ फलदायक माना जा रहा है, किस प्रकार नक्षत्र एवं इसके स्वामी की अशुभता के आधार पर अशुभ फलदायक हो जाता है तथा इसके विपरीत एक अशुभ फलदायक ग्रह नक्षत्र-स्वामी की शुभता के कारण शुभ फल प्रदान कर देता है। संक्षेप में कृष्णमूर्ति पद्धति को भी व्यावहारिक रूप से समझाने का प्रयास किया गया है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक नक्षत्रों के आधार पर सही फलादेश करने का मार्ग प्रशस्त कर सकेगी।

मैं मैसर्स मनोज पॉकेट बुक्स, दरीबा कलां, दिल्ली का आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशन त्वरित गति से किया!

मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तक ***'जन्मपत्री रचना में त्रुटियां क्यों?'*** को पाठकों से जो आशीर्वाद एवं संरक्षण प्राप्त हुआ है उसी आशीर्वाद एवं संरक्षण की आशा करता हुआ...

शान्ति विला, कॉलेज रोड
बाराँ (राजस्थान) 325205
दूरभाष 07453/31408 (निवास)

रघुनन्दन प्रसाद गौड़
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य

विषय-सूची

प्राचीन भारतीय ज्योतिष में नक्षत्र

प्राचीन भारतीय ज्योतिष नक्षत्र पद्धति पर ही आधारित थी। वैदिक तथा महाभारत काल तक भारतीय ज्योतिष में राशियों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था।

केवल नक्षत्र ही थे—भारतीय ज्योतिर्विदों का नक्षत्र ज्ञान उत्कृष्ट कोटि का था। भारतीय ज्योतिर्विदों ने इस ज्ञान को किसी देश से उधार नहीं लिया था वरन् नक्षत्र ज्योतिष विज्ञान के विकास का श्रेय भारतीय ज्योतिर्विदों की दिव्यदृष्टि एवं वैज्ञानिक सूझबूझ को ही जाता है। प्रो. मेक्समूलर के अनुसार—***"भारतवासी आकाशमण्डल और नक्षत्र मण्डल आदि के विषय में अन्य देशों के ऋणी नहीं हैं। वे ही इनके आविष्कर्ता हैं।"*** श्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक ओरायन (Orion)—मृगमण्डल सम्बन्धी पुस्तक में लिखा है—***"भारत के नक्षत्र ज्ञान का वर्णन वेदों में भी है। यह नक्षत्र ज्ञान लगभग 5000 वर्ष पूर्व का है। भारतीय ज्योतिर्विद नक्षत्र विद्या में अत्यन्त प्रवीण थे। बेबीलोन अथवा यूनान से यह विद्या भारत में नहीं आई थी।"***

यजुर्वेद में 27 नक्षत्रों को गन्धर्वों की संज्ञा दी गई है। *अथर्ववेद* में 28 नक्षत्र बताए गए हैं। उस समय प्रथम नक्षत्र कृतिका था क्योंकि बसन्त सम्पात (Vernal Equinox) कृतिका में होता था। इसी प्रकार वैदिक काल से पूर्व वार-क्रम भी नहीं था। वैदिक काल में वार के स्थान पर 'नाक्षत्र-दिवस' शब्द का प्रचलन था। जिस दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर होता था उस दिन का नाम उसी नक्षत्र के आधार पर होता था। जैसे किसी दिन चन्द्रमा तिष्य (पुष्य) नक्षत्र में था तो उस दिन का नाम तिष्य दिवस और मघा में होने पर 'मघा दिवस'।

राशियां नहीं थीं—प्राचीन ज्योतिष के अन्तर्गत ग्रहों को राशियों में नहीं दर्शाया जाता था बल्कि नक्षत्रों में ही दर्शाया जाता था। क्योंकि उस काल में राशियां थी ही नहीं। यहां तक कि राशि लग्नोदय के बजाय नक्षत्रोदय के रूप में लग्न व्यक्त किया जाता था, जैसे अश्विनी लग्न या श्रवण लग्न आदि। ग्रहों के नक्षत्रों में दर्शाने के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जैसे—

1. राम बनवास के पूर्व दशरथ ने कहा था—"अंगारक (मंगल) मेरे नक्षत्र को पीड़ित कर रहा है।"
2. श्रीकृष्ण ने जब कर्ण से भेंट की थी तब कर्ण ने ग्रहस्थिति का वर्णन इस प्रकार किया था—"शनि रोहिणी नक्षत्र से मंगल को पीड़ित कर रहा है। मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में वक्री होकर अनुराधा नक्षत्र से युति कर रहा है।" आदि।

कहने का तात्पर्य है कि वैदिक काल तथा महाभारत काल तक भारत में राशि-ज्ञान नहीं था। सम्पूर्ण आकाश को सूर्यपथ या क्रान्तिपथ (Ecliptic) के सहारे पश्चिम से पूर्व

28 या 27 विभागों में बांटा गया था।

नक्षत्र का तात्पर्य—आकाश को 28 या 27 विभागों में बांटे जाने का आधार चन्द्रमा का अपनी कक्षा पर एक दिन का चालन था। चन्द्रमा पृथ्वी की नक्षत्र परिक्रमा 27.321662 दिन या 27 दिन 7 घण्टे 43 मिनट 11.6 सेकण्ड में करता है। इसी के आधार पर चन्द्रपथ या रविपथ को पूर्ण 28 विभागों में बांटा गया था। क्रान्तिवृत्त के दोनों ओर लगभग 9-9 अंशों की पट्टी में फैले हुए तारा समूहों (Constellations) के आधार पर इन विभागों के नाम रखे गए तथा इन्हें 'नक्षत्र' की संज्ञा दी गई। क्रान्तिवृत्त के दोनों ओर के इस पट्टीनुमा वृत्त को नक्षत्र-चक्र या भचक्र (Zodiac) नाम दिया गया। 'भ' का तात्पर्य नक्षत्र से तथा 'चक्र' का तात्पर्य वृत्ताकार पट्टी से है। विद्वानों द्वारा विभिन्न नक्षत्रों में तारों की संख्या, दूरी, कान्तिमान, आकृति व प्रकृति का गहन अध्ययन किया गया।

अथर्ववेद के ***नक्षत्र कल्प*** परिशिष्ट में 28 नक्षत्रों की सूची दी गई है। इसी प्रकार समकालीन जैन ग्रन्थों में भी 28 नक्षत्रों की सूची मिलती है। वेदांग ज्योतिष काल (ईसा से 6-7 शताब्दि पूर्व) में नक्षत्रों का आरम्भ धनिष्ठा नक्षत्र से माना जाता था क्योंकि उस समय मकर संक्रान्ति (उत्तरायन प्रारम्भ) धनिष्ठा से होती थी। महाभारत काल के अग्रज भीष्म पितामह इसी उत्तरायन की प्रतीक्षा में शर-शैया पर पड़े रहे थे। उत्तरायन आरम्भ होने पर ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे थे।

प्रथम नक्षत्र—नक्षत्रों की उपरोक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है कि भिन्न-भिन्न कालों में 'प्रथम नक्षत्र' बनने का सौभाग्य अलग-अलग नक्षत्रों को मिला। सामान्यतया जिस नक्षत्र में बसन्त सम्पात होता है उसी नक्षत्र को प्रथम नक्षत्र मानकर नक्षत्रों की गणना की जाती है। कभी-कभी शरद सम्पात (Autumnal Equinox) से अथवा मकर संक्रान्ति (उत्तरायन प्रारम्भ) से भी नक्षत्रों की गणना की जाती रही है। प्राचीन काल से अब तक उपरोक्त सम्पात बिन्दुओं (Equinoctical Points) की नक्षत्रीय स्थिति बदलती रही है। इसीलिए भिन्न-भिन्न कालों में प्रथम नक्षत्र बनने का सौभाग्य भिन्न-भिन्न नक्षत्रों को प्राप्त हुआ।

अयन चलन और नक्षत्र—पृथ्वी की काल्पनिक धुरी लगभग 23½ अंश झुकी हुई है। इस झुकाव के कारण सूर्यपथ या क्रान्तिपथ (Ecliptic) पृथ्वी के साथ 23½ अंश का झुकाव बनाए रखता है। अर्थात् क्रान्तिपथ तिर्यक (Oblique) है। क्रान्तिवृत्त विषुवत रेखा (Equator) को दो बिन्दुओं पर काटता है। इनमें से एक बिन्दु अश्विनी का प्रथम बिन्दु तथा दूसरा इससे ठीक 180 अंश दूर चित्रा का मध्य बिन्दु है। अश्विनी के प्रथम बिन्दु से ही भचक्र में कोणात्मक गणना की जाती है। आदर्श स्थिति के अनुसार अश्विनी के प्रथम बिन्दु से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इस बिन्दु से ठीक 180 अंश दूर चित्रा के मध्य बिन्दु से सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इन दोनों बिन्दुओं के मध्य 90-90 अंशों की दूरी पर ऐसे दो बिन्दु हैं जहां से सूर्य क्रमशः दक्षिणायन व उत्तरायन होता है। अश्विनी के प्रथम बिन्दु (0 अंश) से 90 अंश आगे पुनर्वसु नक्षत्र

के चतुर्थ चरण (वर्तमान में आर्द्रा के प्रथम चरण) में सूर्य के प्रवेश होते ही सूर्य दक्षिणायन होना प्रारम्भ कर देता है। इसी प्रकार चित्रा के मध्य बिन्दु (180 अंश) से 90 अंश आगे या अश्विनी के प्रथम बिन्दु से 270 अंश आगे सूर्य के उत्तराषाढ़ नक्षत्र के द्वितीय चरण (वर्तमान में मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण के अन्त में) उत्तरायन प्रारम्भ कर देता है।

अश्विनी के प्रथम बिन्दु (0 अंश) को बसन्त सम्पात (Vernal Equinox) तथा चित्रा के मध्य बिन्दु (180 अंश) को शरद सम्पात (Autumnal Equinox) कहते हैं। इन दोनों बिन्दुओं पर सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत होता है। इन दोनों दिनों क्रमशः 21 मार्च व 23 दिसम्बर को समस्त भूमण्डल पर दिन-रात समान होते हैं। पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आदर्श स्थिति के अनुसार सूर्य कर्क रेखा पर रहता है। इस बिन्दु को ग्रीष्म संक्रान्ति (Summer Solstice) कहते हैं। इस दिन (21 जून) उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात होती है। इसी प्रकार उत्तराषाढ़ नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रवेश करते समय सूर्य मकर रेखा पर रहता है। इस बिन्दु को शिशिर सम्पात (Winter Solstice) कहते हैं। इस दिन (23 दिसम्बर) उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे छोटा दिन व सबसे बड़ी रात होती है। इस प्रकार सूर्य 21 जून से दक्षिणायन तथा 23 दिसम्बर से उत्तरायन होता है।

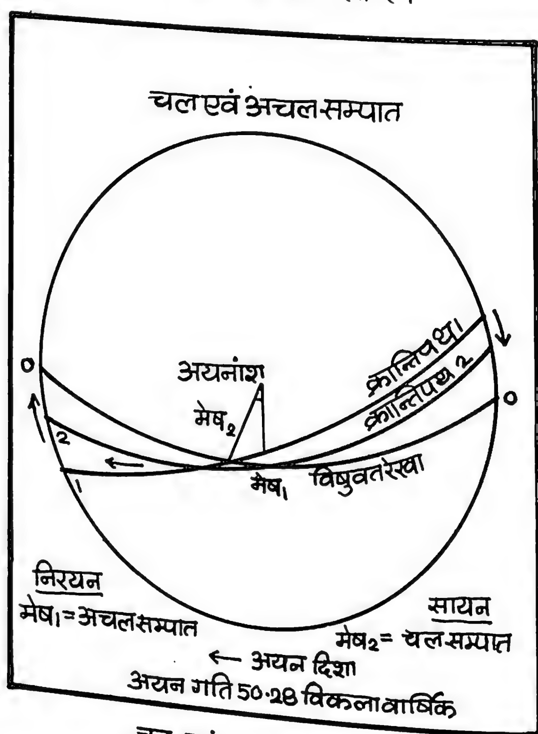
उपरोक्त बिन्दुओं पर सूर्य की नक्षत्र स्थिति आदर्श है अर्थात् यह मानते हुए है कि पृथ्वी एक वर्ष में सूर्य का पूरा चक्कर (360 अंश) लगाए। परन्तु ऐसा वास्तव में होता नहीं। इन तारीखों पर वास्तव में सूर्य इन नक्षत्रों में नहीं होता। वर्तमान में बसन्त सम्पात उत्तरा भाद्रपद के प्रथम चरण के अन्त में (336 अंश पर) तथा शरद सम्पात उत्तरा फाल्गुनी के तृतीय चरण के अन्त में (156 अंश पर) होता है। इसी प्रकार ग्रीष्म संक्रान्ति या कर्क संक्रान्ति आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में (66 अंश पर) तथा शिशिर संक्रान्ति या मकर संक्रान्ति मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण के अन्त में (246 अंश पर) होती है। उपरोक्त सभी संक्रान्तियां एवं सम्पात अपने-अपने मूल बिन्दुओं से 24 अंश पूर्व होती हैं।

सम्पातों के नक्षत्र परिवर्तन के कारण ही प्रथम नक्षत्र अलग-अलग काल में अलग-अलग रहे हैं। सम्पातों के नक्षत्र परिवर्तन का कारण अयन-चलन है।

सम्पातों का नक्षत्र परिवर्तन—पृथ्वी की धुरी का झुकाव शनै-शनै कम होता जा रहा है। इस झुकाव में प्रतिवर्ष .468 विकला की कमी होती जा रही है। सन् 1918 में धुरी का झुकाव 23 अंश 27 कला तथा 1947 में 23 अंश 26 कला 46 विकला था। वर्तमान में यह झुकाव 23 अंश 26 कला 13 विकला (1 जनवरी 1997) है। धुरी के झुकाव में लगातार कमी होने के कारण सूर्यपथ की विषुवत रेखा से तिर्यकता (Obliquity) कम होती जा रही है। फलस्वरूप सूर्यपथ द्वारा विषुवत रेखा को काटे जाने वाले साम्पातिक बिन्दु विपरीत दिशा में खिसक रहे हैं या पीछे हट रहे हैं। साम्पातिक बिन्दुओं के विपरीत दिशा में खिसकाव को 'सम्पात का पिछड़ना' (Precession of Equinox) कहते हैं। यह

पिछड़ाव 26000 वर्षों में सूर्यपथ का एक चक्कर लगाता है। किसी भी समय मूल साम्पातिक बिन्दु से पिछड़े हुए साम्पातिक बिन्दु तक का कोण अयनांश (Angle of Precession) कहलाता है।

अनेक ज्योतिर्विदों एवं गणितज्ञों ने सम्पातों के मूल स्थान पर होने का वर्ष तथा अयन चलन की गति गणित के आधार पर ज्ञात करने का प्रयास किया है। वर्तमान में अयन चलन या सम्पात के पिछड़ने की गति 50.28 विकला प्रतिवर्ष है। यह भी माना गया है कि 21 मार्च 285 ईस्वी को आदर्श स्थिति थी अर्थात् सभी सम्पात अपने-अपने वास्तविक स्थानों (मूल बिन्दुओं) पर थे और अयनांश शून्य था। स्व० श्री निर्मल चन्द लाहिरी की अभिशंसा पर भारत सरकार ने 21 मार्च 1956 को 23 अंश 15 कला अयनांश स्वीकार किया है। इसी के आधार पर वर्तमान में अयनांश 23 अंश 48 कला 56 विकला (1 जनवरी 1997) है। इसे लाहिरी अयनांश कहा जाता है। गणना का आधार चित्रा का मध्य बिन्दु होने से इसे चित्रापक्षीय अयनांश भी कहते हैं।



चल एवं अचल सम्पात

एक बसन्त सम्पात से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए जब पुनः उसी मूल स्थान पर आती है तब एक वर्ष माना जाता है। परन्तु सम्पात के पिछड़ने से पृथ्वी कुछ समय पहले ही पुनः बसन्त सम्पात पर पहुंच जाती है। इस परिक्रमण काल को भी एक वर्ष मानते हैं। उपरोक्त कारणों से वर्ष के दो मान हुए। अश्विनी के प्रथम बिन्दु से पुनः

पृथ्वी के उसी बिन्दु पर आने में जितना समय लगता है यह दूसरे प्रकार का वर्ष मान हुआ। इसमें पृथ्वी पूरे 360 अंश चलती है। सम्पात 50.28 विकला पीछे खिसक रहा है जिससे वास्तव में पृथ्वी को 360 अंश (–) 50.28 विकला = 359 अंश 59 कला 9.72 विकला ही चलना पड़ता है। इसके आधार पर पृथ्वी को जितना समय लगता है वह दूसरे प्रकार का वर्ष मान हुआ।

पहले प्रकार के वर्ष में अचल सम्पात की कल्पना की गई है और पृथ्वी पूरे 360 अंश चलती है जिसमें 365.256363 दिन अथवा 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनट 9.8 सेकण्ड लगते हैं। इस वर्ष को नाक्षत्र या निरयन वर्ष (Sidereal year) कहते हैं। खिसके हुए सम्पात से पुनः खिसके हुए सम्पात तक पृथ्वी को 50.28 विकला कम चलना पड़ता है जिसमें 365.24219 दिन अथवा 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनट 45.22 सेकण्ड लगते हैं। इसमें चल सम्पात की कल्पना की गई है। वास्तव में पृथ्वी इतना ही चलती है। इस वर्ष को अयन या सायन वर्ष (Tropical year) कहते हैं। इस प्रकार नाक्षत्र वर्ष से सायन वर्ष में 20 मिनट 24.58 सेकण्ड कम होते हैं। सूर्य चल सम्पात पर अचल सम्पात की अपेक्षा पहले पहुंचता है, अतः जब तक सूर्य अचल सम्पात पर अयनांश के बराबर दूरी पार कर पहुंचता है तब तक सायन सूर्य के उतने ही अंश निरयन सूर्य की अपेक्षा बढ़ जाते हैं। इसीलिए सायन व निरयन ग्रहों के राश्यंशों को पारस्परिक परिवर्तन करने के लिए निम्न सूत्र बना—

सायन (–) अयनांश = निरयन (सायन = स + अयन)

निरयन (+) अयनांश = सायन (निरयन = निः + अयन)

वर्तमान में अयनांश लगभग 24 है और सूर्य एक दिन में लगभग 1 अंश चलता है। अतः सूर्य की सायन संक्रान्तियां निरयन संक्रान्तियों की अपेक्षा 24 दिन पहले हो जाती हैं। इसीलिए सायन पद्धति के अनुसार 22-23 दिसम्बर को मकर संक्रान्ति हो जाने पर भी निरयन पद्धति के अनुसार इसके 24 दिन पश्चात् 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति मानी जाती है।

उपरोक्त विवेचन से दो बातें स्पष्ट हुईं—

1. खिसका हुआ बसन्त साम्पातिक बिन्दु जिसे पाश्चात्य ज्योतिर्विद राश्यानुसार मेष का प्रथम बिन्दु (First Point of Aries) कहते हैं, वास्तव में अश्विनी का प्रथम बिन्दु नहीं है। खिसका हुआ साम्पातिक बिन्दु वास्तविक अश्विनी के प्रथम बिन्दु (0 अंश) से लगभग 24 अंश (1 जनवरी 1997 को 23 अंश 48 कला 56 विकला) पीछे अर्थात् 360^0 (–) 24^0 = 336 अंश के निकट मीन राशि में 6 अंश पर है जो वास्तविक नक्षत्र व्यवस्थानुसार उत्तरा भाद्रपद के प्रथम चरण के अन्त में है और लगभग 204 वर्षों में पूर्वा भाद्रपद में प्रवेश कर जाएगा तथा सन् 2440 तक यह कुम्भ राशि में पहुंच जाएगा। साम्पातिक पिछड़ाव विपरीत गति से लगभग 26000 वर्षों में क्रान्तिपथ का एक चक्कर लगाता है। लगभग 72 वर्ष में अयनांश में एक अंश की वृद्धि होती है।

उपरोक्त कारण से भारतीय निरयन पद्धति (अचल सम्पात) के अनुसार साम्पातिक बिन्दुओं की नक्षत्र स्थिति बदलती रही है। वैदिक काल में बसन्त सम्पात कृतिका नक्षत्र के निकट था इसलिए कृतिका से नक्षत्रों की गणना की जाती थी। **'कृतिकादि भरण्यन्तम्'**। कृतिका नक्षत्र को प्रथम नक्षत्र मानने से भारतीय ज्योतिष में अधिकांश सूत्र कृतिका से ही प्रारम्भ करके बनाए गए हैं। जैसे विंशोत्तरी महादशा पद्धति में कृतिका नक्षत्र के स्वामी सूर्य को प्रथम स्थान देकर सूत्र बनाया—आचंभौराजीशबुकेशु। कृतिका में बसन्त सम्पात होने के समय अयनांश 34 था। कालान्तर में यह सम्पात कृतिका से भरणी व अश्विनी नक्षत्रों में होता हुआ रेवती के अन्त में रेवती के योग तारे के निकट पहुंच गया। तभी से अश्विनी नक्षत्र को प्रथम नक्षत्र माना जाने लगा। **'अश्विन्यादि रेवत्यान्तम्'**।

जैसा कि ऊपर बताया गया है बसन्त सम्पात वर्तमान में उत्तरा भाद्रपद के प्रथम चरण के अन्त में है जो सन् 2200 में पूर्वाभाद्र में तथा 2440 तक पूर्वा भाद्रपद के तृतीय चरण (कुम्भ राशि) में प्रवेश कर जाएगा। हो सकता है कुछ शताब्दियों के पश्चात् किसी अन्य नक्षत्र को प्रथम नक्षत्र होने का सौभाग्य प्राप्त हो।

2. पाश्चात्य ज्योतिर्विद सायन पद्धति (खिसके हुए सम्पात के अनुसार) को मानते हैं जबकि भारतीय निरयन पद्धति (अचल सम्पात या नक्षत्र सम्पात) को।

पाश्चात्य ज्योतिर्विद केवल राशि पद्धति (Sign System) को मानते हैं जबकि भारतीय ज्योतिष में नाक्षत्र पद्धति (Stellar System) को मान्यता दी जाती रही है।

पाश्चात्य राशियों और नक्षत्रों में तालमेल नहीं—यदि हम पाश्चात्य राशियों (Signs) को भारतीय नक्षत्र पद्धति से मिलाकर देखें तो दोनों में कोई तालमेल नहीं है। पाश्चात्य ज्योतिष की मेष (Aries) राशि का प्रारम्भिक बिन्दु वर्तमान में भारतीय नाक्षत्र पद्धति (निरयन) के 336 अंश (मीन राशि के 6 अंश) के पास है, अतः पाश्चात्य मेष राशि का विस्तार 336 अंश से 6 अंश तक है अर्थात् पाश्चात्य मेष राशि में भारतीय उत्तरा भाद्रपद के द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण, रेवती तथा अश्विनी के प्रथम व द्वितीय चरण (लगभग) ही आते हैं। जबकि भारतीय अश्विनी नक्षत्र 0 अंश से प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार प्रत्येक पाश्चात्य राशि भारतीय समकक्ष बिन्दु से 24 अंश पहले से ही प्रारम्भ और समाप्त हो जाती है। इस प्रकार पाश्चात्य राशियों व भारतीय (निरयन) नक्षत्रों में कोई तालमेल नहीं है। पाश्चात्य ज्योतिष में इसीलिए चन्द्र नक्षत्र का कोई महत्व नहीं है। वहां सायन सूर्यानुसार ही जातक के जीवन का फलादेश किया जाता है। अनेक प्रमुख अंग्रेजी व हिन्दी मासिक व साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में राश्यानुसार जो फल किया जाता है वह सायन सूर्य संक्रान्तियों के अनुसार होता है। सायन सूर्य संक्रान्तियां प्रत्येक माह 20, 21 या 22 तारीख को होती हैं। भारत में चन्द्र नक्षत्र को प्रधानता दी गई है। चन्द्रमा मन का स्वामी है और प्रतिदिन चन्द्रमा नक्षत्र बदलता है। इसलिए चन्द्र नक्षत्र के आधार पर फलित अधिक सटीक बैठता है।

नाक्षत्र पद्धति (Stellar System) ज्योतिष जगत को भारत की अनूठी देन है।

भारत में राशियों का प्रादुर्भाव—जैसा कि ऊपर बताया गया है वैदिक तथा महाभारत काल तक भारतीय ज्योतिष में राशियां नहीं थीं। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में बेबीलोन, यूनान व खल्दिया से भारत में राशियां आईं। भचक्र को पहले से ही 28 या 27 विभागों में नक्षत्रों के रूप में विभाजित किया हुआ था। राशियों के आने से भचक्र को पुनः 30-30 अंश के 12 मुख्य विभागों में बांटने का कार्य किया जाना था, वह भी इस प्रकार कि नक्षत्रों व राशियों में तालमेल बना रहे अर्थात् राशियों की संख्या का भाग नक्षत्रों की संख्या में लग सके और इस प्रकार नक्षत्र राशियों के उपविभाग बन सकें। दूसरी समस्या यह थी कि पाश्चात्य जगत की सायन राशियां जिनका प्रारम्भिक बिन्दु भारतीय नक्षत्रों के सन्दर्भ में भिन्न था, इस प्रकार अंगीकार की जाएं कि भारतीय निरयन पद्धति से उनका तालमेल बना रहे।

भारतीय ज्योतिर्विदों ने इन दोनों समस्याओं का समाधान सूझबूझ एवं चातुर्य से निम्न प्रकार किया—

1. नक्षत्र और राशियों का समायोजन—एक राशि में 30 अंश होते हैं। बारह राशियों में 28 नक्षत्रों का गणितीय समायोजन नहीं हो पा रहा था। हां, यदि नक्षत्रों की संख्या 28 से घटाकर 27 कर दी जाए तो एक राशि में $\frac{27}{12} = 2\frac{1}{4}$ नक्षत्र रखे जा सकते थे। इस हेतु एक नक्षत्र को छोड़ना था। अभिजित नक्षत्र को छोड़ने के लिए चुना गया। जैसा कि ऊपर बताया गया है लगभग सभी नक्षत्र क्रान्तिपथ के निकट स्थित हैं। केवल अभिजित नक्षत्र ही ऐसा था जो क्रान्तिवृत्त से 61 अंश 43 कला 59 विकला उत्तर में तथा विषुवत रेखा से 38 अंश 46 कला 51 विकला उत्तर में स्थित है। इसके अतिरिक्त ध्रुव वृत्त के निकट होने से अभिजित नक्षत्र की स्थिति परिवर्तनशील है। लगभग 13000 वर्ष पश्चात् यह पुनः ध्रुव बिन्दु के निकट पहुंच जाएगा। सम्भव है उस समय अभिजित नक्षत्र को पुनः ध्रुव तारा (Polar Star) होने का गौरव प्राप्त हो जाए। इन्हीं कारणों से अभिजित नक्षत्र को छोड़ दिया गया। प्राचीन भारतीय अभिजित (Vega) नक्षत्र का विस्तार अश्विनी के प्रथम बिन्दु से 270 अंश 40 कला से 280 अंश 53 कला 20 विकला तक था जो मकर राशि में उत्तराषाढ़ व श्रवण नक्षत्रों के मध्य था।

अभिजित नक्षत्र को छोड़ते हुए शेष 27 नक्षत्रों को $27 \times 4 = 108$ चतुर्थांशों या पादों या चरणों (Quadrants) में विभाजित किया गया और प्रत्येक राशि में 9 चरण ($2\frac{1}{4}$ नक्षत्र) कृत्रिम रूप से रख दिए गए। एक नक्षत्र का कोणीय मान $\frac{360}{27} = 13$ अंश 20 कला तथा एक चरण का मान $\frac{360}{108} = 3$ अंश 20 कला हुआ। इस प्रकार अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ कर $2\frac{1}{4}$ नक्षत्र प्रति राशि नक्षत्रों का समायोजन राशियों में कर दिया गया।

राशियां और नक्षत्र

क्र. सं.	नाम राशि	पाश्चात्य नाम	नक्षत्र मय चरण			कुल चरण
			नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	
1.	मेष	Aries	अश्विनी I II III IV	भरणी I II III IV	कृतिका I	9
2.	वृषभ	Taurus	कृतिका II III IV	रोहिणी I II III IV	मृगशिर I II	9
3.	मिथुन	Gemini	मृगशिर III IV	आर्द्रा I II III IV	पुनर्वसु I II III	9
4.	कर्क	Cancer	पुनर्वसु IV	पुष्य I II III IV	आश्लेषा I II III IV	9
5.	सिंह	Leo	मघा I II III IV	पू० फाल्गुनी I II III IV	उ० फाल्गुनी I	9
6.	कन्या	Virgo	उ० फाल्गुनी II III IV	हस्त I II III IV	चित्रा I II	9
7.	तुला	Libra	चित्रा III IV	स्वाति I II III IV	विशाखा I II III	9
8.	वृश्चिक	Scorpio	विशाखा IV	अनुराधा I II III IV	ज्येष्ठा I II III IV	9
9.	धनु	Sagittarius	मूल I II III IV	पू० आषाढ़ I II III IV	उ० आषाढ़ I	9
10.	मकर	Capricorn	उ० आषाढ़ II III IV	श्रवण I II III IV	धनिष्ठा I II	9
11.	कुम्भ	Aquarius	धनिष्ठा III IV	शतभिषा I II III IV	पू० भाद्रपद I II III	9
12.	मीन	Pisces	पू० भाद्रपद IV	उ० भाद्रपद I II III IV	रेवती I II III IV	9

2. भारतीय राशियों का प्रारम्भिक बिन्दु—भारत में निरयन पद्धति अपनाई जाती हैं। राशियां पाश्चात्य देशों की देन हैं जहां सायन पद्धति प्रचलित है। निरयन पद्धति के अनुसार नक्षत्रों के प्रारम्भिक बिन्दु तथा सायन पद्धति के अनुसार मेषादि राशियों के प्रारम्भिक बिन्दुओं में अयनांश तुल्य अन्तर है। वर्तमान में सायन मेष राशि का प्रारम्भ

निरयन अश्विनी नक्षत्र के प्रथम बिन्दु से लगभग 24 अंश पहले ही हो जाता है। फिर भी भारतीय ज्योतिर्विदों ने इस बुद्धिमत्ता के साथ राशियों को अंगीकार किया कि राशियां भी ले लीं और निरयन पद्धति भी नहीं छोड़ी। भारतीय ज्योतिर्विदों ने राशियों की गणना प्रथम नक्षत्र अश्विनी के प्रथम बिन्दु (निरयन) से प्रारम्भ की न कि मेष (सायन) के प्रथम बिन्दु से। प्रत्येक राशि में 2 ¼ नक्षत्र सम्मिलित कर दिए जिससे बारहवीं (मीन) राशि पुनः अश्विनी के प्रथम बिन्दु पर जाकर समाप्त हो जाती है। भारतीय (निरयन) राशियां पाश्चात्य (सायन) राशियों से वर्तमान में लगभग 24 अंश बाद से प्रारम्भ होती हैं अर्थात् निरयन राशि प्रारम्भ होते समय सायन राशि के 24 अंश अधिक हो जाते हैं। जैसे—जब भारतीय निरयन राशि के अनुसार 0 राशि 0 अंश होते हैं उस समय सायन राशि के अनुसार 0 राशि 24 अंश हो जाते हैं। इसको यों भी कहा जा सकता है कि जब सायन राशि के अनुसार 0 राशि 0 अंश होते हैं उस समय निरयन राशि के अनुसार 11 राशि 6 अंश ही होते हैं।

भारतीय नक्षत्र एवं राशि पद्धति अधिक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत है क्योंकि अचल सम्पात पर आधारित इस पद्धति के अनुसार ही पृथ्वी द्वारा सूर्य की पूरी परिक्रमा (360 अंश) करने की कल्पना की गई है। सायन पद्धति के अनुसार चल सम्पात के कारण पृथ्वी पूरी परिक्रमा नहीं करती।

अचल एवं चल सम्पात के अनुसार नक्षत्रों के संदर्भ में सूर्य की चार महत्वपूर्ण स्थितियां (दो सम्पात तथा दो संक्रान्तियां) निम्नानुसार हैं।

सम्पात एवं संक्रान्तियां	**अचल सम्पात के अनुसार नक्षत्र (सन् 285 ईस्वी)**	**राशि व अंश**	**चल सम्पात के अनुसार नक्षत्र (वर्तमान)**	**राशि व अंश**
1. बसन्त सम्पात 21 मार्च	अश्विनी के प्रथम बिन्दु पर	0/0	उ०भा० के प्रथम चरण के अन्त में या द्वितीय चरण के निकट	11/6
2. कर्क संक्रान्ति 21 जून	पुनर्वसु के चतुर्थ चरण के प्रारम्भ पर (दक्षिणायन प्रारम्भ)	3/0	मृगशिर के चतुर्थ चरण के अन्त में या आर्द्रा के प्रथम चरण प्रारम्भ के निकट (दक्षिणायन प्रारम्भ)	2/6

सम्पात एवं संक्रान्तियां	अचल सम्पात के अनुसार नक्षत्र (सन् 285 ईस्वी)	राशि व अंश	चल सम्पात के अनुसार नक्षत्र (वर्तमान)	राशि व अंश
3. शरद सम्पात 23 सितम्बर	चित्रा के तृतीय चरण के प्रारम्भ पर	6/0	उ०फा० के तृतीय चरण के अन्त में या चतुर्थ चरण के निकट प्रारम्भ	5/6
4. मकर संक्रान्ति 22-23 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ के द्वितीय चरण के प्रारम्भ पर (उत्तरायन प्रारम्भ)	9/0	मूल के द्वितीय चरण के अन्त में या तृतीय चरण प्रारम्भ के निकट (उत्तरायन प्रारम्भ)	11/6

निरयन एवं सायन पद्धतियों के अनुसार राशियों के प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंश (अश्विनी के प्रथम बिन्दु से) निम्न तालिका में तुलनार्थ दिए जा रहे हैं। कालम 5 में निरयन राशियों में नक्षत्रों के नाम मय चरण दिए गए हैं। सायन पद्धति में नक्षत्र व्यवस्था नहीं है। परन्तु हम सायन राशियों का विस्तार नक्षत्रों के सन्दर्भ में देखना चाहें तो कौन-कौन से नक्षत्र किस-किस सायन राशि में सम्मिलित होंगे यह कालम 8 में दर्शाया गया है।

कालम 6 व 7 में सायन राशियों के प्रारम्भिक व अन्तिम अंशादि निरयन राशियों के सन्दर्भ में दिए गए हैं। निरयन राशियों का विस्तार (प्रारम्भिक व अन्तिम अंश) जो कालम 3 व 4 में दिया गया है, उस समय सायन राशियों के क्या अंशादि होंगे, यह कालम 9 व 10 में दिया गया है।

1 जनवरी 1997 को चित्रापक्षीय अयनांश 23 अंश 48 कला 56 विकला है परन्तु पाठकों की सुविधा व तालिका को सरल बनाने हेतु अयनांश 24 मानकर तालिका बनाई गई है।

निरयन एवं सायन राश्यंश

क्रम सं०	नाम राशि	निरयन राशियां (अंशों में)		नक्षत्र एवं चरण	सायन राशियां (अंशों में)		नक्षत्र एवं चरण	निरयन राशियों के समकक्ष सायन अंश	
		अंश से	अंश तक		अंश से	अंश तक		अंश से	अंश तक
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	मेष	0	30	अश्विनी भरणी कृतिका I	336	6	उ०भाद्रपद II III IV रेवती अश्विनी I II	24	54
2.	वृषभ	30	60	कृतिका II III IV रोहिणी मृगशिर I II	6	36	अश्विनी III IV भरणी कृतिका I II III	54	84
3.	मिथुन	60	90	मृगशिर III IV आर्द्रा पुनर्वसु I II III	36	66	कृतिका IV रोहिणी मृगशिर	84	114
4.	कर्क	90	120	पुनर्वसु IV पुष्य आश्लेषा	66	96	आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य I	114	144
5.	सिंह	120	150	मघा पू०फा० उ०फा० I	96	126	पुष्य II III IV आश्लेषा मघा I II	144	174
6.	कन्या	150	180	उ०फा० II III IV हस्त चित्रा I II	126	156	मघा III IV पू०फा० उ०फा० I II III	174	204

क्रम सं०	नाम राशि	निरयन राशियां (अंशों में)		नक्षत्र एवं चरण	सायन राशियां (अंशों में)		नक्षत्र एवं चरण	निरयन राशियों के समकक्ष सायन अंश	
		अंश से	अंश तक		अंश से	अंश तक		अंश से	अंश तक
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
7.	तुला	180	210	चित्रा III IV, स्वाति, विशाखा I II III	156	186	उ०फाल्गुनी IV, हस्त, चित्रा	204	234
8.	वृश्चिक	210	240	विशाखा IV, अनुराधा, ज्येष्ठा	186	216	स्वाति, विशाखा, अनुराधा I	234	264
9.	धनु	240	270	मूल, पू०आषाढ़, उ०आ० I	216	246	अनुराधा II III IV, ज्येष्ठा, मूल I II	264	294
10.	मकर	270	300	उ०आषाढ़ II III IV, श्रवण, धनिष्ठा I II	246	276	मूल III IV, पू०आषाढ़, उ०आषाढ़ I II III	294	324
11.	कुम्भ	300	330	धनिष्ठा III IV, शतभिषा, पू.०भाद्रपद I II III	276	306	उ०आषाढ़ IV, श्रवण, धनिष्ठा	324	354
12.	मीन	330	360	पू०भाद्रपद IV, उ०भाद्रपद, रेवती	306	336	शतभिषा, पू०भाद्रपद, उ०भाद्रपद I	354	24

उपरोक्त तालिका से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं—

1. निरयन पद्धति के अनुसार राशियां अश्विनी के प्रथम बिन्दु (0 अंश) से 30-30 अंश के अन्तर पर प्रारम्भ व समाप्त होती हैं (कालम 3 व 4) परन्तु सायन राशियां इनसे 24 अंश पहले से ही प्रारम्भ हो जाती हैं और 24 अंश पहले से ही समाप्त हो जाती हैं। (कालम 6 व 7)
2. कोई भी ग्रह निरयन राशि के अनुसार 0 राशि 0 अंश पर होगा तो वही ग्रह सायन राशि के अनुसार 0 राशि 24 अंश पर माना जाएगा (कालम 9 व 10)। परन्तु यदि कोई ग्रह सायन राशि के अनुसार 0 राशि 0 अंश (मेष) पर होगा तो वही ग्रह निरयन राशि के अनुसार 11 राशि 6 अंश (मीन) पर माना जाएगा।
3. निरयन राशियों में स्थायी नक्षत्र व्यवस्था है। परन्तु सायन राशियों में नक्षत्रों का विचार नहीं किया जाता। जैसे निरयन मेष राशि में अश्विनी, भरणी तथा कृतिका का प्रथम चरण है (कालम 5)। सायन राशियां भी 30-30 अंश की होती हैं परन्तु सायन राशियां 24 अंश पहले से प्रारम्भ हो जाने से यदि इनमें नक्षत्र देखे जाएं तो निरयन राशियों के समान नक्षत्र नहीं होंगे बल्कि दूसरे नक्षत्र ही होंगे। जैसे सायन मेष राशि 336 अंश से 6 अंश तक है जिसमें उत्तरा भाद्रपद द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण, रेवती तथा अश्विनी के प्रथम व द्वितीय चरण वाला क्षेत्र होगा (कालम 8)। इस प्रकार निरयन व सायन राशियों का 30-30 अंशों का विस्तार आकाश में अलग-अलग है।
4. अयनांश बढ़ने के साथ-साथ सायन राशियों के विस्तार क्षेत्र परिवर्तित होते जाएंगे परन्तु निरयन राशियों की नक्षत्र व्यवस्था अपरिवर्तित रहेगी।
5. उपरोक्त कारण से ही पाश्चात्य ज्योतिर्विद नक्षत्र व्यवस्था को नहीं मानते।
6. उपरोक्त तालिका से निरयन व सायन राश्यंशों के निम्न सूत्र सिद्ध हो जाते हैं—

   निरयन = सायन (–) अयनांश
   सायन = निरयन (+) अयनांश
7. अनेक ज्योतिषीय गणनाओं के लिए ग्रहों के निरयन राश्यंशों को सायन राश्यंशों में तथा सायन राश्यंशों को निरयन राश्यंशों में परिवर्तित करने की आवश्यकता होती है, अतः निरयन तथा सायन राशियों का उपरोक्त सम्बन्ध जानना प्रत्येक ज्योतिर्विद को आवश्यक है।

❑ ❑

नक्षत्र परिचय

रात्रि में आकाश की ओर देखें तो असंख्य देदीप्यमान पिण्ड दिखाई देते हैं। इनमें दो प्रकार के पिण्ड होते हैं। कुछ पिण्ड तो ऐसे हैं जो अन्य पिण्डों के सन्दर्भ में अपना स्थान बदलते रहते हैं तथा इनका प्रकाश स्थिर होता है। ये पिण्ड ग्रह (Planets) हैं जिनमें स्वयं का प्रकाश नहीं है बल्कि ये सूर्य के परावर्तित प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। कोरी आंखों से हम केवल शुक्र, गुरु, मंगल, शनि को ही देख पाते हैं। चन्द्रमा जो पृथ्वी का उपग्रह है विभिन्न कलाओं में दिखाई देता है। सूर्य के अत्यन्त निकट होने तथा आकार में छोटा होने के कारण बिना दूरबीन के बुध को देख पाना सम्भव नहीं है। शेष असंख्य पिण्ड जो झिलमिल करते हुए दिखाई देते हैं और अपना सापेक्ष स्थान नहीं बदलते, तारे या नक्षत्र (Stars) हैं। इनमें स्वयं का प्रकाश होता है। इनमें से अधिकांश तारा-समूह विशिष्ट आकृतियां बनाते हुए दिखाई देते हैं। ये सभी पिण्ड पृथ्वी की दैनिक गति के कारण पूर्व में उदय होकर पश्चिम की ओर चलते हुए तथा अस्त होते हुए दिखाई देते हैं। एक बार में आकाश का आधा भाग ही दिखाई देता है तथा दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण इन्हें नहीं देखा जा सकता।

हम यह अनुभव करते हैं कि जनवरी में अलग प्रकार के तारा समूह आकाश में सिर पर दिखाई देते हैं तो जुलाई में अलग प्रकार के। इसका कारण पृथ्वी की वार्षिक गति है। पृथ्वी की वार्षिक गति के कारण सूर्य क्रान्तिपथ पर प्रतिदिन एक अंश आगे बढ़ जाता है। पृथ्वी की दैनिक गति के कारण एक अंश का मान 4 मिनट होता है। अतः प्रत्येक तारा या नक्षत्र गत दिवस की अपेक्षा 4 मिनट पूर्व उद्‌य हो जाता है और इस प्रकार एक वर्ष में सम्पूर्ण आकाश के सभी तारों की पूर्व में उदय होने की बारी आ जाती है।

पृथ्वी से नक्षत्रों की दूरी इतनी अधिक है कि इन्हें किलोमीटर में नहीं मापा जा सकता। इसलिए इनकी दूरी मापने के लिए प्रकाश वर्ष (Light Year) इकाई का प्रयोग किया जाता है। प्रकाश एक सेकण्ड में 3,00,000 किलोमीटर की गति से एक वर्ष में जितनी दूरी तय करता है, वह एक प्रकाश वर्ष कहलाता है। एक प्रकाश वर्ष में 3,00,000 × 60 × 60 × 24 × 365¼ किलोमीटर (9463000000000 कि० मी०) होते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हमसे राइगेल (वाणरज) 450, देनेव (गांधी तारा) 540, आर्द्रा 240, स्वास्तिक 220, चित्रा 168, मघा 85 तथा रोहिणी 68 प्रकाश वर्ष दूर हैं। पृथ्वी से सबसे निकट का तारा (सूर्य को छोड़कर) अल्फासेंटोरी (किन्नर) है जिसकी दूरी 4.3 प्रकाश वर्ष है। इसके बाद है व्याध (Sirius) जो पृथ्वी से 8.6 प्रकाश वर्ष दूर है। इन्हीं की तुलना में पृथ्वी से सूर्य की दूरी 8 मिनट 16 सेकण्ड है अर्थात् सूर्य से पृथ्वी तक

प्रकाश आने में 8 मिनट 16 सेकण्ड लगते हैं।

कुछ तारे तो इतनी दूर हैं कि इनकी दूरी मापने के लिए प्रकाश वर्ष भी अपर्याप्त है, अतः इससे भी बड़ा पैमाना बनाया गया जिसकी एक इकाई पार सैक है। एक पार सैक 3.259 प्रकाश वर्ष के बराबर होता है।

इन तारों के आकार के विषय में विचार करें तो सूर्य सबसे छोटे तारों में से एक है। ज्येष्ठा (बड़ा) इतना बड़ा तारा है कि इसके आधे से कम भाग में पृथ्वी अपनी कक्षा, सूर्य एवं सभी ग्रहों सहित समा सकती है। ज्येष्ठा नक्षत्र का व्यास सूर्य के व्यास से 450 गुना है। आर्द्रा नक्षत्र का व्यास सूर्य के व्यास से 300 गुना है। ज्येष्ठा में कई आर्द्रा समा सकते हैं। सूर्य एक छोटा तारा होते हुए भी कम दूरी के कारण बड़ा दिखाई देता है और ज्येष्ठा, आर्द्रा आदि विशालकाय तारे अत्यधिक दूर होने के कारण आकाश में टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं।

यों तो आकाश मण्डल में असंख्य तारे भिन्न-भिन्न आकार, आकृतियों तथा दूरियों के हैं। परन्तु खगोलशास्त्रियों ने सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् इनमें से 88 तारामण्डलों (Constellations) को अब तक मान्यता प्रदान की है। इन तारा समूहों में एकल तारे से लेकर तारा समूह तक हैं।

खगोल शास्त्र में जिन 88 तारा मण्डलों को मान्यता दी गई है उनकी सूची *श्री गुणाकर मुले* की पुस्तक '*आकाशदर्शन*', हिन्दी विश्व भारती तथा नेहरू तारामण्डल इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित मानचित्रों के आधार पर प्रस्तुत की जा रही है। प्रत्येक तारामण्डल के अन्तर्गत विशेष नक्षत्रों के नाम व नक्षत्र क्रम संख्या भी दी जा रही है।

खगोलशास्त्र द्वारा मान्य तारामण्डल—(अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार)

1. Andromeda (देवयानी), 2. Antilla (पम्प), 3. Apus (खग), 4. Aquarius (कुम्भ)—शतभिषा 24, 5. Aquila (गरुड़)—श्रवण 22, 6. Ara (वेदी), 7. Aries (मेष)—अश्विनी 1, भरणी 2, 8. Auriga (प्रजापति)—ब्रह्महृदय, 9. Bootes (भूतेश)—स्वाति 15, 10. Caelum (तक्षणी), 11. Camelopardus (जिराफ), 12. Cancer (कर्क)—पुष्य 8, 13. Canes Venatici (मृग या शुन), 14. Canis Major (बृहद् श्वान)—लुब्धक, 15. Canis Minor (लघु श्वान या श्वानिका), 16. Capricornus (मकर-समुद्री बकरा), 17. Carina या Argo Navis (नौतल), 18. Cassiopia (शर्मिष्ठा), 19. Centaurus (नरतुरंग या किन्नर)—प्रोक्सिमा सैन्टौरी, 20. Cepheus (वृषपर्वा), 21. Cetus (तिमि), 22. Chamaeleon (गिरगिट), 23. Circinus (परकार), 24. Columba (कपोत), 25. Coma Berenices (केश), 26. Corona Borealis (उत्तरी किरीट), 27. Corona Australis (दक्षिणी किरीट), 28. Corvus (काक या काग) हस्त 13, 29. Crater (चषक), 30. Crux (स्वास्तिक), 31. Cygnus (हंस)—देनब, 32. Delphinus (उलूपी)—धनिष्ठा 23, 33. Dorado (असिमीन), 34. Draco (कालिय), 35. Equaleus (अश्वक), 36. Eridanus (वैतरणी), 37. Fornax (भट्टी), 38. Gemini (मिथुन)—पुनर्वसु 7, 39. Grus (बक), 40.

Hercules (शौरी), 41. Horologium (होरामाप-घड़ी), 42. Hydrae (वासुकि-सर्प)—आश्लेषा 9, 43. Hydrus (जलिका), 44. Indus (सिंधु), 45. Lacerta (छिपकली), 46. Leo (सिंह)—मघा 10, पू०फाल्गुनी 11, उत्तरा फाल्गुनी 12, 47. Leo Minor (सिंहिका), 48. Lepus (शशक), 49. Libra (तुला)—विशाखा 16, 50. Lupus (वृक-भेड़िया), 51. Lynx (विंडाल), 52. Lyra (वीणा)—अभिजित 28, 53. Mensa (शैल), 54. Microscopium (सूक्ष्मदर्शी), 55. Monoceros (शृंग), 56. Musca (मक्षिका), 57. Norma (अंकिनी), 58. Octans (अष्टांश), 59. Ophiuchus (सर्पधर), 60. Orion (मृग)—मृगशिर 5, आर्द्रा 6, 61. Pavo (मयूर), 62. Pegasus (खगाश्व या हयशिर)—पूर्वा भाद्रपद 25, उत्तरा भाद्रपद 26, 63. Persues (ययाति), 64. Phoenix (गृध), 65. Pictor (चित्रकार), 66. Pisces (मीन)—रेवती 27, 67. Pisces Australis (दक्षिणी मीन), 68. Puppis (नौ पृष्ठ), 69. Pyxis (दिक्सूचक), 70. Recticulum (जरज), 71. Sagitta (शर), 72. Sagittarius (धनुर्धर)—पू० आषाढ़ 20, उ० आषाढ़ 21, 73. Scorpius (वृश्चिक) अनुराधा, 17, ज्येष्ठा 18, मूल 19, 74. Sculptor (शिल्पी), 75. Scutum (ढाल), 76. Serpens (सर्प), 77. Sextans (षष्टांश), 78. Taurus (वृषभ)—कृतिका 3, रोहिणी 4, 79. Telescopium (दूरदर्शी), 80. Triangulum (त्रिकोण), 81. Triangulum Australis (दक्षिणी त्रिकोण), 82. Tucane (चक्रवाक), 83. Ursa Major (वृहत् सप्तर्षि या ऋक्ष), 84. Ursa Minor (लघु सप्तर्षि या ऋक्षिका) ध्रुवतारा, 85. Vela (नौवस्त्र), 86. Virgo (कन्या)—चित्रा 14, 87. Volans (उड़कू या उड़नमछली), 88. Vulpecule (लोमड़ या शृगाल)।

आकाश मण्डल में इन तारामण्डलों के अतिरिक्त भी असंख्य तारे फैले हुए हैं। इन 88 तारामण्डलों में ही बारह राशियों के तारामण्डल हैं तथा इन्हीं में से 27 नक्षत्र चुने गए हैं। परन्तु क्रान्तिवृत्त के निकट तथा क्रान्तिवृत्त के लगभग 27 विभाग करते हुए 27 नक्षत्र मण्डलों को ही भारतीय ज्योतिर्विदों ने चुना। सत्ताईसवें विभाग के भीतर अथवा निकटवर्ती तारामण्डल के नाम पर ही नक्षत्रों का नामकरण किया गया है। बारह राशियों तथा उनमें समाहित 27 नक्षत्रों को किस-किस तारामण्डल से लिया गया है यह संलग्न तालिका से समझा जा सकता है। विशेष विवरण के कालम में जहां 'अन्य मण्डल' लिखा है उसका अर्थ यह है कि यह नक्षत्र अपने राशिमण्डल के बजाय 'अन्य तारा मण्डल' का सदस्य है।

तारामण्डल एवं नक्षत्र

राशि	तारामण्डल जिसमें राशि है	नक्षत्र	तारामण्डल जिससे लिया गया	तारा सं०	विशेष
1 मेष	7 मेष Aries	1 अश्विनी	7 मेष Aries	3	—
		2 भरणी	7 मेष Aries	3	
		3 कृतिका	78 वृषभ Taurus	6	

राशि	तारामण्डल जिसमें राशि है	नक्षत्र	तारामण्डल जिससे लिया गया	तारा सं०	विशेष
2 वृषभ	78 वृषभ Taurus	3 कृतिका 4 रोहिणी 5 मृगशिर	78 वृषभ Taurus 78 वृषभ Taurus 60 मृग Orion	— 5 3	— —
3 मिथुन	38 मिथुन Gemini	5 मृगशिर 6 आर्द्रा 7 पुनर्वसु	60 मृग Orion 60 मृग Orion 38 मिथुन Gemini	— 1 4	—
4 कर्क	12 कर्क Cancer	7 पुनर्वसु 8 पुष्य 9 आश्लेषा	38 मिथुन Gemini 12 कर्क Cancer 42 वासुकी Hydrae	— 3 5	अन्य मंडल
5 सिंह	46 सिंह Leo	10 मघा 11 पू० फा० 12 उ० फा०	46 सिंह Leo 46 सिंह Leo 46 सिंह Leo	6 2 2	—
6 कन्या	86 कन्या Virgo	12 उ० फा० 13 हस्त 14 चित्रा	46 सिंह Leo 28 काक Corvus 86 कन्या Virgo	— 5 1	अन्य मंडल
7 तुला	49 तुला Libra	14 चित्रा 15 स्वाति 16 विशाखा	86 कन्या Virgo 9 भूतेश Bootes 49 तुला Libra	— 1 4	अन्य मंडल
8 वृश्चिक	73 वृश्चिक Scorpio	16 विशाखा 17 अनुराधा 18 ज्येष्ठा	49 तुला Libra 73 वृश्चिक Scorpio 73 वृश्चिक Scorpio	— 4 3	—
9 धनु	72 धनुर्धर Sagittarius	19 मूल 20 पू० षाढ़ 21 उ० षाढ़	73 वृश्चिक Scorpio 72 धनुर्धर Sagittarius 72 धनुर्धर Sagittarius	11 2 2	अन्य मंडल —
10 मकर	16 मकर Capricornus	21 उ० षाढ़ 22 श्रवण 23 धनिष्ठा	72 धनुर्धर Sagittarius 5 गरुड़ Aquila 32 उलूपी Delphinus	— 3 5	अन्य मंडल अन्य मंडल
11 कुम्भ	4 कुम्भ Aquarius	23 धनिष्ठा 24 शतभिषा 25 पू० भाद्र	32 उलूपी Delphinus 4 कुम्भ Aquarius 62 हयशिर Pegasus	— 1/100 2	अन्य मंडल

राशि	तारामण्डल जिसमें राशि है	नक्षत्र	तारामण्डल जिससे लिया गया	तारा सं०	विशेष
12 मीन	66 मीन Pisces	25 पू० भाद्र 26 उ० भाद्र 27 रेवती	62 हयशिर Pegasus 62 हयशिर Pegasus एवं 1 देवयानी Andromeda 66 मीन Pisces	— 2 32	अन्य मंडल अन्य मंडल

नक्षत्रों का गणितीय वितरण एवं वास्तविक नक्षत्र—राशियों में नक्षत्रों का वितरण करने में गणित को आधार बनाया गया है। वास्तविक नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार कई नक्षत्र सम्बन्धित नक्षत्रीय विभाग से बाहर हैं अथवा दो वास्तविक नक्षत्र एक ही नक्षत्रीय विभाग में भी हैं। जैसे—

1. आर्द्रा का गणितीय विस्तार 2 राशि 6 अंश 40 कला से 2 राशि 20 कला तक है जबकि वास्तविक आर्द्रा नक्षत्र 2 राशि 4 अंश 53 कला 51 विकला पर है अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र मृगशिर के नक्षत्रीय विभाग में है।
2. ज्येष्ठा का गणितीय विस्तार 7 राशि 16 अंश 40 कला से 8 राशि 0 अंश 0 कला तक है जबकि वास्तविक ज्येष्ठा नक्षत्र 7 राशि 15 अंश 54 कला 18 विकला पर है अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र अनुराधा के नक्षत्रीय विभाग में है।
3. पूर्वाषाढ़ का गणितीय विस्तार 8 राशि 13 अंश 20 कला से 8 राशि 26 अंश 40 कला तक है जबकि वास्तविक पूर्वाषाढ़ नक्षत्र 8 राशि 10 अंश 43 कला 26 विकला पर है अर्थात् पूर्वाषाढ़ मूल के नक्षत्रीय विभाग में है।
4. श्रवण का गणितीय विस्तार 9 राशि 10 अंश से 9 राशि 23 अंश 20 कला है जबकि वास्तविक श्रवण नक्षत्र 9 राशि 7 अंश 55 कला 6 विकला पर है अर्थात् श्रवण नक्षत्र उत्तराषाढ़ के नक्षत्रीय विभाग में है।
5. धनिष्ठा का गणितीय विस्तार 9 राशि 23 अंश 20 कला से 10 राशि 6 अंश 40 कला तक है जबकि वास्तविक धनिष्ठा 9 राशि 22 अंश 29 कला 4 विकला पर है अर्थात् धनिष्ठा श्रवण के नक्षत्रीय विभाग में है।

भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों के गणितीय विभागों (13 अंश 20 कला) के अनुसार ही विचार किया जाता है क्योंकि कई वास्तविक नक्षत्रों के बीच 13 अंश 20 कला से कम अन्तर है, फिर भी नक्षत्रों के गणितीय विभागों के नाम इन्हीं सम्बन्धित एकल नक्षत्रों अथवा नक्षत्र समूहों के नामों पर रखे गए हैं।

राशि-नक्षत्र समायोजन में विसंगतियां—भारत में राशियों के आगमन पर राशियों में नक्षत्रों का गणितीय समायोजन कृत्रिम रूप से किया गया। इस कृत्रिम वितरण से कुछ विसंगतियां रह गईं जो निम्नानुसार हैं—

1. खगोलशास्त्र के अनुसार प्रजापति मण्डल (8) का अग्नि तारा (बीटा टॉरी) वृषभ (बैल) के दाएं सींग पर है जबकि वृषभ राशि का मृगशिर नक्षत्र मृग मण्डल (60) तारा समूह का तारा है।
2. आर्द्रा नक्षत्र भी मृग मण्डल (60) का तारा है जो मिथुन राशि में सम्मिलित किया गया है जबकि मिथुन राशि के दो जुड़वां बच्चों के सिर आर्द्रा से उत्तर-पूर्व की ओर पुनर्वसु (Pollux) तथा प्रंकृति (Castor) पर हैं। जो मिथुन मण्डल (38) में हैं।
3. कर्क राशि के अन्तर्गत पुनर्वसु के अतिरिक्त पुष्य कर्क मण्डल (12) में है जबकि आश्लेषा वासुकि मण्डल (42) में है।
4. कन्या राशि का हस्त नक्षत्र काक मण्डल (28) से लिया गया है।
5. खगोल शास्त्र के अनुसार तुला एक स्वतंत्र मण्डल (49) है जबकि इसी राशि में स्वाति नक्षत्र भूतेश मण्डल (9) का सदस्य है तथा विशाखा के दो तारे वृश्चिक मण्डल (73) के बिच्छू के पंजों के नाखूनों पर हैं।
6. वृश्चिक मण्डल (73) काफी विस्तृत मण्डल है तथा आकाश में स्पष्ट रूप से बिच्छू की आकृति बनाता है। मूल नक्षत्र वास्तव में बिच्छू के डंक में है जबकि भारतीय ज्योतिष में मूल नक्षत्र से धनु राशि प्रारम्भ होती है।
7. मकर राशि का श्रवण नक्षत्र गरुड़ मण्डल (5) का सदस्य है, धनिष्ठा नक्षत्र उलूपी मण्डल (32) का सदस्य है जबकि मकर राशि में मकर मण्डल का एक भी नक्षत्र नहीं है।
8. कुम्भ राशि का पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हयशिर मण्डल (62) का सदस्य है जबकि खगोलशास्त्र के अनुसार कुम्भ एक स्वतंत्र मण्डल (4) है जो पूर्वा भाद्रपद से काफी दक्षिण में है।
9. मीन राशि का उत्तरा भाद्रपद का दक्षिणी तारा हयशिर मण्डल (62) का सदस्य परन्तु उत्तर का तारा अल्फेराट्ज देवयानी मण्डल (1) का सदस्य है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्योतिर्विदों ने भारत में राशियों के आगमन पर नक्षत्रों का तालमेल बिठाने के लिए तथा नक्षत्रों को पूरी आकृति प्रदान करने के लिए अन्य मण्डलों से तारे उधार लिए। इस प्रकार गणितीय नक्षत्र विभाजन एवं नक्षत्रों की वास्तविक कोणात्मक स्थिति में कुछ विसंगतियां भी रह गईं।

राशियों में गणितीय नक्षत्र वितरण—जैसा कि ऊपर बताया गया है एक राशि (30 अंश) में 2¼ नक्षत्र (9 चरण) होते हैं। एक नक्षत्र का कोणीय मान 13 अंश 20 कला तथा एक चरण का कोणीय मान 3 अंश 20 कला होता है। निरयन पद्धति के अनुसार सभी राशियों, नक्षत्रों तथा चरणों की गणना अश्विनी के प्रथम बिन्दु (अचल सम्पात) से मापी जाती है। सुविधा एवं परम्परा के अनुसार 30-30 अंशों की जितनी राशियां पूर्ण होती जाती हैं उनकी संख्या अंशादि से पहले लगाकर राश्यंश के रूप में

कोणात्मक दूरी को व्यक्त किया जाता है। जैसे अश्विनी के प्रथम बिन्दु से 217 अंश 10 कला 25 विकला में 30-30 अंश की 7 राशियां पूर्ण हो चुकीं और 7 अंश बचे। अतः इसे हम कहेंगे 7 राशि 7 अंश 10 कला 25 विकला। इसमें वही सिद्धान्त काम कर रहा है कि 17 फुट 7 इंच को 5 गज 2 फुट 7 इंच कह सकते हैं।

उपरोक्त 7 राशि 7 अंश 10 कला 25 विकला को हम इस प्रकार भी व्यक्त कर सकते हैं—वृश्चिक (आठवीं) राशि में 7 अंश 10 कला 25 विकला। इसी प्रकार राशि के अंश तथा अंशों की राशियां बनाने का अभ्यास कर लेना चाहिए।

किसी भी ग्रह की स्थिति तीन प्रकार से व्यक्त की जा सकती है—

(अ) केवल अंशात्मक रूप में—जैसे 168 अंश 20 कला 36 विकला।

(ब) पूर्ण राशि संख्या सहित—जैसे 5 राशि 18 अंश 20 कला 36 विकला।

(स) वर्तमान राशि के संदर्भ में—जैसे कन्या, 18 अंश 20 कला 36 विकला।

उपरोक्त सभी नाप अश्विनी के प्रथम बिन्दु (निरयन) से हैं।

उपरोक्त आधारों पर राशियों व नक्षत्रों का भचक्र में वितरण आगे दी गई तालिकाओं में दर्शाया जा रहा है। आकाश में देखने पर ये सभी राशियां व नक्षत्र आरोही क्रम में पश्चिम से पूर्व की ओर दिखाई देती हैं। ये तालिकाएं ज्योतिष के विद्यार्थियों तथा जन्मपत्री रचनाकारों के लिए अत्यन्त आवश्यक उपकरण हैं।

नक्षत्र वितरण का वैज्ञानिक आधार—राशियों में गणितीय विभाजन को देखने से स्पष्ट होता है कि नक्षत्र वितरण वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इस आधार की वैज्ञानिकता निम्न बिन्दुओं से सिद्ध होती है—

(अ) नक्षत्रों के स्वामी ग्रह—सर्वप्रथम नक्षत्रों के स्वामी ग्रहों पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि यह क्रम आकाशमण्डल में ग्रहों की कक्षाओं (Orbits) के आधार पर है। सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रहों की कक्षाओं का क्रम इस प्रकार है—बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, अरुण, वरुण तथा यम। चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह होने के कारण पृथ्वी से सबसे अधिक निकट है। भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा को ग्रह माना गया है। अरुण-वरुण व यम को प्राचीन व्यवस्था में राशियों व नक्षत्रों का स्वामित्व नहीं सौंपा गया है। पृथ्वी के स्थान पर सूर्य को ग्रह माना गया है। इस प्रकार ग्रहों का आकाश में क्रम हुआ—बुध, शुक्र, सूर्य (पृथ्वी के स्थान पर), चन्द्र, मंगल, गुरु व शनि। राहू व केतू छाया ग्रह हैं। इनको एक-दूसरे के सामने समायोजित किया गया। बुध व शुक्र के मध्य केतू तथा मंगल व गुरु के मध्य राहू।

इस समायोजन के पश्चात् यह क्रम इस प्रकार बना—बुध **केतू** शुक्र सूर्य चन्द्र मंगल **राहू** गुरु शनि

सूर्य सौर मण्डल का केन्द्र है, अतः इसको प्रथम स्थान देने पर जो क्रम बना वह इस प्रकार हुआ—सूर्य चन्द्र मंगल राहू गुरु शनि बुध केतू शुक्र

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...1

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणा-क्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
1	0	मेष	1	अश्विनी	I	0	0	3	20	0	0	0	0	3	20	चू
		Aries		Beta Arietis	II	3	20	6	40	0	3	20	0	6	40	चे
		मंगल		केतू	III	6	40	10	0	0	6	40	0	10	0	चो
		0 अंश से 30 अंश		7 वर्ष	IV	10	0	13	20	0	10	0	0	13	20	ला
			2	भरणी	I	13	20	16	40	0	13	20	0	16	40	ली
				41 Arietis	II	16	40	20	0	0	16	40	0	20	0	लू
				शुक्र	III	20	0	23	20	0	20	0	0	23	20	ले
				20 वर्ष	IV	23	20	26	40	0	23	20	0	26	40	लो
			3	कृतिका (क्रमश:)	I	26	40	30	0	0	26	40	1	0	0	आ

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...2

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
2	1	वृषभ Taurus	3	कृतिका Eta Aleyone	II	30	0	33	20	1	0	0	1	3	20	ई
				(Pleiades)	III	33	20	36	40	1	3	20	1	6	40	ऊ
		शुक्र		सूर्य 6 वर्ष	IV	36	40	40	0	1	6	40	1	10	0	ए
		30 अंश से	4	रोहिणी Alpha Tauri	I	40	0	43	20	1	10	0	1	13	20	ओ
		60 अंश		(Aldebaran)	II	43	20	46	40	1	13	20	1	16	40	वा
				चन्द्र	III	46	40	50	0	1	16	40	1	20	0	वी
				10 वर्ष	IV	50	0	53	20	1	20	0	1	23	20	वू
			5	मृगशिर	I	53	20	56	40	1	23	20	1	26	40	वे
				Lambde Orionis	II	56	40	60	0	1	26	40	2	0	0	वो
				क्रमश:												

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...3

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
3	2	मिथुन Gemini बुध	5	मृगशिर मंगल 7 वर्ष	III	60	0	63	20	2	0	0	2	3	20	का
					IV	63	20	66	40	2	3	20	2	6	40	की
			6	आर्द्रा • Alpha Orlonis Betelguese राहू 18 वर्ष	I	66	40	70	0	2	6	40	2	10	0	कू
					II	70	0	73	20	2	10	0	2	13	20	घ
		60 अंश से 90 अंश			III	73	20	76	40	2	13	20	2	16	40	ङ.
					IV	76	40	80	0	2	16	40	2	20	0	छ
			7	पुनर्वसु Beta Geminorium (Pollux) गुरु 16 वर्ष (क्रमशः)	I	80	0	83	20	2	20	0	2	23	20	के
					II	83	20	86	40	2	23	20	2	26	40	को
					III	86	40	90	0	2	26	40	3	0	0	हा

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...4

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंश्मेत्तरीदशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
4	3	कर्क	7	पुनर्वसु	IV	90	0	93	20	3	0	0	3	3	20	ही
		Cancer	8	पुष्य	I	93	20	96	40	3	3	20	3	6	40	हू
				Delta Cancri	II	96	40	100	0	3	6	40	3	10	0	हे
		90 अंश से		शनि	III	100	0	103	20	3	10	0	3	13	20	हो
		120 अंश		19 वर्ष	IV	103	20	106	40	3	13	20	3	16	40	डा
			9	आश्लेषा	I	106	40	110	0	3	16	40	3	20	0	डी
				Ipsilon Hydrae	II	110	0	113	20	3	20	0	3	23	20	डू
				बुध	III	113	20	116	40	3	23	20	3	26	40	डे
				17 वर्ष	IV	116	40	120	0	3	26	40	4	0	0	डो

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...5

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
5	4	सिंह	10	मघा	I	120	0	123	20	4	0	0	4	3	20	मा
		Leo		Alpha Leonis (Regulus)	II	123	20	126	40	4	3	20	4	6	40	मी
		सूर्य		केतू	III	126	40	130	0	4	6	40	4	10	0	मू
		120 अंश से 150 अंश		7 वर्ष	IV	130	0	133	20	4	10	0	4	13	20	मे
			11	पूर्वा फाल्गुनी	I	133	20	136	40	4	13	20	4	16	40	मो
				Delta Leonis	II	136	40	140	0	4	16	40	4	20	0	टा
				शुक्र	III	140	0	143	20	4	20	0	4	23	20	टी
				20 वर्ष	IV	143	20	146	40	4	23	20	4	26	40	टू
			12	उत्तरा फाल्गुनी (क्रमशः)	I	146	40	150	0	4	26	40′	5	0	0	टे

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...6

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणा-क्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
6	5	कन्या	12	उत्तरा फाल्गुनी	II	150	0	153	20	5	0	0	5	3	20	टा
		Virgo		Beta Leonis (Denebola)	III	153	20	156	40	5	3	20	5	6	40	पा
		बुध		सूर्य 6 वर्ष	IV	156	40	160	0	5	6	40	5	10	0	पी
		150 अंश से	13	हस्त	I	160	0	163	20	5	10	0	5	13	20	पू
		180 अंश		Delta Corvi	II	163	20	166	40	5	13	20	5	10	40	ष
				चन्द्र	III	166	40	170	0	5	16	40	5	20	0	ण
				10 वर्ष	IV	170	0	173	20	5	20	0	5	23	20	ठ
			14	चित्रा Alpha Virginis Spica	I	173	20	176	20	5	23	20	5	26	40	पे
				क्रमश:	II	176	20	180	0	5	20	40	6	0	0	पो

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...7

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणा-क्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
7	6	तुला	14	चित्रा	III	180	0	183	20	6	0	0	6	3	20	रा
		Libra		मंगल 7 वर्ष	IV	183	20	186	40	6	3	20	6	6	40	री
		शुक्र	15	स्वाति	I	186	40	190	0	6	6	40	6	10	0	रू
		180 अंश से		Alpha Bootes	II	190	0	193	20	6	10	0	6	13	20	रे
		210 अंश		(Arcturus) राहू	III	193	20	196	40	6	13	20	6	16	40	रो
				18 वर्ष	IV	196	40	200	0	6	16	40	6	20	0	ता
			16	विशाखा	I	200	0	203	20	6	20	0	6	23	20	ती
				Alpha Libra गुरु	II	203	20	206	40	6	23	20	6	26	40	तू
				16 वर्ष (क्रमशः)	III	206	40	210	0	6	26	40	7	0	0	ते

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...8

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
8	7	वृश्चिक	16	विशाखा	IV	210	0	213	20	7	0	0	7	3	20	तो
		Scorpio	17	अनुराधा	I	213	20	216	40	7	3	20	7	6	40	ना
				Delta Scorpii	II	216	40	220	0	7	6	40	7	10	0	नी
		210 अंश से		शनि	III	220	0	223	20	7	10	0	7	13	20	नू
		240 अंश		19 वर्ष	IV	223	20	226	40	7	13	20	7	16	40	ने
			18	ज्येष्ठा	I	226	40	230	0	7	16	40	7	20	0	नो
				Alpha Scorpii (Antares)	II	230	0	233	20	7	20	0	7	23	20	या
				बुध	III	233	20	236	40	7	23	20	7	26	40	यी
				17 वर्ष	IV	236	40	240	0	7	26	40	8	0	0	यू

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...9

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
9	8	धनु	19	मूल	I	240	0	243	20	8	0	0	8	3	20	ये
				Lambda Scorpii	II	243	20	246	40	8	3	20	8	6	40	यो
		गुरु		केतू	III	246	40	250	0	8	6	40	8	10	0	भा
		240 अंश से		7 वर्ष	IV	250	0	253	20	8	10	0	8	13	20	भी
		270 अंश	20	पूर्वा आषाढ़	I	253	20	256	40	8	13	20	8	16	40	भू
				Delta Sagittarii	II	256	40	260	0	8	16	40	8	20	0	धा
				शुक्र	III	260	0	263	20	8	20	0	8	23	20	फा
				20 वर्ष	IV	263	20	266	40	8	23	20	8	26	40	ढ़ा
			21 —	उत्तरा आषाढ़ (क्रमशः)	I	266	40	270	0	8	26	40	9	0	0	भे

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...10

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणाक्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
10	9	मकर	21	उत्तरा आषाढ़	II	270	0	273	20	9	0	0	9	3	20	भो
				Sigma Sagittarii	III	273	20	276	40	9	3	20	9	6	40	जा
		शनि		सूर्य 6 वर्ष	IV	276	40	280	0	9	6	40	9	10	0	जी
		270 अंश से	22	श्रवण	I	280	0	283	20	9	10	0	9	13	20	खी
		300 अंश		Alpha Aquilae	II	283	20	286	40	9	13	20	9	16	40	खू
				Altair चन्द्र	III	286	40	290	0	9	16	40	9	20	0	खे
				10 वर्ष	IV	290	0	293	20	9	20	0	9	23	20	खो
			23	धनिष्ठा	I	293	20	296	40	9	23	20	9	26	40	गा
				Beta Delphini (क्रमशः)	II	296	40	300	0	9	26	40	10	0	0	गी

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...11

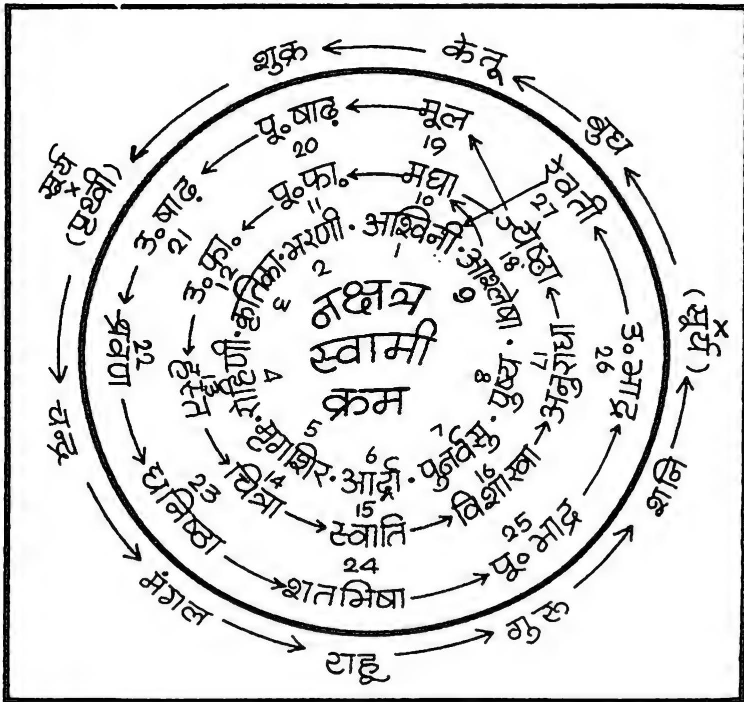
राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणा-क्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
11	10	कुम्भ	23	धनिष्ठा	III	300	0	303	20	10	0	0	10	3	20	गू
				मंगल 7 वर्ष	IV	303	20	306	40	10	3	20	10	6	40	गे
		शनि	24	शतभिषा	I	306	40	310	0	10	6	40	10	10	0	गो
		300 अंश से 330 अंश		Lambda Aquarii	II	310	0	313	20	10	10	0	10	13	20	सा
				राहू	III	313	20	316	40	10	13	20	10	16	40	सी
				18 वर्ष	IV	316	40	320	0	10	16	40	10	20	0	सू
			25	पूर्वा भाद्रपद Alpha Pegasi	I	320	0	323	20	10	20	0	10	23	20	से
				(Markab) गुरु	II	323	20	326	40	10	23	20	10	26	40	सो
				16 वर्ष	III	326	40	330	0	10	26	40	11	0	0	दा

राशि-नक्षत्र-चरण कोणात्मक विस्तार...12

राशि क्रम संख्या	गत राशि संख्या	राशि एवं स्वामी	नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र स्वामी विंशोत्तरी दशा वर्ष	चरण क्रमांक	निरयन मेष के प्रथम बिन्दु से				राशि के प्रारम्भिक बिन्दु से						चरणा-क्षर
						से		तक		से			तक			
						अंश	कला	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	
12	11	मीन	25	पूर्वाभाद्रपद	IV	330	0	333	20	11	0	0	11	3	20	दी
			26	उत्तरा भाद्रपद	I	333	20	336	40	11	3	20	11	6	40	दू
		गुरु		Gamma Pegesi Algenis	II	336	40	340	0	11	6	40	11	10	0	थ
		330 अंश से		शनि	III	340	0	343	20	11	10	0	11	13	20	झ
		360 अंश		19 वर्ष	IV	343	20	346	40	11	13	20	11	16	40	ञ
		(0 अंश)	27	रेवती	I	346	40	350	0	11	16	40	11	20	0	दे
				Zeta Piscium	II	350	0	353	20	11	20	0	11	23	20	दो
				बुध	III	353	20	356	40	11	23	20	11	26	40	चा
				17 वर्ष	IV	356	40	360 0	0 0	11	26	40	0	0	0	ची

प्राचीनकाल में नक्षत्रों की सूची में कृतिका प्रथम स्थान पर था। अतः सूर्य को कृतिका नक्षत्र का स्वामित्व देते हुए नक्षत्र स्वामियों का क्रम प्रारम्भ हुआ। 27 नक्षत्रों का स्वामित्व 9 ग्रहों को सौंपना था जिससे एक ग्रह की तीन आवृत्तियां हुईं और तीन-तीन नक्षत्रों का उसी क्रम में स्वामित्व प्रत्येक ग्रह को सौंपा गया। इस प्रकार सूर्य कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी व उत्तराषाढ़ का स्वामी बना।

नक्षत्रों के स्वामित्व के क्रम की पुष्टि संलग्न रेखाचित्र से होती है—



नक्षत्र स्वामी क्रम

(*i*) रेखाचित्र में सर्वप्रथम सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रहों को स्थापित कर दिया।

(*ii*) सूर्य को अपने स्थान से हटा कर पृथ्वी के स्थान पर लिख दिया।

(*iii*) बुध व शुक्र के मध्य केतू तथा मंगल व गुरु के मध्य राहू को लिख दिया। अब सूर्य से घड़ी के चालन के विपरीत गिनने से ग्रहों का क्रम कुछ इस प्रकार हो गया—सूर्य चन्द्र मंगल राहू गुरु शनि बुध केतू व शुक्र।

(*iv*) अब सूर्य को कृतिका नक्षत्र का स्वामी मानते हुए क्रम को आगे बढ़ाएं तो जो नक्षत्र प्रत्येक ग्रह के स्वामित्व में आएंगे, वे रेखाचित्र में दर्शाए गए हैं। अतः नक्षत्र के स्वामी ग्रहों के क्रम की वैज्ञानिकता की पुष्टि इस रेखाचित्र से होती है।

(ब) नक्षत्रों का परिवर्तित क्रम—नक्षत्रों के स्वामियों के निर्धारण के समय प्रथम नक्षत्र कृतिका था। कालान्तर में जिस समय भारत में राशियों का प्रादुर्भाव हुआ उस समय अश्विनी प्रथम नक्षत्र था। अतः नक्षत्रों के स्वामित्व में कोई परिवर्तन किए बिना अश्विनी से रेवती तक नक्षत्रों को मेषादि राशियों में समायोजित कर दिया गया। इस प्रकार कृतिका नक्षत्र तृतीय स्थान पर आ गया तथा समायोजन करते समय प्रथम राशि मेष में प्रथम नक्षत्र अश्विनी को रख कर वितरण क्रम बना दिया गया। नक्षत्रों का स्वामित्व यथावत बना रहा।

(स) नक्षत्र स्वामियों के अनुसार नक्षत्र वितरण में एकरूपता—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रथम नौ नक्षत्रों (अश्विनी से आश्लेषा) के 36 चरणों से प्रथम चार राशियां (मेष से कर्क), अगले नौ नक्षत्रों (मघा से ज्येष्ठा) के 36 चरणों से अगली चार राशियां (सिंह से वृश्चिक) तथा अन्तिम नौ नक्षत्रों (मूल से रेवती) के 36 चरणों से अंतिम चार राशियां (धनु से मीन) बनीं। इस प्रकार भचक्र (वृत्त) को तीन समान अंशात्मक भागों में बांटा गया। प्रत्येक 120 अंश के एक भाग को तृतीयांश (Trine) कहते हैं। प्रत्येक तृतीयांश में चार राशियां, नौ नक्षत्र तथा छत्तीस चरण समाहित किए गए। प्रत्येक तृतीयांश 0, 120 व 240 अंशों पर समाप्त व प्रारम्भ होता है। तृतीयांशों के समाप्ति एवं प्रारम्भिक बिन्दु अत्यन्त संवेदनशील हैं क्योंकि भचक्र में ये ही तीन बिन्दु ऐसे हैं जहां राशि एवं नक्षत्र साथ-साथ ही समाप्त एवं प्रारम्भ होते हैं। इन बिन्दुओं की विशेषताएं आगे प्रस्तुत की जाएंगी।

नक्षत्र वितरण में एकरूपता की एक रोचक विशेषता यह है कि तीनों तृतीयांशों में नक्षत्रों का वितरण क्रम (स्वामित्व के अनुसार) समान है अर्थात् एक ही स्वामी ग्रह के तीन नक्षत्र प्रत्येक तृतीयांश में समान कोणात्मक मान से प्रारम्भ व समाप्त होते हैं, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट होता है।

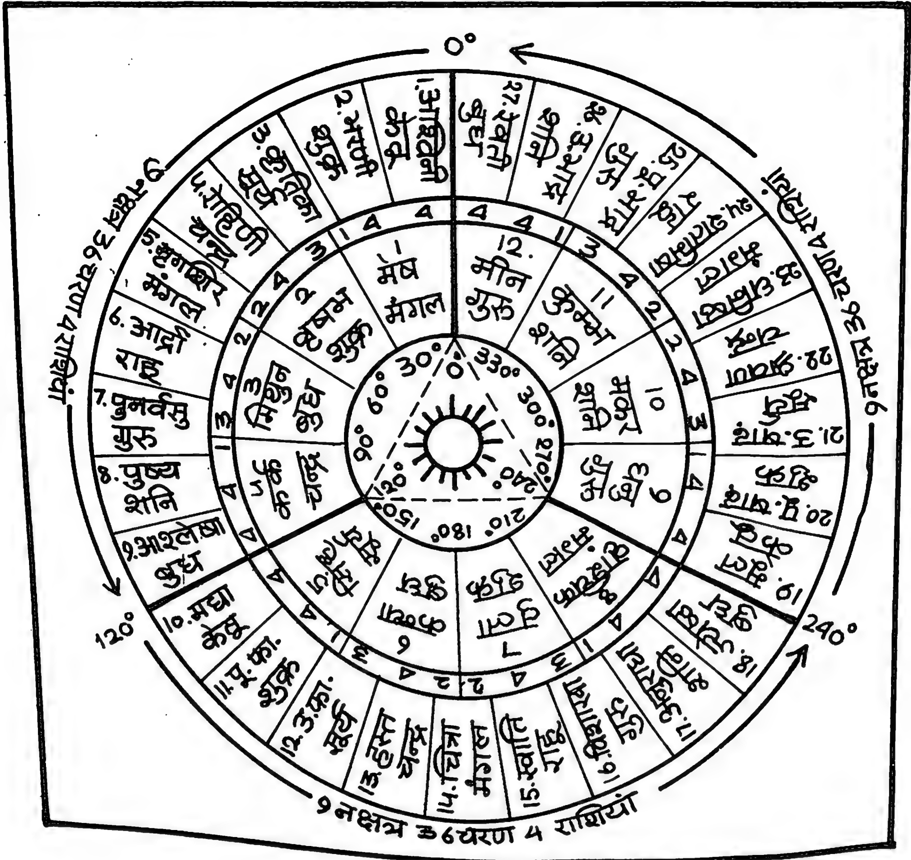
नक्षत्र वितरण की अंशात्मक एकरूपता

स्वामी ग्रह	नक्षत्र	सम्बन्धित राशि में				राशियों में (क्रमशः)
		से		तक		
		अंश	कला	अंश	कला	
केतू	1 अश्विनी 10 मघा 19 मूल	0	0	13	20	1 मेष 5 सिंह 9 धनु
शुक्र	2 भरणी 11 पू० फाल्गुनी 20 पू० षाढ़	13	20	26	40	1 मेष 5 सिंह 9 धनु

स्वामी ग्रह	नक्षत्र	सम्बन्धित राशि में				राशियों में (क्रमशः)
		से		तक		
		अंश	कला	अंश	कला	
सूर्य	3 कृतिका 12 उ० फाल्गुनी 21 उ० षाढ़	26	40	10 (अगली	0 राशि)	1 मेष 2 वृषभ 5 सिंह 6 कन्या 9 धनु 10 मकर
चन्द्र	4 रोहिणी 13 हस्त 22 श्र५ण	10	0	23	20	2 वृषभ 6 कन्या 10 मकर
मगंल	5 मृगशिर 14 चित्रा 23 धनिष्ठा	23	20	6 (अगली	40 राशि)	2 वृषभ 3 मिथुन 6 कन्या 7 तुला 10 मकर 11 कुम्भ
राहू	6 आर्द्रा 15 स्वाति 24 शतभिषा	6	40	20	0	3 मिथुन 7 तुला 11 कुम्भ
गुरु	7 पुनर्वसु 16 विशाखा 25 पू० भाद्रपद	20	0	3 (अगली	20 राशि)	3 मिथुन 4 कर्क 7 तुला 8 वृश्चिक 11 कुम्भ 12 मीन
शनि	8 पुष्य 17 अनुराधा 26 उ० भाद्रपद	3	20	16	40	4 कर्क 8 वृश्चिक 12 मीन
बुध	9 आश्लेषा 18 ज्येष्ठा 27 रेवती	16	40	30	0	4 कर्क 8 वृश्चिक 12 मीन

तृतीयांशों में स्वामियों के अनुसार नक्षत्रों का वितरण तथा उनका राशियों में समायोजन निम्न वृत्ताकार रेखाचित्र में दर्शाया गया है।

तृतीयांश और राशि-नक्षत्र



भचक्र में राशियाँ और नक्षत्र

उपरोक्त रेखाचित्र की राशियों व नक्षत्रों के समायोजन का आधार तृतीयांश (Trines) हैं। इन्हीं तृतीयांशों के कारण भचक्र में कोणात्मक एकरूपता सम्भव हो सकी है।

नक्षत्रों का पूर्ण एवं आंशिक वितरण—27 नक्षत्रों को बारह राशियों में समायोजित करने के लिए नौ नक्षत्रों के टुकड़े करने पड़े हैं। उपरोक्त रेखाचित्र एवं तालिका से स्पष्ट है कि नक्षत्रों के पूर्ण एवं आंशिक समायोजन में भी एकरूपता है। केतू के तीन नक्षत्र (अश्विनी, मघा व मूल), शुक्र के तीन नक्षत्र (भरणी, पूर्वा फाल्गुनी व पूर्वाषाढ़), चन्द्रमा के तीन नक्षत्र (रोहिणी, हस्त व श्रवण), राहू के तीन नक्षत्र (आर्द्रा, स्वाति व शतभिषा), बुध के तीन नक्षत्र (आश्लेषा, ज्येष्ठा व रेवती) तथा शनि के तीन नक्षत्र (पुष्य,

अनुराधा व उत्तरा भाद्रपद)। छः ग्रहों के अट्ठारह नक्षत्र सम्बन्धित राशियों में पूरे-पूरे आते हैं जबकि सूर्य के तीन नक्षत्र (कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी व उत्तराषाढ़), मंगल के तीन नक्षत्र (मृगशिर, चित्रा व धनिष्ठा) तथा गुरु के तीन नक्षत्र (पुनर्वसु, विशाखा व पूर्वा भाद्रपद)। तीन ग्रहों के नौ नक्षत्र निम्नानुसार आंशिक रूप से राशियों में रखे गए हैं—

(अ) सूर्य के तीन नक्षत्र—कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी व उत्तराषाढ़ नक्षत्र 1 : 3 के अनुपात में राशियों में आते हैं अर्थात् प्रथम चरण पिछली राशि में तथा शेष तीन चरण अगली राशि में—

3 कृतिका—प्रथम चरण मेष में, शेष तीन चरण वृषभ में।

12 उत्तरा फाल्गुनी—प्रथम चरण सिंह में, शेष तीन चरण कन्या में।

21 उत्तराषाढ़—प्रथम चरण धनु में, शेष तीन चरण मकर में।

उपरोक्त तीनों नक्षत्र अग्नि तत्व प्रधान राशि से पृथ्वी तत्व प्रधान राशि तक विस्तृत हैं।

(ब) मंगल के तीन नक्षत्र—मृगशिर, चित्रा व धनिष्ठा 2 : 2 के अनुपात में राशियों में आते हैं अर्थात् प्रथम दो चरण पिछली राशि तथा शेष दो चरण अगली राशि में—

5 मृगशिर—प्रथम दो चरण वृषभ में, शेष दो चरण मिथुन में।

14 चित्रा—प्रथम दो चरण कन्या में, शेष दो चरण तुला में।

23 धनिष्ठा—प्रथम दो चरण मकर में, शेष दो चरण कुम्भ में।

उपरोक्त तीनों नक्षत्र पृथ्वी तत्व प्रधान राशि से वायु तत्व प्रधान राशि तक विस्तृत हैं।

(स) गुरु के तीन नक्षत्र—पुनर्वसु, विशाखा व पूर्वा भाद्रपद 3 : 1 के अनुपात में राशियों में आते हैं अर्थात् प्रथम तीन चरण पिछली राशि में तथा शेष एक चरण अगली राशि में—

7 पुनर्वसु—प्रथम तीन चरण मिथुन में, शेष एक चरण कर्क में।

16 विशाखा—प्रथम तीन चरण तुला में, शेष एक चरण वृश्चिक में।

25 पूर्वा भाद्रपद—प्रथम तीन चरण कुम्भ में, शेष एक चरण मीन में।

उपरोक्त तीन नक्षत्र वायु तत्व प्रधान राशि से जल तत्व प्रधान राशि तक विस्तृत हैं।

अग्नि एवं जल तत्व प्रधान राशियों में किसी भी नक्षत्र का बंटवारा नहीं किया गया है।

इस प्रकार सूर्य, मंगल व गुरु के 3-3, कुल नौ नक्षत्रों का आंशिक रूप से समायोजन करने में भी वितरण की एकरूपता बनी रही है। इन नौ नक्षत्रों के 18 टुकड़े तथा शेष छह ग्रहों के 18 नक्षत्र (पूरे) मिलकर फलित की दृष्टि से भचक्र के 36 नक्षत्रात्मक विभाग बन जाते हैं। जैसे कृतिका—I मेष तथा कृतिका II, III, IV वृषभ आदि। फलित की दृष्टि

से 27 के बजाय 36 नक्षत्रों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि इन स्थितियों में नक्षत्रेश तो वही रहेंगे परन्तु राशि स्वामी बदल जाएंगे।

इस प्रकार हमने देखा कि प्राचीन भारत की नक्षत्र पद्धति तथा निरयन पद्धति कितनी वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत है। भारतीय विद्वानों ने उपरोक्त दोनों सिद्धान्तों (अचल सम्पात तथा नक्षत्र व्यवस्था) को न छोड़ते हुए राशि व्यवस्था को भी इसमें समायोजित कर लिया।

राशियों में नक्षत्रों के वितरण का उपरोक्त विश्लेषण इसीलिए किया गया है कि सिद्धान्त को समझने के पश्चात् तथ्यों को रटने की आवश्यकता नहीं रहती, अनावश्यक त्रुटियों से जन्मपत्री रचनाकार तथा फलितकर्त्ता बच जाता है तथा कार्य की गति बढ़ जाती है।

❑❑

नक्षत्रों को पहचानिए

आकाश में नक्षत्रों की स्थिति का ज्ञान एवं उनकी पहचान प्रत्येक ज्योतिर्विद को होना आवश्यक है। इससे अनेक भ्रान्तियां दूर हो जाती हैं तथा जन्मपत्री रचना में त्रुटियां होने की आशंका नहीं रहती। नक्षत्रों की स्थिति आकाश में देखकर लग्न राशि का अनुमान लगाया जा सकता है। रात्रि में नक्षत्रों के आधार पर समय भी ज्ञात किया जा सकता है। अरब देशों में तो रात्रि में तारों की सहायता से दिशा एवं समय का अनुमान लगाकर मरुस्थल में यात्रा करने का अभ्यास अरब देश वासियों को था।

पंचांगों में प्रतिदिन चन्द्रमा की नक्षत्र-सापेक्ष स्थिति दी हुई रहती है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के नक्षत्र परिवर्तन का संकेत भी यथा स्थान दिया रहता है। यदि आप आकाश में नक्षत्रों की स्थिति का ज्ञान रखते हैं और उन्हें पहचानते हैं तो ग्रहों को आसानी से पहचान सकते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा आकाश में उसी क्षेत्र में भ्रमणरत आपको दिखाई देता है जिसमें पंचांग के अनुसार बताया गया है, तो न केवल चन्द्र स्थिति की पुष्टि होती है वरन् आत्मसंतोष का अनुभव भी होता है। तथ्यों को केवल रटने के बजाय उन्हें व्यावहारिक रूप से देख भी लिया जाए तो वह ज्ञान स्थायी होता है। इसी उद्देश्य से प्रत्येक ज्योतिर्विद को रात्रि में थोड़ी देर नियमित रूप से आकाश को निहारने की आदत डालनी चाहिए।

यदि हम रात्रि में उत्तर की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं तो हमें आकाश में पश्चिम से पूर्व की ओर राशियां व नक्षत्र आरोही क्रम में फैले हुए दिखाई देंगे। ये नक्षत्र और राशियां पृथ्वी की दैनिक गति के कारण पूर्व में आरोही क्रम में उदय होकर पश्चिम में अस्त होते दिखाई देते हैं। जो नक्षत्र रात्रि 7 बजे के लगभग पूर्व में उदय होते हैं वे 11-12 बजे सिर पर दिखाई देते हैं तथा प्रातः 5-6 बजे पश्चिम में लटक जाते हैं। तब तक इनसे अगले नक्षत्र पूर्व से उदय होकर आते रहते हैं। यह क्रम अनवरत चलता रहता है।

पृथ्वी की वार्षिक गति के कारण अलग-अलग माहों में अलग-अलग नक्षत्रों की प्रातः उदय होने की बारी आ जाती है। इसीलिए भिन्न-भिन्न माहों में भिन्न-भिन्न नक्षत्र आकाश में शिरो बिन्दु (सिर) पर दिखाई देते हैं।

आकाश में नक्षत्रों की स्थिति जानने के लिए नक्षत्रों की अक्षांशीय व देशान्तरीय स्थिति तथा नक्षत्रों की आकृति का ज्ञान आवश्यक है। नक्षत्रों की अक्षांशीय व देशान्तरीय स्थिति संलग्न तालिका में दी गई है। देशांतरीय स्थिति अश्विनी के प्रथम बिन्दु से दी गई है परन्तु अक्षांशीय स्थिति दो प्रकार से दी गई है—क्रान्तिवृत्त से तथा विषुवत रेखा से।

नक्षत्र—वास्तविक निरयन देशान्तर, क्रान्तिवृत्त तथा विषुवत रेखा से कोणात्मक दूरी

क्र० सं०	नाम नक्षत्र	पाश्चात्य नाम	निरयन देशान्तरीय विस्तार (गणितीय) से			तक			वास्तविक निरयन देशान्तर				क्रान्तिवृत्त से कोणात्मक दूरी (अक्षांश) उत्तर (+) दक्षिण (–)			विषुवत रेखा से दूरी (अक्षांश) उत्तर (+) दक्षिण (–)		
			राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
1.	अश्विनी	Beta Arietis	0	0	0	0	13	20	0	10	6	47	+ 8	29	14	+ 20	47	36
2.	भरणी	41 Arietis	0	13	20	0	26	40	0	24	20	47	+ 10	26	58	+ 27	14	56
3.	कृतिका	Eta Alcyone	0	26	40	1	10	0	1	6	8	7	+ 4	3	2	+ 24	5	46
4.	रोहिणी	Alpha Tauri Aldebaran	1	10	0	1	23	20	1	15	55	56	– 5	28	3	+ 16	30	12
5.	मृगशिर	Lambda orionis	1	23	20	2	6	40	1	29	50	59	– 13	22	12	+ 9	55	56
6.	आर्द्रा	Alpha orionis Betelguese	2	6	40	2	20	0	2	4	53	51	– 16	1	39	+ 7	24	24
7.	पुनर्वसु	Beta Pollux	2	20	0	3	3	20	2	29	21	33	+ 6	41	2	+ 28	2	1
8.	पुष्य	Delta Cancri	3	3	20	3	16	40	3	14	51	54	+ 0	4	37	+ 18	9	56
9.	आश्लेषा	Ipsilon Hydra	3	16	40	4	0	0	3	18	29	18	– 11	6	16	+ 6	25	48

नक्षत्र—वास्तविक निरयन देशान्तर, क्रान्तिवृत्त तथा विषुवत रेखा से कोणात्मक दूरी

क्र० सं०	नाम नक्षत्र	पाश्चात्य नाम	निरयन देशान्तरीय विस्तार (गणितीय) से			निरयन देशान्तरीय विस्तार (गणितीय) तक			वास्तविक निरयन देशान्तर				क्रान्तिवृत्त से कोणात्मक दूरी (अक्षांश) उत्तर (+) दक्षिण (–)			विषुवत रेखा से दूरी (अक्षांश) उत्तर (+) दक्षिण (-)		
			राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	राशि	अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
10.	मघा	Alpha Regulus	4	0	0	4	13	20	4	5	58	21	+ 0	27	53	+ 11	58	55
11.	पू० फाल्गुनी	Delta Leonis	4	13	20	4	26	40	4	17	27	33	+ 14	20	0	+ 20	32	25
12.	उ० फाल्गुनी	Beta Leonis Denebola	4	26	40	5	10	0	4	27	45	39	+ 12	16	1	+ 14	35	20
13.	हस्त	Delta Corvi	5	10	0	5	23	20	5	19	35	42	–12	11	46	– 16	29	56
14.	चित्रा	Alpha Virginis Spica	5	23	20	6	6	40	5	29	59	4	– 2	3	15	– 11	8	45
15.	स्वाति	Alpha Arcturus	6	6	40	6	20	0	6	6	22	36	+ 30	44	20	+ 19	11	53
16.	विशाखा	Alpha Libra	6	20	0	7	3	20	6	21	13	32	+ 0	20	0	–16	1	46
17.	अनुराधा	Delta Scorpii	7	3	20	7	16	40	7	8	42	51	– 1	59	8	– 22	36	48
18.	ज्येष्ठा	Alpha Antares	7	16	40	8	0	0	7	15	54	18	– 4	34	10	– 26	25	31

आकाशीय मानचित्र—आकाश में नक्षत्रों व राशियों का समग्र दिग्दर्शन कराने के उद्देश्य से आकाश का नक्षत्रीय मानचित्र (पृष्ठ 52-53 पर) दिया जा रहा है। इस मानचित्र का अध्ययन करने से पूर्व कतिपय निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है ताकि मानचित्र का आनन्द प्राप्त हो सके।

1. प्रत्येक पृष्ठ में 6 राशियां तथा 14 नक्षत्रों को चित्रित किया गया है।
2. प्रथम मानचित्र में 21 मार्च से 23 सितम्बर अर्थात् उत्तरी गोलार्द्धीय सूर्य की राशियों व नक्षत्रों को दर्शाया गया है जबकि दूसरे मानचित्र में 23 सितम्बर से 21 मार्च तक अर्थात् दक्षिणी गोलार्द्धीय सूर्य की राशियों व नक्षत्रों को।
3. मानचित्रों में सायन व निरयन दोनों प्रकार की राशियों का विस्तार बताया गया है। ऊपर के कालमों में सायन राशियों का विस्तार तथा सायन सूर्य-संक्रान्तियों की अनुमानित तारीखें दी गई हैं जबकि नीचे के कालमों में निरयन राशियों का विस्तार तथा निरयन सूर्य संक्रान्तियों की अनुमानित तारीखें।

   जैसे ऊपर के कालम में 21 मार्च 0/0 मेष लिखा है। इसका अर्थ है सायन सूर्य 21 मार्च को 0 राशि 0 अंश (मेष) में प्रवेश करता है तथा 21 अप्रैल 1/0 तक रहता है। नीचे के कालम में 14 अप्रैल 0/0 मेष लिखा है। इसका अर्थ है निरयन सूर्य 14 अप्रैल को 0 राशि 0 अंश (मेष) में प्रवेश करता है तथा 15 मई 1/0 तक मेष में रहता है।
4. मानचित्रों में पूर्व पश्चिम दिशाएं विपरीत लिखी गई हैं। मानचित्र को देखने के लिए उत्तर या दक्षिण की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं तथा मानचित्र को आकाश की भांति अपने सिर पर तान लें। फिर मानचित्र को इस प्रकार घुमाएं कि मानचित्र की दिशाएं वास्तविक दिशाओं से मेल खा जाएं। आपको आकाश में राशियां व नक्षत्र इसी क्रम व व्यवस्था में दिखाई देंगे।
5. प्रत्येक राशि के कालम में माहों के नाम लिखे गए हैं। ऊपर की ओर लिखे माहों में आकाश की यह स्थिति रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दिखाई देगी। नीचे की ओर लिखे माहों में ये नक्षत्र और राशियां प्रातः पूर्व में उदय होंगे। जैसे निरयन मिथुन राशि में नीचे जून लिखा है अर्थात् जून में मिथुन राशि व उसके नक्षत्र प्रातः पूर्व में उदय होंगे। जबकि उसी कालम में ऊपर फरवरी लिखा है अर्थात् फरवरी माह में मिथुन राशि व इसके नक्षत्र रात्रि में 9-10 बजे सिर पर दिखाई देंगे।
6. सूर्य क्रान्तिपथ तिर्यक आकृति का है। 21 मार्च को विषुवत रेखा से प्रारम्भ होकर 21 जून को अधिकतम झुकाव 23°26′ उत्तरी होता है। 21 जून से झुकाव कम होता जाता है तथा 23 सितम्बर को पुनः विषुवत रेखा पर शून्य हो जाता है। 23 सितम्बर से दक्षिण की ओर झुकाव बढ़ता है जो 23 दिसम्बर

को अधिकतम 23°26′ दक्षिणी हो जाता है। 23 दिसम्बर से झुकाव कम होता है तथा पुनः 21 मार्च को विषुवत रेखा (शून्य) पर पहुंच जाता है। बीच की प्रत्येक सायन संक्रान्ति पर सूर्य का झुकाव (सूर्य क्रान्त्यंश) क्रान्तिपथ पर लिख दिया गया है।

7. यह मानचित्र लगभग 20° से 30° उत्तरी अक्षांश के मध्य से देखने के लिए उपयोगी है। अधिक उत्तर से देखने पर दक्षिण के तारे नहीं दिखाई देते। इसीलिए यह मानचित्र उत्तर में 50° तथा दक्षिण में 40 अंश तक बनाया गया है।

8. आकाश के सभी तारे समान प्रकाशमान नहीं हैं। तारे अधिक प्रकाशमान होते हुए भी अत्यधिक दूर होने से छोटे तथा कम प्रकाशमान होते हुए भी अपेक्षाकृत निकट होने से अधिक चमकदार दिखाई देते हैं। तारे जैसे पृथ्वी से दिखाई देते हैं (दृश्य कान्तिमान) उसी आधार पर इनका आकार मानचित्र में दर्शाया गया है।

कान्ति के आधार पर तारों का वर्गीकरण—खगोलशास्त्र में चमक (कान्ति) के आधार पर तारों को वर्गीकृत किया गया है तथा चमक के घटते क्रम में प्रत्येक तारे को यूनानी भाषा की वर्णमाला का एक अक्षर (वर्ण) आवंटित किया गया है। किसी भी तारे के पहले उक्त वर्ण को लगाने से उस तारे की चमक का आभास हो जाता है। यूनानी वर्णमाला के वर्ण तथा उनकी लिपि (चिन्ह) निम्नानुसार हैं।

(*i*) अल्फा Alpha α (*ii*) बीटा Beta β (*iii*) गामा Gamma γ (*iv*) डेल्टा Delta δ (*v*) इप्सिलोन Epsilon *e* (*vi*) जीटा Zeta χ (*vii*) इटा Eta η (*viii*) थीटा Theta θ (*ix*) आयोटा Iota *i* (*x*) काप्पा Kappa *k* (*xi*) लाम्बडा Lambda λ आदि।

पिछली तालिका में नक्षत्र सूची में इन्हीं वर्णों का प्रयोग किया गया है—जैसे अल्फा वर्जिनिस (चित्रा), बीटा एरिटीज (अश्विनी), डेल्टा स्कॉर्पी (अनुराधा) आदि।

नक्षत्रों की पहचान—आकाश का समग्र मानचित्र प्रस्तुत करने के पश्चात् प्रत्येक नक्षत्र-समूह का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। साथ में जो रेखाचित्र दिए गए हैं वे स्थिति चित्र हैं। **इन्हें उल्टा करके नहीं देखना है। इसमें पूर्व व पश्चिम दिशाएं सही स्थान पर हैं।**

सप्तर्षि मण्डल एवं ध्रुव तारा—रात्रि में ध्रुव तारा दिशा-ज्ञान का सर्वोत्तम उपकरण है। ध्रुव तारे की ओर मुंह करके खड़े होने से सामने उत्तर, पीठ की ओर दक्षिण, दाएं हाथ की ओर पूर्व तथा बाएं हाथ की ओर पश्चिम होता है। अतः सर्वप्रथम सप्तर्षि मण्डल व ध्रुव तारे को पहचानना आवश्यक है।

पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर अपनी धुरी पर घूमती है जिससे सभी नक्षत्र एवं ग्रह पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होते दिखाई देते हैं। अस्त होने के पश्चात् सभी नक्षत्र, सूर्य एवं ग्रह पृथ्वी की आड़ (दूसरी ओर) में चले जाने के कारण दिखाई

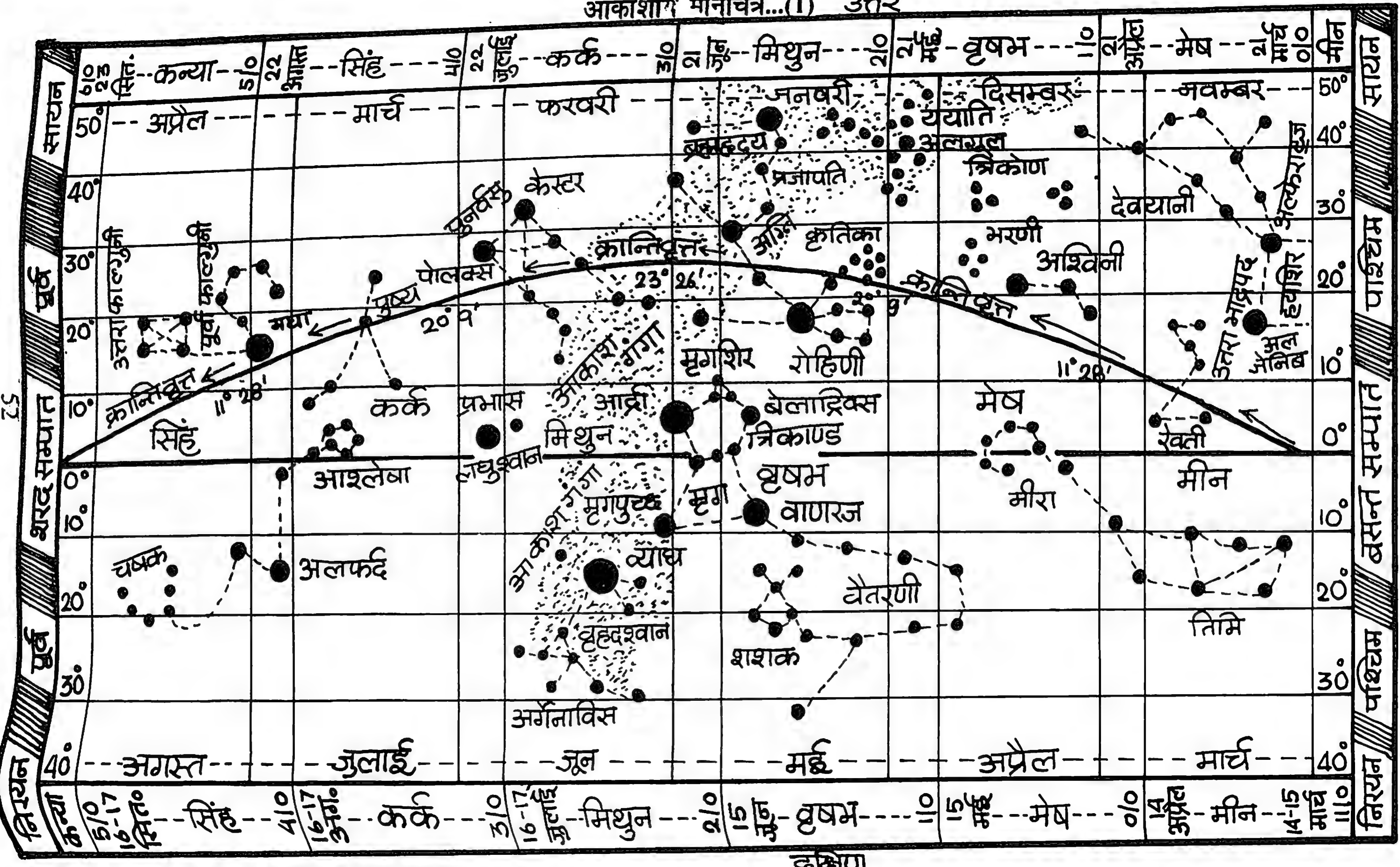
नहीं देते। परन्तु जो तारा पृथ्वी की धुरी की नोक की सीध में है वह पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता दिखाई नहीं देता। ऐसा तारा ध्रुव तारा है। ध्रुव तारा (Polar Star) पृथ्वी की धुरी की नोक की सीध में है अर्थात् उत्तरी ध्रुव पर लम्बवत (90 अंश) चमकता है। उत्तरी ध्रुव का अक्षांश भी 90 अंश ही है। किसी भी स्थान का अक्षांश उत्तरी गोलार्द्ध में रात्रि में ध्रुव तारे की सहायता से नापा जा सकता है। जिस स्थान के धरातल के साथ ध्रुव तारा जितने अंश का कोण बनाते हुए दिखाई देता है वही उस स्थान का अक्षांश होता है। विषुवत रेखा से ध्रुव तारा शून्य अंश का कोण बनाता है। दक्षिणी गोलार्द्ध से यह नहीं दिखाई देता।

लघु सप्तर्षि मण्डल—ध्रुव तारा जिस तारामण्डल का सदस्य है वह सात तारों का लघु सप्तर्षि मण्डल (Little Bear) है। इसका आकार भालू या ऋक्ष (रीछ) के समान माना गया है। इसमें 4 तारे रीछ का शरीर (आयत) बनाते हैं तथा शेष तीन तारे पूंछ। ध्रुव तारा पूंछ का अन्तिम तारा है। लघु सप्तर्षि मण्डल के शेष छह तारे (ध्रुव तारे को छोड़कर) घड़ी के चालन के विपरीत (पूर्व से पश्चिम) ध्रुव तारे की परिक्रमा करते दिखाई देते हैं।

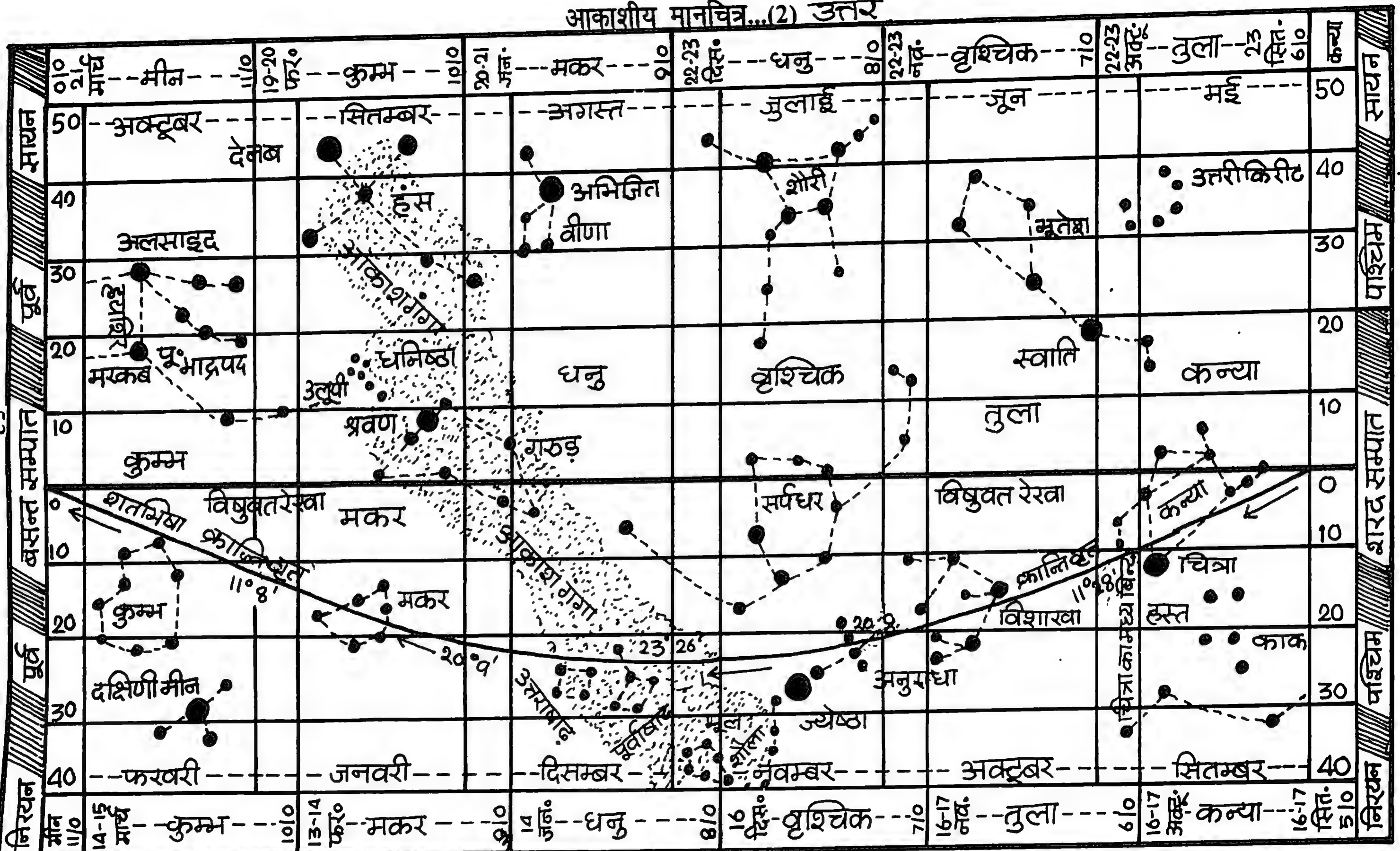
वृहद सप्तर्षि मण्डल—सात तारों का एक और बड़ा समूह है जिसकी आकृति भी लघु सप्तर्षि जैसी ही है। इसे वृहद् सप्तर्षि मण्डल या सप्तर्षि मण्डल (Great Bear) कहा जाता है। इसकी आकृति अपेक्षाकृत बड़े भालू जैसी है। प्राचीन काल में ऋक्ष का अर्थ ऋषि भी था, अतः इस सप्तर्षि मण्डल के तारों के नाम महान प्राचीन ऋषियों के नाम पर रखे गए हैं--यथा क्रतु, पुलह, पुलत्स्य, अत्रि, अंगिरस, वशिष्ठ एवं मरीचि। वशिष्ठ तारे के अत्यन्त निकट (केवल 25.5 खरब किलोमीटर) एक छोटी तारिका है जिसे वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धति का नाम दिया गया है। विवाह के समय वशिष्ट एवं अरुन्धति का जोड़ा वर-वधू को दिखाया जाता है जिससे दाम्पत्य जीवन शुभ हो। वशिष्ठ एवं अरुन्धति का स्पष्ट दिखाई देना उत्तम दृष्टि का परिचायक भी है।

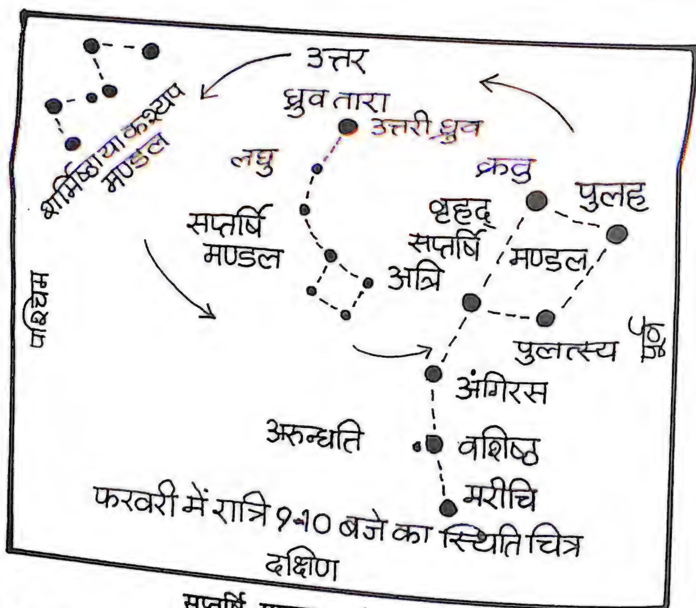
प्रथम चार तारे मिलकर एक समलम्ब चतुर्भुज (रीछ का शरीर) बनाते हैं तथा शेष तीन तारे पूंछ बनाते हैं। पुलह से क्रतु को मिलाने वाली रेखा को यदि आगे बढ़ाया जाए तो वह ध्रुव तारे पर पहुंचेगी। इसी की सहायता से हम ध्रुव तारे को पहचानते हैं।

आकाशीय मानचित्र...(1) उत्तर



आकाशीय मानचित्र...(2) उत्तर





सप्तर्षि मण्डल एवं ध्रुव तारा

दोनों सप्तर्षि मण्डल ध्रुव तारे की परिक्रमा पूर्व से पश्चिम की ओर करते हैं। हम जब ध्रुव तारे की ओर देखते हैं तो ध्रुव तारे के नीचे का आकाश दिखाई देता है। वह आकाश हमसे विपरीत गोलार्द्ध का आकाश है इसीलिए दोनों सप्तर्षि मण्डल दूसरे गोलार्द्ध में चले जाने के बाद भी नहीं छिपते। परन्तु सप्तर्षि मण्डल कभी सीधा, कभी उल्टा, कभी आड़ा तो कभी तिरछा दिखाई देता है। मई-जून में सप्तर्षि मण्डल रात्रि 9-10 बजे ध्रुव तारे के ऊपर (हमारी ओर) दिखाई देता है परन्तु उत्तरी अक्षांशों में जाने पर नवम्बर-दिसम्बर में भी यह ध्रुव तारे से नीचे (दूसरी ओर) दिखाई दे सकता है। परन्तु वहां हमें ऐसा लगता है कि यह पश्चिम से पूर्व की ओर जा रहा है। ऐसा वास्तव में होता नहीं। दूसरे गोलार्द्ध के कारण हमें ऐसा लगता है।

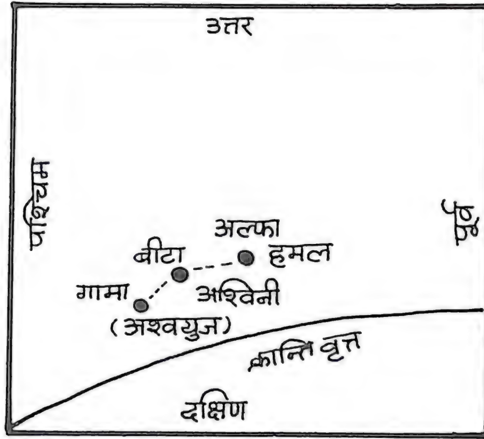
ध्रुव तारे के एक ओर सप्तर्षि मण्डल है तो दूसरी ओर शर्मिष्ठा या कश्यप मण्डल (Cassiopia) है। जिसकी आकृति W या M जैसी है। ये दोनों मण्डल ध्रुव तारे की परिक्रमा करते दिखाई देते हैं। फरवरी में रात्रि 9-10 बजे सप्तर्षि मण्डल ध्रुव तारे के पूर्व में तथा शर्मिष्ठा पश्चिम में दिखाई देता है जबकि अगस्त में उसी समय शर्मिष्ठा पूर्व में तथा सप्तर्षि पश्चिम में हो जाते हैं।

हम ध्रुव तारे को ठीक पृथ्वी की धुरी की नोक की सीध में मानते हैं परन्तु वास्तव में यह उत्तरी ध्रुव से 1 अंश दूर है, जिससे यह भी प्रतिदिन एक छोटा सा वृत्त बनाता है जो हमें दिखाई नहीं देता। ध्रुव के विषय में यह भी ध्रुव सत्य है कि यह अपना स्थान बदलता रहता है। लगभग 2000 वर्ष से ही इस तारे को ध्रुव तारा माना जा रहा है, इससे पहले कोई दूसरा ही तारा ध्रुव तारा था। अयन चलन के कारण ध्रुव तारा भी 26000 वर्ष में एक वृत्त बनाता है। आज से 13000 वर्ष पूर्व जो ध्रुव तारा था वह यह

तारा नहीं है और अगले 13000 वर्ष बाद कोई दूसरा ही तारा ध्रुव तारा बनने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। खैर, कुछ भी हो, जो तारा पृथ्वी की धुरी की नोक की सीध में होगा उसी को हम ध्रुव तारा कहेंगे।

नक्षत्र विवरण

1. **अश्विनी (Beta Arietis)**—गणितीय विस्तार 0 राशि 0 कला से 0 राशि 13 अंश 20 कला तक, वास्तविक रेखांश 0 राशि 10 अंश 6 कला 47 विकला। क्रान्तिवृत्त से 8 अंश 29 कला 14 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 20 अंश 47 कला 36 विकला उत्तर।



अश्विनी नक्षत्र

अश्विनी नक्षत्र तीन तारों से मिलकर बना है। इसकी आकृति अश्वमुख की भांति है। उत्तर पूर्व का अल्फा तारा हमल है परन्तु अश्विनी नक्षत्र का प्रमुख योग तारा मध्य का बीटा तारा है। प्राचीन काल में बीटा व गामा तारों को 'अश्वयुज' नाम दिया गया था। इन तारों का प्रातः पूर्व में उदय अप्रैल माह के मध्य में होता है। दिसम्बर माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य ये तारे शिरो बिन्दु पर दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 13-14 अप्रैल को अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करता है। सम्पूर्ण अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में है। आश्विन मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र में रहता है। इस नक्षत्र का स्वामी केतू है।

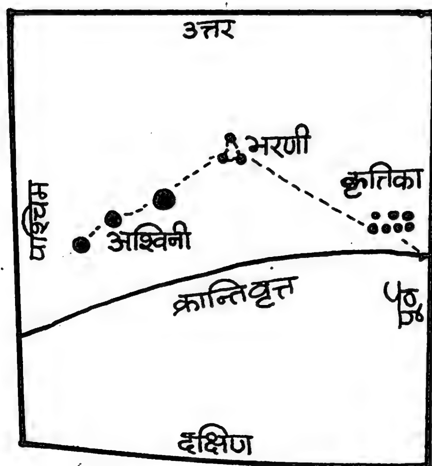
2. **भरणी (41 Arietis)**—गणितीय विस्तार 0 राशि 13 अंश 20 कला से 0 राशि 26 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 0 राशि 24 अंश 20 कला 47 विकला। क्रान्तिवृत्त से 10 अंश 26 कला 58 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 27 अंश 14 कला 56 विकला उत्तर।

भरणी नक्षत्र में भी तीन तारे हैं जो एक छोटा संकरा त्रिभुज बनाते हैं। इसकी आकृति योनि (भग) के समान मानी गई है। कुछ विद्वान भरणी नक्षत्र की आकृति मक्षिका (Musca) के समान मानते हैं। इस नक्षत्र के तीन तारे खगोल शास्त्र में एरीटीज 41,

39 व 35 क्रमांक के तारे कहलाते हैं। मन्द कान्ति होने से भरणी नक्षत्र के तारे धुंधले दिखाई देते हैं। इन तारों का उदय अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में प्रातः पूर्व में होता है। ये तारे दिसम्बर माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य अश्विनी नक्षत्र के उत्तर-पूर्व में धुंधले दिखाई देते हैं। सम्पूर्ण भरणी नक्षत्र मेष राशि में है। निरयन सूर्य 27-28 अप्रैल को भरणी नक्षत्र में प्रवेश करता है। भरणी नक्षत्र का स्वामी शुक्र है। *चित्र कृतिका के साथ देखें*।

3. कृतिका (Eta Tauri or Alcyone or Pleaides)—गणितीय विस्तार 0 राशि 26 अंश 40 कला से 1 राशि 10 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 1 राशि 6 अंश 8 कला 7 विकला। क्रान्तिवृत्त से 4 अंश 3 कला 2 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 24 अंश 5 कला 46 कला उत्तर।

कृतिका नक्षत्र 7 तारों का एक झुण्ड है। किसान इस कृतिका पुंज से भली-भांति परिचित हैं। बोलचाल की भाषा में इसे 'कचरिया' अथवा 'कचर-पचर का झुमका' कहते हैं। रात्रि में कृषि कार्य करते समय किसान इसी पुंज से समय का अनुमान लगाते हैं। प्राचीन विद्वान इसकी आकृति क्षुर के समान या छुरे के समान मानते हैं। कुछ विद्वान इसे धोबी का धौना (मोगरा) भी मानते हैं। जबकि वास्तव में यह अंगूरों का गुच्छा प्रतीत होता है। कृतिका नक्षत्र का प्रथम चरण मेष तथा शेष तीन चरण वृष राशि में हैं। कृतिका नक्षत्र पूर्व में मई के द्वितीय सप्ताह में प्रातः उदय होता है तथा दिसम्बर-जनवरी में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर दिखाई देता है। निरयन सूर्य 9-10 मई को कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करता है। वैदिक काल में कृतिका प्रथम नक्षत्र था। कार्तिक मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में रहता है।

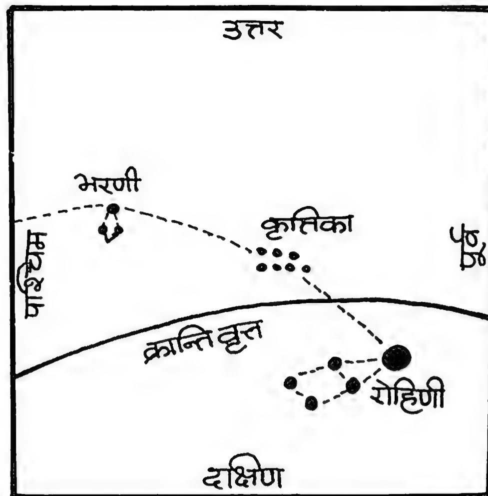


भरणी व कृतिका नक्षत्र

4. रोहिणी (Alpha Tauri or Aldebaran)—गणितीय विस्तार 1 राशि 10

अंश 0 कला से 1 राशि 23 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 1 राशि 15 अंश 55 कला 56 विकला। क्रान्तिवृत्त से 5 अंश 28 कला 3 विकला दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से 16 अंश 30 कला 12 विकला उत्तर। अर्थात् विषुवत रेखा व क्रान्तिवृत्त के मध्य में स्थित है।

अश्विनी, भरणी, कृतिका व रोहिणी को एक रेखा द्वारा मिलाया जाए तो एक अर्द्धवृत्त बन जाता है। रोहिणी आकाश के सर्वाधिक 20 चमकीले तारों में से एक है। रोहिणी का रंग लाल सुर्ख है। इस नक्षत्र में रोहिणी के अतिरिक्त चार तारे इसके पश्चिम और हैं। ये पांचों तारे मिलकर रथ या बैलगाड़ी की आकृति बनाते हैं जिसके जूड़े पर रोहिणी नक्षत्र है।



रोहिणी नक्षत्र

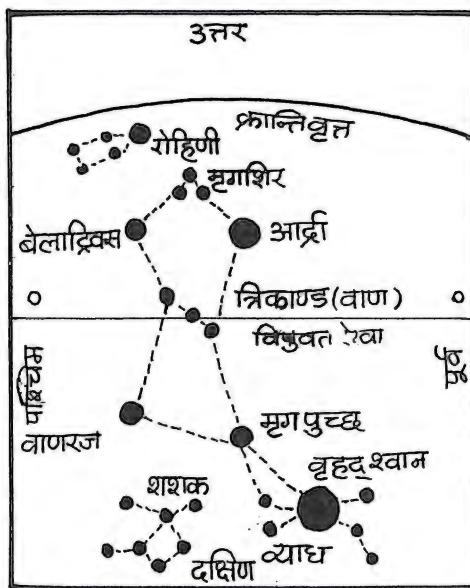
रोहिणी नक्षत्र के तारे पूर्व दिशा में प्रातः मई माह में उदय होते हैं तथा जनवरी माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आते हैं। निरयन सूर्य रोहिणी नक्षत्र में 24 मई को प्रवेश करता है। सम्पूर्ण रोहिणी नक्षत्र वृषभ राशि में है। रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्रमा है।

5. **मृगशिर (Lambda Orionis or Head of Orion)**—गणितीय विस्तार 1 राशि 23 अंश 20 कला से 2 राशि 6 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 1 राशि 29 अंश 50 कला 59 विकला। क्रान्तिवृत्त से 13 अंश 22 कला 12 विकला दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से 9 अंश 55 कला 56 विकला अर्थात् क्रान्तिवृत्त व विषुवत रेखा के मध्य।

मृगशिर नक्षत्र मृग मण्डल (Orion) का ऊपरी भाग है जिसमें तीन मन्द कान्ति तारे हैं जो एक छोटा त्रिभुज बनाते हैं। यह त्रिभुज मृग के सिर का प्रतिनिधित्व करता है। मृगशिर से दक्षिण-पूर्व में आर्द्रा का चमकदार तारा, उतनी दूर दक्षिण-पश्चिम में मृग मण्डल का बेलाट्रिक्स तारा तथा उत्तर-पश्चिम में रोहिणी का लाल तारा स्पष्ट दिखाई

देते हैं। मृगशिर नक्षत्र का पूर्वार्द्ध (दो चरण) वृषभ राशि में तथा उत्तरार्द्ध (अन्तिम दो चरण) मिथुन राशि में हैं। यह नक्षत्र जून के प्रारम्भ में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा जनवरी-फरवरी में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 7 जून को मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करता है। मार्गशीर्ष (अग्रहायन) मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा मृगशिर नक्षत्र में रहता है। इस नक्षत्र का स्वामी मंगल है। *रेखाचित्र आर्द्रा के साथ देखें।*

6. आर्द्रा (Alpha Orionis or Betelguese) गणितीय विस्तार 2 राशि 6 अंश 40 कला से 2 राशि 20 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 2 राशि 4 अंश 53 कला 51 विकला। क्रान्तिवृत्त से 16 अंश 1 कला 39 विकला दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से 7 अंश 24 कला 24 विकला उत्तर। रोहिणी से मृगशिर तक एक रेखा खींच कर दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ाई जाए तो आर्द्रा पर पहुंच जाएगी। आर्द्रा एकल तारा नक्षत्र है जो आकाश के सर्वाधिक 20 चमकीले तारों में से एक है। इसका रंग भी लाल है। वास्तव में आर्द्रा मृग मण्डल का एक सदस्य है। मृग मण्डल को 'हिरणी' भी कहा जाता है। मृग मण्डल में चार चमकीले तारे एक आयत बनाते हैं। उत्तरी-पूर्वी तारा आर्द्रा, उत्तरी-पश्चिमी बेलाट्रिक्स, दक्षिणी-पश्चिमी राइगेल (वाणरज) तथा दक्षिणी-पूर्वी तारा मृगपुच्छ है। बीच में तीन तारे बेल्टनुमा हैं जिन्हें त्रिकाण्ड कहा जाता है। ऊपर सिर पर मृगशिर है। सम्पूर्ण आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में है। यह नक्षत्र जून के तृतीय सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा फरवरी माह में रात्रि 9 बजे से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 21 जून को आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है।

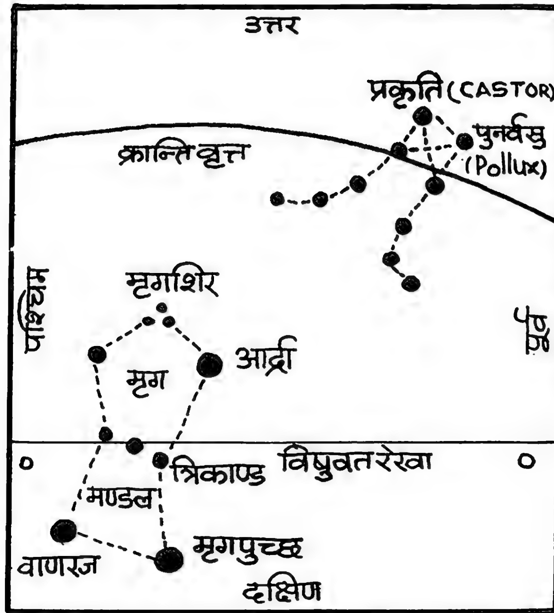


मृगशिर एवं आर्द्रा नक्षत्र

मृगपुच्छ के दक्षिण-पूर्व में आकाश का सर्वाधिक चमकीला तारा व्याध (Sirius) है। बीच का त्रिकाण्ड (वाण) विषुवत रेखा पर है। आर्द्रा नक्षत्र का स्वामी राहू है।

7. **पुनर्वसु (Beta Geminorium or Pollux)**—गणितीय विस्तार 2 राशि 20 अंश 0 कला से 3 राशि 3 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 2 राशि 29 अंश 21 कला 33 विकला। क्रान्तिवृत्त से मुख्य तारा पोलक्स 6 अंश 41 कला 2 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 28 अंश 2 कला 1 विकला उत्तर। मुख्य रूप से दो चमकीले तारे पुनर्वसु (Pollux पुरुष) तथा प्रकृति (Castor) ही इस नक्षत्र को प्रदर्शित करते हैं परन्तु इनके नीचे दो तारे और हैं। ये चारों तारे मिलकर एक भवन (मकान) की आकृति बनाते हैं। उधर मिथुन राशि के दो बच्चों के सिर भी मुख्य दो तारों पर माने गए हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम तीन चरण मिथुन राशि में तथा अन्तिम एक चरण कर्क राशि में है। यह नक्षत्र जुलाई के द्वितीय सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा फरवरी के अन्त में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य इस नक्षत्र में 5 जुलाई को प्रवेश करता है। पुनर्वसु नक्षत्र का स्वामी गुरु है। यह एक शुभ नक्षत्र माना जाता है क्योंकि वैदिक काल में पुनर्वसु का अर्थ पुनः धनी होना था।



पुनर्वसु नक्षत्र

8. **पुष्य (Delta Cancri)**—गणितीय विस्तार 3 राशि 3 अंश 20 कला से 3 राशि 16 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 3 राशि 14 अंश 51 कला 54 विकला। क्रान्तिवृत्त से 0 अंश 4 कला 37 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 18 अंश 9 कला 56 विकला उत्तर।

इस नक्षत्र में तीन तारे हैं जो एक तीर की आकृति बनाते हैं। तीर की नोक का तारा पुष्य है जो लगभग क्रान्तिवृत्त पर है। पुष्य नक्षत्र को ऋग्वेद में 'तिष्य' कहा जाता था, जिसका अर्थ शुभ या मांगलिक है। इस समूह के सभी तारे मन्द कान्ति हैं, अतः धुंधले दिखाई देते हैं। सम्पूर्ण पुष्य नक्षत्र कर्क राशि में है। पुष्य नक्षत्र जुलाई के तृतीय सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा मार्च में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 19 जुलाई को इस नक्षत्र में प्रवेश करता है। पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनि है। पौष माह की पूर्णिमा को चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है। *रेखाचित्र मघा के साथ देखें।*

9. आश्लेषा (Epsilon Hydrae)—गणितीय विस्तार 3 राशि 16 अंश 40 कला से 4 राशि 0 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 3 राशि 18 अंश 29 कला 18 विकला। क्रान्तिवृत्त से 11 अंश 6 कला 16 विकला दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से 6 अंश 25 कला 48 विकला उत्तर। सम्पूर्ण नक्षत्र कर्क राशि में है। आश्लेषा नक्षत्र समूह में 5 तारे हैं। कुछ विद्वान 6 तारे मानते हैं। इनकी आकृति चक्राकार है। वास्तव में ये तारे वासुकि (Hydrae) महाजलसर्प के सिर में माने जाते हैं।

यह नक्षत्र अगस्त के प्रथम सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा मार्च के अन्त में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 2 अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करता है। इस नक्षत्र का स्वामी बुध है। प्रथम तृतीयांश का यह अन्तिम (नवां) नक्षत्र है। आश्लेषा नक्षत्र तथा कर्क राशि साथ-साथ ही समाप्त होते हैं, अतः आश्लेषा नक्षत्र मूल संज्ञक माना जाता है। *रेखाचित्र मघा के साथ देखें।*

10. मघा (Alpha Leonis or Regulus)—गणितीय विस्तार 4 राशि 0 अंश 0 कला से 4 राशि 13 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 4 राशि 5 अंश 58 कला 20 विकला। क्रान्तिवृत्त से 0 अंश 27 कला 53 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 11 अंश 58 कला 55 विकला उत्तर। यह द्वितीय तृतीयांश का प्रथम नक्षत्र है अतः मूल संज्ञक है। मघा का मुख्य योग तारा मघा (Regulus) है जो आकाश के सर्वाधिक 20 चमकीले तारों में से एक है। मघा नक्षत्र समूह में 6 तारे हैं जो उल्टा प्रश्नवाचक चिन्ह या हंसिया या दरांती की आकृति बनाते हैं। दरांती के नीचे दस्ते (मूठ) पर मघा है। यह नक्षत्र अगस्त के मध्य में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा अप्रैल में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर स्पष्ट दिखाई देता है। निरयन सूर्य 16 अगस्त को मघा नक्षत्र में प्रवेश करता है। सम्पूर्ण मघा नक्षत्र सिंह राशि में है। माघ की पूर्णिमा को चन्द्रमा मघा नक्षत्र में रहता है। इस नक्षत्र का स्वामी केतू है। *पुष्य, आश्लेषा व मघा का रेखाचित्र पूर्वा व उत्तरा फाल्गुनी के साथ देखें।*

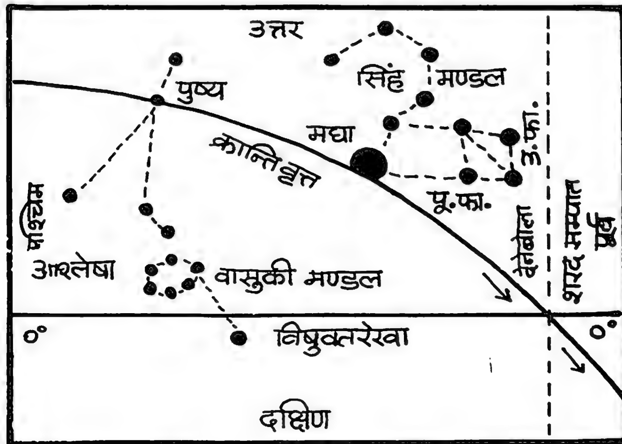
11. पूर्वा फाल्गुनी (Delta Leonis)—गणितीय विस्तार 4 राशि 13 अंश 20 कला से 4 राशि 26 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 4 राशि 17 अंश 27 कला 34 विकला। क्रान्तिवृत्त से 14 अंश 20 कला 0 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 20 अंश 32 कला

25 विकला उत्तर। पूर्वा फाल्गुनी का मुख्य तारा मघा से उत्तर-पूर्व की ओर है परन्तु उसके ठीक नीचे एक तारा और है। ये दोनों तारे इस नक्षत्र में हैं। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र अगस्त के अन्त में पूर्व में प्रातः उदय होता है तथा अप्रैल के अन्त में शिरो बिन्दु पर मघा के साथ दिखाई देता है। निरयन सूर्य 30 अगस्त को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करता है। सम्पूर्ण नक्षत्र सिंह राशि में है। इस नक्षत्र का स्वामी शुक्र है।

12. उत्तरा फाल्गुनी (Beta Leonis or Denebola)—गणितीय विस्तार 4 राशि 26 अंश 40 कला से 5 राशि 10 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 4 राशि 27 अंश 45 कला 39 विकला। क्रान्तिवृत्त से 12 अंश 16 कला 1 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 14 अंश 35 कला 20 विकला उत्तर।

इस नक्षत्र का प्रथम चरण सिंह राशि में तथा अन्तिम तीन चरण कन्या राशि में हैं। देनेवोला के ऊपर भी इसी नक्षत्र का एक तारा है। उत्तरा के दो तथा पूर्वा का नीचे का तारा मिलकर एक समकोण त्रिभुज बनाते हैं परन्तु चारों तारे एक शैया बनाते हैं।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र पूर्व में प्रातः सितम्बर में उदय होता है। निरयन सूर्य 12-13 सितम्बर को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करता है। ये तारे अप्रैल में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आते हैं। इस नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में रहता है। वर्तमान में उत्तरा फाल्गुनी के चतुर्थ चरण के प्रारम्भ में शरद सम्पात होता है।



पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू०फा० एवं उ०फा० नक्षत्र

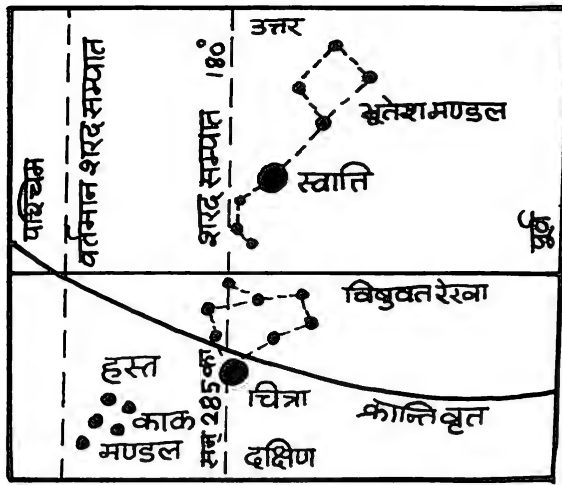
13. हस्त (Delta Corvi)—गणितीय विस्तार 5 राशि 10 अंश 0 कला से 5 राशि 23 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 5 राशि 19 अंश 35 कला 42 विकला। क्रान्तिवृत्त से

12 अंश 11 कला 46 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 16 अंश 29 कला 56 विकला दक्षिण।

हस्त नक्षत्र वास्तव में काक मण्डल (Corvus) का सदस्य है। हस्त नक्षत्र में 5 तारे हैं। ऊपर के चार तारे हथेली तथा नीचे का पांचवां तारा तर्जनी उंगली को प्रदर्शित करते हैं। इसी से इस नक्षत्र समूह का नाम हस्त पड़ा है। सम्पूर्ण हस्त कन्या राशि में है। यह नक्षत्र पूर्व दिशा में प्रातः सितम्बर माह के अन्तिम सप्ताह में उदय होता है तथा मई माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 26 सितम्बर को हस्त नक्षत्र में प्रवेश करता है। यह नक्षत्र दक्षिणी गोलार्द्ध में है, अतः इसे दक्षिण की ओर मुंह करके देखा जा सकता है। इस नक्षत्र का स्वामी चन्द्रमा है। *रेखाचित्र चित्रा-स्वाति के साथ देखें।*

14. चित्रा (Alpha Virginis or Spica)—गणितीय विस्तार 5 राशि 23 अंश 20 कला से 6 राशि 6 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 5 राशि 29 अंश 59 कला 4 विकला। क्रान्तिवृत्त से 2 अंश 3 कला 15 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 11 अंश 8 कला 45 विकला दक्षिण। चित्रा नक्षत्र के प्रथम दो चरण कन्या में तथा अन्तिम दो चरण तुला राशि में हैं। यह नक्षत्र अश्विनी से गिनने पर भचक्र के मध्य में स्थित है, जिससे इसे संतुलन का नक्षत्र कह सकते हैं। चित्रा एकल नक्षत्र है। यह आकाश के सर्वाधिक 20 चमकदार तारों में से एक है। इसका रंग श्वेत है। यह नक्षत्र पूर्वी क्षितिज पर प्रातः अक्टूबर के मध्य में उदय होता है। निरयन सूर्य 10-11 अक्टूबर को चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है तथा 16-17 अक्टूबर को दो चरण पार करने पर दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रवेश कर जाता है। उस समय सूर्य वास्तविक चित्रा नक्षत्र की सीध में आ जाता है। यह नक्षत्र मई माह के अन्त में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर आ जाता है। चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में चैत्र की पूर्णिमा को रहता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। *रेखाचित्र स्वाति के साथ देखें।*

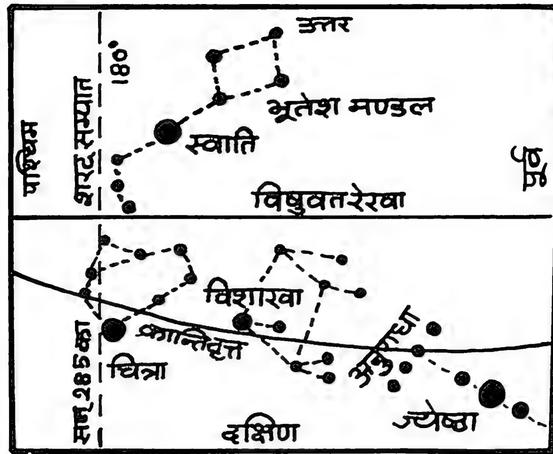
15. स्वाति (Alpha Bootes or Arcturus)—गणितीय विस्तार 6 अंश 40 कला से 6 राशि 20 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 6 राशि 6 अंश 22 कला 36 विकला। क्रान्तिवृत्त से 30 अंश 44 कला 18 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 19 अंश 11 कला 53 विकला उत्तर। स्वाति भूतेश तारामण्डल का सदस्य तथा एकल नक्षत्र है। इसका रंग रक्ताभ नारंगी तथा आकृति मणि के समान है। यह आकाश के सर्वाधिक 20 चमकदार तारों में से एक है। स्वाति नक्षत्र अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होता है। निरयन सूर्य 23 अक्टूबर को स्वाति नक्षत्र में प्रवेश करता है तथा मई के अन्त व जून के प्रारम्भ में यह नक्षत्र शिरो बिन्दु पर पहुंच जाता है। चित्रा नक्षत्र को दक्षिण की ओर मुंह करके देखने के पश्चात् उसी स्थान पर पीछे मुड़कर ऊपर स्वाति को देखा जा सकता है। चित्रा और स्वाति की देशान्तरीय दूरी केवल 6 अंश है। सम्पूर्ण स्वाति नक्षत्र तुला राशि में है। इसका स्वामी राहू है।



हस्त, चित्रा एवं स्वाति नक्षत्र

16. विशाखा (Alpha Librae)—गणितीय विस्तार 6 राशि 20 अंश 6 कला से 7 राशि 3 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 6 राशि 21 अंश 13 कला 32 विकला। क्रान्तिवृत्त से 0 अंश 20 कला उत्तर परन्तु विषुवत रेखा से 16 अंश 1 कला 46 विकला दक्षिण। इस प्रकार विशाखा नक्षत्र लगभग क्रान्तिवृत्त पर स्थित है। इस नक्षत्र समूह में मुख्य रूप से 4 तारे हैं जो मिलकर एक आयताकार मेज की भांति दिखाई देते हैं। इनके नीचे छोटे-छोटे अन्य चार तारों को मिलाकर तराजू जैसी आकृति दिखाई देती है। ये तारे अधिक चमकीले नहीं हैं परन्तु वृश्चिक राशि के बिच्छू के मुंह के ऊपर स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। यह नक्षत्र नवम्बर के प्रथम सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा जून में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी गोलार्द्ध में शिरो बिन्दु पर आता है। निरयन सूर्य 5 नवम्बर को विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करता है। विशाखा के प्रथम तीन चरण तुला में तथा अन्तिम एक चरण वृश्चिक राशि में है। इसका स्वामी गुरु है। चन्द्रमा वैशाख मास की पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र में रहता है। *रेखाचित्र अनुराधा के साथ देखें।*

17. अनुराधा (Delta Seorpii)—गणितीय विस्तार 7 राशि 3 अंश 20 कला से 7 राशि 16 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 7 राशि 8 अंश 42 कला 51 विकला। क्रान्तिवृत्त से 1 अंश 59 कला 9 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 22 अंश 36 कला 48 विकला दक्षिण। अनुराधा नक्षत्र में 4 तारे हैं जो ऊपर से नीचे एक पंक्ति में हैं। प्राचीन विद्वानों ने इसकी आकृति उबले हुए चावलों के ढेरों (बलि के पिण्डों) के समान बताई है। यह नक्षत्र नवम्बर के तृतीय सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है तथा जुलाई माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य बिच्छू के अन्दर दक्षिणी आकाश में शिरो बिन्दु पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। निरयन सूर्य 19 नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करता है।



विशाखा, अनुराधा एवं ज्येष्ठा नक्षत्र

वास्तव में राशियों के अन्तर्गत वृश्चिक मण्डल की कल्पना की गई है उसमें विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा व मूल नक्षत्रों को सम्मिलित किया जा सकता है। विशाखा के नीचे के दो तारे बिच्छू के नखों में, अनुराधा चेहरे में, ज्येष्ठा हृदय में तथा मूल डंक में है। परन्तु एक राशि में 4 नक्षत्र नहीं हो सकते इसलिए विशाखा का अन्तिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा मिलाकर वृश्चिक राशि बना दी गई तथा मूल नक्षत्र को धनु राशि में सम्मिलित किया गया। इसका स्वामी शनि है।

18. ज्येष्ठा (Alpha Scorpii or Antares)—गणितीय विस्तार 7 राशि 16 अंश 40 कला से 8 राशि 0 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 7 राशि 15 अंश 54 कला 18 विकला। क्रान्तिवृत्त से 4 अंश 34 कला 10 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 26 अंश 25 कला 31 विकला दक्षिण। वैसे तो ज्येष्ठा एकल नक्षत्र है परन्तु कुछ विद्वान इसके दोनों ओर के दो तारों को मिलाकर तीन तारे मानते हैं। ज्येष्ठा एक अत्यन्त विशालकाय तारा है (सबसे बड़ा अर्थात् ज्येष्ठ)। इसका रंग लाल है। मंगल के समान लाल रंग होने से यूनानी भाषा में एन्टायर्स (एन्ट=प्रतिद्वन्द्वी + आरेस = मंगल) कहा जाता है। ज्येष्ठा का एक हिन्दी नाम मंगलारि (मंगल का शत्रु) भी है। निरयन सूर्य 2 दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करता है। अतः यह नक्षत्र दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होता है तथा जुलाई-अगस्त में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी आकाश में शिरो बिन्दु पर बिच्छू के हृदय में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ज्येष्ठा दूसरे तृतीयांश का अन्तिम (नवां) नक्षत्र है तथा वृश्चिक राशि का भी अन्तिम नक्षत्र है। अतः ज्येष्ठा को भी मूल संज्ञक नक्षत्र माना जाता है। इसका स्वामी बुध है। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में रहता है।

19. मूल (Lambda Sagittarii)—गणितीय विस्तार 8 राशि 0 अंश 0 कला से 8 राशि 13 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 8 राशि 0 अंश 43 कला 43 विकला।

क्रान्तिवृत्त से 13 अंश 47 कला 16 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 37 अंश 6 कला 7 विकला दक्षिण। मूल नक्षत्र में 11 तारे हैं जो बिच्छू की पूंछ बनाते हैं। मूल का मुख्य तारा डंक में है। भारतीय विद्वानों ने इस तारा समूह को सिंहपुच्छ के समान माना है। डंक में स्थित लाम्बडा तारा 'शौला' अत्यन्त उष्ण है जिसका सतही तापमान 30000 अंश सेंटीग्रेड आंका गया है। 'शौला' का अर्थ डंक होता है।

मूल नक्षत्र को वृश्चिक राशि के बजाय धनु राशि में रखा गया है। मूल नक्षत्र दिसम्बर मध्य में पूर्व दिशा में प्रातः उदय होता है तथा अगस्त में रात्रि को 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी आकाश में शिरो बिन्दु पर देखा जा सकता है। पूरा बिच्छू अत्यन्त सुन्दर व स्पष्ट दिखाई देता है। जिसका मुंह उत्तर-पश्चिम तथा पूंछ दक्षिण-पूर्व में है। मूल नक्षत्र का स्वामी केतू है। तृतीय तृतीयांश का प्रथम नक्षत्र होने से उसे मूल संज्ञक नक्षत्र माना जाता है। यह भचक्र का सबसे दक्षिणी नक्षत्र है।

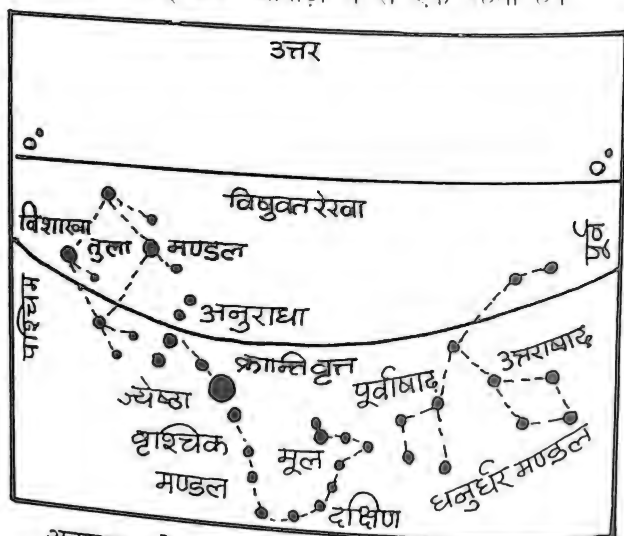
20. पूर्वाषाढ़ (Delta Sagittarri)—गणितीय विस्तार 8 राशि 13 अंश 20 कला से 8 राशि 26 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 8 राशि 10 अंश 43 कला 26 विकला। क्रान्तिवृत्त से 6 अंश 28 कला 18 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 29 अंश 49 कला 47 विकला दक्षिण।

कई प्राचीन विद्वान इसके दो तारे मानते हैं जो गजदन्त की आकृति बनाते हैं परन्तु पूर्वा तथा उत्तराषाढ़ के 4-4 तारे मंजूषा की भांति एक तारे पर लटके दिखाई देते हैं।

पूर्वाषाढ़ के तारे दिसम्बर के अन्त में पूर्वी क्षितिज पर प्रातः उदय होते हैं तथा सितम्बर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी आकाश के शिरो बिन्दु पर बिच्छू से पूर्व में दिखाई देते हैं। आकाशगंगा का केन्द्र दोनों आषाढ़ों के निकट है। निरयन सूर्य 28 दिसम्बर को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करता है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र का स्वामी शुक्र है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा पूर्वा अथवा उत्तराषाढ़ में रहता है।

21. उत्तराषाढ़ (Sigma Sagittarri)—गणितीय विस्तार 8 राशि 26 अंश 40 कला से 9 राशि 10 अंश 0 कला तक, वास्तविक रेखांश 8 राशि 18 अंश 31 कला 41 विकला। क्रान्तिवृत्त से 3 अंश 26 कला 56 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 26 अंश 18 कला 2 विकला दक्षिण। जैसा कि ऊपर बताया गया है पूर्वा तथा उत्तराषाढ़ के 4-4 तारे मंजूषा के रूप में एक तारे के नीचे लटके दिखाई देते हैं। उत्तराषाढ़ नक्षत्र का केवल एक चरण धनु राशि में है। शेष तीन चरण मकर राशि में हैं। ये तारे जनवरी माह के प्रथम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होते हैं तथा सितम्बर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी आकाश में दोनों आषाढ़ शिरो बिन्दु पर दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 10 जनवरी को उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करता है तथा 14 जनवरी को इस नक्षत्र के प्रथम चरण को पार करते ही मकर राशि में प्रवेश कर जाता है, जिसे हम मकर संक्रान्ति कहते हैं। उत्तराषाढ़ नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। कभी-कभी आषाढ़ की पूर्णिमा को चन्द्रमा

उत्तराषाढ़ में रहता है। अर्थात् दोनों आषाढ़ों में से एक रहता है।



अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल पूर्वा एवं उत्तरा आषाढ़ नक्षत्र

28. अभिजित (Alpha Lyrae or Vega)—इस नक्षत्र को सूची में से हटा दिया गया है इसीलिए इसका 28 वां क्रमांक डाला गया है। गणितीय विस्तार 9 राशि 6 अंश 40 कला से 9 राशि 10 अंश 53 कला 20 विकला। प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा इसका विस्तार केवल 4 अंश 13 कला 20 विकला ही माना गया था। इसमें उत्तराषाढ़ का अन्तिम तथा श्रवण का प्रारम्भिक कोणात्मक मान था। अतः इसे उत्तराषाढ़ के पश्चात् मानते थे। वास्तविक रेखांश 8 राशि 21 अंश 27 कला 31 विकला (अभिजित की वास्तविक स्थिति उत्तराषाढ़ से भी पहले है।) क्रान्तिवृत्त से 61 अंश 43 कला 59 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 38 अंश 46 कला 51 विकला उत्तर है।

अभिजित वीणा मण्डल (Lyrae) का एक सदस्य है जो आकाश के सर्वाधिक 20 चमकदार तारों में से एक है। नक्षत्र के रूप में यह एकल नक्षत्र है। यह उत्तरी ध्रुव वृत्त के निकट होने से अपना स्थान अयन चलन् के कारण बदलता रहता है। यह 26000 वर्षों में अयन का एक चक्कर लगाता है। आज से 13000 वर्ष पूर्व यह उत्तरी ध्रुव की सीध में था। अगले 13000 वर्षों में पुनः ध्रुव की सीध में होगा। तब इसका ध्रुव तारा माना जाना सम्भव होगा। ईसा की प्रारम्भिक सदियों में राशियों के आगमन के समय इसे नक्षत्र सूची से हटा दिया गया था। अगस्त माह में सुदूर उत्तरी आकाश में अभिजित शिरो बिन्दु पर दिखाई देता है। यह नक्षत्र 20 जनवरी (मकर संक्रान्ति के 6 दिन बाद) को पूर्वी क्षितिज पर पूर्व में उदय होता है। *रेखाचित्र श्रवण व धनिष्ठा के साथ देखें।*

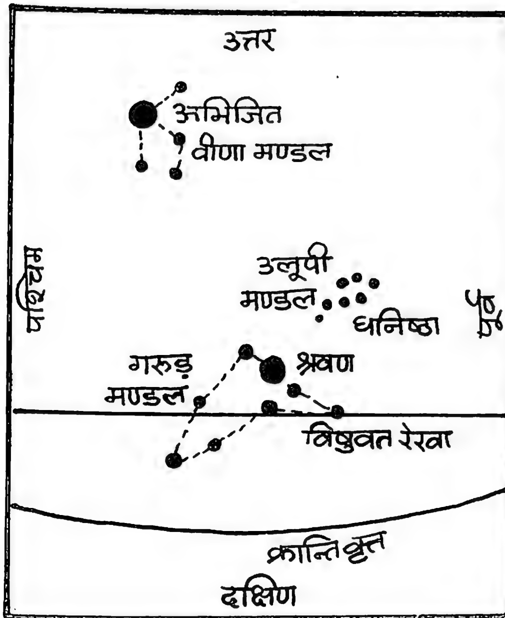
22. श्रवण (Alpha Aquilae or Attair)—गणितीय विस्तार 9 राशि 10 अंश 0 कला से 9 राशि 23 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 9 राशि 7 अंश 55 कला 7 विकला। क्रान्तिवृत्त से 29 अंश 18 कला 13 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 8 अंश 51 कला

37 विकला उत्तर।

वास्तव में श्रवण नक्षत्र गरुड़ तारामण्डल (Aquilae) का सदस्य है। गरुड़ मण्डल का अल्फा श्रवण इस नक्षत्र का प्रमुख तारा है। परन्तु इसके आगे व पीछे के दो बीटा तारे मिलाकर कुल तीन तारे नक्षत्र समूह बनाते हैं। इनकी आकृति त्रिकाण्ड की भांति है जिन्हें वामनावतार के तीन चरण (पद) माना जाता है। ये तीनों तारे पैरों के तलवे में हैं।

सम्पूर्ण श्रवण नक्षत्र मकर राशि में है परन्तु वास्तविक मकर मण्डल में इस राशि का एक भी नक्षत्र स्थित नहीं है। श्रवण नक्षत्र के तारे जनवरी के चतुर्थ सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होते हैं तथा सितम्बर माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य उत्तरी आकाश में शिरो बिन्दु पर दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 24 जनवरी को श्रवण नक्षत्र में प्रवेश करता है। श्रवण नक्षत्र का स्वामी चन्द्रमा है। श्रवण नक्षत्र में चन्द्रमा श्रावण मास की पूर्णिमा को रहता है। *रेखाचित्र धनिष्ठा के साथ देखें।*

23. धनिष्ठा (Beta Delphini) या श्रविष्ठा—गणितीय विस्तार 9 राशि 23 अंश 20 कला से 10 राशि 6 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 9 राशि 22 अंश 29 कला 4 विकला। क्रान्तिवृत्त से 31 अंश 55 कला 7 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 14 अंश 35 कला 5 विकला उत्तर।



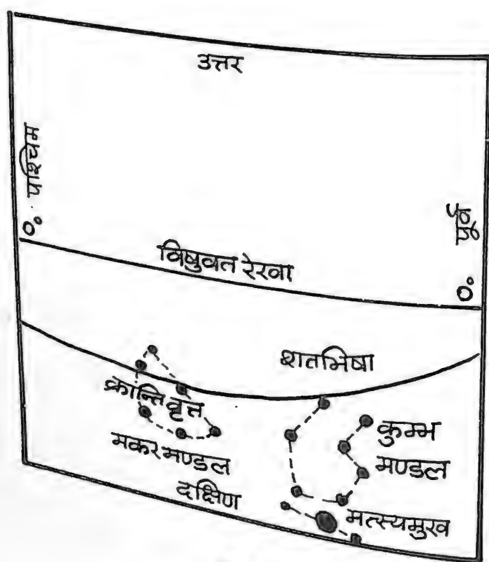
अभिजित, श्रवण एवं धनिष्ठा नक्षत्र

धनिष्ठा नक्षत्र उलूपी (Delphinus) तारामण्डल का सदस्य है जो श्रवण से 15 अंश उत्तर-पूर्व में है। धनिष्ठा नक्षत्र समूह में 5 तारे हैं। कुछ विद्वान 6 तारे मानते हैं। इसकी आकृति हीरे या पतंग के समान मानी जाती है। प्राचीन भारत में धनिष्ठा का नाम श्रविष्ठा था। कुछ विद्वान इसकी आकृति मृदंग के समान मानते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम दो चरण मकर राशि में तथा अन्तिम दो चरण कुम्भ राशि में हैं। ये तारे फरवरी के प्रथम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होते हैं तथा सितम्बर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य उत्तरी आकाश में श्रवण नक्षत्र के साथ ही शिरो बिन्दु पर दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 6 फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करता है। धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल है।

24. शतभिषा या शतभिषक (Lambda Aquarii)—गणितीय विस्तार 9 राशि 6 अंश 40 कला से 9 राशि 20 अंश कला 0 विकला, वास्तविक रेखांश 10 राशि 17 अंश 43 कला 8 विकला। क्रान्तिवृत्त से 0 अंश 23 कला 11 विकला दक्षिण तथा विषुवत रेखा से 7 अंश 35 कला 44 विकला दक्षिण।

शतभिषा नक्षत्र के तारों की संख्या के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसे एकल नक्षत्र मानते हैं तो कुछ विद्वान इस आसपास के कुल 100 तारों (वैधों) को मिलाकर (शत + भिषक्) = शतभिषा मानते हैं। *अथर्ववेद* तथा *तैत्तरीय संहिता* में भी इसे एक ही तारा माना गया है। हो सकता है 'शत' शब्द से कालान्तर में सौ की कल्पना की गई हो। सौ तारे वृत्ताकार रूप में हैं। मन्द कान्ति तारा होने से शतभिषा स्पष्ट दिखाई नहीं देता।



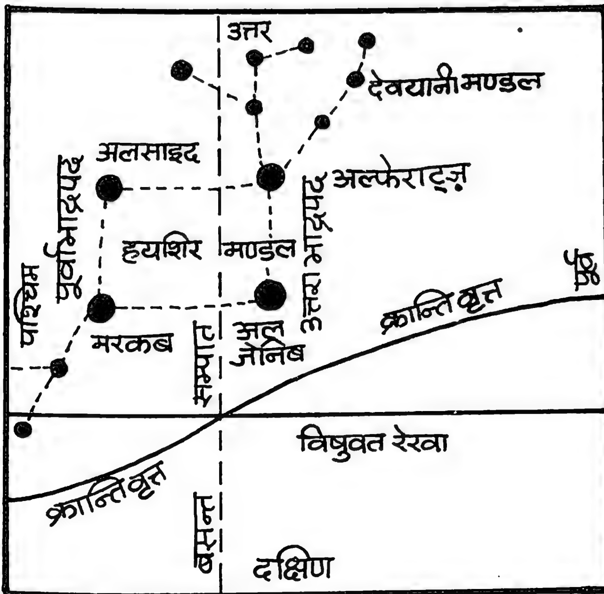
शतभिषा नक्षत्र

शतभिषा नक्षत्र फरवरी के चतुर्थ सप्ताह में प्रातः पूर्व में उदय होता है। निरयन सूर्य 19 फरवरी को शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करता है। यह नक्षत्र अक्टूबर माह में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य दक्षिणी आकाश के शिरो बिन्दु पर आता है। शतभिषा नक्षत्र का स्वामी राहू है। पूरा शतभिषा नक्षत्र कुम्भ राशि में है।

25. पूर्वा भाद्रपद (Alpha Pegasi)—गणितीय विस्तार 10 राशि 20 अंश 0 कला से 11 राशि 3 अंश 20 कला, वास्तविक रेखांश 10 राशि 29 अंश 37 कला 43 विकला। क्रान्तिवृत्त से 19 अंश 24 कला 22 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 15 अंश 11 कला 21 विकला उत्तर। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम तीन चरण कुम्भ राशि में तथा शेष अन्तिम एक चरण मीन राशि में है।

पूर्वाभाद्र के 2 तारे हैं जो उत्तर-दक्षिण हैं। दक्षिण का अल्फा मरकब तथा उत्तर का बीटा अलसाइद है। इन्हीं के पूर्व में दो तारे उत्तरा भाद्रपद के हैं। ये चारों तारे मिलकर एक चौकी (चतुर्भुज) बनाते हैं ये तारे हयशिर (Pegasus) तारामण्डल के सदस्य हैं।

पूर्वा भाद्रपद के तारे मार्च के प्रथम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होते हैं तथा अक्टूबर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य सिर पर चौकी के रूप में स्पष्ट दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 4 मार्च को पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करता है। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु है। भाद्रपद मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा पूर्वा भाद्रपद (कभी-कभी उत्तरा भाद्रपद) नक्षत्र में रहता है।



पूर्वा भाद्रपद एवं उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र

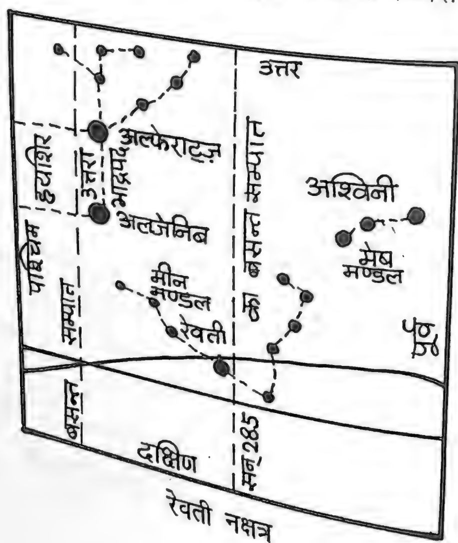
26. उत्तरा भाद्रपद (Gamma Pegasi)—गणितीय विस्तार 11 राशि 3 अंश 20 कला से 11 राशि 16 अंश 40 कला, वास्तविक रेखांश 11 राशि 15 अंश 17 कला 57 विकला। क्रान्तिवृत्त से 12 अंश 36 कला 0 विकला उत्तर तथा विषुवत रेखा से 15 अंश 10 कला 1 विकला उत्तर। पूरा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र मीन राशि में है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है पूर्वा व उत्तरा भाद्रपद के दो-दो तारे मिलकर एक आकर्षक चौकी बनाते हैं। उत्तरा भाद्रपद का नीचे का अलजेनिब गामा तारा इस नक्षत्र का योग तारा है। ऊपर का अल्फाराट्ज देवयानी मण्डल का सदस्य है।

मार्च के तीसरे सप्ताह में उत्तरा भाद्रपद के तारे पूर्व में प्रातः उदय होते हैं तथा अक्टूबर-नवम्बर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य उत्तरी आकाश में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 17 मार्च को इस नक्षत्र में प्रवेश करता है।

वर्तमान में उत्तरा भाद्रपद के द्वितीय चरण में वसन्त सम्पात होता है अर्थात् क्रान्तिवृत्त विषुवत रेखा को काटता है। यह विन्दु अश्विनी के प्रथम विन्दु से लगभग 24 अंश पीछे या 336 अंश (11 राशि 6 अंश) आगे है। इसी विन्दु से सायन सूर्य 21 मार्च को मेष राशि में प्रवेश करता है। परन्तु निरयन पद्धति के अनुसार इसके 24 अंश आगे (24 दिन बाद) 13-14 अप्रैल को अश्विनी के प्रथम विन्दु पर पहुंचता है। तब निरयन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। इस नक्षत्र का स्वामी शनि है। कभी-कभी चन्द्रमा इस नक्षत्र में भी भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन रहता है। *रेखाचित्र पूर्वा भाद्रपद के साथ देखें।*

27. रेवती (Zeta Piscium)—गणितीय विस्तार 11 राशि 16 अंश 40 कला से 0 राशि 0 अंश 0 कला, वास्तविक रेखांश 11 राशि 26 अंश 1 कला 13 विकला। क्रान्तिवृत्त से 0 अंश 12 कला 48 विकला दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से 7 अंश 33 कला 34 विकला उत्तर।



रेवती नक्षत्र

रेवती नक्षत्र समूह .में 32 तारे माने गए हैं जो मृदंग की आकृति बनाते हैं। परन्तु इसका योग तारा क्रान्तिवृत्त के निकट एक मन्द कान्ति तारा है जो धुंधला दिखाई देता है।

रेवती नक्षत्र के तारे अप्रैल के प्रथम सप्ताह में पूर्व में प्रातः उदय होते हैं तथा नवम्बर-दिसम्बर में रात्रि 9 से 11 बजे के मध्य शिरो बिन्दु पर देखे जा सकते हैं। इन तारों से थोड़ा ही उत्तर-पूर्व में अश्विनी के तारे दिखाई देते हैं। निरयन सूर्य 30 मार्च को रेवती नक्षत्र में प्रवेश करता है।

रेवती नक्षत्र का भारतीय ज्योतिष में अधिक महत्व है। इसी नक्षत्र में योग तारे के निकट सन् 285 ई० में बसन्त सम्पात हुआ था। अचल सम्पात के अनुसार यही बसन्त सम्पात का स्थान है। रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध है। तृतीय तृतीयांश का अन्तिम नक्षत्र होने के कारण रेवती नक्षत्र भी मूल संज्ञक नक्षत्र माना जाता है।

आकाशगंगा (Milky way or Galaxy) या मन्दाकिनी—यदि आकाशगंगा को न जाना जाए तो नक्षत्रों का ज्ञान अधूरा रहेगा। रात्रि के समय आकाश में तारों का सघन पट्टा चमकता हुआ दिखाई देता है। यह पट्टा अरबों तारों का समूह है जो उत्तर से दक्षिण की ओर फैला हुआ है। इसकी आकृति दूध की नदी की भांति है इसीलिए इसे दूधिया पथ (Milky Way) कहते हैं। हमारा सूर्य भी इसी दूधिया पथ का एक तुच्छ तारा है। सूर्य 25 करोड़ वर्ष में आकाशगंगा की परिक्रमा करता है। इसके केन्द्र का व्यास 100000 प्रकाश वर्ष है। सूर्य इसके एक सिरे पर है।

आकाशगंगा दिसम्बर से फरवरी तक उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व आकाश के आरपार दिखाई देती है। इन माहों में इसका विस्तार अश्विनी, भरणी नक्षत्रों से रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा नक्षत्रों में होता हुआ बृहद् श्वान के नीचे तक दिखाई देता है। इसी तरह जुलाई से सितम्बर तक उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम आकाश के आरपार दिखाई देती है। इन माहों में आकाशगंगा का विस्तार हंस मण्डल व अभिजित से धनिष्ठा, श्रवण होते हुए उत्तराषाढ़, पूर्वाषाढ़, मूल व ज्येष्ठा तक दिखाई देता है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के निकट इस आकाशगंगा का केन्द्र है, अतः वहां इसमें सघनता अधिक है।

आकाशगंगा की सहायता से हमें नक्षत्रों को पहचानने में सुविधा होती है।

सूर्यक्रान्ति के अनुसार नक्षत्र व्यवस्था—इसी प्रकरण में आकाशीय मानचित्र देखने से स्पष्ट होता है कि प्रथम मानचित्र में 21 मार्च से 23 सितम्बर तक के सूर्यपथ में पड़ने वाले नक्षत्रों का चित्रण किया गया है और द्वितीय मानचित्र में 23 सितम्बर से 21 मार्च तक के सूर्यपथ में पड़ने वाले नक्षत्रों का। प्रथम मानचित्र में सूर्यपथ उत्तरी गोलार्द्ध में (उन्नतोदर) तथा द्वितीय मानचित्र में दक्षिणी गोलार्द्ध में (नतोदर) दर्शाया गया है। नक्षत्रानुसार वर्तमान में उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण (11 राशि 6 अंश) में बसन्त सम्पात हो रहा है तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण (5 राशि 6 अंश) में शरद सम्पात हो रहा है। अतः इसके अनुसार उत्तरा भाद्रपद (III व IV), रेवती, अश्विनी,

भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी व उत्तरा फाल्गुनी (I II III) कुल 13 ½ नक्षत्र उत्तरी गोलार्द्धीय सूर्यपथ के नक्षत्र हैं जो प्रथम मानचित्र में चित्रित किए गए हैं। हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद तथा उत्तरा भाद्रपद (I II) कुल 13 ½ नक्षत्र दक्षिणी गोलार्द्धीय सूर्यपथ के नक्षत्र हैं जो द्वितीय मानचित्र में दर्शाए गए हैं। भारतीय राशि व्यवस्था के अनुसार मीन राशि के 6 अंश (11/6) से कन्या राशि के 6 अंश (5/6) तक उत्तरी गोलार्द्ध की तथा कन्या राशि के 6 अंश (5/6) से मीन राशि के 6 अंश (11/6) तक दक्षिणी गोलार्द्ध की राशियां हैं। मीन राशि के 6 अंश पर सूर्य 21 मार्च को तथा कन्या राशि के 6 अंश पर सूर्य 23 सितम्बर को पहुंचता है।

यदि अयन चलन नहीं होता तो बसन्त सम्पात अश्विनी के प्रथम बिन्दु (0/0) पर 21 मार्च को होता तथा उत्तरी गोलार्द्ध के नक्षत्र अश्विनी से चित्रा (मध्य) तक होते। इसी प्रकार शरद सम्पात चित्रा के मध्य बिन्दु (6/0) पर होता तथा दक्षिणी गोलार्द्ध के नक्षत्र चित्रा (मध्य) से अश्विनी प्रथम बिन्दु तक होते।

उत्तरायन व दक्षिणायन के अनुसार नक्षत्र व्यवस्था—निरयन पद्धति के अनुसार जब 21 जून को सूर्य वर्तमान में आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, सूर्य दक्षिणायन हो जाता है। सायन पद्धति के अनुसार 21 जून को कर्क राशि (3/0) प्रारम्भ हो जाती है अर्थात् नक्षत्र व्यवस्था के अनुसार पुनर्वसु (IV) प्रारम्भ हो जाता है, परन्तु निरयन व्यवस्था के अनुसार 21 जून को मिथुन राशि के 6 अंश (2/6) ही होते हैं।

23 दिसम्बर को निरयन पद्धति के अनुसार जब सूर्य मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में प्रवेश करता है, सूर्य उत्तरायन हो जाता है। सायन पद्धति के अनुसार 23 दिसम्बर को सूर्य मकर राशि में प्रवेश कर जाता है। उस समय सूर्य के राश्यंश (9/0) उत्तराषाढ़ के द्वितीय चरण के बराबर हो जाते हैं। जबकि उस दिन निरयन पद्धति के अनुसार धनु राशि में 6 अंश (मूल द्वितीय चरण समाप्त होकर तृतीय चरण प्रारम्भ) ही होते हैं।

उपरोक्त के अनुसार वर्तमान में (अयन चलन के कारण) मूल नक्षत्र (तृतीय चरण) से मृगशिर नक्षत्र की समाप्ति तक उत्तरायन सूर्य के नक्षत्र हैं। इसके विपरीत आर्द्रा से मूल के द्वितीय चरण तक दक्षिणायन सूर्य के नक्षत्र हैं।

राशियों व नक्षत्रों की आकृतियों में तालमेल का अभाव—यदि हम नक्षत्रों की मान्य आकृतियों का मिलान करें तो यह स्पष्ट होगा कि किसी भी राशि की आकृति का उसके नक्षत्रों की आकृति से कोई तालमेल नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि राशियां बाद में नक्षत्रों पर थोपी गई हैं।

मेष राशि में अश्विनी, भरणी व कृतिका के प्रथम चरण हैं। अश्विनी को अश्वमुख, भरणी को योनि (भग) तथा कृतिका को छुरा के समान माना गया है, जबकि इन सबसे मिलकर मेष राशि की आकृति मेढ़ा है। उपरोक्त नक्षत्रों की आकृतियों का मेढ़ा से कोई सम्बन्ध नहीं है।

कृतिका के तीन चरण, रोहिणी तथा मृगशिर के दो चरण मिलकर वृषभ राशि बनती है। कृतिका का छुरा, रोहिणी का रथ तथा मृग का सिर मिलकर वृषभ (बैल) कैसे बन गया? इसी प्रकार बिच्छू की पूंछ व डंक, पूर्वाषाढ़ व उत्तराषाढ़ के मंच मिलकर शिकारी नरतुरंग कैसे हो गया? उपरोक्त तीनों नक्षत्र मिलकर धनु राशि बनाते हैं। धनु राशि की आकृति में ऐसे शिकारी की कल्पना की गई है जिसका ऊपरी हिस्सा मनुष्य का है और हाथ में धनुष है। नीचे का हिस्सा घोड़े का है। स्पष्ट है कि कोई तालमेल नहीं है।

मकर राशि के नक्षत्रों की स्थिति तो और भी हास्यास्पद है। मकर मण्डल का कोई भी नक्षत्र मकर राशि में नहीं है। मकर मण्डल दक्षिणी गोलार्द्ध में है जबकि श्रवण (गरुड़ मण्डल से) तथा धनिष्ठा (उलूपी मण्डल से) नक्षत्र उत्तरी गोलार्द्ध में है।

प्रत्येक राशि के अन्तर्गत नक्षत्रों की आकृतियों से राशि की आकृति का मिलान करें तो इसी प्रकार का विरोधाभास मिलेगा।

इसका कारण यही है कि नक्षत्रों की आकृतियों का निर्धारण भारतीय ज्योतिष में हजारों वर्ष पूर्व हो चुका था। ईसा की प्रारम्भिक सदियों में जब राशियां आईं तो नक्षत्रों को गणितीय विभाजन के आधार पर राशियों में समाहित कर दिया। राशियों के पाश्चात्य नामों को संशोधित कर संस्कृत व हिन्दी में नामकरण किया गया। इन नामों में भी विरोधाभास पाया जाता है। जैसे पाश्चात्य ज्योतिष में Capricornus का अर्थ है, समुद्री प्राणी अर्थात् ऐसा सींग वाला बकरा जिसके नीचे का धड़ मछलीनुमा है। इसे समुद्री जीव (जल तत्व) माना गया। भारत में इसे ग्रहण करते समय कुछ प्राचीन विद्वानों ने मकर के बजाय 'मगर' (Crocodile) कर दिया। संस्कृत में मकर शब्द का अर्थ भी समुद्री प्राणी है। कई विद्वान मकर राशि का चिन्ह सींग वाला पूरा बकरा मानते हैं। इस स्थिति में बकरे का जल से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार मकर राशि का चिन्ह बकरा (चतुष्पद) तथा मछली (जलचर) मिलकर बना है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राशियों की आकृतियों व नक्षत्रों की आकृतियों में तो मत-भिन्नता है ही, साथ ही राशियों की आकृतियों व नामों में भी कोई तालमेल नहीं है।

❑❑

नक्षत्र-वर्गीकरण

भारतीय ज्योतिष में नक्षत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ज्योतिषीय गणित तो नक्षत्र मान पर आधारित है ही, फलित के विभिन्न क्षेत्रों यथा जातक विचार, ताजिक, गोचर, प्रश्न, मुहूर्त एवं संस्कार आदि सभी में नक्षत्रों के आधार पर शुभाशुभ निर्णय लिए जाते हैं। नक्षत्रों के आधार पर शुभाशुभ फलकथन को समझने के लिए नक्षत्रों के शुभाशुभ गुण, प्रकार तथा विशेषताओं का ज्ञान आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस प्रकरण में विभिन्न आधारों पर नक्षत्रों का वर्गीकरण तथा उनके आधार पर विशेषताएं प्रस्तुत किए जा रहे हैं—प्रत्येक वर्गीकरण में नक्षत्र का क्रमांक नक्षत्र के नाम से पूर्व दिया गया है।

(अ) गुणों के आधार पर—गुणों के आधार पर ग्रहों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है—

1. सतोगुणी—सूर्य, चन्द्र, गुरु
2. रजोगुणी—बुध, शुक्र
3. तमोगुणी—मंगल, शनि, राहू एवं केतू।

सभी 27 नक्षत्र उपरोक्त ग्रहों के स्वामित्व में हैं, अतः ग्रहों की प्रकृति के अनुसार नक्षत्रों को उपरोक्त गुणों के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. सतोगुणी नक्षत्र—

(*i*) सूर्य के नक्षत्र	3 कृतिका, 12 उत्तरा फाल्गुनी एवं 21 उत्तराषाढ़
(*ii*) चन्द्र के नक्षत्र	4 रोहिणी, 13 हस्त एवं 22 श्रवण
(*iii*) गुरु के नक्षत्र	7 पुनर्वसु, 16 विशाखा एवं 25 पूर्वा भाद्रपद

2. रजोगुणी नक्षत्र—

(*i*) बुध के नक्षत्र	9 आश्लेषा, 18 ज्येष्ठा एवं 27 रेवती
(*ii*) शुक्र के नक्षत्र	2 भरणी, 11 पू० फाल्गुनी एवं 20 पूर्वाषाढ़

3. तमोगुणी नक्षत्र—

(*i*) मंगल के नक्षत्र	5 मृगशिर, 14 चित्रा एवं 23 धनिष्ठा
(*ii*) शनि के नक्षत्र	8 पुष्य, 17 अनुराधा एवं 26 उत्तरा भाद्रपद
(*iii*) राहू के नक्षत्र	6 आर्द्रा, 15 स्वाति एवं 24 शतभिषा
(*iv*) केतू के नक्षत्र	1 अश्विनी, 10 मघा एवं 19 मूल

उपरोक्त आधार पर नक्षत्रों के गुण एवं प्रभाव निम्नानुसार हैं।

1. सतोगुणी नक्षत्र—(कृतिका, रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, विशाखा, उत्तराषाढ़, श्रवण एवं पूर्वा भाद्रपद)

फल—सतोगुणी नक्षत्र के प्रभाव से जातक में ईश्वरीय गुणों की अधिकता होती है। इन नक्षत्रों में जन्मा जातक ईश भक्त, निर्मल हृदय, सत्य वक्ता, ईमानदार, क्षमावान,

दयालु, निष्कपट, धैर्यवान, निस्वार्थी, परोपकारी, सत्कर्मी तथा सन्तोषी होता है। वह दूसरों को कष्ट नहीं देता बल्कि उनको कष्ट होता देखकर जातक भी दुखी होता है।

2. रजोगुणी नक्षत्र—(भरणी, आश्लेषा, पू० फा०, ज्येष्ठा, पू० षाढ़ एवं रेवती)

फल—रजोगुणी नक्षत्र के जातक में देव तथा असुर के गुणों का सम्मिश्रण होता है। ऐसे गुण मानव में होते हैं। मानव भौतिकतावादी होता है। धन, भोग एवं विलास का इच्छुक होता है। रजोगुणी जातक में सद्गुण भी होते हैं तो दुर्गुण भी। ऐसा जातक कभी असत्य भी बोलता है, स्वार्थवश गलत कार्य भी करता है। क्रोध एवं अहंकार भी करता है, दिखावा भी करता है, कभी परोपकार भी करता है, सत्य भी बोलता है अर्थात् रजोगुणी जातक में मिले-जुले शुभाशुभ लक्षण पाए जाते हैं।

3. तमोगुणी नक्षत्र—(अश्विनी, मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य, मघा, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा एवं उत्तरा भाद्रपद)

फल—तमोगुणी नक्षत्रों के प्रभाव से जातक में आसुरी प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं। तमोगुणी जातक में क्रोध, क्रूरता, कुबुद्धि, असत्य, अहंकार, ढोंग, दुष्टता, ईर्ष्या, बेईमानी, छल, कपट, द्वेष तथा निम्नस्तरीय आचरण आदि अवगुण कूट-कूट कर भरे होते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वार्थवश दूसरों को ठगने व कष्ट पहुंचाने में नहीं हिचकते।

कुछ विद्वान बुध को सात्विक तथा सूर्य व चन्द्र को राजसिक मानते हैं। इसी आधार पर वे बुध के तीन नक्षत्रों को सतोगुणी तथा सूर्य व चन्द्र के 6 नक्षत्रों को रजोगुणी मानते हैं। *फल दीपिका* तथा *चमत्कार चिन्तामणि* जैसे उत्तम ग्रन्थों में सूर्य व चन्द्र को सात्विक तथा बुध को राजसिक ग्रह माना है। उपरोक्त वर्गीकरण भी इसी आधार पर किया गया है।

(ब) स्वभाव के आधार पर—संज्ञा अथवा स्वभाव के आधार पर नक्षत्रों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. ध्रुव (स्थिर) नक्षत्र—4 रोहिणी, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 21 उत्तराषाढ़, 26 उत्तरा भाद्रपद = कुल 4 नक्षत्र।

इन नक्षत्रों में स्थिर प्रकृति के कार्य करना शुभ होता है, जैसे मकान, मन्दिर व धर्मशाला बनवाना, वाटिका लगाना, पदोन्नति पर पदग्रहण करना आदि।

2. चर (चंचल या चल) नक्षत्र—7 पुनर्वसु, 15 स्वाति, 22 श्रवण, 23 धनिष्ठा, 24 शतभिषा = कुल 5 नक्षत्र।

इन नक्षत्रों में यात्रा करना, वाहनों का क्रय एवं उपयोग, घूमने जाना आदि कार्य शुभ माने जाते हैं।

3. मिश्र (सामान्य) नक्षत्र—3 कृतिका, 16 विशाखा = कुल 2 नक्षत्र

उपरोक्त दो नक्षत्र मिश्र नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें सामान्य कार्य, अग्नि कार्य आदि कार्य सिद्ध होते हैं।

4. लघु (क्षिप्र) नक्षत्र—1 अश्विनी, 8 पुष्य, 13 हस्त, 28 अभिजित = कुल 4 नक्षत्र।

इन चार नक्षत्रों (वर्तमान में अभिजित नक्षत्र का विचार नहीं किया जाता) में व्यापारारम्भ, स्त्री-पुरुषों से मैत्री, साझा, ज्ञान प्राप्ति, आभूषण धारण करना, खेलना, औषधि तैयार करना, चित्रकारी, शिल्पकारी आदि कार्य शुभ माने जाते हैं।

5. मृदु (मैत्र) नक्षत्र—5 मृगशिर, 14 चित्रा, 17 अनुराधा, 27 रेवती = कुल 4 नक्षत्र।

उपरोक्त चार मृदु नक्षत्रों में मित्रता तथा ललित कला जैसे मृदु कार्य करना श्रेष्ठ माना जाता है, जैसे गीत गाना, नूतन वस्त्र धारण करना, चित्र बनाना, आभूषण धारण करना, खेलकूद, नाट्यकला आदि कार्य।

6. उग्र (क्रूर) नक्षत्र—2 भरणी, 10 मघा, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 20 पूर्वाषाढ़, 25 पूर्वा भाद्रपद = कुल 5 नक्षत्र।

उपरोक्त 5 नक्षत्र क्रूर नक्षत्र माने गए हैं। इनमें क्रूरता के कार्य जैसे विष देना, मारना, आग लगाना, शस्त्रों का उपयोग करना सफल होते हैं।

7. दारुण (तीक्ष्ण) नक्षत्र—6 आर्द्रा, 9 आश्लेषा, 18 ज्येष्ठा, 19 मूल = कुल चार नक्षत्र।

ये चार नक्षत्र दारुण या तीक्ष्ण नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जादू-टोना, भूत-प्रेत बाधा निवारण, पशुओं का दमन, मारण, घात एवं उग्र कार्य सिद्ध होते हैं।

(स) मुख के आधार पर—नीचे, ऊपर अथवा तिरछे मुंह के अनुसार नक्षत्र तीन प्रकार के होते हैं—

1. अधोमुख संज्ञक नक्षत्र—2 भरणी, 3 कृतिका, 9 आश्लेषा, 10 मघा, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 16 विशाखा, 19 मूल, 20 पूर्वाषाढ़, 25 पूर्वा भाद्रपद = कुल 9 नक्षत्र

उपरोक्त नक्षत्रों का मुख नीचे की ओर होने से भूमिगत कार्य, जैसे कुआं, बावड़ी, नहर, तालाब, खाई खुदवाना, उत्खनन कार्य, भूमिगत द्रव्य निकालना, जुआ खेलना तथा गणित सम्बन्धी कार्य सिद्ध होते हैं।

2. उर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र—4 रोहिणी, 6 आर्द्रा, 8 पुष्य, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 21 उत्तराषाढ़, 22 श्रवण, 23 धनिष्ठा, 24 शतभिषा, 26 उत्तरा भाद्रपद = कुल 9 नक्षत्र

उपरोक्त नक्षत्रों का मुख ऊपर की ओर होने से ऊंचाई के या उच्च स्तरीय कार्य करना शुभ होता है, जैसे—मन्दिर निर्माण, ध्वजारोहण, भवन निर्माण, छत डलवाना, तोरण-वन्दनवार बंधवाना, बाग लगवाना, राज्यतिलक करना, पदग्रहण करना, वायु यात्रा करना आदि।

3. तिर्यकमुख संज्ञक नक्षत्र—1 अश्विनी, 5 मृगशिर, 7 पुनर्वसु, 13 हस्त, 14 चित्रा, 15 स्वाति, 17 अनुराधा, 18 ज्येष्ठा, 27 रेवती = कुल 9 नक्षत्र

उपरोक्त नक्षत्रों का मुख तिरछा माना गया है। इन नक्षत्रों में यात्रा करना, हल चलाना, पशुओं का क्रय करना, वाहन क्रय-विक्रय आदि कार्य सिद्ध होते हैं।

(द) लोचन (नेत्र) के आधार पर—1. अन्धाक्ष या अन्ध लोचन नक्षत्र—4 रोहिणी, 8 पुष्य, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 16 विशाखा, 26 पूर्वाषाढ़, 23 धनिष्ठा, 27 रेवती = कुल 7 नक्षत्र

उक्त नक्षत्र अन्ध लोचन नक्षत्र होने से इनमें खोई हुई वस्तु शीघ्र ही पूर्व दिशा

में मिल जाती है।

2. मन्दाक्ष या मन्द लोचन नक्षत्र—1 अश्विनी, 5 मृगशिर, 9 आश्लेषा, 13 हस्त, 17 अनुराधा, 21 उत्तराषाढ़, 24 शतभिषा = कुल 7 नक्षत्र

उक्त नक्षत्र मन्द लोचन नक्षत्र हैं। इनमें खोई हुई वस्तु उत्तर या दक्षिण दिशा में मिल जाती है।

3. मध्याक्ष या मध्य लोचन नक्षत्र—2 भरणी, 6 आर्द्रा, 10 मघा, 14 चित्रा, 18 ज्येष्ठा 25 पूर्वा भाद्रपद, 28 अभिजित = कुल 7 नक्षत्र (अभिजित सहित)

उक्त नक्षत्र मध्य लोचन नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें खोई हुई वस्तु की जानकारी तो मिल जाती है परन्तु वस्तु नहीं मिल पाती है।

4. सुलोचन नक्षत्र—3 कृतिका, 7 पुनर्वसु, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 15 स्वाति, 19 मूल, 22 श्रवण, 26 उत्तरा भाद्रपद = कुल 7 नक्षत्र

उक्त नक्षत्र सुलोचन नक्षत्र हैं। इनमें यदि कोई वस्तु खो जाए तो न उस वस्तु का सुराग लगता है और न ही वह वस्तु मिल पाती है।

(य) लिंग (Gender) के आधार पर—नक्षत्रों को लिंग के अनुसार तीन वर्गों में निम्न प्रकार बांटा गया है—

1. पुरुष (Male), 2. स्त्री (Female), 3. नपुंसक (Effiminate)

1. पुरुष—1 अश्विनी, 2 पुंनर्वसु, 8 पुष्य, 13 हस्त, 17 अनुराधा, 22 श्रवण, 25 पूर्वा भाद्रपद, 26 उत्तरा भाद्रपद = कुल 8 नक्षत्र।

2. स्त्री—2 भरणी, 3. कृतिका, 4 रोहिणी, 6 आर्द्रा, 9 आश्लेषा, 10 मघा, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 14 चित्रा, 15 स्वाति, 16 विशाखा, 18 ज्येष्ठा, 20 पूर्वाषाढ़, 21 उत्तराषाढ़, 23 धनिष्ठा, 27 रेवती = कुल 16 नक्षत्र।

3. नपुंसक—5 मृगशिर, 19 मूल, 24 शतभिषा = कुल तीन नक्षत्र।

(फ) जाति के आधार पर—जाति के आधार पर नक्षत्रों को निम्न श्रेणियों में बांटा गया है।

1. विप्र—3 कृतिका, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 20 पूर्वाषाढ़, 25 पूर्वा भाद्रपद = कुल 4 नक्षत्र।
2. क्षत्रिय—8 पुष्य, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 21 उत्तराषाढ़, 26 उत्तरा भाद्रपद कुल = 4 नक्षत्र।
3. वैश्य—1 अश्विनी, 7 पुनर्वसु, 13 हस्त = कुल 3 नक्षत्र एवं 28 अभिजित।
4. शूद्र—4 रोहिणी, 10 मघा, 17 अनुराधा, 27 रेवती = कुल 4 नक्षत्र।
5. शिल्पी—5 मृगशिर, 14 चित्रा, 18 ज्येष्ठा, 23 धनिष्ठा = कुल 4 नक्षत्र।
6. कसाई—6 आर्द्रा, 15 स्वाति, 19 मूल, 24 शताभिषा = कुल 4 नक्षत्र।
7. चाण्डाल—2 भरणी, 9 आश्लेषा, 16 विशाखा, 22 श्रवण = कुल 4 नक्षत्र।

(च) गोलार्द्धीय आकाश के आधार पर—नक्षत्रों को भिन्न-भिन्न अक्षांशीय स्थानों से देखने पर उनकी स्थिति उत्तरी या दक्षिणी आकाश के सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न दिखाई

देती है। उदाहरण के लिए पुनर्वसु नक्षत्र क्रांतिवृत्त से 6 अंश 41 कला 2 विकला उत्तर एवं विषुवत रेखा से 28 अंश 2 कला उत्तर को यदि चेन्नई से देखें तो उत्तर में दिखाई देगा जबकि दिल्ली से देखने पर लगभग सिर पर दिखाई देगा। नक्षत्रों की गोलार्द्धीय स्थिति सापेक्षिक होती है।

इसलिए नक्षत्रों को गोलार्द्धीय आकाश के अनुसार वर्गीकृत करने के लिए निम्न दो आधार अपनाए गए हैं।

(*i*) क्रांतिवृत्त से उत्तर या दक्षिण, (*ii*) विषुवत रेखा से उत्तर या दक्षिण।

उपरोक्त दो आकारों के संयोजन से नक्षत्रों को चार वर्गों में बांटा जा सकता है—

(क) उत्तरी आकाश—क्रान्तिवृत्त से उत्तर तथा विषुवत रेखा से भी उत्तर।

(ख) उत्तरी मध्य आकाश—क्रान्तिवृत्त से उत्तर परन्तु विषुवत रेखा से दक्षिण।

(ग) दक्षिणी मध्य आकाश—क्रान्तिवृत्त से दक्षिण परन्तु विषुवत रेखा से उत्तर।

(घ) दक्षिणी आकाश—क्रांतिवृत्त से दक्षिण तथा विषुवत रेखा से भी दक्षिण।

अपवाद—विशाखा तथा शतभिषा नक्षत्र लगभग क्रांतिवृत्त पर स्थित हैं। दोनों ही विषुवत रेखा से दक्षिण में हैं। अतः इनको (ग) दक्षिणी मध्य आकश के बजाय (घ) दक्षिणी आकाश में सम्मिलित किया गया है।

उक्त आधार पर नक्षत्रों को निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है। इसी आधार पर आकाश में इनकी स्थिति ज्ञात की जा सकती है।

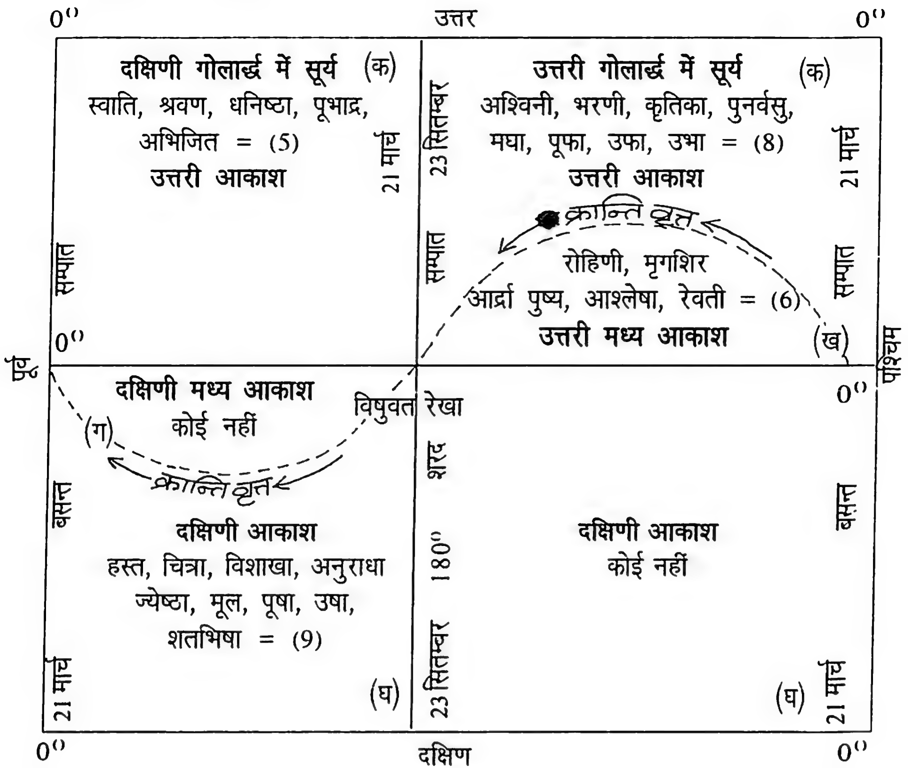
(क) उत्तरी आकाश—1 अश्विनी, 2 भरणी, 3 कृतिका, 7 पुनर्वसु, 10 मघा, 11 पूर्वा फाल्गुनी, 12 उत्तरा फाल्गुनी, 15 स्वाति, 22 श्रवण, 23 धनिष्ठा, 25 पूर्वा भाद्रपद, 26 उत्तरा भाद्रपद, 28 अभिजित = कुल 13 नक्षत्र।

(ख) उत्तरी मध्य आकाश—4 रोहिणी, 5 मृगशिर, 6 आर्द्रा, 8 पुष्य, 9 आश्लेषा, 27 रेवती = कुल 6 नक्षत्र।

(ग) दक्षिणी मध्य आकाश—कोई नहीं।

(घ) दक्षिणी आकाश—13 हस्त, 14 चित्रा, 16 विशाखा, 17 अनुराधा, 18 ज्येष्ठा, 19 मूल, 20 पूर्वाषाढ़, 21 उत्तराषाढ़, 24 शताभिषा = कुल 9 नक्षत्र।

सूर्य की गोलार्द्धीय स्थिति के अनुसार उपरोक्त नक्षत्रों को निम्न आकाश-खण्डों में देखा जा सकता है—



नक्षत्रों के उपरोक्त वर्गीकरण को तात्कालिक सन्दर्भ हेतु तालिका में व्यवस्थित किया गया है, जो इसी प्रकरण में संलग्न है।

विशेष नक्षत्र

पंचक—भचक्र के पांच नक्षत्र 'पंचक काल' की श्रेणी में आते हैं। ये हैं धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद व रेवती। ये पांचों नक्षत्र सूची के अन्तिम नक्षत्र हैं। वास्तव में धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्द्ध से रेवती तक 4½ नक्षत्र ही पंचक की श्रेणी में आते हैं। इन 4½ नक्षत्रों के 18 चरण कुम्भ व मीन राशियां बनाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जब चन्द्रमा कुम्भ व मीन राशियों में रहता है वह समय 'पंचक' कहलाता है। जिस समय चन्द्रमा धनिष्ठा के तृतीय चरण में प्रवेश करता है उसी समय से पंचक लगा हुआ माना जाता है जो चन्द्रमा के रेवती से अश्विनी में प्रवेश के समय तक रहता है।

नक्षत्र-वर्गीकरण

क्रम संख्या	नक्षत्र	आकृति	लिंग	देवता	जाति	आकाश	स्वामी ग्रह	गुण	स्वभाव	मुख	लोचन
1	अश्विनी	अश्वमुख	पु०	अश्विनी कुमार	वैश्य	उत्तरी	केतू	तामसिक	लघु	तिर्यंकमुख	मन्द लो०
2	भरणी	योनि (भग)	स्त्री	यम	चाण्डाल	उत्तरी	शुक्र	राजसिक	उग्र	अधोमुख	मध्य लो०
3	कृतिका	छुरा	स्त्री	अग्नि	विप्र	उत्तरी	सूर्य	सात्विक	मिश्र	अधोमुख	सु० लो०
4	रोहिणी	शकट (रथ)	स्त्री	ब्रह्मा	शूद्र	उत्तरी मध्य	चन्द्र	सात्विक	ध्रुव	उर्ध्वमुख	अन्ध लो०
5	मृगशिर	मृग-सिर	नपुं०	चन्द्रमा	शिल्पी	उत्तरी मध्य	मंगल	तामसिक	मृदु	तिर्यंकमुख	मन्द लो०
6	आर्द्रा	मणि	स्त्री	शिव	कसाई	उत्तरी मध्य	राहू	तामसिक	दारुण	उर्ध्वमुख	मध्य लो०
7	पुनर्वसु	गृह	पु०	अदिति	वैश्य	उत्तरी	गुरु	सात्विक	चर	तिर्यंकमुख	सु० लो०
8	पुष्य	तीर (शर)	पु०	बृहस्पति	क्षत्रिय	उत्तरी मध्य	शनि	तामसिक	लघु	उर्ध्वमुख	अन्ध लो०
9	आश्लेषा	चक्र	स्त्री	सर्प	चाण्डाल	उत्तरी मध्य	बुध	राजसिक	दारुण	अधोमुख	मन्द लो०
10	मघा	गृह	स्त्री	पितर	शूद्र	उत्तरी	केतू	तामसिक	उग्र	अधोमुख	मध्य लो०
11	पू०फाल्गुनी	मंच	स्त्री	भगदेवता	विप्र	उत्तरी	शुक्र	राजसिक	उग्र	अधोमुख	सु० लो०
12	उ०फाल्गुनी	शैया	स्त्री	अर्यमा	क्षत्रिय	उत्तरी	सूर्य	सात्विक	ध्रुव	उर्ध्वमुख	अन्ध लो०
13	हस्त	हाथ (पंजा)	पु०	सूर्य	वैश्य	दक्षिणी	चन्द्र	सात्विक	लघु	तिर्यंकमुख	मन्द लो०
14	चित्रा	मुक्ता	स्त्री	विश्वकर्मा	शिल्पी	दक्षिणी	मंगल	तामसिक	मृदु	तिर्यंकमुख	मध्य लो०

नक्षत्र-वर्गीकरण

क्रम संख्या	नक्षत्र	आकृति	लिंग	देवता	जाति	आकाश	स्वामी ग्रह	गुण	स्वभाव	मुख	लोचन
15	स्वाति	प्रवाल	स्त्री	वायु	कसाई	उत्तरी	राहू	तामसिक	चर	तिर्यंकमुख	सु० लो०
16	विशाखा	तोरण	स्त्री	इन्द्र/अग्नि	चाण्डाल	दक्षिणी	गुरु	सात्विक	मिश्र	अधोमुख	अन्ध लो०
17	अनुराधा	भात पिण्ड	पु०	सूर्य	शूद्र	दक्षिणी	शनि	तामसिक	मृदु	तिर्यंकमुख	मन्द लो०
18	ज्येष्ठा	कुण्डल	स्त्री	इन्द्र	शिल्पी	दक्षिणी	बुध	राजसिक	दारुण	तिर्यंकमुख	मध्य लो०
19	मूल	सिंह पुच्छ	नपुं०	निर्ऋति	कसाई	दक्षिणी	केतू	तामसिक	दारुण	अधोमुख	सु० लो०
20	पू०आषाढ़	गजदन्त	स्त्री	जल	विप्र	दक्षिणी	शुक्र	राजसिक	उग्र	अधोमुख	अन्ध लो०
21	उ० आषाढ़	मंच	स्त्री	विश्वदेव	क्षत्रिय	दक्षिणी	सूर्य	सात्विक	ध्रुव	उर्ध्वमुख	मन्द लो०
22	श्रवण	त्रिचरण	पु०	विष्णु	चाण्डाल	उत्तरी	चन्द्र	सात्विक	चर	उर्ध्वमुख	सु० लो०
23	धनिष्ठा	मृदंग	स्त्री	वसु	शिल्पी	उत्तरी	मंगल	तामसिक	चर	उर्ध्वमुख	अन्ध लो०
24	शतभिषा	वृत्त	नपु०	वरुण	कसाई	दक्षिणी	राहू	तामसिक	चर	उर्ध्वमुख	मन्द लो०
25	पू०भाद्रपद	मंच	पु०	अजचरण	विप्र	उत्तरी	गुरु	सात्विक	उग्र	अधोमुख	मध्य लो०
26	उ०भाद्रपद	यमल	पु०	अहिर्बुध्न्य	क्षत्रिय	उत्तरी	शनि	तामसिक	ध्रुव	उर्ध्वमुख	सु० लो०
27	रेवती	मृदंग	स्त्री	पूषा	शूद्र	उत्तरी मध्य	बुध	राजसिक	मृदु	तिर्यंकमुख	अन्ध लो०

चन्द्रमा लगभग एक दिन में एक नक्षत्र पार करता है इसलिए पंचक (4½ नक्षत्र) लगभग 4½ दिन तक रहता है। चन्द्रमा का सम्बन्ध चन्द्रमा के नक्षत्र-संचार से है, अतः पंचक दिन में किसी भी समय प्रारम्भ होकर पांचवें दिन किसी भी समय समाप्त हो सकता है। वैसे तो सामान्य रूप से एक अंग्रेजी माह में एक बार ही पंचक आता है परन्तु कभी-कभी एक माह में दो पंचक भी आ जाते हैं।

उदाहरण—1 मई 1997 को प्रातः 7 बजकर 55 मिनट पर चन्द्रमा ने कुम्भ राशि (धनिष्ठा के तृतीय चरण) में प्रवेश किया तथा 5 मई को 12 बजकर 12 मिनट दोपहर अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश किया। चन्द्रमा ने 4 दिन 4 घण्टे 17 मिनट में 4½ नक्षत्र पार किए। यह अवधि पंचक कहलाई। पुनः इसी माह में 28 मई को चन्द्रमा दोपहर 1 बजकर 19 मिनट पर कुम्भ राशि (धनिष्ठा तृतीय चरण) में प्रवेश कर गया तथा 1 जून को रात्रि 7 बजकर 31 मिनट पर अश्विनी (मेष राशि) में प्रवेश किया। इस प्रकार चन्द्रमा ने इस बार 4 दिन 6 घण्टे 12 मिनट में 4½ नक्षत्र पार किए।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि पंचक को प्रारम्भिक व समाप्ति दिवस पर पूरे दिन नहीं मानना चाहिए बल्कि समय के अनुसार ही मानना चाहिए।

पंचक दोष में निम्न पांच कार्य वर्जित हैं—

1. दक्षिण दिशा की यात्रा।
2. मकान की छत डलवाना अथवा घर को छाना (ढकना)।
3. प्रेतदाह—परिहार—इस अवधि में किसी की मृत्यु हो जाने पर शव को घर में नहीं रखा जा सकता। अतः शव के साथ 5 पुतले बनाकर जलाए जाते हैं।
4. तृण एवं काष्ठ संग्रह करना।
5. शय्या निर्माण (खटिया अथवा पलंग बनाना अथवा बुनना)।

विषकन्या योग—कुछ नक्षत्र ऐसे हैं जो किसी विशेष तिथि एवं वार पर हों और ऐसे योग में कोई बालिका जन्मे तो वह विषकन्या कहलाती है।

(*i*) आश्लेषा या शतभिषा + रविवार + द्वितीया।

(*ii*) कृतिका, विशाखा या शतभिषा + रविवार + द्वादशी।

(*iii*) आश्लेषा, विशाखा या शतभिषा + मंगलवार + सप्तमी।

(*iv*) आश्लेषा + शनिवार + द्वितीया।

(*v*) शतभिषा + मंगलवार + द्वादशी।

(*vi*) कृतिका + शनिवार + सप्तमी या द्वादशी।

विषकन्या दोष काल में उत्पन्न हुई बालिका के शुभ जीवन के लिए शान्ति करानी चाहिए। ऐसी बालिका का विवाह ऐसे बालक से किया जाना चाहिए जिसकी जन्म कुण्डली में दीर्घायु योग के साथ-साथ मंगल दोष अधिक हो। इससे विषकन्या दोष का परिहार हो जाता है।

गण्डमूल संज्ञक नक्षत्र

तात्पर्य—सन्धिकाल या संक्रमण काल (Transitional Period) सदैव से ही अशुभ, हानिकारक, कष्टदायक एवं असमंजसपूर्ण माना जाता रहा है। सन्धि से तात्पर्य है एक की समाप्ति तथा दूसरे का प्रारम्भ, चाहे वह समय हो या स्थान हो या परिस्थिति हो। ऋतुओं के सन्धिकाल में रोगों की उत्पत्ति होती है। दिन व रात्रि के सन्धिकाल में ईश वन्दना की जाती है। शासन-प्रशासन के सन्धिकाल में जनता को कष्टों का सामना करना पड़ता है। कमरे व बरामदे के मध्य (दहलीज) शुभ कार्य वर्जित हैं। दो प्रकार के मार्गों के मिलन स्थल पर सावधानी सूचक चेतावनी पट्ट लगे होते हैं। वरदान प्राप्त करने पर भी हिरणकश्यप का जिस प्रकार अन्त हुआ वह भी सन्धि का ही उदाहरण है।

ज्योतिष में ऐसी ही सन्धिकालीन स्थिति के अनेक उदाहरण हैं, जैसे सूर्य संक्रांति, नक्षत्र सन्धि, राशि सन्धि, तिथि सन्धि, लग्न सन्धि, भाव सन्धि, दशा सन्धि आदि। ऐसी सन्धियों में जन्मे जातक को भारी विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार के सन्धिकालों में शुभ कार्य, विवाह, यात्रा आदि वर्जित हैं।

हम यहां ऐसी सन्धि पर विचार करेंगे जिसमें दो प्रकार की सन्धियां यथा नक्षत्र सन्धि तथा राशि सन्धि एक साथ आती है।

जैसा कि द्वितीय अध्याय में बताया गया है, राशियों में 27 नक्षत्रों का वितरण करने के लिए भचक्र को 120 अंश के तीन तृतीयांशों (Trines) में बांटा गया है। एक तृतीयांश (120 अंश) में 9 नक्षत्र, 36 चरण तथा 4 राशियां हैं। तीनों तृतीयांशों में 9-9 नक्षत्रों की आवृत्ति नक्षत्र स्वामी के अनुसार समान रूप से है। प्रत्येक तृतीयांश केतू के नक्षत्र (क्रमशः 1 अश्विनी, 10 मघा तथा 19 मूल) से प्रारम्भ होता है तथा बुध के नक्षत्र (क्रमशः 9 आश्लेषा, 18 ज्येष्ठा तथा 27 रेवती) पर समाप्त होता है।

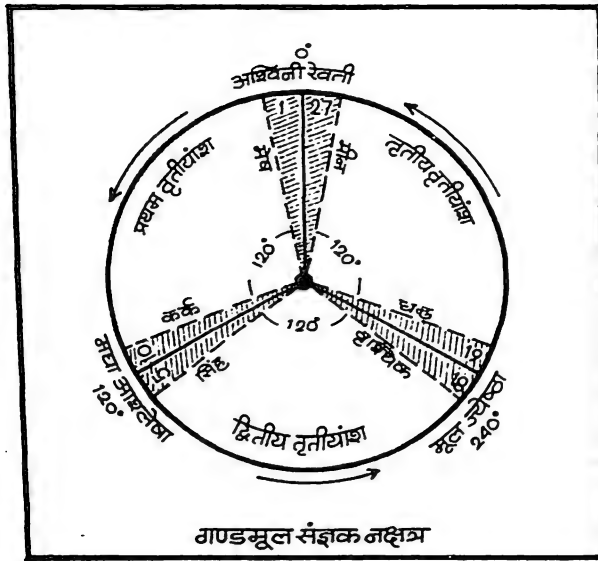
यदि हम राशियों के वितरण पर ध्यान दें तो स्पष्ट होगा कि प्रत्येक तृतीयांश अग्नि तत्व राशि (क्रमशः मेष, सिंह तथा धनु) से प्रारम्भ तथा जल तत्व प्रधान राशि (क्रमशः कर्क, वृश्चिक तथा मीन) पर समाप्त होता है। 0 अंश, 120 अंश तथा 240 अंश को इसी आधार पर जन्म कुण्डली में भी त्रिकोणों की संज्ञा दी जाती है। ये बिन्दु क्रमशः लग्न, पंचम तथा नक्षत्र भावों के प्रारम्भ माने जाते हैं।

ये तीनों बिन्दु ऐसे स्थानों पर हैं जहां नक्षत्र व राशि दोनों एक साथ समाप्त एवं प्रारम्भ होते हैं। अर्थात् ये बिन्दु नक्षत्र एवं राशि के संयुक्त सन्धि स्थल हैं।

(*i*) 0 अंश पर रेवती (मीन) समाप्त होकर अश्विनी (मेष) प्रारम्भ होता है।

(*ii*) 120 अंश पर आश्लेषा (कर्क) समाप्त होकर मघा (सिंह) प्रारम्भ होता है।

(*iii*) 240 अंश पर ज्येष्ठा (वृश्चिक) समाप्त होकर मूल (धनु) प्रारम्भ होता है।



गण्डमूल संज्ञक नक्षत्र

उपरोक्त समाप्त होने वाले नक्षत्रों (रेवती, आश्लेषा व ज्येष्ठा) का स्वामी बुध है तथा तीनों सम्बन्धित राशियां (मीन, कर्क तथा वृश्चिक) जल तत्व प्रधान हैं। इसी प्रकार प्रारम्भ होने वाले नक्षत्रों (अश्विनी, मघा व मूल) का स्वामी केतू है तथा तीनों सम्बन्धित राशियां (मेष, सिंह व धनु) अग्नि तत्व प्रधान हैं। बुध के नक्षत्र रजोगुणी हैं तो केतू के नक्षत्र तमोगुणी हैं।

इस प्रकार ये बिन्दु राशियों के अनुसार अग्नि तथा जल के संगम स्थल तथा नक्षत्रों के अनुसार रज और तम के। इन्हीं के आधार पर ये सन्धि स्थल क्षोभपूर्ण, अशान्त, विस्फोटक एवं तूफानी होने के कारण अशुभ माने जाते हैं।

अतः नक्षत्रों के ये तीन युग्म यथा रेवती + अश्विनी, आश्लेषा + मघा तथा ज्येष्ठा + मूल गण्ड मूल संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं।

गण्ड मूल नक्षत्रों का विस्तार—चन्द्र राश्यंश के अनुसार गण्ड मूल नक्षत्रों का विस्तार निम्नानुसार है—

1. प्रथम नक्षत्र युग्म	राशि	अंश	कला	से राशि	अंश	कला	कुल मान अंश	कला
मीन 27 रेवती (बुध)	11	16	40	0	0	0	13	20
मेष 1 अश्विनी (केतू)	0	0	0	0	13	20	13	20
						कुल मान	26	40

2. द्वितीय नक्षत्र युग्म								
कर्क 9 आश्लेषा (बुध)	3	16	40	4	0	0	13	20
सिंह 10 मघा (केतू)	4	0	0	4	13	20	13	20
						कुल मान	26	40

3. तृतीय नक्षत्र युग्म

वृश्चिक 18 ज्येष्ठा (बुध)	7	16	40	8	0	0	13	20
धनु 19 मूल (केतू)	8	0	0	8	13	20	13	20
						कुल मान	26	40

यदि जातक का तात्कालिक चन्द्र स्पष्ट उपरोक्त राश्यंशों में हो तो उसका जन्म गण्ड मूल नक्षत्र में माना जाना चाहिए।

बड़े व छोटे मूल—मूल, ज्येष्ठा व आश्लेषा बड़े मूल कहलाते हैं तथा अश्विनी, रेवती व मघा छोटे मूल। बड़े मूलों में जन्मे जातक के लिए जन्म के 27 दिन बाद चन्द्रमा जब उसी नक्षत्र में आता है तब मूल शान्ति कराई जाती है। तब तक पिता बालक का मुंह नहीं देखता। छोटे मूलों की शान्ति 10वें दिन अथवा 19वें दिन जब उसी स्वामी का दूसरा या तीसरा नक्षत्र (अनुजन्म या त्रिजन्म) आता है तब कराई जा सकती है।

गण्डान्त मूल—सन्धि के अधिकाधिक निकट गण्ड मूलों की अशुभता में और भी वृद्धि हो जाती है। 0, 120 व 240 अंश तो अत्यन्त ही संवेदनशील बिन्दु हैं, क्योंकि वहीं जल और अग्नि का वास्तविक मिलन होता है। ऐसे समय में जातक का उत्पन्न होना अत्यन्त ही दुविधाजनक होता है। या तो ऐसा बालक जीता ही नहीं, यदि जी जाए तो फिर विशेष रूप से विख्यात होता है परन्तु माता-पिता के लिए अत्यन्त कष्टकारी होता है।

सारावली के इस श्लोक से उक्त की पुष्टि होती है—

"जातो न जीवति मरो मातुर पथ्यो भवेत्स्वकुलहन्ता।
यदि जीवति गण्डान्ते बहुगजतुरगो भवेद् भूयः।।"

सन्धि के अत्यन्त निकट वाले भाग को गण्डान्त मूल की संज्ञा दी जाती है।

प्राचीन विद्वानों के अनुसार नक्षत्र युग्म के पिछले नक्षत्र की अन्तिम 2 घटियां तथा अगले नक्षत्र की प्रथम दो घटियां (लगातार 4 घटियां) गण्डान्त मूल की श्रेणी में आती हैं। इन विद्वानों ने प्रत्येक नक्षत्र में चन्द्रमा का भभोग 60 घटी मानकर व्यक्त किया होगा परन्तु चन्द्रमा का प्रत्येक नक्षत्र में भभोग समान नहीं रहता। अतः इस समय सीमा के बजाय कोणात्मक मान में परिवर्तन करना उपयुक्त रहेगा।

60 घटी में से 2 घटी का अर्थ 800 कला का $\frac{2}{60}$ अर्थात् $\frac{800 \times 1}{30} = 26$ कला 40 विकला कोणात्मक मान होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर गण्डान्त मूल संज्ञक नक्षत्रों का कोणात्मक विस्तार निम्नानुसार होना चाहिए—

1. प्रथम नक्षत्र युग्म में	राशि	अंश	कला	विकला से	राशि	अंश	कला	विकला	अंश	कला
(i) मीन (रेवती के चतुर्थ चरण में)	11	29	33	20	0	0	0	0	26	40
(ii) मेष (अश्विनी के प्रथम चरण में)	0	0	0	0	0	0	26	40	26	40
							कुल मान		53	20

2. द्वितीय नक्षत्र युग्म में—										
(i) कर्क (आश्लेषा के चतुर्थ चरण में)	3	29	33	20	4	0	0	0	26	40
(ii) सिंह (मघा के प्रथम चरण में)	4	0	0	0	4	0	26	40	26	40
							कुल मान		53	20

3. तृतीय नक्षत्र युग्म में—										
(i) वृश्चिक (ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण में)	7	29	33	20	8	0	0	0	26	40
(ii) धनु (मूल के प्रथम चरण में)	8	0	0	0	8	0	26	40	26	40
							कुल मान		53	20

अभुक्त मूल—ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की 1 घटी (24 मिनट) तथा मूल नक्षत्र की प्रथम 1 घटी (24 मिनट) अभुक्त मूल कहलाती हैं। उपरोक्त गणनानुसार 2 घटी का कोणात्मक मान 26 कला 40 विकला होता है, अतः 1 घटी का कोणात्मक मान 13 कला 20 विकला हुआ। इसके अनुसार अभुक्त मूल का कोणात्मक विस्तार निम्नानुसार होता है—

प्रथम नक्षत्र युग्म में	राशि	अंश	कला	विकला से	राशि	अंश	कला	विकला	अंश	कला
(i) वृश्चिक (ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण में)	7	29	46	40	8	0	0	0	13	20
(ii) चन्द्र (मूल के प्रथम चरण में)	8	0	0	0	8	0	13	20	13	20
							दो घटी का कुल मान		26	40

अलग-अलग विद्वानों के अनुसार उक्त घटियों की संख्या भिन्न-भिन्न है परन्तु कुल मिलाकर देखा जाए तो ज्येष्ठा का चतुर्थ चरण तथा मूल का प्रथम चरण सर्वाधिक हानिकारक है। सामान्य रूप से तृतीयांशों के अन्तिम नक्षत्रों (रेवती, आश्लेषा व ज्येष्ठा) के प्रथम चरणों से ज्यों-ज्यों चतुर्थ चरणों की ओर (सन्धि के निकट) बढ़ते हैं तो अशुभता बढ़ती जाती है। इसके विपरीत तृतीयांशों के प्रारम्भिक नक्षत्रों (अश्विनी, मघा व मूल)

के प्रथम चरणों से चतुर्थ चरणों की ओर (सन्धि से दूर) बढ़ने पर अशुभता कम होती जाती है।

अभुक्त मूल में जन्मे बालक का मुंह पिता द्वारा 3 वर्ष तक देखना वर्जित है। इसीलिए प्राचीन काल में ऐसे बालकों को त्याग दिया जाता था। इसी प्रकार के दो जातक आगे चलकर महासन्त तुलसीदास एवं कबीर के नाम से अमर हो गए।

गण्ड मूल संज्ञक नक्षत्रों के चरणानुसार जन्मफल नीचे दिए जा रहे हैं। इन फलों में जहां पिता, माता, ज्येष्ठ भ्राता या अनुज भ्राता शब्द आए हैं लड़कों के लिए है—लड़कियों के लिए इन्हें कुरुपा, श्वसुर, सास, जेठ या देवर समझा जाना चाहिए।

गण्डमूल चरणानुसार जन्मफल

चरण	27 रेवती (बुध)		9 आश्लेषा (बुध)		18 ज्येष्ठा (बुध)	
I	राज्य सम्मान		राज्यसुख		ज्येष्ठ भ्राता को कष्ट	
II	राज्यसुख		धनहानि		अनुज भ्राता को कष्ट	
III	सुखदायी		मातृ-हानि		माता को कष्ट	
IV	अनेक कष्ट		पितृ हानि		स्व हानि	
—	संधि	सर्वाधिक अशुभ	संधि	सर्वाधिक अशुभ	संधि	सर्वाधिक अशुभ
चरण	1 अश्विनी (केतू)		10 मघा (केतू)		19 मूल (केतू)	
I	पितृकष्ट		मातृहानि		पितृहानि	
II	ऐश्वर्य		पितृहानि		मातृहानि	
III	उच्च पद		सुख सम्पत्ति		धननाश	
IV	राज्य सम्मान		धन लाभ		धन लाभ	

जन्म नक्षत्र से तारा—भचक्र में नक्षत्रों का वितरण इस प्रकार किया गया है कि एक ही स्वामी के तीन नक्षत्रों की आवृत्ति में एकरूपता है अर्थात् जन्म नक्षत्र से 9 नक्षत्र पश्चात् उसी स्वामी का नक्षत्र आता है, इसी प्रकार 18 नक्षत्र पश्चात् भी उसी स्वामी का नक्षत्र आता है। इस प्रकार जन्म नक्षत्र व जन्म नक्षत्र से दसवां तथा उन्नीसवां नक्षत्र भी जन्म नक्षत्र की श्रेणी में आते हैं। उदाहरण के लिए किसी का जन्म अश्विनी नक्षत्र में हुआ तो अश्विनी नक्षत्र जन्म नक्षत्र, इससे दसवां मघा अनुजन्म नक्षत्र तथा इससे दसवां (जन्म नक्षत्र से उन्नीसवां) मूल नक्षत्र त्रिजन्म नक्षत्र कहलाएगा। इसके विपरीत मघा नक्षत्र में जन्म हुआ तो मघा जन्म, मूल अनुजन्म तथा अश्विनी त्रिजन्म नक्षत्र होगा।

फलित की दृष्टि से तीनों ही जन्म नक्षत्र की श्रेणी में माने जाते हैं क्योंकि तीनों

ही नक्षत्रों का स्वामी एक ही ग्रह है। तीनों नक्षत्रों में स्थित ग्रह पर नक्षत्र-स्वामी का समान प्रभाव पड़ेगा।

जन्म नक्षत्र से गिनने पर किसी भी नक्षत्र तक की संख्या 'तारा' कहलाती है। नौ नक्षत्रों की तीन आवृत्ति के कारण तारा संख्या भी 1 से 9 ही आती है। यदि गिनने पर संख्या 9 से अधिक आ जाए तो संख्या में 9 का भाग लगाने से जो शेष बचता है वही तारा संख्या होती है।

9 तारों के नाम (तीन आवृत्ति में) निम्नानुसार हैं। उनका फल भी उनके नामों के अनुरूप होता है—

1. जन्म (Birth)	4. क्षेम (Happiness)	7. वध/निधन (Torture)
2. सम्पत (Prosperity)	5. प्रत्यरि (Enmity)	8. मैत्र (Friendship)
3. विपत (Danger)	6. साधक (Favourable)	9. अतिमैत्र (Intimate Friendship)

यदि उपरोक्त तारों को आवृत्तियों के अनुसार लिखें तो क्रम निम्नानुसार होगा—

1, 10, 19 जन्म	4, 13, 22 क्षेम	7, 16, 25 वध/निधन/विनाश
2, 11, 20 सम्पत	5, 14, 23 प्रत्यरि	8, 17, 26 मैत्र
3, 12, 21 विपत	6, 15, 24 साधक	9, 18, 27 अतिमैत्र

उपरोक्त क्रम से स्पष्ट है कि जातक के जन्म नक्षत्र से 3, 5, 7, 12, 14, 16 तथा 21, 23 व 25वें नक्षत्र अशुभ होते हैं। शेष 1, 2, 4, 6, 8, 9, 10, 11, 13, 15, 17, 18 तथा 19, 20, 22, 24, 26 व 27वें नक्षत्र शुभ होते हैं।

किसी जातक के जन्म नक्षत्र के अनुसार विपत (3), प्रत्यरि (5) तथा वध (7) तारों में स्थित ग्रह अशुभ फल देते हैं। यदि इन नक्षत्रों के स्वामी दुःस्थानाधिपति भी (6/8/12 के स्वामी) हों तो कहना ही क्या! करेला और नीम चढ़ा वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है।

प्रत्येक जन्म नक्षत्र के लिए तारों का वर्गीकरण यथा जन्म, सम्पत, विपत आदि संलग्न तालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि पाठकों को बार-बार गणना न करनी पड़े। पहले कालम में जन्म नक्षत्र क्रम संख्या व नाम दिया गया है। उसके लिए नौ तारों के रूप में कौन-कौन से नक्षत्र किस-किस श्रेणी में आएंगे, उनकी भी क्रम संख्या तथा नक्षत्रों के नाम (प्रथमाक्षर के रूप में) दिए गए हैं। जैसे स्वाति जन्म नक्षत्र के लिए 16, 25, 7 सम्पत, 20, 2, 11 साधक तथा 21, 3, 12 नक्षत्र क्रम संख्या वध तारे की श्रेणी में आएंगे। नक्षत्रों के संक्षिप्त नाम केवल ऊपर के कालम में दिए गए हैं। शेष नाम क्रम संख्या के अनुसार समझें।

जन्म नक्षत्रानुसार तारा चक्र									
तारा जन्म नक्षत्र	1 जन्म	2 सम्पत	3 विपत	4 क्षेम	5 प्रत्यरि	6 साधक	7 वध	8 मैत्र	9 अतिमैत्र
1 अश्विनी	1 अ. 10 म. 19 मू.	2 भ. 11 पू.फा. 20 पूषा	3 कृ. 12 उफा. 21 उषा	4 रो. 13 ह. 22 श्र.	5 मृग. 14 चि. 23 ध.	6 आ. 15 स्वा. 24 शत.	7 पुन. 16 वि. 25 पूभा	8 पु. 17 अनु. 26 उभा	9 आश्ले. 18 ज्ये० 27 रे.
2 भरणी	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1
3 कृतिका	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2
4 रोहिणी	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3
5 मृगशिर	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4
6 आर्द्रा	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5
7 पुनर्वसु	7 16 25	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6
8 पुष्य	8 17 26	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7
9 आश्लेषा	9 18 27	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8
10 मघा	10 19 1	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8	18 27 9
11 पू० फा०	11 20 2	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8	18 27 9	19 1 10
12 उ० फा०	12 21 3	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8	18 27 9	19 1 10	20 2 11

जन्म नक्षत्रानुसार तारा चक्र

तारा जन्म नक्षत्र	1 जन्म	2 सम्पत	3 विपत	4 क्षेम	5 प्रत्यरि	6 साधक	7 वध	8 मैत्र	9 अतिमैत्र
13 हस्त	13 22 4	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8	18 27 9	19 1 10	20 2 11	21 3 12
14 चित्रा	14 23 5	15 24 6	16 25 7	17 26 8	18 27 9	19 1 10	20 2 11	21 3 12	22 4 13
15 स्वाति	15 स्वा. 24 अभि. 6 आर्द्रा	16 विशा. 25 पूभा. 7 पुन.	17 अनु. 26 उ.भा 8 पुष्य	18 ज्ये. 27 रेव. 9 आश.	19 मूल 1 आश्वि. 10 मघा.	20 पूषा 2 भर. 11 पू.फा.	21 उषा 3 कृति. 12 उ.फा.	22 श्र० 4 रोहि. 13 हस्त	23 ध० 5 मृग 14 चित्रा
16 विशाखा	16 25 7	17 26 8	18 27 9	19 1 10	20 2 11	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15
17 अनुराधा	17 26 8	18 27 9	19 1 10	20 2 11	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16
18 ज्येष्ठा	18 27 9	19 1 10	20 2 11	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17
19 मूल	19 1 10	20 2 11	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18
20 पू० फा०	20 2 11	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19
21 उ० षा०	21 3 12	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20
22 श्रवण	22 4 13	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21
23 धनिष्ठा	23 5 14	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22

जन्म नक्षत्रानुसार तारा चक्र									
तारा जन्म नक्षत्र	1 जन्म	2 सम्पत	3 विपत	4 क्षेम	5 प्रत्यरि	6 साधक	7 वध	8 मैत्र	9 अतिमैत्र
24 शतभिषा	24 6 15	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23
25 पू० भाद्र	25 7 16	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24
26 उ० भाद्र	26 8 17	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25
27 रेवती	27 9 18	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26
1 अश्विनी	1 10 19	2 11 20	3 12 21	4 13 22	5 14 23	6 15 24	7 16 25	8 17 26	9 18 27

❑❑

नक्षत्र और वर-वधू का चयन

विवाह द्वारा दो भिन्न व्यक्तित्व एक सूत्र में बंधते हैं, जिन्हें जीवन भर एक-दूसरे के पूरक के रूप में साथ निभाना पड़ता है। पति-पत्नी जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। यदि इनमें से एक पहिए के गुण दूसरे पहिए के गुणों से भिन्न हुए तो रथ की चाल अवरुद्ध हो जाएगी। पूरे जीवन भर साथ निभाने वाले पति-पत्नी के गुणों में भिन्नता हुई तो सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष, तनाव तथा कटुता का वातावरण रहेगा। दाम्पत्य जीवन मधुर, सुखद एवं सफल रहे, इसी उद्देश्य से विवाह के पूर्व वर तथा वधू के पारस्परिक गुणों, स्वभाव, प्रकृति, आसक्ति आदि के सामंजस्य की जांच की जाती है। जन्म पत्रिकाओं के आधार पर इस प्रकार की जांच 'जन्म पत्रिकाओं का मिलान' कहलाता है। इसके लिए जिस आधार-मापक का प्रयोग किया जाता है उसे 'मेलापक' कहते हैं।

वर-वधू के गुणों का मिलान 8 क्षेत्रों में किया जाता है। उनमें दिए जाने वाले अंकों को 'गुण' कहा जाता है। मिलान में अधिकतम अंक 36 निम्नानुसार माने गए हैं—

	क्षेत्र	गुण	आधार
1.	वर्ण	1	राशि
2.	वश्य	2	राशि
3.	तारा	3	नक्षत्र
4.	योनि	4	नक्षत्र
5.	ग्रह	5	राशि
6.	गण	6	नक्षत्र
7.	भृकूट	7	राशि
8.	नाड़ी	8	नक्षत्र

वर-वधू की पारस्परिक शुभाशुभता की जांच में नक्षत्र अहम् भूमिका निभाते हैं। यदि हम ऊपर दिए गए विवरण का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होगा कि नक्षत्रों के आधार पर 21 गुण होते हैं जबकि राशि के आधार पर केवल 15 गुण होते हैं। नक्षत्रों व राशियों के गुणों का अनुपात 7 : 5 है। प्रतिशत के आधार पर नक्षत्रों की भूमिका लगभग 60 प्रतिशत है, जबकि राशियों की 40 प्रतिशत। इससे स्पष्ट है कि मेलापक में नक्षत्रों का गुण भार (weightage) राशि की तुलना में अधिक है।

प्रस्तुत पुस्तक में हम पूरी मेलापक पद्धति का विचार न करते हुए केवल उन्हीं क्षेत्रों पर चर्चा करेंगे जो नक्षत्रों पर आधारित हैं—यथा तारा, योनि, गण एवं नाड़ी आदि।

1. पारस्परिक तारा (अधिकतम गुण 3)—जैसा कि गत प्रकरण में बताया गया है जन्म नक्षत्र से तीसरा, बारहवां या इक्कीसवां नक्षत्र विपत, पांचवां, चौदहवां या तेईसवां

नक्षत्र प्रत्यरि तथा सातवां, सोलहवां या पच्चीसवां नक्षत्र वध (निधन) तारे की श्रेणी में आने से अशुभ एवं हानिकारक होता है। इसी आधार पर वर के जन्म नक्षत्र से वधू का जन्म नक्षत्र अथवा वधू के जन्म नक्षत्र से वर का जन्म नक्षत्र विपत, प्रत्यरि अथवा वध की श्रेणी में आता हो तो यह तारा अशुभ माना जाता है। ऐसे पति-पत्नी जीवन भर एक-दूसरे के प्रति विरोधी. शत्रुवत्, अशुभ एवं हानिकारक रहेंगे। फलस्वरूप दाम्पत्य जीवन अशान्त, कष्टमय तथा नरक तुल्य सिद्ध हो सकता है। वर-वधू का पारस्परिक तारा ज्ञात कर उसके आधार पर यह जाना जा सकता है कि विवाह शुभ रहेगा अथवा नहीं।

तारा गणना—गत प्रकरण में 'जन्म नक्षत्रानुसार तारा चक्र' से पारस्परिक तारा ज्ञात किया जा सकता है, फिर 'ी इस की सरल विधि दी जा रही है।

(अ) वर का तारा—वर के जन्म नक्षत्र से वधू के नक्षत्र तक गिनें। यदि संख्या 9 से अधिक है तो 9 का भाग लगाएं, शेष वर का तारा होता है।

(*i*) गिनते समय दोनों के जन्म नक्षत्रों को भी गिनें।

(*ii*) 9 का भाग पूरा-पूरा लग जाने पर शेष शून्य बचेगा। ऐसी स्थिति में तारा शून्य न मानकर 9 माना जाता है।

(*iii*) इस गणना में अभिजित नक्षत्र को सम्मिलित नहीं करें।

(ब) वधू का तारा—उपरोक्त विधि से वधू के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गिनें। वह वधू का तारा होता है।

वर-वधू के तारों को 'तारा-युग्म' के रूप में रख कर विचार करें। वर-वधू का पारस्परिक तारा सम्बन्ध 1 : 1, 2 : 9, 3 : 8, 4 : 7 या 5 : 6 अथवा इससे विपरीत 6 : 5, 7 : 4, 8 : 3 या 9 : 2 ही हो सकता है। इनके अतिरिक्त अन्य कोई सम्बन्ध नहीं बनता है क्योंकि दोनों के पारस्परिक तारों का योग समान (जन्म, अनुजन्म या त्रिजन्म) नक्षत्र की स्थिति में 2 तथा भिन्न नक्षत्रों में 11 ही होता है। दोनों तारों का सकल योग (बिना 9 का भाग लगाए) 29 होता है।

तारा गुणांकन—(*i*) वर-वधू के नक्षत्र समान (1 : 1) हों तो पूर्ण 3 गुण मिलते हैं।

(*ii*) दोनों ओर शुभ तारे (2 : 9 या 9 : 2) हों तो भी पूर्ण 3 गुण मिलते हैं।

(*iii*) एक ओर से शुभ और दूसरी ओर से अशुभ तारा (3 : 8. 4 : 7, 5 : 6, 6 : 5, 7 : 4 या 8 : 3) हो तो आधे अर्थात् 1½ गुण मिलते हैं।

(*iv*) प्राचीन एवं अब तक प्रकाशित पुस्तकों में लिखा है कि दोनों ओर अशुभ तारा (3 : 5, 3 : 7 या 5 : 7) हो तो शून्य गुण मिलता है। इसी आधार पर तारे की गुण-तालिका भी दी जाती रही है। परन्तु 0 गुण की स्थिति बनती ही नहीं क्योंकि 3 : 5, 3 : 7 या 5 : 7 में से किसी भी सम्बन्ध युग्म का योग 11 नहीं होता।

अतः तारा गुणांकन तालिका व्यावहारिक स्वरूप में प्रस्तुत की जा रही है।

तारा गुणांकन तालिका

वर/वधू का तारा	1	2	3	4	5
वधू/वर का तारा	1	9	8	7	6
गुण	3	3	1½	1½	1½

उदाहरण—1. वर मोहन कुमार—जन्म नक्षत्र 10 मघा

वधू रीता—जन्म नक्षत्र 14 चित्रा

वर से वधू का नक्षत्र मघा से चित्रा तक पांचवां, अतः वर का तारा 5 हुआ।

वधू से वर का नक्षत्र चित्रा से मघा तक 24 ÷ 9 शेष 6, अतः वधू का तारा 6 हुआ।

वर-वधू का तारा सम्बन्ध 5 : 6 हुआ।

निष्कर्ष—वर के लिए वधू अशुभ परन्तु वधू के लिए वर शुभ। एक ओर अशुभ तारा (5) होने से 1½ गुण मिले। अतः तारा दोष है।

उदाहरण—2. वर तेजेन्द्र कुमार—जन्म नक्षत्र 16 विशाखा।

वधू दुलारी—जन्म नक्षत्र 26 उत्तरा भाद्रपद

वर से वधू का नक्षत्र विशाखा से उत्तरा भाद्रपद 11 ÷ 9 शेष 2, अतः वर का तारा 2 हुआ।

वधू से वर का नक्षत्र उत्तरा भाद्रपद से विशाखा 18 ÷ 9 शेष 9, अतः वधू का तारा 9 हुआ।

वर कन्या का तारा सम्बन्ध 2 : 9 हुआ। दोनों तारे पारस्परिक रूप से शुभ हैं, अतः पूर्ण 3 गुण मिलेंगे। शुद्ध तारा होने से विवाह शुभ रहेगा।

उदाहरण—3. वर सुभाषचन्द्र—जन्म नक्षत्र 24 शतभिषा

वधू रुक्मणी—जन्म नक्षत्र 15 स्वाति

वर से वधू का नक्षत्र—शतभिषा से स्वाति 10 ÷ 9 शेष 1, अतः वर का तारा 1 हुआ।

वधू से वर का नक्षत्र, स्वाति से शतभिषा 10 ÷ 9 शेष 1, अतः वधू का तारा 1 हुआ।

वर कन्या का तारा सम्बन्ध 1 : 1 है। दोनों ओर से शुभ तारा होने से पूर्ण 3 गुण मिलेंगे। विवाह शुभ रहेगा।

विशेष—यदि वर तथा वधू दोनों के जन्म नक्षत्रों का स्वामी एक ही ग्रह हो तो दोनों का जन्म तारा ही समझा जाता है। उपरोक्त उदाहरण (3) में स्वाति व शतभिषा का स्वामी राहू है, अतः राहू के तीनों नक्षत्र तीन आवृत्तियों के आधार पर क्रमशः जन्म, अनुजन्म व त्रिजन्म नक्षत्र होंगे जो जन्म नक्षत्र की श्रेणी में ही माने जाएंगे।

तारानुसार फल—(*i*) वर तथा वधू का जन्म नक्षत्र (1 : 1) हो तो सम्बन्ध अत्यन्त

श्रेष्ठ होता है। दोनों में पूर्ण आसक्ति, श्रद्धा, मधुरता एवं विश्वास बने रहते हैं।

(*ii*) दोनों ओर शुभ तारा (2 : 9 या 9 : 2) होने से सम्बन्ध उत्तम होता है। दोनों में पारस्परिक मधुर सम्बन्ध बने रहते हैं। इस सम्बन्ध में एक ओर सम्पत (2) तथा दूसरी ओर अतिमैत्र (9) तारा होता है। अर्थात् एक-दूसरे के प्रति अतिमैत्र एवं खुशहाली का भाव रखते हैं।

(*iii*) एक ओर शुभ तथा दूसरी ओर अशुभ (4 : 7 या 7 : 4, 3 : 8 या 8 : 3 अथवा 5 : 6 या 6 : 5) तारा हो तो सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। परन्तु अशुभ तारे वाले की ओर से कभी-कभी कटुतापूर्ण व्यवहार होता है तथा दाम्पत्य जीवन में अशान्ति रहती है।

विपत (3), प्रत्यरि (5) तथा वध (7) तारे अपने नाम के अनुरूप कटुता पैदा करते हैं।

उदाहरण (1) में वर का तारा 5 तथा वधू का तारा 6 है। इसका अर्थ यह हुआ कि वर के लिए वधू का नक्षत्र अशुभ तारे पर है। वधू की ओर से वर के प्रति शत्रुवत् व्यवहार होगा। जबकि वधू के नक्षत्र से वर का नक्षत्र छठा (साधक) है। वर का व्यवहार वधू के लिए निभाने वाला होगा। अर्थात् जो भी कटुता होगी वधू की ओर से होगी, वर की ओर से नहीं।

(*iv*) वर वधू में मित्र षड़ाष्टक (दोनों की राशियां एक-दूसरे से 6-8 हों और मित्र षड़ाष्टक की श्रेणी में) हो तो भी एक ओर विपत, प्रत्यरि अथवा वध तारा होने पर विवाह अनुचित है।

2. योनि (पूर्ण गुण 4)—जातक के गुण, प्रकृति, स्वभाव एवं व्यवहार के निर्धारण के लिए अभिजित सहित 28 नक्षत्रों को 14 प्रकार की योनियों (जीव प्रकारों) में विभाजित किया है, जिनके गुण व पारस्परिक सम्बन्ध भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। दो-दो नक्षत्रों की एक योनि है—

नक्षत्र युग्म	योनि	नक्षत्र युग्म	योनि
1. अश्विनी-शतभिषा	अश्व	8. उ० फा०-उ० भा०	गौ
2. भरणी-रेवती	गज (हाथी)	9. हस्त-स्वाति	महिष (भैंस)
3. कृतिका-पुष्य	मेष (मेढ़ा)	10. चित्रा-विशाखा	व्याघ्र (चीता)
4. रोहिणी-मृगशिर	सर्प	11. अनुराधा-ज्येष्ठा	मृग (हिरन)
5. आर्द्रा-मूल	श्वान	12. पू० षाढ़-श्रवण	वानर (बन्दर)
6. पुनर्वसु-आश्लेषा	मार्जार (बिलाव)	13. उ० षाढ़-अभिजित	नकुल (नेवला)
7. मघा-पूर्वा फाल्गुनी	मूषक (चूहा)	14. धनिष्ठा-पू० भाद्र	सिंह

अभिजित नक्षत्र को छोड़ देने के पश्चात् नकुल योनि अब केवल उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्मे जातक की ही मानी जाती है। ये सभी जीव किसी न किसी रूप में मानव से सम्बन्ध रखते हैं। इन जीवों के गुणों की झलक इनकी योनि में उत्पन्न जातकों में देखी जा सकती है।

योनि जातफल—विभिन्न योनियों में उत्पन्न जातकों में निम्नानुसार गुणावगुण पाए जाते हैं—(चन्द्र नक्षत्र के आधार पर)

1. अश्व योनि (अश्विनी व शतभिषा)—स्वच्छन्द प्रकृति, बहादुर, सद्‌गुणी, तेजवान, स्फूर्तिवान, उत्तरदायी, वफादार, चंचल, अग्रणी, किसी का आधिपत्य स्वीकार न करने वाला, गान व वाद्ययंत्रों में रुचि रखने वाला।

2. गज योनि (भरणी व रेवती)—बलवान, स्थूलकाय, मस्त चाल वाला, गम्भीर, ज्ञानवान, उत्साही, सत्यभाषी, भोगी, राजमान्य।

3. मेष योनि (कृतिका व पुष्य)—पुरुषार्थी, पराक्रमी, बुद्धिमान, निर्भय, कर्मठ, धनवान, समाजसेवी, परोपकारी परन्तु संघर्षप्रिय।

4. सर्प योनि (रोहिणी व मृगशिर)—कठोर हृदय, क्रोधी, क्रूर, कृतघ्न, ढोंगी, परधनहारी, बदले की भावनायुक्त।

5. श्वान योनि (आर्द्रा व मूल)—परिश्रमी, उत्साही, शूर, मातृ-पितृ स्वामी भक्त, वाचाल, स्व-जाति विरोधी, सर्वभक्षी, उत्तम संदेशवाहक।

6. मार्जार योनि (पुनर्वसु व आश्लेषा)—कार्य दक्ष परन्तु डरपोक, कायर, चपल, चालाक, झगड़ालू, वृथा क्रोधी, निर्दयी, क्रूर, मिष्ठभोजी, दुष्टों की संगत में रहने वाला।

7. मूषक योनि (मघा व पू० फा०)—बुद्धिमान, धनवान, मदरहित, कार्य के लिए सदा तैयार, अविश्वासी, स्वार्थी।

8 गौ योनि (उ० फा० व उ० भा०)—उत्साही, प्रसन्नचित्त, सुखी, सुन्दर, स्त्रीप्रिय, उदार, परोपकारी, विनम्र, वाक्पटु, सज्जन।

9. महिष योनि (हस्त व स्वाति)—स्थूलकाय, धनवान, बहुभोजी, बातूनी, मन्दबुद्धि, आलसी, मन्द गति युक्त एवं अड़ियल।

10. व्याघ्र योनि (चित्रा व विशाखा)—स्वच्छन्द, चतुर, चालाक, फुर्तीला, धोखेबाज, भ्रमणशील, सर्वभक्षी, धनवान, बलवान, स्वप्रशंसक।

11. मृग योनि (अनुराधा व ज्येष्ठा)—सुन्दर, आकर्षक, सत्यवक्ता, स्वतंत्रता प्रिय, स्वजनप्रिय, निर्मल स्वभाव युक्त, दयालु, चंचल, उत्तम कार्यरत, ललित कलाप्रिय।

12. वानर योनि (पूर्वाषाढ़ व श्रवण)—चंचल, चपल, मिष्ठभोजी, नकलची, धनलोलुप, शंकालू, साहसी, कामी, झगड़ालू।

13. नकुल योनि (उत्तराषाढ़)—परोपकारी, धनवान, लोकप्रिय, चतुर, मातृ-पितृ भक्त परन्तु स्वार्थी।

14. सिंह योनि (धनिष्ठा व पूर्वा भाद्रपद)—शक्तिशाली, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, नेतृत्व शक्तियुक्त, धर्मपरायण, उत्तम कार्य करने वाला, सदाचारी, परिवार तथा शरणागत का पोषक एवं रक्षक।

पारस्परिक योनि सम्बन्ध एवं गुणांकन—उपरोक्त 14 जीव प्रकारों में पारस्परिक सम्बन्ध भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर योनि के 4 गुणों में से निम्नानुसार गुण दिए जाते हैं—

1. समान योनि (अतिमित्र) जैसे वर-वधू दोनों की अश्व, सिंह या सर्प हो तो

अति-मित्रता होने से पूर्ण 4 गुण मिलते हैं।

भिन्न योनि

2. मित्र 3. गुण
3. सम 2. गुण
4. शत्रु 1 गुण
5. अतिशत्रु 0 गुण

किसी भी योनि के लिए स्वयं की योनि छोड़कर शेष 13 योनियां भिन्न योनि की श्रेणी में आती हैं। भिन्न योनि से पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर उपरोक्त 4 प्रकार के सम्बन्ध बनते हैं।

उक्त पंच बिन्दु मापक के आधार पर गुणांकन निम्न तालिका में दर्शाया गया है—

योनि गुणांकन तालिका						
नक्षत्र	योनि	1 अति मित्र 4 गुण	2 मित्र 3 गुण	3 सम 2 गुण	4 शत्रु 1 गुण	5 अति शत्रु 0 गुण
अश्विनी 1 शतभिषा 24	अश्व	अश्व	सर्प, मृग, वानर	गज, मेष, श्वान मार्जार, मूषक, नकुल	गौ, व्याघ्र, सिंह	महिष
भरणी 2 रेवती 27	गज	गज	मेष, सर्प महिष, वानर	अश्व, मार्जार, मूषक, गौ, मृग, नकुल, श्वान	व्याघ्र	सिंह
कृतिका 3 पुष्य 8	मेष	मेष	गज, गौ, महिष, नकुल	अश्व, सर्प मार्जार, मृग	श्वान, मूषक, व्याघ्र, सिंह	वानर
रोहिणी 4 मृगशिर 5	सर्प	सर्प	अश्व, गज	मेष, श्वान व्याघ्र, मृग, वानर, सिंह	मार्जार, मूषक, गौ, महिष	नकुल
आर्द्रा 6 मूल 19	श्वान	श्वान	—	अश्व, गज, सर्प, महिष, मार्जार, गौ, वानर	मेष, मूषक, व्याघ्र, सिंह, नकुल	मृग
पुनर्वसु 7 आश्लेषा 9	मार्जार	मार्जार	मृग, वानर	अश्व, गज, मेष, श्वान, गौ, महिष, नकुल	सर्प, व्याघ्र, सिंह	मूषक

योनि गुणांकन तालिका						
मघा 10 पू० फा० 11	मूषक	मूषक	—	अश्व, गज, गौ, महिष, सिंह, व्याघ्र, मृग, वानर	मेष सर्प, श्वान नकुल	मार्जार
उ० फा० 12 उ० भाद्र 26	गौ	गौ	मेष, महिष, मृग	श्वान, मार्जार, मूषक, गज, वानर, नकुल	सर्प, अश्व, सिंह	व्याघ्र
हस्त 13 स्वाति 15	महिष	महिष	गज, मेष, गौ	श्वान, मार्जार, मूषक, मृग, वानर, नकुल	सर्प, व्याघ्र, सिंह	अश्व
चित्रा 14 विशाखा 16	व्याघ्र	व्याघ्र	—	सर्प, मूषक, नकुल	अश्व, गज मेष, मार्जार, मृग, श्वान वानर, सिंह	गौ
अनुराधा 17 ज्येष्ठा 18	मृग	मृग	अश्व, मार्जार गौ	गज, मेष, सर्प, मूषक, महिष, नकुल, वानर	व्याघ्र, सिंह	श्वान
पू०षाढ़ 20 श्रवण 22	वानर	वानर	अश्व, गज मार्जार नकुल	सर्प, श्वान, गौ, महिष, मृग, सिंह, मूषक	व्याघ्र	मेष
उत्तराषाढ़ 21 अभिजित x	नकुल	नकुल	मेष, वानर	अश्व, गज, मार्जार, गौ, महिष व्याघ्र, मृग, सिंह	श्वान, मूषक	सर्प
धनिष्ठा 23 पू० भाद्र 25	सिंह	सिंह	—	सर्प, मूषक, वानर, नकुल	अश्व मेष, श्वान, मार्जार, गौ, महिष, व्याघ्र, मृग	गज

उपरोक्त तालिका स्पष्ट है। इसी तालिका से जन्म नक्षत्र के आधार पर वर तथा वधू की योनियां तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर गुण ज्ञात किए जा सकते हैं।

उदाहरण— वर-रवीन्द्र-चित्रा नक्षत्र व्याघ्र योनि

वधू-अलका-कृतिका नक्षत्र मेष योनि

व्याघ्र तथा मेष योनियों में शत्रुता है अतः 4 में से 1 गुण मिला।

विवाह के लिए अतिमित्र व मित्र योनि सर्वश्रेष्ठ होती है। अतिशत्रु व शत्रु योनियां

त्याज्य हैं। अन्य गुणों की अधिकता हो तो समयोनि ग्राह्य है। यदि भृकूट शुद्ध हो तो योनि दोष का परिहार हो जाता है।

पाठकों की सुविधा के लिए परम्परागत विधि से भी योनि गुण तालिका दी जा रही है।

योनि गुणांकन तालिका

वर योनि वधू	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	2	3	2	2	2	1	0	1	3	3	2	1
गज	2	4	3	3	2	2	2	2	3	1	2	3	2	0
मेष	2	3	4	2	1	2	1	3	3	1	2	0	3	1
सर्प	3	3	2	4	2	1	1	1	1	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	1	2	4	2	1	2	2	1	0	2	1	1
मार्जार	2	2	2	1	2	4	0	2	2	1	3	3	2	1
मूषक	2	2	1	1	1	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	1	2	3	1	2	2	2	4	3	0	3	2	2	1
महिष	0	3	3	1	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	0	1	4	1	1	2	1
मृग	3	2	2	2	0	3	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	3	3	0	2	2	3	2	2	2	1	2	4	3	2
नकुल	2	2	3	0	1	2	1	2	2	2	2	3	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	2	2	4

3. गण (पूर्ण गुण 6)—मनुष्य की प्रकृति के अनुसार जातकों को तीन प्रकार के गण-वर्गों में विभाजित किया गया है। जन्म नक्षत्रों के आधार पर ये तीन गण वर्ग हैं—देव, मनुष्य एवं राक्षस

1. देव गण—1 अश्विनी, 5 मृगशिर, 7 पुनर्वसु, 8 पुष्य, 13 हस्त, 15 स्वाति, 17 अनुराधा, 22 श्रवण, 27 रेवती = कुल नौ नक्षत्र।

2. मनुष्य गण—2 भरणी, 4 रोहिणी, 6 आर्द्रा, 11 पू० फा०, 12 उ० फा०, 20 पू० षा०, 21 उ० षा०, 25 पू० भा०, 26 उ० भा० = कुल नौ नक्षत्र।

3. राक्षस गण—3 कृतिका, 9 आश्लेषा, 10 मघा, 14 चित्रा, 16 विशाखा, 18 ज्येष्ठा, 19 मूल, 23 धनिष्ठा, 24 शतभिषा = कुल नौ नक्षत्र।

नाभ के अनुरूप विभिन्न गणों में उत्पन्न जातकों विशेषताएं निम्नानुसार हैं।

1. देव गण—जन्म नक्षत्र के अनुसार जिस जातक का देव गण हो वह सतोगुणी

होता है। ऐसा जातक उदार, दानी, शीलवान, सरल स्वभाव युक्त, विनयशील, जनप्रिय, परोपकारी, तेजस्वी, भावुक, आत्मविश्वासी, मिलनसार, मातृ-पितृ गुरु भक्त, देशभक्त तथा महाप्रज्ञ होता है। देव गण जातकों में अवगुणों का लगभग अभाव होता है इसीलिए ऐसे जातक को देव पुरुष या देवी कहा जाता है।

2. मनुष्य गण—मनुष्य गण वाला जातक रजोगुणी होता है। ऐसा जातक चतुर, विचारशील, साहसी, व्यवहार कुशल तथा परिस्थिति के अनुसार कार्य करने वाला होता है। ऐसे जातक में कुछ अवगुण भी होते हैं, जैसे स्वार्थ की भावना, स्वाभिमान, धनलोलुपता, भोग एवं भौतिकवाद प्रियता। सामान्यतया मनुष्य गण वाले जातक सुन्दर, देवपूजक, संततिवान, धनी, मानी, जनप्रिय होते हैं। मनुष्य गण वाला जातक देव एवं राक्षण गणों का सम्मिश्रण कहा जा सकता है।

3. राक्षस गण—नाम के अनुरूप राक्षस गण वाला जातक तमोगुणी होता है। ऐसे जातकों में अवगुणों का बाहुल्य होता है। ऐसा जातक क्रूर, क्रोधी, कठोर हृदय, धूर्त, स्वार्थी, भयंकर, कलहकर्त्ता, अभिमानी, कटुभाषी, दुश्शील, चरित्रहीन, उग्र, आक्रामक तथा पापी होता है। दूसरों की आलोचना करना तथा अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को हानि पहुंचाना ऐसे जातक की आदत होती है। इसीलिए दुष्ट व्यक्तियों के लिए कहा जाता है "यह आदमी है या राक्षस"।

गण गुणांकन का आधार—

(*i*) वर-वधू का समान गण हो तो परम प्रीति तथा वैचारिक समानता रहती है। जैसे देव-देव, मनुष्य-मनुष्य तथा राक्षस-राक्षस। अधिकतम गुण 6।

(*ii*) देव गण व मनुष्य गण में उत्तम प्रीति रहती है—
  (अ) वर का गण देव तथा वधू का मनुष्य हो तो 6 गुण मिलते हैं।
  (ख) वर का गण मनुष्य तथा वधू का देव हो तो 5 गुण मिलते हैं।

(*iii*) मनुष्य व राक्षस गणों में शत्रुता रहती है, अतः 0 गुण मिलता है।

(*iv*) देव राक्षण गणों में भी शत्रुता रहती है।
  (अ) वर का गण देव तथा वधू का राक्षस हो तो 0 गुण मिलता है।
  (ब) वर का गण राक्षस तथा वधू का देव हो तो 1 गुण मिलता है।

नक्षत्र	अश्विनी, मृग. पुन., पुष्य, हस्त, स्वाति अनु., श्रवण रेवती	भरणी, रोहिणी आर्द्रा, पूफा उफा, पूषा उषा, पूभा उभा	कृतिका, आश्लेषा मघा, चित्रा विशाखा, ज्येष्ठा मूल, धनिष्ठा शतभिषा
वर / वधू	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	6	5	1
मनुष्य	6	6	0
राक्षस	0	0	6

गणदोष एवं परिहार—

गणदोष—(*i*) शून्य या 1 अंक गणदोष के परिचायक हैं। देव-राक्षस या राक्षस मनुष्य गण में सम्बन्ध वर्जित है।

(*ii*) वैश्यों में गणदोष का विशेष विचार किया जाता है।

परिहार—(*i*) वधू का मनुष्य तथा वर का राक्षस गण हो परन्तु राशि स्वामी मित्र हों तथा भृकूट शुद्ध हो तो गणदोष का परिहार हो जाता है।

(*ii*) वधू का राक्षस गण तथा वर का मनुष्य गण हो परन्तु शेष गुण 28 हों तो गणदोष का परिहार हो जाता है।

(*iii*) वर-वधू के राशि स्वामी अथवा नवांश स्वामी मित्र हों तो गणदोष का परिहार हो जाता है।

(*iv*) योनि मैत्री होने पर भी गणदोष समाप्त हो जाता है।

4. नाड़ी (अधिकतम 8 गुण)—मानव शरीर में वात, पित्त व कफ प्रकृतियों का एक निश्चित मात्रा में संतुलन रहता है। इन तीनों का प्रतिनिधित्व तीन नाड़ियां करती हैं। प्रथम अथवा आद्य नाड़ी वात प्रधान, द्वितीय अथवा मध्य नाड़ी पित्त प्रधान तथा तृतीय अथवा अन्त्य नाड़ी कफ प्रधान होती है।

आयुर्वेद का एक श्लोक इस सम्बन्ध में इस प्रकार है—

आदौ वातौ च वहती।
मध्ये पित्ते तथैव च।।
अन्त्ये च वहती श्लेष्मा।
नाड़िका त्रय लक्षणम्।।

आद्य नाड़ी वात प्रधान, मध्य नाड़ी अग्नि प्रधान तथा अन्त्य नाड़ी कफ प्रधान होती है। आद्य नाड़ी वाला व्यक्ति चंचल, मध्य नाड़ी वाला उष्ण तथा अन्त्य नाड़ी

नाड़ी चक्र

	1		2		3	
	अश्विनी	→	भरणी	→	कृतिका	
	आद्य	→	मध्य	→	अन्त्य	सव्य
	6		5		4	↓
	आर्द्रा		मृगशिर		रोहिणी	
अपसव्य	आद्य	←	मध्य	←	अन्त्य	
↓	7		8		9	
	पुनर्वसु		पुष्य		आश्लेषा	
	आद्य	→	मध्य	→	अन्त्य	सव्य
	12		11		10	↓
	उ० फा०		पू० फा०		मघा	
अपसव्य	आद्य	←	मध्य	←	अन्त्य	
↓	13		14		15	
	हस्त		चित्रा		स्वाति	
	आद्य	→	मध्य	→	अन्त्य	सव्य
	18		17		16	↓
अपसव्य	ज्येष्ठा		अनुराधा		विशाखा	
	आद्य	←	मध्य	←	अन्त्य	
↓	19		20		21	
	मूल		पू० षा०		उ० षा०	
	आद्य	→	मध्य	→	अन्त्य	सव्य
	24		23		22	↓
	शतभिषा		धनिष्ठा		श्रवण	
अपसव्य	आद्य	←	मध्य	←	अन्त्य	
↓	25		26		27	
	पू० भा०		उ० भा०		रेवती	
	आद्य	→	मध्य	→	अन्त्य	सव्य

वाला व्यक्ति शीतल होता है।

वातिक नाड़ी वाले व्यक्ति को वातवर्द्धक, पैत्तिक नाड़ी वाले को पित्तवर्द्धक तथा कफज नाड़ी वाले व्यक्ति को कफवर्द्धक वस्तुओं का अधिक सेवन हानि कर सकता है। इसी आधार पर समान नाड़ी युक्त वर-कन्या का विवाह हानिकारक माना जाता है। वर-वधू दोनों एक ही प्रकृति (वातिक, पैत्तिक या कफज) के हों तो उनमें आकर्षण के बजाय विकर्षण होगा और जीवन-संचालन, संतानोत्पत्ति आदि में व्यवधान हो सकता है। इसीलिए वर-वधू की समान नाड़ी होने पर नाड़ी दोष माना जाता है।

आद्य, मध्य तथा अन्त्य नाड़ियों के अनुसार नक्षत्रों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। अश्विनी से तीन नक्षत्र सव्य (आद्य, मध्य, अन्त) तथा तीन नक्षत्र अपसव्य (अन्त्य, मध्य, आद्य) क्रम में नाड़ियां होती हैं। इसी क्रम में अश्विनी की आद्य तथा रेवती की अन्त्य नाड़ी होती हैं। बीच में अन्त्य नाड़ी के बाद अन्त्य तथा आद्य नाड़ी के बाद आद्य नाड़ी आती है। इस प्रकार तीन-तीन नाड़ियों का सव्य-अपसव्य क्रम अनवरत रहता है। इस वितरण में नौ-नौ नक्षत्रों की एक-एक प्रकार की नाड़ी होती है। नाड़ी निर्धारण पृष्ठ 102 पर दर्शाए रेखाचित्र से समझा जा सकता है।

नक्षत्र क्रम संख्यानुसार नाड़ी व्यवस्था—

I. आद्य नाड़ी नक्षत्र क्रमांक 1, 6, 7, 12, 13, 18, 19, 24, 25 =9

II. मध्य नाड़ी नक्षत्र क्रमांक 2, 5, 8, 11, 14, 17, 20, 23 एवं 26 =9

III. अन्त्य नाड़ी नक्षत्र क्रमांक 3, 4, 9, 10, 15, 16, 21, 22 एवं 27 =9

नाड़ी गुणांकन—वैवाहिक सम्बन्धों में नाड़ी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। नाड़ियों का सम्बन्ध शारीरिक रसों व धातुओं से है। यदि नाड़ी दोष हो तो सन्तानोत्पत्ति में बाधा उपस्थित हो सकती है। इसीलिए मेलापक में 36 गुणों में से 8 गुण नाड़ी के रखे गए हैं।

गुणांकन का आधार—*(i)* समान नाड़ी में 0 गुण मिलता है, जैसे आद्य-आद्य, मध्य-मध्य अथवा अन्त्य-अन्त्य।

(ii) असमान नाड़ी में पूर्ण 8 गुण मिलते हैं, जैसे आद्य-मध्य, मध्य-अन्त्य तथा आद्य-अन्त्य।

नाड़ी गुणांकन

नक्षत्र	अश्विनी, आर्द्रा, पुन., उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा मूल, शत., पूभा.	भरणी, मृग., पुष्य, पूफा. चित्रा, अनु. पूषा., धनिष्ठा उ. भाद्र	कृतिका, रोहिणी आश्लेषा, मघा, स्वाति विशाखा, उ. षाढ़ श्रवण, रेवती
वर नाड़ी वधू	आद्य	मध्य	अन्त्य
आद्य	0	8	8
मध्य	8	0	8
अन्त्य	8	8	0

नाड़ी दोष—1. आचार्यों के अनुसार नाड़ी दोष ब्राह्मणों को ही लगता है—

"नाड़ी दोषस्तु विप्राणां, वर्ण दोषश्च क्षत्रिये।
गणदोषश्च वैश्येषु, योनिदोषस्तु पादजे।।

परन्तु दोष तो दोष ही है जो सभी वर्णों के लिए मान्य होना चाहिए।

2. वर-वधू की नाड़ी समान हो तो नाड़ी वेध या नाड़ी दोष कहलाता है। समान नाड़ी एक-दूसरे के प्रति विकर्षण उत्पन्न करती है। यह एक महत्वपूर्ण दोष है। अतः विवाह अशुभ माना जाता है। दोनों की आद्य नाड़ी हो तो पति के लिए, मध्य नाड़ी हो तो पत्नी के लिए और दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो दोनों के लिए हानिकारक होती है।

नाड़ी दोष परिहार—1. निम्न नक्षत्रों में समान नाड़ी होने पर भी नाड़ी दोष नहीं माना जाता।

आद्य नाड़ी—आर्द्रा, ज्येष्ठा। मध्य नाड़ी—मृगशिर, पुष्य तथा उत्तरा भाद्रपद।
अन्त्य नाड़ी—कृतिका, रोहिणी, श्रवण, रेवती।

2. वर-वधू का जन्म नक्षत्र एक ही होने से यदि नाड़ी दोष हो तो दोष नहीं माना जाता। इसके अन्तर्गत दो परिस्थितियां बनती हैं।

(अ) एक ही नक्षत्र व एक ही राशि में जन्म हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता, परन्तु वधू का चरण वर के चरण से पहले नहीं होना चाहिए, फिर भी चरण भेद आवश्यक है।

जैसे—वर भरणी द्वितीय चरण वधू भरणी तृतीय चरण—शुभ
वर भरणी तृतीय चरण वधू भरणी द्वितीय चरण—अशुभ।

(ब) एक ही नक्षत्र परन्तु भिन्न राशि में जन्म हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता। परन्तु वधू का चरण तथा राशि वर के चरण व राशि से पहले नहीं होने चाहिए।

जैसे वर धनिष्ठा द्वितीय चरण (मकर राशि), वधू धनिष्ठा तृतीय चरण (कुम्भ राशि) हो तो शुभ। क्योंकि वर का चरण एवं राशि वधू से पहले है।

वर धनिष्ठा तृतीय चरण (कुम्भ राशि) वधू धनिष्ठा द्वितीय चरण (मकर राशि) हो तो अशुभ, क्योंकि वधू का चरण व राशि वर से पहले है।

3. वर-वधू का जन्म एक ही राशि में हो परन्तु नक्षत्र भिन्न हों फिर भी नाड़ी दोष हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता। परन्तु इसमें भी वही शर्त है कि वधू का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले नहीं होना चाहिए।

यह स्थिति निम्न नक्षत्र युग्मों में बनती है—

आद्य नाड़ी— आर्द्रा-पुनर्वसु I II III चरण (मिथुन)
उत्तरा फाल्गुनी II III IV चरण—हस्त (कन्या)
शताभिषा-पूर्वा भाद्रपद I चरण (कुम्भ)

मध्य नाड़ी— कोई नहीं।

अन्त्य नाड़ी— कृतिका II III IV चरण-रोहिणी (वृषभ)
स्वाति-विशाखा I II III चरण (तुला)
उत्तराषाढ़ II III IV चरण-श्रवण (मकर)

उदाहरण— वर आर्द्रा वधू पुनर्वसु I चरण—शुभ
परन्तु वधू आर्द्रा वर पुनर्वसु I चरण—अशुभ

क्योंकि वधू का नक्षत्र वर से पहले है जो एक महादोष है।

4. वर-वधू की नाड़ी समान हो परन्तु दोनों की राशियों का स्वामी शुक्र, गुरु अथवा बुध हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। जैसे आर्द्रा (मिथुन) व हस्त (कन्या)। दोनों का स्वामी बुध है, अतः नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। इसी प्रकार मूल (धनु) व पूर्वा भाद्रपद चतुर्थ चरण (मीन)। दोनों का स्वामी गुरु होने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है।

इस परिहार के अन्तर्गत ऐसी स्थिति भी आती है कि वर-वधू के नक्षत्र आगे-पीछे आ जाते हैं, जैसे आर्द्रा पुनर्वसु I II III (मिथुन), उ० फा० II III IV—हस्त (कन्या), कृतिका II III IV, रोहिणी (वृषभ) आदि। ऐसे युग्मों में भी वही शर्त है कि वधू का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले नहीं होना चाहिए।

5. युञ्जा प्रीति—भचक्र के 27 नक्षत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

(अ पूर्व भाग—रेवती से 6 नक्षत्र

रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी और मृगशिर

(ब) मध्य भाग—आर्द्रा से 12 नक्षत्र

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त,

चित्रा, स्वाति, विशाखा और अनुराधा।

(स) परभाग—ज्येष्ठा से 9 नक्षत्र

ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद।

जातक के जन्म नक्षत्र के अनुसार पूर्व भाग, मध्य भाग व परभाग युञ्जा होती है।

युञ्जा के आधार पर वर-वधू का चयन—

(i) यदि वर-वधू का जन्म नक्षत्रानुसार एक ही युञ्जा में हो तो दोनों में गहन-प्रीति रहती है।

(ii) दोनों की पूर्व भाग युञ्जा हो तो पति श्रेष्ठ होता है।

(iii) दोनों की मध्य भाग युञ्जा हो तो पत्नी श्रेष्ठ होती है।

(iv) दोनों की परभाग युञ्जा हो तो दोनों ही श्रेष्ठ होते हैं।

(v) यदि वर की युञ्जा पूर्व भाग हो तथा वधू की युञ्जा मध्य भाग हो तो वधू को वर प्रिय होता है।

(vi) यदि दोनों का जन्म परभाग युञ्जा में हो तो दोनों में प्रीति रहती है।

युञ्जा प्रीति के गुण संख्यात्मक नहीं हैं, फिर भी विवाह की शुभता के लिए युञ्जा प्रीति मिलाना आवश्यक है।

6. नक्षत्र सम्बन्धी अन्य विचार—

1. ज्येष्ठ नक्षत्र वर्जित—

"भामिनी जन्म नक्षत्रात् द्वितीयं पति जन्मभम्।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले।।"

यदि वधू के जन्म नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो अथवा वर के जन्म नक्षत्र से वधू का जन्म नक्षत्र सत्ताईसवां हो तो वर के लिए अशुभ होता है। ***ब्रह्मयामल*** नामक ग्रन्थ के अनुसार वधू का जन्म नक्षत्र वर के जन्म नक्षत्र से ज्येष्ठ होना अत्यन्त अशुभ माना जाता है। जैसे वर का नक्षत्र कृतिका तथा वधू का नक्षत्र भरणी हो तो वधू का नक्षत्र ज्येष्ठ होने के कारण अशुभ है। ज्येष्ठ नक्षत्र से सम्बन्धित दोष नाड़ी प्रसंग में भी बताया गया है। परन्तु यहां इसका उल्लेख पुनः इसलिए किया गया है कि चाहे नाड़ी भिन्न-भिन्न हो तब भी वधू का नक्षत्र वर के नक्षत्र से ज्येष्ठ (पहले) होना अशुभ होता है। अर्थात् नाड़ी दोष न होने पर भी वधू का नक्षत्र ज्येष्ठ नहीं होना चाहिए। इसी प्रकार वधू के नक्षत्र का चरण तथा राशि भी वर के नक्षत्र से पहले नहीं होना चाहिए।

ज्येष्ठ नक्षत्र का उदाहरण—

(अ) वर का नक्षत्र 15 स्वाति (तुला)
वधू का नक्षत्र 14 चित्रा (कन्या)

I II

वधू का नक्षत्र व राशि दोनों ही वर से ज्येष्ठ हैं, अतः अशुभ।

(ब) वर का नक्षत्र 14 चित्रा (कन्या)

I II

वधू का नक्षत्र 15 स्वाति (तुला)

वधू का नक्षत्र व राशि दोनों ही वर के नक्षत्र व राशि से दूसरे हैं, अतः शुभ।

2. नक्षत्रों का लिंग विचार—

गत प्रकरण में नक्षत्रों का वर्गीकरण लिंग के अनुसार किया गया है। वर तथा वधू के नक्षत्रों के लिंग के अनुसार भी विवाह की शुभाशुभता को वर्गीकृत किया गया है।

(अ) वर पुरुष नक्षत्र में तथा वधू स्त्री नक्षत्र में हो तो विवाह अत्यन्त शुभ (Good) होता है।

(ब) वर स्त्री नक्षत्र में तथा वधू पुरुष नक्षत्र में हो तो विवाह अशुभ (Bad) होता है।

(स) वर या वधू में से एक नपुंसक नक्षत्र में हो तथा दूसरा पुरुष नक्षत्र में तो विवाह सामान्य शुभ (Fair) होता है।

(द) वर या वधू में से एक नपुंसक नक्षत्र में हो तथा दूसरा स्त्री नक्षत्र में तो विवाह सामान्य (Moderate) होता है।

(य) वर और वधू दोनों ही पुरुष नक्षत्रों में हों तो वैवाहिक सम्बन्ध संतोषप्रद (Satisfactory) रहता है।

7. केवल वधू के लिए वर का नक्षत्र (तारा)—दाक्षिणी भारत के अनेक विद्वान केवल वधू के तारे से ही वैवाहिक शुभाशुभता निर्धारित करते हैं। ***काल प्रकाशिका*** ग्रन्थ के आधार पर केवल वधू के तारे के आधार पर शुभाशुभ वर चयन के विषय में जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

(अ) (*i*) वधू से वर के नक्षत्र तक 4, 6, 9 वां तारा अर्थात् 4, 13, 22, 6, 15, 24 एवं 9, 18, 27 वां नक्षत्र पूर्ण शुभ होता है।

(*ii*) वधू से वर के नक्षत्र तक 1, 2, 8 अर्थात् 1, 10, 19, 2, 11, 20 एवं 8, 17, 26 वां नक्षत्र सामान्य शुभ होता है।

(*iii*) वधू से वर के नक्षत्र तक 3, 5, 7 वां तारा अर्थात् 3, 12, 21, 5, 14, 23 एवं 7, 16, 25वां नक्षत्र अशुभ होता है। परन्तु इसमें निम्न शर्तें हैं—

(*i*) एक ही परियय (आवृत्ति) में 3, 5 व 7 वां तारा अशुभ होता है।

परन्तु (अ) द्वितीय परियय में तीसरा अर्थात् वधू से बारहवें नक्षत्र में वर का जन्म प्रथम चरण में हो तो अशुभ तथा शेष चरणों में मध्यम शुभ होता है।

(ब) द्वितीय परियय में पांचवां अर्थात् वधू से चौदहवें नक्षत्र में वर का जन्म चतुर्थ चरण में हो तो अशुभ तथा शेष चरणों में शुभ होता है।

(स) द्वितीय परियय में सातवां अर्थात् वधू से सोलहवें नक्षत्र में वर का जन्म तृतीय चरण में हो तो अशुभ तथा शेष चरणों में शुभ होता है।

(द) तृतीय परियय (आवृत्ति) में 3. 5 व 7 वां तारा अर्थात् वधू से 21. 23 व 25वां नक्षत्र वर का हो तो वधू से वर का 88वां चरण ही अशुभ होता है। शेष चरण मध्यम शुभ होते हैं।

(य) वधू के तृतीय परियय से वर का सातवां अर्थात् पच्चीसवां नक्षत्र उसी स्थिति में अशुभ माना जाता है जबकि उस नक्षत्र का स्वामी अशुभ भावेश (6-8-12 का स्वामी) हो।

उदाहरण—मेष लग्न की एक कन्या की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में है। मान लीजिए वर का नक्षत्र रेवती है, जो कृतिका से 25वां नक्षत्र है।

तारा ज्ञात करने के लिए संख्या में 7 का भाग लगाया जाता है। यदि भाग न जाए तो प्रथम परियय, एक बार भाग लगे तो दूसरा परियय तथा 2 बार भाग लगने पर तीसरा परियय कहलाता है। शेष तारा होता है। कृतिका के लिए रेवती 25 ÷ 9 = 2 बार भाग लगा तथा 7 शेष बचे अर्थात् तीसरे परियय का सातवां (वध) तारा है। रेवती नक्षत्र का स्वामी कन्या की कुण्डली में तृतीयेश व षष्टेश होने से अशुभ भावेश है। इसलिए कृतिका नक्षत्र की मेष लग्न वाली कन्या के लिए रेवती नक्षत्र वाला वर अशुभ रहेगा।

(ब) एक ही नक्षत्र में वर-वधू का जन्म हो तो—

***(i)* उत्तम मिलान**—रोहिणी, आर्द्रा, मघा, हस्त, विशाखा, श्रवण, उत्तरा भाद्रपद व रेवती = कुल 8 नक्षत्र।

***(ii)* मध्यम मिलान**—अश्विनी, कृतिका, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ व उत्तराषाढ़ = कुल 11 नक्षत्र

***(iii)* अधम मिलान**—भरणी, आश्लेषा, स्वाति, जयेष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वा भाद्रपद = कुल 8 नक्षत्र।

(स) वध या वैनाशिक तारा—(वधू से वर का सातवां, सोलहवां तथा पच्चीसवां तारा) वधू के जन्म नक्षत्र से वर का सातवां तारा अशुभ होता है। दक्षिणी भारत के विद्वानों ने सातवें तारे को दो प्रकार का बताया है।

(क) अत्यन्त अशुभ (सातवां तारा)

वधू का नक्षत्र	**वर का नक्षत्र**	**वधू का नक्षत्र**	**वर का नक्षत्र**
1. कृतिका 3	आश्लेषा 9	4. अनुराधा 17	धनिष्ठा 23
2. आश्लेषा 9	स्वाति 15	5. धनिष्ठा 23	भरणी 2
3. चित्रा 14	पू० षाढ़ 20	6. शतभिषा 24	कृतिका 3

(ख) शुभाशुभ नक्षत्र युग्म (वधू से वर का सातवां तारा) ऋषि कश्यप के आधार पर—

क्रम संख्या	वधू का नक्षत्र	वर का नक्षत्र	फल
1.	भरणी 2	पुष्य 8	भाग्यवान
2.	रोहिणी 4	मघा 10	अधिक सन्तान
3.	मृगशिर 5	पूर्वाषाढ़ 20	पति विछोह
4.	पुनर्वसु 7	हस्त 13	सन्तान के लिए शुभ
5.	उ० फाल्गुनी 12	ज्येष्ठा 18	तलाक
6.	हस्त 13	मूल 19	अशुभ
7.	स्वाति 15	उ० षाढ़ 21	अधिक कन्याएं
8.	विशाखा 16	श्रवण 22	पत्नी द्वारा नफरत
9.	अश्विनी 1	पुनर्वसु 7	अधिक कन्याएं
10.	उ० षाढ़ 21	रेवती 27	सांसारिक सुख
11.	पू० षाढ़ 20	उ० भाद्र 26	पति से स्नेह
12.	श्रवण 22	अश्विनी 1	पत्नी द्वारा तलाक
13.	ज्येष्ठा 18	शतभिषा 24	पति विछोह
14.	पू० भाद्र 25	रोहिणी 4	अधिक सन्तान
15.	उ० भाद्र 26	मृगशिर 5	पति विछोह
16.	रेवती 27	आर्द्रा 6	कष्टमय दाम्पत्य जीवन (तलाक)
17.	मघा 10	विशाखा 16	दुष्ट पुत्र

वधू से वर के सातवें तारे के उपरोक्त 6 + 17 = 23 नक्षत्र युग्मों का फल दिया गया है। वास्तविकता की कसौटी पर विद्वज्जन इन्हें आजमा कर देखें।

❑ ❑

नक्षत्र और अन्य ज्योतिषीय घटक

नक्षत्रों का भारतीय ज्योतिष में आज भी बहुत महत्व है। अधिकांश ज्योतिषीय गणनाएं तथा कालांग नक्षत्रों पर ही आधारित हैं। इस प्रकरण में उन ज्योतिषीय घटकों तथा कालांगों पर चर्चा करेंगे जिनका आधार नक्षत्र हैं।

1. नक्षत्र और चान्द्रमास—चन्द्रमा पृथ्वी की एक नाक्षत्र परिक्रमा 27.3216615 दिन अर्थात् 27 दिन 7 घण्टे 43 मिनट 11.6 सेकण्ड में करता है परन्तु पृथ्वी अपनी कक्षा पर प्रतिदिन लगभग 1 अंश आगे बढ़ जाती है। इससे चन्द्रमा को पूरी परिक्रमा करने में 29.530589 दिन अर्थात् 29 दिन 12 घण्टे 44 मिनट 2.9 सेकण्ड लग जाते हैं। यह अवधि (एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक) चान्द्रमास (Lunar Month) कहलाती है। उत्तरी भारत में चान्द्रमास पूर्णिमा पर समाप्त माने जाते है। चान्द्रमासों की संख्या 12 होती है तथा एक मास में 29 या 30 दिन होते हैं। एक चान्द्र वर्ष (Lunar Year) 354 दिन का होता है।

प्राचीन भारतीय ज्योतिष के अनुसार चान्द्रमासों का नामकरण मास के अन्त में पड़ने वाली पूर्णिमा को चन्द्र नक्षत्र के आधार पर किया गया है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार, **"नक्षत्र नाम्ना मासस्तु ज्ञेया:"** श्लोक इस तथ्य की पुष्टि करता है। चन्द्रमा लगभग 27 दिन में 27 नक्षत्रों को पार कर लेता है और चान्द्रमास 29 या 30 दिन का होता है इसलिए अगली पूर्णिमा को चन्द्रमा की अगली परिक्रमा का दूसरा या तीसरा नक्षत्र पड़ता है। जैसे चैत्र मास की पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र में चन्द्रमा रहता है तो वैशाख की पूर्णिमा को चित्रा से तीसरा नक्षत्र विशाखा में चन्द्रमा होता है।

चान्द्रमासों के नाम, पूर्णिमा पर नक्षत्र तथा अंग्रेजी माहों के नाम नीचे तालिका में दिए जा रहे हैं।

क्र. सं.	चान्द्रमास	चन्द्र नक्षत्र	अंग्रेजी माह	क्र. सं.	चान्द्रमास	चन्द्र नक्षत्र	अंग्रेजी माह
1.	चैत्र	14 चित्रा	मार्च-अप्रैल	7.	आश्विन	1 अश्विनी	सितम्वर-अक्टूवर
2.	वैशाख	16 वैशाख	अप्रैल-मई	8.	कार्तिक	3 कृतिका	अक्टूवर-नवम्बर
3.	ज्येष्ठ	18 ज्येष्ठा	मई-जून	9.	मृगशिर	5 मृगशिर	नवम्बर-दिसम्बर
4.	आषाढ़	20 पूर्वाषाढ़	जून-जुलाई	10.	पौष	8 पुष्य	दिसम्बर-जनवरी
5.	श्रावण	22 श्रवण	जुलाई-अगस्त	11.	माघ	10 मघा	जनवरी-फरवरी
6.	भाद्रपद	25 पूर्वाभाद्रपद	अगस्त-सितम्बर	12.	फाल्गुन	12 उत्तरा फाल्गुनी	फरवरी-मार्च

2. नक्षत्र और चन्द्रमा—चन्द्रमा 27 नक्षत्रों को 27.321665 दिन में पार करता है।

इसलिए एक नक्षत्र में चन्द्रमा का औसत ठहराव $\frac{27.321665}{27} = 1.011913389$ दिन या 24 घण्टे 17 मिनट 9.3173 सेकण्ड (60 घटी 42 पल 53 विपल) तथा एक चरण का

ठहराव $\frac{1.011913389}{4}$ = 0.252978347 दिन या 6 घण्टे 4 मिनट 17.33 सेकण्ड (15 घटी 10 पल 43 विपल) है। चन्द्रमा की औसत दैनिक गति $\frac{360 \text{ अंश}}{27.3216615}$ = 13 अंश 10 कला 34.89 विकला है। परन्तु सूर्य की भांति चन्द्रमा की गति भी न्यूनाधिक होती है।

चन्द्रमा की न्यूनतम गति 11 अंश 47 कला तथा अधिकतम गति 15 अंश 18 कला तक रहती है। इससे चन्द्रमा को एक नक्षत्र पार करने में अधिकतम 27 घण्टे 10 मिनट (67 घटी 55 पल) तथा न्यूनतम 20 घण्टे 55 मिनट (52 घटी 15 पल) लगते हैं।

चन्द्रमा द्वारा एक नक्षत्र को पार करने में लगने वाला समय नक्षत्र का **भभोग** (भ = नक्षत्र + भोग = लगने वाला समय) कहा जाता है। ज्योतिषीय गणित में भभोग का अत्यधिक महत्व है। भभोग के आधार पर ही चन्द्रमा की दैनिक गति तथा किसी भी समय कोणात्मक स्थिति ज्ञात की जा सकती है।

नक्षत्र से तात्पर्य—साधारण बोलचाल की भाषा में हम कहते हैं आज अमुक नक्षत्र है। इसका तात्पर्य है कि आज चन्द्रमा अमुक नक्षत्रीय कोणात्मक भाग में है। चन्द्रमा लगभग प्रतिदिन नक्षत्र बदलता है। परन्तु नक्षत्र बदलने का कोई निश्चित समय नहीं है। चन्द्रमा जब भी 13 अंश 20 कला के गुणक में कोणात्मक दूरी पार कर लेता है उसी समय एक नक्षत्र समाप्त होकर दूसरा नक्षत्र प्रारम्भ हो जाता है।

पंचांगों में नक्षत्र—पंचांगों व एफेमरीज में प्रतिदिन प्रातः चन्द्रमा की नक्षत्रीय स्थिति दो प्रकार से दी जाती है—

(*i*) चन्द्रमा का नक्षत्र में सूर्योदय से घटी पलात्मक ठहराव।

(*ii*) चन्द्रमा द्वारा नक्षत्र पार करने का स्टै० समय या नक्षत्र समाप्ति काल।

उपरोक्त दोनों के आधार पर थोड़ी सी गणना द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि जातक का जन्म किस नक्षत्र में हुआ है।

एक उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट करते हैं—

कोटा (राजस्थान) से प्रकाशित एक पंचांग में निम्न प्रविष्टि है—

	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय (स्टै०)
11 मार्च 97	रेवती	22	35	15	48	6.46
12 मार्च 97	अश्विनी	18	40	14	14	6.46

इस प्रविष्टि का क्या अर्थ है?

(अ) घण्टा मिनट से—11 मार्च 97 को चन्द्रमा रेवती नक्षत्र में अपरान्ह 3 बजकर 48 मिनट तक रहा। इसके पश्चात् अश्विनी नक्षत्र में चला गया। जिसमें वह 12 मार्च 97 को अपरान्ह 2 बजकर 14 मिनट तक रहा।

(ब) घटी पल से—11 मार्च को चन्द्रमा रेवती नक्षत्र में सूर्योदय से 22 घटी 35 पल उपरान्त तक रहा। इसके पश्चात् वह अश्विनी नक्षत्र में चला गया। जिसमें वह 12

मार्च 97 को सूर्योदय से 18 घटी 40 पल उपरान्त तक रहा।

	घ. मि.
11 मार्च रेवती का समाप्ति काल	15 48
(-) सूर्योदय	6.46
	9.2 × 2 ½
	= 22 घटी 35 पल

	घ. मि.
12 मार्च रेवती का समाप्ति काल	14 14
(-) सूर्योदय	6.46
	7.28 × 2 ½
	= 18 घटी 40 पल

नक्षत्रों के समाप्ति काल स्टैण्डर्ड समय में तो पूरे देश में समान रहेंगे परन्तु स्थान विशेष के सूर्योदय के आधार पर उनके घटी पलात्मक मान में अन्तर आ जाएगा।

जन्म नक्षत्र का निर्धारण—उपरोक्त प्रविष्टि के सन्दर्भ में यह ज्ञात किया जा सकता है कि जातक का जन्म नक्षत्र कौन-सा है? 11 मार्च को यदि जन्म 15 बजकर 48 मिनट से पूर्व हुआ है तो जन्म नक्षत्र रेवती है। यदि इसके पश्चात् हुआ तो अश्विनी जन्म नक्षत्र है। जन्म नक्षत्र से पहले वाले नक्षत्र को गत नक्षत्र कहते हैं तथा जन्म नक्षत्र को वर्तमान या तात्कालिक नक्षत्र भी कह सकते हैं।

मान लीजिए कोटा में एक बालक का जन्म 11 मार्च 97 को रात्रि 10 बजकर 22 मिनट पर हुआ। इस सम्बन्ध में हम निम्न बातें पंचांग से देखकर नोट करेंगे—

(*i*) जन्म समय से पूर्व कौन-सा नक्षत्र था तथा वह कब समाप्त हुआ?

उत्तर—रेवती गत नक्षत्र, 11 मार्च को 15 बजकर 48 मिनट या 22 घटी 35 पल पर रेवती नक्षत्र समाप्त हुआ।

(*ii*) जन्म के समय कौन-सा नक्षत्र था? उत्तर—अश्विनी—(वर्तमान नक्षत्र)

(*iii*) गत नक्षत्र की समाप्ति के पश्चात् वर्तमान नक्षत्र कब से कब तक कुल कितने समय (घण्टा मिनट या घटी पल) रहा? इस अवधि को अश्विनी नक्षत्र का भभोग कहेंगे।

भभोग की गणना—

(अ) घण्टे मिनट से—अश्विनी नक्षत्र की समाप्ति 12 मार्च 14 बजकर 14 मिनट
अश्विनी नक्षत्र का प्रारम्भ (-) 11 मार्च 15 बजकर 48 मिनट
(नहीं घटने पर 24 घण्टे जोड़कर घटाया) = 22 घण्टे 26 मिनट × 2 ½
भभोग = 56 घटी 5 पल

(ब) घटी पल से—अश्विनी नक्षत्र का 11 मार्च का ठहराव 60 घटी
(-) 22 घटी 35 पल रेवती का ठहराव
37 घटी 25 पल अश्विनी 11 मार्च

अश्विनी नक्षत्र का 12 मार्च का ठहराव (+) 18 घटी 40 पल

अश्विनी नक्षत्र का भभोग = 56 घटी 5 पल

(*iv*) वर्तमान नक्षत्र प्रारम्भ होने के कितने समय पश्चात् जातक ने जन्म लिया? इसे अश्विनी नक्षत्र का भयात (नक्षत्र का भुक्तकाल) कहेंगे।

	घ.	मि.
(अ) घण्टा मिनट से—जन्म समय 10-22 बजे या	22	22
(–) अश्विनी का प्रारम्भ	15	48
	6 – 34 × 2 ½	

= 16 घटी 25 पल भयात

(ब) घटी पल से पहले इष्ट ज्ञात करना होगा।

	घ.	मि.
जन्म	22	22 (स्टै.)
(–) सूर्योदय	6	46 (स्टै.)

15.36 × 2 ½ = इष्ट 39 घटी

उपरोक्त (*iii*) (ब) की भांति 60 घटी

(–) 22.35 रेवती

37.25

इष्ट (+) 39.0

76.25 60 घटी से अधिक होने 60 घटी घटाया।

(–) 60.0

16 घटी 25 पल भयात

सूत्र = यदि जन्म इष्ट नक्षत्र के घटी पलात्मक मान से कम है तो पंचांग में प्रातः का दिया हुआ नक्षत्र ही जन्म नक्षत्र होगा। इससे पिछला नक्षत्र गत नक्षत्र होगा। इसके विपरीत यदि जन्म इष्ट नक्षत्र के घटी पलात्मक मान से अधिक है तो अगला नक्षत्र जन्म नक्षत्र तथा प्रातः वाला नक्षत्र गत नक्षत्र होगा। स्टैण्डर्ड समय के अनुसार तो जन्म नक्षत्र का निर्धारण और भी सरल है।

चन्द्रमा का चालन—वर्तमान नक्षत्र के भयात और भभोग के अनुपात में जन्म समय तक चन्द्रमा का चालन ज्ञात किया जा सकता है।

एक नक्षत्र का कोणात्मक मान 13 अंश 20 कला या 800 कला होता है। उपरोक्त उदाहरण को घण्टा मिनट तथा घटी पल से हल करते हैं।

घण्टा मिनट से घटी पल से

चन्द्रमा का चालन $\frac{800 \text{ कला} \times \text{भयात}}{\text{भभोग}}$ $\frac{800 \text{ कला} \times \text{भयात}}{\text{भभोग}}$

$$= \frac{800 \text{ कला} \times 6 \text{ घण्टे } 34 \text{ मिनट}}{22 \text{ घण्टे } 26 \text{ मिनट}} = \frac{800 \text{ कला} \times 16 \text{ घटी } 25 \text{ पल}}{56 \text{ घटी } 5 \text{ पल}}$$

= 3 अंश 54 कला 11 विकला = 3 अंश 54 कला 11 विकला

चन्द्र स्पष्ट—नक्षत्र के प्रारम्भिक समय से जन्म तक चन्द्रमा 3 अंश 54 कला 11 विकला चला। इस चालन को अश्विनी नक्षत्र के प्रारम्भिक कोणात्मक मान में जोड़ देने से तात्कालिक (जन्म कालीन) चन्द्र स्पष्ट (चन्द्र का कोणात्मक मान) आ जाएगा।

	राशि	अंश	कला	विकला
अश्विनी नक्षत्र का प्रारम्भिक मान	0	0	0	0
जन्म समय तक चन्द्रमा का चालन (+)	0	3	54	11
अतः 11 मार्च 97 को रात्रि 10 बजकर 22 मिनट पर चन्द्र स्पष्ट=	0	3	54	11

चन्द्र स्पष्ट के अनुसार नक्षत्र का चरण तथा राशि द्वितीय प्रकरण में दी गई तालिका से ज्ञात किए जा सकते हैं। तालिका के अनुसार जातक का जन्म मेष राशि में अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ।

चन्द्रगति—नक्षत्र के भभोग के आधार पर चन्द्रमा की नक्षत्रीय दैनिक गति ज्ञात की जा सकती है।

उपरोक्त उदाहरण में—

चन्द्रमा 22 घण्टे 26 मिनट (56 घटी 5 पल) में चलता है 800 कला

$$\therefore \text{ 24 घण्टे (60 घटी) में चलेगा—} \quad \frac{800 \text{ कला} \times 24 \text{ घण्टे (60 घटी)}}{\text{भभोग}}$$

$$\text{घण्टा मिनट से—} \quad \frac{800 \text{ कला} \times 24 \text{ घण्टे}}{22 \text{ घण्टे } 26 \text{ मिनट}}$$

= 855 कला 52 विकला

= 14 अंश 15 कला 52 विकला

$$\text{घटी पल से—} \quad \frac{800 \text{ कला} \times 60 \text{ घटी}}{56 \text{ घटी } 5 \text{ पल}}$$

= 855 कला 52 विकला

चन्द्रमा की दैनिक (नक्षत्रीय) गति = 14 अंश 15 कला 52 विकला

(चन्द्र स्पष्ट की गणना के लिए हमारे द्वारा ही प्रकाशित लेखक की अन्य पुस्तक *'जन्मपत्री रचना में त्रुटियां क्यों'* का अध्ययन करें)

3. नक्षत्र और सूर्य—निरयन पद्धति के अनुसार पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 365.256363 दिन या 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनट 9.76 सेकण्ड में करती है। इसे यों भी

कह सकते हैं कि इस अवधि में सूर्य 27 नक्षत्रों में होकर गुजरता है। अतः सूर्य एक नक्षत्र को औसत गति से

$$\frac{365.256363}{27} = 13.52801$$

दिन या 13 दिन 12 घण्टे 40 मिनट 20.3616 सेकण्ड में पार करता है। परन्तु सूर्य की गति (वास्तव में पृथ्वी की) सर्दी (दक्षिणायन) में तीव्र तथा गर्मी (उत्तरायन) में धीमी रहती है। इसलिए सूर्य एक नक्षत्र को 13 से 14 दिन में पार करता है तथा एक चरण को 3 ¼ से 3 ½ दिन में।

सूर्य की विभिन्न नक्षत्रों में प्रतिवर्ष प्रवेश की तिथियां निम्नानुसार हैं।

निरयन सूर्य द्वारा नक्षत्र प्रवेश

क्र. सं.	नक्षत्र	सूर्य प्रवेश	क्र. सं.	नक्षत्र	सूर्य प्रवेश
1	अश्विनी	13-14 अप्रैल	15	स्वाति	23 अक्टूबर
2	भरणी	27-28 अप्रैल	16	विशाखा	5-6 नवम्बर
3	कृतिका	10-11 मई	17	अनुराधा	19 नवम्बर
4	रोहिणी	23-24 मई	18	ज्येष्ठा	2 दिसम्बर
5	मृगशिर	6-7 जून	19	मूल	15 दिसम्बर
6	आर्द्रा	21 जून	20	पू० षाढ़	27 दिसम्बर
7	पुनर्वसु	5 जुलाई	21	उ० षाढ़	10-11 जनवरी
8	पुष्य	19 जुलाई	22	श्रवण	23-24 जनवरी
9	आश्लेषा	2 अगस्त	23	धनिष्ठा	5-6 फरवरी
10	मघा	16 अगस्त	24	शतभिषा	19 फरवरी
11	पू० फा.	30 अगस्त	25	पू० भाद्र	4 मार्च
12	उ० फा.	12-13 सितम्बर	26	उ० भाद्र	17 मार्च
13	हस्त	26 सितम्वर	27	रेवती	30-31 मार्च
14	चित्रा	10 अक्टूवर	1	अश्विनी	13-14 अप्रैल

उपरोक्त नक्षत्र प्रविष्टियों के आधार पर चरण भेद से सूर्य संक्रान्तियां बनती हैं। तीन नक्षत्रों में प्रवेश के साथ ही राशियां प्रारम्भ होती हैं, तीन नक्षत्रों के द्वितीय चरण में, तीन नक्षत्रों के तृतीय चरण में तथा तीन नक्षत्रों के चतुर्थ चरण में सूर्य के प्रवेश से संक्रान्तियां होती हैं। सूर्य एक चरण को 3 ¼ से 3 ½ दिन में पार करता है, अतः द्वितीय चरण में 3 दिन बाद, तृतीय चरण में 7 दिन बाद तथा चतुर्थ चरण में 10 दिन बाद प्रवेश करता है।

चरण भेद के आधार पर सूर्य संक्रान्तियां निम्नानुसार होती हैं।

नक्षत्र चरण प्रवेश द्वारा सूर्य संक्रान्तियां

क्र० सं०	सूर्य संक्रान्ति	नक्षत्र	चरण	संक्राति तिथि (चरण में प्रवेश)	क्र० सं०	सूर्य संक्रान्ति	नक्षत्र	चरण	संक्रान्ति तिथि (चरण में प्रवेश)
1	मेष	अश्विनी	I	13-14 अप्रैल	7	तुला	चित्रा	III	16-17 अक्टूबर
2	वृषभ	कृतिका	II	14-15 मई	8	वृश्चिक	विशाखा	IV	15-16 नवम्बर
3	मिथुन	मृगशिर	III	13-14 जून	9	धनु	मूल	I	15 दिसम्बर
4	कर्क	पुनर्वसु	IV	15-16 जुलाई	10	मकर	उ० षा०	II	14 जनवरी
5	सिंह	मघा	I	15-16 अगस्त	11	कुम्भ	धनिष्ठा	III	12-13 फरवरी
6	कन्या	उ० फा०	II	15-16 सित.	12	मीन	पू० भाद्र	IV	14-15 मार्च

4. नक्षत्र चरण एवं चरणाक्षर—जातक का नामकरण जन्म नक्षत्र में चरण के अनुसार किया जाता है। नक्षत्र चरणों के आधार पर चरणाक्षर या प्रथमाक्षर लगभग सभी पंचांगों में तालिकाबद्ध उपलब्ध हो जाते हैं। हम यह स्पष्ट करेंगे कि इस चरणाक्षर व्यवस्था की उत्पत्ति कैसे हुई, इनका क्रम यही क्यों है तथा इस व्यवस्था को 'अवकहडा चक्र' क्यों कहते हैं।

वर्ण विन्यास (चरणाक्षार व्यवस्था) को समझने से पहले तीन आधारभूत बातों को समझना आवश्यक है।

(*i*) वर्ण विन्यास व्यवस्था में अभिजित नक्षत्र को भी मूलरूप से सम्मिलित किया गया था।

(*ii*) इस प्रकार 28 × 4 = 112 चरणों से यह मूल व्यवस्था बनाई गई है।

(*iii*) नक्षत्रों की गणना कृतिका को प्रथम नक्षत्र मानते हुए की गई थी क्योंकि वर्ण विन्यास की रचना के समय कृतिका नक्षत्र के निकट बसन्त सम्पात होता था। अर्थात् नक्षत्रों की गणना 'कृतिकादि भरण्यन्तम्' के आधार पर की जाती थी।

वर्ण विन्यास—वर्ण विन्यास का आधार आर्यमातृका के वर्ण-वर्ग हैं। आर्यमातृका में दो प्रकार के वर्ण-वर्ग हैं—4 वर्ग 5-5 वर्णों के तथा 4 वर्ग 3-3 वर्णों के। प्रथम श्रेणी के 20 वर्ण अधिक प्रयोग में आते हैं जबकि द्वितीय श्रेणी के 12 वर्ण कम प्रयोग में आते हैं।

प्रथम (5 वर्णों वाले) वर्ण वर्ग

1 अ व क ह ड
2 म ट प र त

द्वितीय (3 वर्णों वाले) वर्ण वर्ग

1 घ ङ छ
2 ष ण ठ

प्रथम (5 वर्णों वाले) वर्ण वर्ग	द्वितीय (3 वर्णों वाले) वर्ण वर्ग
3 न य भ ज ख	3 ध फ ड
4 ग स द च ल	4 थ झ ञ

1. प्रथम श्रेणी के 4 वर्गों के 20 वर्णों में आ, ई, ऊ, ऐ ओ की मात्राएं लगाकर 100 वर्ण बनाए गए तथा द्वितीय श्रेणी के 4 वर्गों के 12 वर्णों को मूल रूप में ले लिया गया। इस प्रकार 112 चरणों के लिए 112 चरणक्षर बना लिए गए।

2. विभिन्न चरणों में इन 112 वर्णों को विभाजित करने के लिए प्रथम श्रेणी के प्रत्येक वर्ग के बीच के (तीसरे) वर्ण में तीसरी मात्रा (ऊ) लगाने के बाद द्वितीय श्रेणी के एक-एक वर्ग के तीन-तीन वर्ण समायोजित कर दिए गए।

3. इस प्रकार कृतिका (प्रथम नक्षत्र) से भरणी (अन्तिम नक्षत्र) तक 112 चरणों के लिए 112 चरणाक्षर निम्नानुसार बनाए गए।

(अ) कृतिका से आश्लेषा तक 7 नक्षत्रों के 28 चरणों के लिए—

आ इ ऊ ए ओ	वा वी वू वे वो	का की कू	घ ङ छ	के को	हा ही हू हे हो	डा डी डू डे डो
अ	व	क	....	क	ह	ड

= 5 × 5 = 25 + 3 = 28 चरणाक्षर

(ब) मघा से विशाखा तक 7 नक्षत्रों के 28 चरणों के लिए—

मा मी मू मे मो	टा टा टू टे टो	पा पी पू	ष ण ढ	पे पो	रा री रू रे रो	ता ती तू ते तो
म	ट	प	. . .	प	र	त

= 5 × 5 = 25 + 3 = 28 चरणाक्षर

(स) अनुराधा से श्रवण तक (अभिजित सहित) 7 नक्षत्रों के 28 चरणों के लिए—

ना नी नू ने नो	या यी यू ये यो	भा भी भू	ध फ ड़	भे भो	जा जी जू जे जो	खा खी खू खे खो
न	य	भ	. . . . . .	भ	ज	ख

= 5 × 5 = 25 + 3 = 28 चरणाक्षर

(द) धनिष्ठा से भरणी तक 7 नक्षत्रों के 28 चरणों के लिए—

गा गी गू गे गो	सा सी सू से सो	दा दी दू	थ झ ञ	दे दो	चा ची चू चे चो	ला ली लू ले लो
ग	स	द	....	द	च	ल

= 5 × 5 = 25 + 3 = 28 चरणाक्षर

4. यदि हम 'स' के अन्तर्गत रखे गए वर्णों को गिनें तो पांच नक्षत्रों के 20 चरणों के पश्चात् 'जू जे जो खा' अभिजित नक्षत्र में आते हैं क्योंकि अनुराधा से उत्तराषाढ़ तक 5 नक्षत्र पूरे हो जाते हैं। वर्तमान में चरणाक्षर तालिका में या तो मकर राशि में चार कालम बनाकर अभिजित के चार वर्णों सहित 13 वर्ण दिए जाते हैं या जू जे जो खा वर्णों को छोड़ दिया जाता है।

5. वर्ण विन्यास कृतिका नक्षत्र से प्रारम्भ होने तथा वहीं से प्रथम वर्ग के वर्ण अ व क ह ड सर्वप्रथम आने के कारण चरणाक्षर व्यवस्था को अवकहडा चक्र कहते हैं। संक्षेप में उसे 'होडा' चक्र भी कहा जाता है।

6. वर्ण विन्यास कृतिका से प्रारम्भ किया गया है जबकि वर्तमान में अश्विनी नक्षत्र प्रथम है, इसलिए चरणाक्षर तालिका अश्विनी से बनाई जाती है।

7. अपवाद—(*i*) श और स तथा ब और व में कोई अन्तर नहीं माना जाता। (*ii*) अ और आ तथा छोटी व बड़ी मात्राओं में कोई अन्तर नहीं माना जाता। (*iii*) ङ, ञ तथा ण में से ङ के स्थान पर ग, ञ के स्थान पर ज तथा ण के स्थान पर ड माने जाते हैं।

अभिजित तथा जू जे जो खा को छोड़कर शेष 27 नक्षत्रों में 108 चरणाक्षरों को क्रमबद्ध करने पर निम्न तालिका बन जाएगी जिसे अवकहडा चक्र भी कह सकते हैं।

अवकहडा चक्र

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र → चरण	अश्विनी	भरणी	कृतिका	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कू	के	०	हू	डी
द्वितीय	चे	लू	०	इ	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय	चो	ले	०	ऊ	वी	०	का	ङ	हा	०	हो	डे
चतुर्थ	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	ही	डा	डो
राशि	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र → चरण	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाति	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय	मी	टा	०	हो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू
राशि	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र → चरण	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम	ये	भू	भे	०	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय	यो	धा	०	भो	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय	भा	फा	०	जा	खे	०	गू	सी	दा	०	फ	चा
चतुर्थ	भी	डा	०	जी	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

5. नक्षत्र चरण और वर्ग—नामाक्षरों के आधार पर जातकों में पारस्परिक मित्रता या शत्रुता देखने की एक विधा 'वर्ग विन्यास' है। हिन्दी वर्णमाला के सभी स्वरों तथा व्यंजनों को 8 वर्गों में क्रमानुसार बांटा गया है। जिस क्रम में ये वर्ग निर्धारित किए गए हैं, प्रत्येक वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु वर्ग होता है। जैसे गरुड़ और सर्प, मार्जार और मूषक, सिंह और मृग तथा श्वान और मृग वर्गों में पारस्परिक शत्रुता है।

हिन्दी भाषा के वर्णों के आधार पर वर्ग निम्न तालिका में दिए जा रहे हैं। इसमें ऊपर-नीचे के वर्गों में शत्रुता होती है।

नामाक्षर एवं वर्ग

गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान
अ इ ऊ ए ओ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण
सर्प	**मूषक**	**मृग**	**मेष**
त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह

यदि उपरोक्त वर्गों को नक्षत्र चरणों के सन्दर्भ में देखा जाए तो चरणाक्षरों के आधार पर वर्गों का सम्बन्ध निम्नानुसार स्थापित होता है।

1. गरुड़ वर्ग (अ इ ऊ ए ओ)—कृतिका I II III IV, रोहिणी I = कुल 5 चरण

2. मार्जार वर्ग (क ख ग घ ङ)—मृगशिर III IV, आर्द्रा I II III, पुनर्वसु I II, धनिष्ठा I II III IV, शतभिषा I, श्रवण I II III IV = कुल 16 चरण

3. सिंह वर्ग (च छ ज झ ञ)—अश्विनी I II III, आर्द्रा IV, उत्तरा भाद्रपद III IV, रेवती III IV = कुल 10 चरण

4. श्वान वर्ग (ट ठ ड ढ ण)—पुष्य IV, आश्लेषा I II III IV, पूर्वा फाल्गुनी II III IV, उत्तरा फाल्गुनी I II, हस्त III IV, पूर्वाषाढ़ IV = कुल 13 चरण

5. सर्प वर्ग (त थ द ध न)—स्वाति IV, विशाखा I II III IV, अनुराधा I II III IV, ज्येष्ठा I, पूर्वाषाढ़ II, पूर्वा भाद्रपद III IV, उत्तरा भाद्रपद I II, रेवती I II = कुल 17 चरण

6. मूषक वर्ग (प फ ब भ म)—रोहिणी II III IV, मृगशिर I II, मघा I II III IV, पूर्वा फाल्गुनी I, उत्तरा फाल्गुनी III IV, हस्त I, चित्रा I II, मूल III IV, पूर्वाषाढ़ I III, उत्तराषाढ़ I II, (ब को व मानने के आधार पर) = कुल 21 चरण

7. मृग वर्ग (य र ल व)—अश्विनी IV भरणी I II III IV, रोहिणी II III IV, मृगशिर I II, चित्रा III IV, स्वाति I II III, ज्येष्ठा II III IV, मूल I II = कुल 20 चरण

8. मेष वर्ग (श ष स ह)—पुनर्वसु III IV, पुष्य I II III, हस्त II, शतभिषा II III IV; पूर्वा भाद्रपद I II, (श को स मानने के आधार पर) = कुल 11 चरण

ब को व मानने से रोहिणी II III IV तथा मृगशिर I II मूषक तथा मृग दोनों वर्गों में आ जाने से चरणों का योग 108 के स्थान पर 113 आया है।

यदि किसी कारण से वर्ग तालिका उपलब्ध न हो तो चन्द्र नक्षत्र के चरण के आधार पर सीधे ही उपरोक्त विवरण से जातक का वर्ग निर्धारण किया जा सकता है तथा शत्रु वर्ग (नक्षत्र चरण) ज्ञात किया जा सकता है।

6. नक्षत्र और पाया (पाद)—सामान्यतया ग्रामीण क्षेत्रों में जातक के जन्म पर पूछा जाता है कि बालक चांदी के पाए आया है या सोने के पाए? पाए के अनुसार जन्म की शुभाशुभता को व्यक्त किया जाता है।

जन्म नक्षत्र के अनुसार पाए या पाद चार प्रकार के होते हैं।

(*i*) **स्वर्ण पाद (सोने का पाया)**—रेवती से तीन नक्षत्र अर्थात् रेवती, अश्विनी व भरणी नक्षत्रों में जन्म हो तो स्वर्ण पाद (सोने का पाया) में जन्म हुआ माना जाता है। सोने के पाए में हुआ जन्म मध्यम शुभ माना जाता है।

(*ii*) **लौह पाद (लोहे का पाया)**—कृतिका से तीन नक्षत्र अर्थात् कृतिका, रोहिणी व मृगशिर नक्षत्रों में जन्म हो तो लौह पाद (लोहे का पाया) में जन्म हुआ माना जाता है। लोहे के पाए का जन्म हानिकारक तथा अशुभ माना जाता है।

(*iii*) **रजत पाद (चांदी का पाया)**—आर्द्रा से बारह नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा तथा अनुराधा में जन्म होने पर रजत पाद (चांदी का पाया) में जन्म हुआ माना जाता है। चांदी के पाए का जन्म शुभ एवं श्रेष्ठ माना जाता है।

(*iv*) **ताम्र पाद (तांबे का पाया)**—ज्येष्ठा से नौ नक्षत्र अर्थात् ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद तथा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रों में जन्म होने पर तांबे के पाए में जन्म होना माना जाता है। तांबे का पाया सामान्य शुभ होता है।

श्रेष्ठता क्रम में सर्वश्रेष्ठ चांदी, द्वितीय तांबा, तृतीय सोना तथा चतुर्थ लोहे का पाया माना जाता है।

7. नक्षत्र और भाव—

(*i*) **नक्षत्र और लग्न**—एक राशि का लग्न लगभग 2 घण्टे का होता है परन्तु एक राशि में 2 ¼ नक्षत्र होने से लग्न नक्षत्र 50 से 59 मिनट तक उदय होता है। एक ही राशि में लग्न का नक्षत्र बदल जाने पर जातक का स्वभाव, प्रकृति आदि बदल जाते हैं। धनु लग्न के उदाहरण से इसे स्पष्ट करते हैं। धनु लग्न लगभग 2 घण्टे 4 मिनट का होता है, अतः एक नक्षत्र का मान $\frac{2 \text{ घण्टे } 4 \text{ मिनट}}{2\frac{1}{4}}$ = 55 मिनट 7 सेकण्ड हुआ। धनु लग्न में एक मिनट में 14 कला 31 विकला लग्न गति होती है।

मान लीजिए एक जातक का जन्म लग्न स्पष्ट धनु राशि में 26 अंश 30 कला है। यह कोणात्मक मान पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पड़ता है। इस जातक पर राशि स्वामी गुरु के साथ-साथ नक्षत्र स्वामी शुक्र का प्रभाव भी पड़ेगा। यदि जन्मपत्री रचनाकार द्वारा इष्ट गणना में 1 मिनट की त्रुटि हो जाए और लग्न स्पष्ट 26 अंश 44 कला हो जाए तो नक्षत्र पूर्वाषाढ़ के बजाय उत्तराषाढ़ हो जाएगा जिससे जातक पर गुरु के साथ-साथ सूर्य का प्रभाव पड़ेगा। इससे स्पष्ट होता है कि लग्न स्पष्ट शुद्ध होना चाहिए तथा नक्षत्र एवं चरण का निर्धारण आवश्यक है।

(*ii*) **नक्षत्र और भाव**—जन्म कुण्डली में 12 भाव होते हैं। राशियां भी 12 हैं। लग्नानुसार प्रत्येक भाव में एक-एक राशि लिख दी जाती है। राशियों के आधार पर जन्मकुण्डली स्थूल होती है। एक राशि में पूर्ण एवं आंशिक रूप से तीन नक्षत्र होते हैं जिनके स्वामी भिन्न-भिन्न होते हैं। जिस प्रकार भिन्न-भिन्न राशियों में ग्रह अलग-अलग प्रकार का शुभाशुभ फल देते हैं, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में स्थित ग्रह भी भिन्न-भिन्न प्रकार का फल देते हैं। चाहे वे तीनों नक्षत्र एक ही राशि/भाव में क्यों न हों। नक्षत्रों का प्रभाव ग्रहों पर राशि से भी अधिक होता है। यदि सम्बन्धित नक्षत्रों के कोणात्मक मान के अनुसार प्रत्येक भाव के 3-3 उपविभाग कर दिए जाएं तो जन्मकुण्डली 12 के स्थान पर 36 उपभावों में विभाजित हो जाएगी। इसके बाद यह ज्ञात करना होगा कि ग्रह स्पष्ट के अनुसार कौन-सा ग्रह एक ही भाव या राशि के अन्तर्गत किस नक्षत्र में है। सम्बन्धित ग्रह द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र के स्वामी के आधार पर उस ग्रह का फलादेश अधिक सूक्ष्म व सही होगा। जैसे एक ज्योतिर्विद को किसी भाव में राशि की संख्या में ग्रह को देखते ही यह समझ में आ जाता है कि अमुक भाव में अमुक राशि में अमुक ग्रह कैसा फल देगा, उसी प्रकार यह अभ्यास भी करना होगा कि उस राशि में कौन-कौन से नक्षत्र हैं तथा अमुक ग्रह उनमें से किस नक्षत्र में है। इसके लिए ग्रह स्पष्ट शुद्धता से किए जाने चाहिए।

मेष लग्न की जन्म कुण्डली बनाकर उसमें भावानुसार नक्षत्रों को स्पष्ट किया जा रहा है। यदि अन्य लग्न की जन्मकुण्डली हो तो वह राशि जिस भाव में हो उसे लग्न मानकर नक्षत्रों की विभिन्न भावों में स्थिति ज्ञात की जा सकती है। तद्नुसार उनमें स्थित ग्रहों का राशि के साथ-साथ नक्षत्रों में स्थिति का फल भी बताया जा सकता है।

नक्षत्रानुसार जन्मकुण्डली

भाव	राशि	नक्षत्र
1 (लग्न)	मेष (मंगल)	अश्विनी (केतु) भरणी (शुक्र) कृतिका 1 (सूर्य)
2	वृषभ (शुक्र)	कृतिका 2. 3. 4, (सूर्य) रोहिणी (चन्द्र) मृगशिर 1. 2 (मंगल)
3	मिथुन (बुध)	मृगशिर 3, 4 (मंगल) आर्द्रा (राहू) पुनर्वसु 1, 2, 3 (गुरु)
4	कर्क (चन्द्र)	पुनर्वसु 4 (गुरु) पुष्य (शनि) आश्लेषा (बुध)
5	सिंह (सूर्य)	मघा (केतू) पूफा (शुक्र) उफा (सूर्य)
6	कन्या (बुध)	उफा 2, 3. 4 (सूर्य) हस्त (चन्द्र) चित्रा 1. 2 (मंगल)
7	तुला (शुक्र)	चित्रा 3. 4 (मंगल) स्वाति (राहू) विशाखा 1, 2. 3 (गुरु)
8	वृश्चिक (मंगल)	विशाखा 4 (गुरु) अनुराधा (शनि) ज्येष्ठा (बुध)
9	धनु (गुरु)	मूल (केतू) पू.षा. (शुक्र) उ.षा. 1 (सूर्य)
10	मकर (शनि)	उ.षा. 2. 3. 4 (सूर्य) श्रवण (चन्द्र) धनिष्ठा 1. 2 (मंगल)
11	कुम्भ (शनि)	धनिष्ठा 3, 4 (मंगल) शतभिषा (राहू) पू.भा. 1, 2, 3 (गुरु)
12	मीन (गुरु)	पू.भा. 4, (गुरु) उ.भा. (शनि) रेवती (बुध)

1. उपरोक्त मेष लग्न की नक्षत्र-कुण्डली है। यदि कर्क लग्न हो तो लग्न में पुनर्वसु 4, पुष्य व आश्लेषा नक्षत्र होंगे। इसके पश्चात् द्वितीय भाव में मघा, पूफा व उफा नक्षत्र होंगे। इसी प्रकार अन्य भावों में नक्षत्रों की स्थिति ज्ञात की जा सकती है। अन्य लग्नों की जन्म कुण्डलियों में भी नक्षत्रों की स्थिति का अभ्यास किया जाना चाहिए।

2. मान लीजिए उपरोक्त जन्मकुण्डली में चन्द्रमा अष्टम भाव में है तो वह वृश्चिक राशि में नीचस्थ होगा परन्तु अष्टम भाव में चन्द्रमा किस नक्षत्र में है, यह भी जानना आवश्यक है। वृश्चिक राशि (अष्टम भाव) में विशाखा चतुर्थ चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र हैं जिनके स्वामी क्रमशः गुरु, शनि व बुध हैं। अष्टमस्थ चन्द्रमा पर अष्टमेश मंगल का प्रभाव तो पड़ेगा ही परन्तु चन्द्रमा के नक्षत्रेश का प्रभाव भी पड़े बिना नहीं रह सकता।

उपरोक्त उदाहरण में अष्टमस्थ चन्द्रमा वृश्चिक राशि के अन्तर्गत विशाखा नक्षत्र (चतुर्थ चरण) में होगा तो जातक को उच्च शिक्षा दिलाएगा, दूरस्थ स्थान पर जीवन यापन कराएगा, परिवार से अलगाव कराएगा, सम्पत्ति का विक्रय कराएगा तथा पिता को चिकित्सालय में भर्ती करा सकता है। क्योंकि चन्द्रमा चतुर्थ का तथा गुरु नवम तथा द्वादश भावों का स्वामी है।

यदि चन्द्रमा अनुराधा नक्षत्र में होगा तो विवाद तथा उत्तराधिकार द्वारा सम्पत्ति, बीमा, केमिकल इंजीनियरिंग, उद्योग या खदान में नौकरी तथा उत्तम सरकारी आवास

में निवास प्रदान करेगा। मित्रों के सहयोग से सम्पत्ति क्रय करने का अवसर प्रदान करेगा। क्योंकि शनि (अनुराधा नक्षत्र का स्वामी) दशमेश व एकादशेश है। चन्द्रमा चतुर्थेश है।

यदि चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ तो शत्रुता, रुग्णता, अनेक बार आवास परिवर्तन आदि फल होंगे। ऋण लेना पड़ सकता है, ऋण द्वारा या किश्तों पर सम्पत्ति या वाहन का क्रय करवाएगा। क्योंकि बुध तृतीयेश व षष्ठेश है। चन्द्रमा चतुर्थेश है ही।

इस प्रकार नक्षत्र के आधार पर फलकथन के लिए प्रत्येक भाव की राशि में नक्षत्रों का क्षेत्र तथा ग्रह के तात्कालिक राश्यंश के आधार पर नक्षत्र स्थिति का ज्ञान होना आवश्यक है। अकेला राशि स्वामी फल देने के लिए पूर्णतया सक्षम नहीं है। नक्षत्रेश भी फलकथन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि एक ग्रह एक ही राशि/भाव में स्थित होने पर भी भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में स्थित होने से भिन्न-भिन्न प्रकार का शुभाशुभ फल दिखा सकता है। नक्षत्र के आधार पर फलकथन एक सूक्ष्म विधा है जबकि राशि के आधार पर स्थूल।

8. नक्षत्र एवं प्रश्नलग्न—फलकथन की एक विधा प्रश्नलग्न भी है। सामान्यतया प्रश्नकर्ता द्वारा प्रश्न पूछने के समय के आधार पर इष्ट ज्ञात कर प्रश्नकुण्डली बनाई जाती है। इसमें सूक्ष्मता लाने के लिए प्राचीन विद्वानों ने नक्षत्रों के चरणों के आधार पर प्रश्नलग्न स्पष्ट करने की विधि प्रतिपादित की है। बारह लग्न बारह राशियों के होते हैं। यदि 12 राशियों को नक्षत्र-चरणों में विभाजित किया जाए तो 12 × 9 = 108 चरणों के आधार पर 108 तरह के सूक्ष्म लग्न बन सकते हैं।

विधि—जब प्रश्नकर्ता प्रश्न पूछने आता है तो उससे शुद्ध मन से 1 से 108 के बीच कोई संख्या का उच्चारण करने को कहा जाता है। प्रश्नकर्ता जो संख्या बता रहा है वह अश्विनी के प्रथम चरण से गिनने पर प्रश्नलग्न का चरण होता है।

उदाहरण 2 मार्च 1997 को प्रातः 8 बजे प्रश्नकर्ता ने ज्योतिर्विद को संख्या बताई 89।

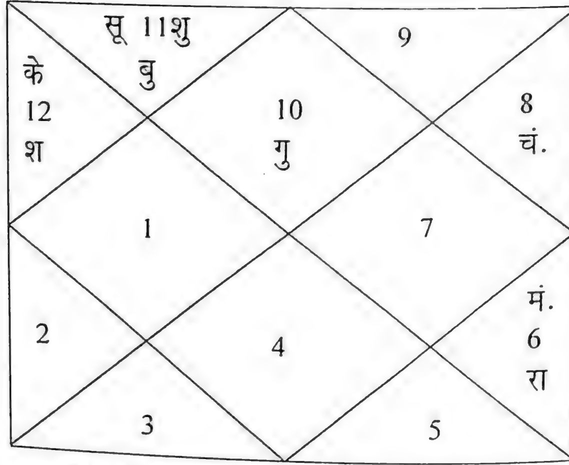
लग्न स्पष्ट विधि—(*i*) बताई गई संख्या में 9 का भाग लगाएं। 89 में 9 का भाग लगाने पर 9 बार भाग लगा तथा 8 शेष बचे। इसका अर्थ यह हुआ कि 9 राशियों के लग्न निकल गए। दसवीं राशि (मकर) का लग्न चल रहा है। मकर राशि का आठवां (शेष) चरण चल रहा है।

(*ii*) अब यह ज्ञात करें कि मकर राशि में आठवां चरण किस नक्षत्र का कौन-सा चरण होगा। मकर राशि में सर्वप्रथम उत्तराषाढ़ नक्षत्र के तीन चरण तथा श्रवण नक्षत्र के चार चरण कुल सात चरण निकल चुके हैं। आठवां चरण धनिष्ठा का प्रथम चरण चल रहा है।

(*iii*) अतः मकर लग्न में धनिष्ठा का प्रथम चरण आया जो 9/23/20 से 9/26/40 तक है।

(*iv*) मकर लग्न की प्रश्न कुण्डली बनाकर उसमें प्रश्न समय की ग्रह स्थिति दर्शाने से प्रश्न कुण्डली तैयार हो जाएगी।

प्रश्न कुण्डली



उक्त उदाहरण में 2 मार्च 1997 को प्रातः 8 बजे प्रश्न पूछा गया है। ग्रह स्थिति निम्न प्रकार थी—

सूर्य—कुम्भ	बुध—कुम्भ	शनि—मीन
चन्द्र—वृश्चिक	गुरु—मकर	राहू—कन्या
मंगल—कन्या	शुक्र—कुम्भ	केतू—मीन

उपरोक्त ग्रहों को तात्कालिक स्पष्ट करके सभी के नक्षत्र व चरण ज्ञात कर लेने चाहिए।

उपरोक्त प्रकार की प्रश्नकुण्डली में प्रश्नकर्ता को भाग्य आजमाने के दो अवसर प्राप्त होते हैं—पहला अवसर प्रश्न पूछने के समय के रूप में तथा दूसरा अवसर इच्छित संख्या का उच्चारण करने के रूप में। इस प्रकार चरणांक के आधार पर लग्न साधन करने तथा प्रश्न के समय की ग्रह स्थिति के आधार पर निर्मित प्रश्न कुण्डली से फलकथन सही होगा। यदि इसमें ग्रहों की नक्षत्र-स्थिति का भी ध्यान रखा जाए तो फलकथन में अधिक सत्यता आ सकती है।

9. नक्षत्र चरण और नवांश—जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति राशियों में दर्शाई जाती है। यह ग्रहस्थिति स्थूलमापक पर है क्योंकि राशि 30 अंश की होती है। राशि के प्रारम्भ, मध्य अथवा अन्त में स्थित ग्रहों का फल समान नहीं हो सकता। सूक्ष्ममापक पर राशि में ग्रह की स्थिति ज्ञात करने के लिए राशियों के अनेक प्रकार के विभाग अंशानुसार किए जाते हैं। अंशानुसार ही यह देखा जाता है कि अमुक ग्रह राशि के किस उपविभाग में है तथा उस विभाग का स्वामी ग्रह कौन है। राशि के सूक्ष्म विभागों को 'वर्ग' कहा जाता है तथा ग्रह की अंशानुसार उपविभाग में स्थिति जानने की क्रिया को 'वर्ग साधन' कहते हैं। प्रत्येक वर्ग के आधार पर ग्रह का 'बल' ज्ञात किया जाता है।

इन वर्गों में राशि के दो भाग (होरा), तीन भाग (द्रेस्काण), सात भाग (सप्तांश)

नौ भाग (नवांश), बारह भाग (द्वादशांश), सोलह भाग (षोडषांश), तीस भाग (त्रिशांश) आदि प्रमुख हैं।

उपरोक्त वर्गों में नवांश सबसे महत्वपूर्ण वर्ग है तथा नक्षत्रों के चरणों पर आधारित है। इसलिए हम इस प्रकरण में केवल नवांश का ही वर्णन करेंगे।

नवांश—नवांश का तात्पर्य है नवां भाग। एक राशि में नौ नवांश होते हैं। एक नवांश का कोणात्मक मान $\frac{30}{9} = 3$ अंश 20 कला होता है। बारह राशियों में $12 \times 9 = 108$ नवांश होते हैं। एक राशि में 9 चरण होते हैं। बारह राशियों में 108 चरण होते हैं। अतः एक नवांश और एक चरण गणित की दृष्टि से समानार्थी हैं। एक राशि के नौ नवांश—एक राशि (2 ¼ नक्षत्रों) के नौ चरणों के बराबर होते हैं।

परन्तु क्रम संख्या में अन्तर है। चरणों की संख्या एक नक्षत्र में 1 से 4 तक होती है जबकि एक राशि में नवांशों की संख्या 1 से 9 तक होती है जिसमें 2 ¼ नक्षत्र होते हैं। जैसे भरणी नक्षत्र का तृतीय चरण मेष राशि का सप्तम नवांश होगा क्योंकि मेष के प्रथम चार नवांश अश्विनी के चार चरण हैं। इसके पश्चात् भरणी का तृतीय चरण, मेष का सप्तम नवांश हुआ जबकि दोनों का कोणात्मक मान मेष राशि में 20 अंश 0 कला से 23 अंश 20 कला तक होता है। प्रत्येक नक्षत्र के एक चरण का स्वामी नवांश स्वामी के रूप में एक ग्रह होता है। उस चरण के अंशादि उसी ग्रह की राशि के नवांश में आते हैं।

नवांश राशि व्यवस्था

(*i*) अग्नि तत्व प्रधान (मेष, सिंह, धनु) राशियों का प्रथम नवांश मेष (अग्नि) तथा अन्तिम (नवां) नवांश धनु (अग्नि) राशि का होता है।

(*ii*) पृथ्वी तत्व प्रधान (वृषभ, कन्या, मकर) राशियों का प्रथम नवांश मकर (पृथ्वी) तथा अन्तिम (नवां) नवांश कन्या (पृथ्वी) राशि का होता है।

(*iii*) वायु तत्व प्रधान (मिथुन, तुला, कुम्भ) राशियों का प्रथम नवांश तुला (वायु) तथा अन्तिम (नवां) नवांश मिथुन (वायु) राशि का होता है।

(*iv*) जल तत्व प्रधान (कर्क, वृश्चिक, मीन) राशियों का प्रथम नवांश कर्क (जल) तथा अन्तिम (नवां) नवांश मीन (जल) राशि का होता है।

राशियों की क्रम संख्या के आधार पर प्रथम नवांश राशि स्मरण रखने के लिए एक सूत्र प्रस्तुत कर रहा हूं। मेष से मीन तक बारहों राशियों के नवांश क्रमशः 1, 10, 7, 4, 1, 10, 7, 4 तथा 1, 10, 7, 4 राशियों के होते हैं। 1, 10, 7, 4 को तीन बार बोलें तो सभी राशियों के प्रथम नवांश निकल आएंगे। जैसे मेष का मेष से, वृष का मकर से, मिथुन का तुला से तथा कर्क का कर्क से। प्रथम नवांश राशि ज्ञात करने के पश्चात् आरोही क्रम में नौ नवांशों की राशियां ज्ञात हो जाएंगी।

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं नवांश स्वामी

नवांश क्रमांक	से		तक		मेष				वृषभ				मिथुन				कर्क			
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
प्रथम	0	0	3	20	1 अश्विनी	1	मेष	मंगल	3 कृतिका	2	मकर	शनि	5 मृगशिर	3	तुला	शुक्र	7 पुनर्वसु	4	कर्क	चन्द्र
द्वितीय	3	20	6	40	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल	8 पुष्य	1	सिंह	सूर्य
तृतीय	6	40	10	0	"	3	मिथुन	बुध	"	4	मीन	गुरु	6 आर्द्रा	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	वुध
चतुर्थ	10	0	13	20	"	4	कर्क	चन्द्र	" रोहिणी	1	मेष	मंगल	"	2	मकर	शनि	"	3	तुला	शुक्र
पंचम	13	20	16	40	2 भरणी	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल
पष्ठ	16	40	20	0	"	2	कन्या	बुध	"	3	मिथुन	वुध	"	4	मीन	गुरू	9 आश्लेषा	1	धनु	गुरु

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं जवांश स्वामी

नवांश क्रमांक	से		तक		मेष				वृषभ				मिथुन				कर्क			
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
सप्तम	20	0	23	20	भरणी	3	तुला	शुक्र	रोहिणी	4	कर्क	चन्द्र	7 पुनर्वसु	1	मेष	मंगल	आश्लेषा	2	मकर	शनि
अष्टम	23	20	26	40	भरणी	4	वृाश्चक	मंगल	5 मृगशिर	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि
नवम	26	40	30	0	3 कृतिका	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	वुध	"	3	मिथुन	वुध	"	4	मीन	गुरु

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं नवांश स्वामी

नवांश क्रमांक	से		तक		सिंह				कन्या				तुला				वृश्चिक			
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
प्रथम	0	0	3	20	10 मघा	1	मेष	मंगल	12 उ.फा.	2	मकर	शनि	14 चित्रा	3	तुला	शुक्र	16 विशाखा	4	कर्क	चन्द्र
द्वितीय	3	20	6	40	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल	17 अनुराधा	1	सिंह	सूर्य
तृतीय	6	40	10	0	"	3	मिथुन	वुध	"	4	मीन	गुरु	15 स्वाति	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	वुध
चतुर्थ	10	0	13	20	"	4	कर्क	चन्द्र	13 हस्त	1	मेष	मंगल	"	2	मकर	शनि	"	3	तुला	शुक्र
पंचम	13	20	16	40	11 पू.फा.	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल
षष्ठ	16	40	20	0	"	2	कन्या	वुध	"	3	मिथुन	वुध	"	4	मीन	गुरु	18 ज्येष्ठा	1	धनु	गुरु

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं नवांश स्वामी																					
नवांश क्रमांक	से		तक		सिंह				कन्या				तुला				वृश्चिक				
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
सप्तम	20	0	23	20	पू.फा.	3	तुला	शुक्र	हस्त	4	कर्क	चन्द्र	16 विशाखा	1	मेष	मंगल	ज्येष्ठा	2	मकर	शनि
अष्टम	23	20	26	40	"	4	वृश्चिक	मंगल	14 चित्रा	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि
नवम	26	40	30	0	12 उ.फा.	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	बुध	"	3	मिथुन	बुध	"	4	मीन	गुरु

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं नवांश स्वामी

नवांश क्रमांक	से		तक		धनु				मकर				कुम्भ				मीन			
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
प्रथम	0	0	3	20	19 मूल	1	मेष	मंगल	21 उ.षा.	2	मकर	शनि	23 धनिष्ठा	3	तुला	शुक्र	25 पू.भा	4	कर्क	चन्द्र
द्वितीय	3	20	6	40	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल	26 उ.भा.	1	सिंह	सूर्य
तृतीय	6	40	10	0	"	3	मिथुन	बुध	"	4	मीन	गुरु	24 शतभिषा	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	बुध
चतुर्थ	10	0	13	20	"	4	कर्क	चन्द्र	22 श्रवण	1	मेष	मंगल	"	2	मकर	शनि	"	3	तुला	शुक्र
पंचम	13	20	16	40	20 पू.षा.	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि	"	4	वृश्चिक	मंगल
षष्ठ	16	40	20	0	"	2	कन्या	बुध	"	3	मिथुन	बुध	"	4	मीन	गुरु	27 रेवती	1	धनु	गुरु

नक्षत्र चरणानुसार नवांश राशि एवं नवांश स्वामी

नवांश क्रमांक	से		तक		धनु				मकर				कुम्भ				मीन			
	अंश	कला	अंश	कला	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	नक्षत्र	चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
सप्तम	20	0	23	20	पू.षा.	3	तुला	शुक्र	श्रवण	4	कर्क	चन्द्र	25 पू.भा.	1	मेष	मंगल	.रेवती	2	मकर	शनि
अष्टम	23	20	26	40	"	4	वृश्चिक	मंगल	23 धनिष्ठा	1	सिंह	सूर्य	"	2	वृषभ	शुक्र	"	3	कुम्भ	शनि
नवम	26	40	30	0	21 उ.षा.	1	धनु	गुरु	"	2	कन्या	बुध	"	3	मिथुन	वुध	"	4	मीन	गुरु

पिछले पृष्ठों पर दी गई तालिकाओं में नक्षत्र, चरण, उनके कोणात्मक विस्तार, नवांश राशि तथा नवांश स्वामी दिए गए हैं। अब तक प्रकाशित पुस्तकों में चरण तालिका एवं नवांश तालिका अलग-अलग ही रहती हैं परन्तु यह तालिका दोनों का सम्मिलित रूप है।

तालिका देखने की विधि—मान लीजिए चन्द्रमा मिथुन राशि में 14 अंश 40 कला 30 विकला पर है, जो आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में है। आर्द्रा नक्षत्र का तृतीय चरण मिथुन राशि का पंचम नवांश है। मिथुन राशि का प्रथम नवांश तुला (7) का होता है, अतः पंचम नवांश कुम्भ का हुआ जिसका स्वामी शनि है। तालिका में 13 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला (पंचम नवांश) के सामने मिथुन राशि के कालम में आर्द्रा नक्षत्र तृतीय चरण है। आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण के सामने मिथुन राशि के कालम में ही कुम्भ लिखा है जिसका स्वामी शनि भी लिखा है।

अतः आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण (मिथुन) का नवांश कुम्भ हुआ। यह तालिका अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा लाभदायक है।

नवांश कुण्डली—लग्न स्पष्ट जिस नक्षत्र के लिए जिस चरण में पड़ता हो, उसकी नवांश राशि ज्ञात कर लग्न में वह राशि लिख दी जाती है। शेष राशियों को आरोही क्रम में जन्मकुण्डली की भांति अन्य भावों में लिख देते हैं। इसके पश्चात् प्रत्येक ग्रह को भी नक्षत्र व चरण के समान नवांश के अनुसार नवांश राशियों में लिख देते हैं। इस प्रकार की कुण्डली नवांश कुण्डली कहलाती है।

उदाहरण—दिल्ली में 31.12.96 को रात्रि 11 बजकर 30 मिनट पर एक बालक का जन्म हुआ। लग्न तथा तात्कालिक ग्रह स्पष्ट निम्नानुसार थे।

ग्रहादि	तात्कालिक स्पष्ट				राशि	नक्षत्र	चरण	नवांश	नवांश	नवांश
	रा.	अं.	क.	वि.					राशि	स्वामी
लग्न	5	4	7	31	कन्या	उफा	3	द्वितीय	कुम्भ	शनि
सूर्य	8	16	32	16	धनु	पूफा	1	पंचम	सिंह	सूर्य
चन्द्र	5	1	57	37	कन्या	उषा	2	प्रथम	मकर	शनि
मंगल	5	5	20	0	कन्या	उफा	3	द्वितीय	कुम्भ	शनि
बुध	8	20	22	15	धनु	पूषा	3	सप्तम	तुला	शुक्र
गुरु	9	1	17	30	मकर	उफा	2	प्रथम	मकर	शनि
शुक्र	7	24	9	15	वृश्चिक	ज्येष्ठा	3	अष्टम	कुम्भ	शनि
शनि	11	7	30	15	मीन	उभा	2	तृतीय	कन्या	बुध
राहू	5	8	37	15	कन्या	उफा	4	तृतीय	मीन	गुरु
केतू	11	8	37	15	मीन	उफा	2	तृतीय	कन्या	बुध

जन्म लग्न | **नवांश कुण्डली**

7 5 8 शु मं 6 रा चं. 4 बु. 9 सू 3 10 गु श 12 के 2 11 1

12 रा गु. 10 चं. शु 11 मं 1 9 2 8 3 सू 5 7 बु. 4 के 6 श

10. नवांश का फलित में महत्व—फलित ज्योतिष में नवांश का अत्यधिक महत्व है। जन्म कुण्डली के अनुसार ग्रह कैसा भी शुभ या अशुभ, बली या निर्बल हो परन्तु उसकी वास्तविक शुभाशुभता या शक्ति नवांश के आधार पर ही आंकी जाती है। इसीलिए दक्षिणी भारत में बिना नवांश कुण्डली किसी जन्म कुण्डली का अध्ययन किया ही नहीं जाता। नवांश का महत्व निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होता है।

1. कोई ग्रह जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो यदि उसी राशि में नवांश में भी हो तो वह ग्रह वर्गोत्तम कहलाता है। ऐसे ग्रह का फल उच्च तुल्य होता है। यदि दोनों में नीच राशि में हो तब भी वह वर्गोत्तम कहलाएगा परन्तु उसका फल साधारण शुभ होगा। यदि दोनों में उच्च राशि में हो तो सर्वोत्तम शुभ फलदायक होगा।

2. जन्म लग्न राशि ही नवांश लग्न राशि आ जाए तो वह लग्न भी वर्गोत्तम होता है। वर्गोत्तम लग्न वाले जातक जीवन भर अपेक्षाकृत सुखी रहते हैं।

3. यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में उच्च राशिस्थ तथा नवांश कुण्डली में नीच राशिस्थ हो तो वह ग्रह नीच तुल्य (अशुभ एवं हानिकारक) फल देता है।

4. यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में नीच राशिस्थ तथा नवांश कुण्डली में उच्च राशिस्थ हो तो वह ग्रह उच्च तुल्य (शुभ एवं लाभकारी) फल देता है।

दक्षिणी भारत के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद देवकेरलम् के अनुसार—

"त्रिगहोच्चाप योगांशे दुःख जीवी दुरात्मवान।"

अर्थात् तीन ग्रह भी उच्च राशि में परन्तु नीच अंशों (नवांश) में हों तो जातक दुःखी एवं दुरात्मा होता है।

इसके विपरीत **"नीच राशे सुयोगांशे योगान् भोगवान भवेत्।"**

अर्थात् ग्रह नीच राशि में हों परन्तु उच्च अंशों (नवांश) में हों तो जातक सम्पन्न एवं भोगवान होता है।

उपरोक्त के आधार पर ग्रहों का फल प्रस्तुत किया जा रहा है। साथ ही यह भी बताया जा रहा है कि कौन-सा ग्रह किस राशि के किस नक्षत्र में किस चरण में उच्च या नीच होने पर नवांश में क्रमशः नीच या उच्च होगा। फल जातक-पारिजात के अनुसार दिया जा रहा है।

1. सूर्य—(अ) सूर्य मेष राशि में उच्चस्थ होता है। यदि जन्म में सूर्य भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में 0/20°/0′ से 0/23°/20′ के मध्य हो तो मेष के सप्तम नवांश में होने से तुला के नवांश में होगा। अतः सूर्य जन्म में उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक पर व्यर्थ दोषारोपण होगा, पत्नी, पुत्र एवं मित्रों से अलगाव होगा तथा कृषि-सम्पत्ति की हानि होगी।

(ब) सूर्य तुला राशि में नीचस्थ होता है। यदि जन्म में सूर्य विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में 6/20°/0′ से 6/23°/20′ के मध्य हो तो तुला के सप्तम नवांश में होने से मेष के नवांश में होगा। अतः सूर्य जन्म में नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—राज्य से धन प्राप्ति होगी। ऐसा जातक सभी प्रकार के सुख प्राप्त करेगा।

2. चन्द्रमा—चन्द्रमा इसका अपवाद है। चन्द्रमा वृषभ राशि में उच्च तथा वृश्चिक राशि में नीच होता है। वृषभ राशि के किसी भी नक्षत्र चरण का नवांश वृश्चिक राशि में नहीं पड़ता और इसी प्रकार वृश्चिक राशि के किसी भी नक्षत्र चरण का नवांश वृषभ राशि में नहीं पड़ता। अतः जन्मकालीन उच्चस्थ चन्द्रमा नवांश में नीचस्थ नहीं होता और इसी प्रकार जन्म का नीचस्थ चन्द्रमा नवांश में उच्चस्थ नहीं हो सकता। वैसे भी वृषभ राशि में कोई भी ग्रह नीचस्थ तथा वृश्चिक राशि में कोई भी ग्रह उच्चस्थ नहीं होता।

3. मंगल—(अ) मंगल मकर राशि में उच्चस्थ होता है। यदि मंगल जन्म के समय श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में 9/20°/0′ से 9/23°/20′ के मध्य हो तो मकर के सप्तम नवांश में होने से कर्क के नवांश में होगा। अतः मंगल जन्म में उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसा जातक नौकरी या व्यवसाय प्रारम्भ तो करेगा परन्तु बीच में ही छोड़ना पड़ेगा।

(ब) मंगल कर्क राशि में नीचस्थ होता है। यदि मंगल जन्म के समय आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में 3/20°/0′ से 3/23°/20 के मध्य हो तो कर्क के सप्तम नतांश में होने से मकर के नवांश में होगा। अतः मंगल जन्म में नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक को नौकरी व व्यवसाय में प्रारम्भ में असफलता मिलेगी परन्तु अन्त में सफलता प्राप्त होगी।

4. बुध—(अ) बुध स्वयं की कन्या राशि में उच्चस्थ होता है। यदि जन्म में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में 5/6°/40′ से 5/10°/0′ के मध्य हो तो कन्या के तृतीय

नवांश में होने से मीन के नवांश में होगा। अतः बुध जन्म में उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक की बुद्धि भ्रमित रहेगी। वह व्यापार में सफल नहीं होगा तथा धन हानि की आशंका होगी।

(ब) बुध मीन राशि में नीचस्थ होता है। यदि जन्म में बुध उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में 11/6°/40 से 11/10°/0′ के मध्य हो तो मीन के तृतीय नवांश में होने से कन्या के नवांश में होगा। अतः बुध जन्म में नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—ऐसा जातक अधिक बुद्धिमान होगा। उसको व्यापार में अधिक लाभ होगा तथा धन की प्राप्ति होगी।

5. गुरु—(अ) गुरु कर्क राशि में उच्चस्थ होता है। यदि जन्म में गुरु आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में 3/20°/0′ से 3/23°/20′ के मध्य हो तो कर्क के सप्तम नवांश में होने से मकर के नवांश में होगा। अतः गुरु जन्म में उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक को शत्रुओं, चोरों तथा सरकार से भय प्राप्त होगा तथा ऐसा गुरु अशुभ फलदायक होगा।

(ब) गुरु मकर राशि में नीचस्थ होता है। यदि जन्म में गुरु श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में 9/20°/0′ से 9/23°/20 के मध्य हो तो मकर के सप्तम नवांश में होने से कर्क के नवांश में होगा। अतः गुरु जन्म में नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक को सरकार से लाभ होगा। शिक्षा में प्रगति होगी। बुद्धि, सुख, सम्मान, धन एवं शक्ति में वृद्धि होगी। ऐसा जातक ग्राम, नगर या राज्य का मुखिया होगा।

6. शुक्र—(अ) शुक्र मीन राशि में उच्चस्थ होता है। यदि जन्म में शुक्र उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में 11/6°/40′ से 11/10°/0′ के मध्य हो तो मीन के तृतीय नवांश में होने से कन्या के नवांश में होगा। अतः जन्म में शुक्र उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसे जातक की नौकरी में पदावनति व व्यवसाय में हानि होगी। धन हानि होगी। कृषि व्यवसाय में असफलता प्राप्त होगी।

(ब) शुक्र कन्या राशि में नीचस्थ होता है। यदि जन्म में शुक्र उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में 5/6°40′ से 5/10°/0′ के मध्य हो तो कन्या के तृतीय नवांश में होने से मीन के नवांश में होगा। अतः जन्म में शुक्र नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—ऐसा जातक कृषि व्यवसाय में उन्नति करेगा। कृषि उत्पादों के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करेगा तथा धनी होगा।

7. शनि—(अ) शनि तुला राशि में उच्चस्थ होता है। यदि जन्म में शनि विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में हो तो तुला के सप्तम नवांश में होने से मेष के नवांश में होगा। अतः शनि जन्म में उच्च परन्तु नवांश में नीच राशि में होगा।

फल—ऐसा जातक शनि की महादशा के प्रारम्भ में सुखी परन्तु अन्त में दुखी होगा।

(ब) शनि मेष राशि में नीचस्थ होता है। यदि जन्म में शनि भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में 0/20°/0′ से 0/23°/20′ के मध्य हो तो मेष के सप्तम नवांश में होने से तुला के नवांश में होगा। अतः जन्म में शनि नीच परन्तु नवांश में उच्च राशि में होगा।

फल—नीच शनि नवांश में उच्च होने पर अशुभ प्रभाव देता है। ऐसा जातक घर से दूर रहेगा तथा उसे शत्रुओं व चोरों से भय होगा। कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

इस प्रकार हमने देशा कि एक ग्रह जन्म में उच्चस्थ होते हुए भी नक्षत्र की चरण-भिन्नता के कारण नवांश में नीचस्थ तथा इसके विपरीत जन्म में नीचस्थ होते हुए भी नवांश में उच्चस्थ होने पर भिन्न प्रकार का फल देने लग जाता है। अतः उच्चस्थ एवं नीचस्थ ग्रहों को इस दृष्टि से परखने के पश्चात् ही फलकथन किया जाना चाहिए।

❑❑

नक्षत्र और महादशा

राशि, भाव स्वामित्व, भाव स्थिति, युति, दृष्टि, मध्यत्व आदि के अनुसार ही ग्रह शुभाशुभ फल जातक को देते हैं। परन्तु उक्त शुभाशुभ फल कब प्राप्त होगा, यह जानने के लिए हमें किसी न किसी पद्धति का सहारा लेना पड़ता है। इस उद्देश्य से प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने अनेक प्रकार की दशा पद्धतियों का सूत्रपात फलित ज्योतिष के क्षेत्र में किया है तथा उनके आधार पर दशाफल के सूत्र भी प्रतिपादित किए हैं। भिन्न-भिन्न दशा पद्धतियों के अनुसार जातक के जीवन पर भिन्न-भिन्न ग्रहों का प्रभाव अलग-अलग अवधि (वर्षों) तक रहता है। साथ ही भिन्न-भिन्न दशा पद्धतियों में मानव की अधिकतम आयु (परमायु) भिन्न-भिन्न मानी गई है। परन्तु एक ग्रह की पूरी दशा अवधि में जातक पर समान शुभाशुभ प्रभाव नहीं पड़ता। प्रत्येक ग्रह की दशा की अवधि को ग्रहों के दशा वर्षों के अनुपात में विभाजित किया जाता है। इन अवधियों को अन्तर्दशा (Sub Period) कहा जाता है। इस प्रकार अनेक दशा-पद्धतियों का सूत्रपात किया गया है। जिनमें प्रमुख हैं विंशोत्तरी पद्धति (120 वर्ष), अष्टोत्तरी (108 वर्ष), योगिनी (36 वर्ष की एक आवृत्ति) एवं कालचक्र दशा (प्रत्येक नक्षत्र के भिन्न-भिन्न चरणों में भिन्न-भिन्न परमायु 100, 85, 83 अथवा 86 वर्ष मानते हुए)।

दशा पद्धतियों का आधार—उपरोक्त सभी दशा पद्धतियों का आधार जन्मकालीन चन्द्रमा की नक्षत्र में कोणात्मक स्थिति है। नक्षत्रों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि किस नक्षत्र में जन्म होने पर किस ग्रह की दशा सर्वप्रथम रहेगी, दशाओं का क्या क्रम रहेगा तथा किस ग्रह की दशा में कितने वर्ष होंगे। नक्षत्र में चन्द्रमा के भुक्तांश में भोग्यांश अथवा नक्षत्र के भयात-भभोग के आधार पर प्रथम ग्रह की दशा का भुक्त एवं भोग्य काल निर्धारित होता है। जैसे मान लीजिए विशाखा नक्षत्र में जन्म होने पर प्रथम महादशा गुरु की मानी जाती है। यदि चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र के प्रारम्भिक कोणात्मक बिन्दु पर है तो गुरु की पूरी 16 वर्ष की दशा भोग्य होगी। प्रथम चरण पार करने पर 4 वर्ष भुक्त तथा 12 वर्ष भोग्य होंगे, द्वितीय चरण पार करने पर 8 वर्ष भुक्त व 8 वर्ष भोग्य होंगे। तृतीय चरण पार करने पर 12 वर्ष भुक्त व 4 वर्ष भोग्य होंगे। इसी प्रकार पूरा विशाखा नक्षत्र पार करते ही गुरु की पूरी महादशा भुक्त होकर अगले ग्रह की महादशा प्रारम्भ हो जाएगी। इसका यह अर्थ हुआ कि जन्म के समय चन्द्रमा नक्षत्र में जितना अधिक चल चुका होगा उतनी ही भुक्त अवधि अधिक होगी और भोग्य कम।

उपरोक्त दशा पद्धतियों में विंशोत्तरी महादशा पद्धति सर्वाधिक वैज्ञानिक, तर्कसंगत एवं अनुभूत होने के कारण सर्वमान्य है। विंशोत्तरी पद्धति के अनुसार ग्रहों के शुभाशुभ फल का आकलन अधिक सत्यता के निकट पहुंचता है। यदि तात्कालिक चन्द्र स्पष्ट अथवा नक्षत्र के भयात-भभोग साधन में थोड़ी सी भी त्रुटि रह जाए तो दशाकाल गणना में अन्तर आ जाएगा।

हम इस प्रकरण में केवल विंशोत्तरी दशा पद्धति को नक्षत्रों के आधार पर समझाने का प्रयास करेंगे।

विंशोत्तरी महादशा पद्धति—महर्षि पाराशर के अनुसार सभी दशा पद्धतियों में विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वोत्तम है। जैसा कि उनके इस श्लोक से स्पष्ट होता है, **"कली विंशोत्तरी तस्माद् दशा मुख्या द्विजोत्तम।"** 'विंशोत्तरी' शब्द का तात्पर्य विंश=बीस + उत्तरी=सौ से ऊपर अर्थात् 120 वर्ष होता है। विंशोत्तरी दशा पद्धति में मानव की परमायु 120 वर्ष मानी गई है।

परमायु 120 वर्ष मानने के पीछे भचक्र को 120-120 अंशों के तीन समान तृतीयांशों या त्रिकोणों (Trines) में विभाजन का सिद्धान्त है। द्वितीय प्रकरण में इन तृतीयांशों तथा इनमें राशियों व नक्षत्रों के वितरण की एकरूपता समझाई जा चुकी है। एक तृतीयांश में 4 राशियां, 9 नक्षत्र और 36 चरण होते हैं। एक तृतीयांश में नौ नक्षत्रों का जो क्रम है, दूसरे व तीसरे तृतीयांश में भी उसी क्रम की पुनरावृत्ति होती है। इन नक्षत्रों के स्वामी ग्रहों का क्रम भचक्र में इन ग्रहों की स्थिति पर आधारित है। एक तृतीयांश में 120 अंश होने से विंशोत्तरी दशा पद्धति में जातक की परमायु 120 वर्ष मानी गई है। अनेक विद्वान विंशोत्तरी दशा पद्धति की यह कह कर आलोचना करते हैं कि 9 नक्षत्रों (120 अंश) के लिए 120 वर्ष हैं तो 27 नक्षत्रों (360 अंशों) के लिए 360 वर्ष होते हैं। परन्तु जातक के लिए एक नक्षत्र जन्म-नक्षत्र है तो दसवां अनुजन्म नक्षत्र और उन्नीसवां त्रिजन्म नक्षत्र। इन तीनों नक्षत्रों में से किसी भी एक नक्षत्र में जन्म होने पर एक ही ग्रह की प्रथम महादशा होती है। तृतीयांशों में नौ नक्षत्रों की त्रिकोणीय पुनरावृत्ति होती है। अतः विंशोत्तरी महादशा पद्धति में परमायु 120 वर्ष मानना युक्ति संगत है।

भारतीय ज्योतिष में त्रिकोण का महत्व सर्वोपरि है। जन्मकुण्डली के त्रिकोणों की राशियां, उनके स्वामी, तत्व नक्षत्रों व उनके स्वामी की एकरूपता पर ध्यान दें तो त्रिकोणों का महत्व समझ में आ सकता है। प्रत्येक लग्न की जन्मकुण्डली में त्रिकोणों की एकरूपता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मेष लग्न की जन्मकुण्डली के उदाहरण द्वारा त्रिकोणों की एकरूपता को समझाया जा रहा है।

(अ) **राशियों के आधार पर—**

1. मेष लग्न हो तो पंचम (त्रिकोण) में सिंह तथा नवम (त्रिकोण) में धनु राशि होती है। इनके स्वामी क्रमशः मंगल (लग्नेश), सूर्य (पंचमेश) तथा गुरु (नवमेश) हैं। तीनों त्रिकोणेश परस्पर मित्र हैं। इसी प्रकार प्रत्येक लग्न की कुण्डली में तीनों त्रिकोणेश मित्र होते हैं।
2. मेष, सिंह व धनु राशियां अग्नि तत्व प्रधान हैं। प्रत्येक लग्न की कुण्डली में तीनों त्रिकोणों की राशियों का हंसक तत्व समान होता है यथा, पृथ्वी तत्व, वायु तत्व तथा जल तत्व। अर्थात् अग्नि तत्व की किसी भी राशि का लग्न हो तो पंचम व नवम में भी अग्नि तत्व राशियां होती हैं। इसी प्रकार पृथ्वी तत्व, वायु तत्व व जल तत्व राशियों के लग्नों में भी उसी तत्व की राशियां पंचम व नवम त्रिकोणों में होती हैं।
3. मेष लग्न की कुण्डली में लग्न में चर, पंचम में स्थिर (सिंह) तथा नवम में द्विस्वभाव (धनु) राशियां हैं। प्रत्येक लग्न की कुण्डली में तीनों त्रिकोणों में राशियों का क्रम इस प्रकार का है कि चर, स्थिर व द्विस्वभाव राशियों का त्रिगुणात्मक संगम हो जाता है। अर्थात् लग्न, पंचम व नवम भावों में चर, स्थिर, द्विस्वभाव या स्थिर द्विस्वभाव चर या द्विस्वभाव, स्थिर चर राशियों का क्रम बन जाता है। इस प्रकार तृतीयांशों (त्रिकोणों) में राशियों का त्रिगुणात्मक स्वरूप जीवन की पूर्णता को अपने में समेटे हुए है।

(ब) **नक्षत्रों के आधार पर—**

1. मेष लग्न की कुण्डली में लग्न में अश्विनी, भरणी व कृतिका 1, पंचम में मघा, पूर्वा फाल्गुनी व उत्तरा फाल्गुनी 1 (सिंह) तथा नवम में मूल, पूर्वाषाढ़ व उत्तराषाढ़ 1 (धनु) होते हैं। यदि इन त्रिकोणस्थ नक्षत्रों को जन्म, अनुजन्म व त्रिजन्म (1, 10, 19) के अनुसार व्यवस्थित करें तो इनके निम्न प्रकार से तीन गुट बन जाएंगे।

लग्न (मेष)	पंचम (सिंह)	नवम (धनु)
अश्विनी 1	मघा 10	मूल 19 प्रथम गुट स्वामी केतू
भरणी 2	पू.फा 11	पू.षा. 20 द्वितीय गुट स्वामी शुक्र
कृतिका 13	उ.फा 112	उ.षा. 121 तृतीय गुट स्वामी सूर्य

इस प्रकार सभी लग्नों की कुण्डलियों में त्रिकोणस्थ नक्षत्रों के सहधर्मी गुट बन जाते हैं। प्रत्येक गुट के नक्षत्रों का स्वामी एक ही ग्रह होता है। लग्न, पंचम व नवम में 1, 10, 19 या 10, 19, 1 या 19, 10, 1 क्रम के नक्षत्रों के गुट आते हैं।

2. लग्न, पंचम व नवम में जन्म, अनुजन्म (आधान) व त्रिजन्म (कर्म) नक्षत्र होने से ये तीनों भाव जातक के वर्तमान, भूतकाल व भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. इसी आधार पर पहला, दसवां तथा उन्नीसवां अर्थात् तीनों नक्षत्र त्रिकोणीय नक्षत्र (Triangular Constellations) कहलाते हैं।
4. तृतीयांशों या त्रिकोणों (Trines) के प्रारम्भिक व अन्तिम बिन्दु 0, 120 व 240 अंश ऐसे बिन्दु हैं जहां राशियां एवं नक्षत्र एक साथ ही समाप्त व प्रारम्भ होते हैं। अतः ये बिन्दु अत्यन्त संवेदनशील एवं संधिगत हैं।
5. त्रिकोणस्थ नक्षत्रों की प्रकृति में भी एकरूपता है। जैसे अश्विनी, मघा, मूल तीनों तमोगुणी, भरणी, पू.फा., पू.षाढ़ तीनों रजोगुणी तथा कृतिका उ.फा. व उ.षाढ़ तीनों सतोगुणी। इसी प्रकार सभी लग्नों की कुण्डलियों में तीनों नक्षत्र एक ही गुण के होते हैं।

केन्द्रीय भावों (Angles) अर्थात् 1, 4, 7, 10 में इस प्रकार के एकरूप सम्बन्ध नहीं हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि राशियों व नक्षत्रों दोनों के सन्दर्भ में भचक्र में त्रिकोणीय एकरूपता (Triangular Similarity) है। उक्त विशेषता के कारण त्रिकोण कितने शक्तिशाली एवं शुभ भाव हैं इसका अनुमान सहज में ही हो जाता है। त्रिकोणों की इसी शुभता के कारण मानव की परमायु 120 वर्ष मानते हुए महर्षि पाराशर ने विंशोत्तरी दशा पद्धति का सूत्रपात किया। विंशोत्तरी दशा पद्धति वैज्ञानिक, गणितीय एवं फलित की कसौटी पर खरी उतरी है। राशियों तथा नक्षत्रों की त्रिकोणीय एकरूपता को संलग्न तालिका में दर्शाया गया है।

विंशोत्तरी दशा पद्धति का स्वरूप—आकाश (भचक्र) में नक्षत्रों का क्रम स्थायी है। इनके स्वामी ग्रह भी आकाश में उनकी कक्षा-व्यवस्था के आधार पर निर्धारित किए गए हैं *(देखें रेखाचित्र प्रकरण 2)*। महर्षि पाराशर ने 120 वर्षों को विभिन्न ग्रहों में किस आधार पर वितरित किया यह स्पष्ट नहीं हो सका। अनेक विद्वानों ने इस सम्बन्ध में अटकलें लगाई हैं जिनका वैज्ञानिक आधार नहीं मिल पाया।

राशियों एवं नक्षत्रों में त्रिकोणीय एकरूपता

लग्न	पंचम	नवम	मित्र त्रिकोणेश			राशि	चरादि संख्या			प्रथम त्रिकोणस्थ नक्षत्र				द्वितीय त्रिकोणस्थ नक्षत्र				तृतीय त्रिकोणस्थ नक्षत्र			
राशि	राशि	राशि	लग्नेश	पंचमेश	नवमेश	तत्व	लग्न	पंचम	नवम	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी
1. मेष	सिंह	धनु	मंगल	सूर्य	गुरु	अग्नि	चर	स्थिर	द्वि.	अश्वि.	मघा	मूल	केतू	भरणी	पूफा	पूषा	शुक्र	कृति. 1	उफा 1	उषा 1	सूर्य
2. वृषभ	कन्या	मकर	शुक्र	बुध	शनि	पृथ्वी	स्थिर	द्वि.	चर	कृति 2, 3, 4	उफा 2, 3, 4	उषा 2, 3, 4	सूर्य	रो.	हस्त	श्रव.	चन्द्र	मृग 1, 2	चित्रा 1, 2	धनि. 1, 2	मंगल
3. मिथुन	तुला	कुम्भ	बुध	शुक्र	शनि	वायु	द्वि.	चर	स्थिर	मृग 3, 4	चित्रा 3, 4	धनि. 3, 4	मंगल	आर्द्रा	स्वाति	शत.	राहू	पुन. 1, 2, 3	विभा. 1, 2, 3	पूभा. 1, 2, 3	गुरु
4. कर्क	वृश्चिक	मीन	चन्द्र	मंगल	गुरु	जल	चर	स्थिर	द्वि.	पुन. 4	विशा. 4	पूभा 4	गुरु	पुष्य	अनु.	उ.भा	शनि	आश्ले.	ज्ये.	रे.	बुध
5. सिंह	धनु	मेष	सूर्य	गुरु	मंगल	अग्नि	स्थिर	द्वि.	चर	मघा	मूल	अश्वि	केतू	पूफा	पूषा	भरणी	शुक्र	उफा 1	उषा 1	कृति. 1	सूर्य
6. कन्या	मकर	वृषभ	बुध	शनि	शुक्र	पृथ्वी	द्वि.	चर	स्थिर	उ.फा. 2, 3, 4	उषा. 2, 3, 4	कृति 2, 3, 4	सूर्य	हस्त	श्रव.	रो.	चन्द्र	चित्रा 1, 2	धनि. 1, 2	मृग 1, 2	मंगल

राशियों एवं नक्षत्रों में त्रिकोणीय एकरूपता

लग्न	पंचम	नवम	मित्र त्रिकोणेश			राशि	चरादि संख्या			प्रथम त्रिकोणस्थ नक्षत्र				द्वितीय त्रिकोणस्थ नक्षत्र				तृतीय त्रिकोणस्थ नक्षत्र			
राशि	राशि	राशि	लग्नेश	पंचमेश	नवमेश	तत्व	लग्न	पंचम	नवम	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी	लग्न	पंचम	नवम	स्वामी
7. तुला	कुम्भ	मिथुन	शुक्र	शनि	बुध	वायु	चर	स्थिर	द्वि.	चित्रा 3, 4	धनि 3,4	मृग 3, 4	मंगल	स्वाति	शत	आर्द्रा	राहू	विशा 1, 2, 3	पूभा 1, 2, 3	पुन. 1, 2, 3	गुरु
8. वृश्चि.	मीन	कर्क	मंगल	गुरु	चन्द्र	जल	स्थिर 4	द्वि. 4	चर 4	विशा	पूभा	पुन	गुरु	अनु.	उ.भा	पुष्य	शनि	ज्ये.	रे.	आश्ले	बुध
9. धनु	मेष	सिंह	गुरु	मंगल	सूर्य	अग्नि	द्वि.	चर	स्थिर	मूल	अश्वि	मघा	केतू	पूषा	भरणी	पूफा	शुक्र	उ.षा 1	कृति. 1	उफा 1	सूर्य
10. मकर	वृषभ	कन्या	शनि	शुक्र	बुध	पृथ्वी	चर	स्थिर	द्वि.	उ.षा 2, 3, 4	कृति 2, 3, 4	उफा 2, 3, 4	सूर्य	श्रव	रो.	हस्त	चन्द्र	धनि	मृग. 1, 2	चित्रा 1, 2	मंगल 1, 2
11. कुम्भ	मिथुन	तुला	शनि	बुध	शुक्र	वायु	स्थिर	द्वि.	चर	शनि 3, 4	मृग 3,4	चित्रा 3,4	मंगल	शत.	आर्द्रा	स्वाति	राहू	पू.भा 1, 2, 3.	पुन. 1, 2, 3	विशा. 1, 2, 3	गुरु
12. मीन	कर्क	वृश्चि.	गुरु	चन्द्र	मंगल	जल	द्वि.	चर	स्थिर	पू.भा 4	पुन. 4	विशा. 4	गुरु	उ.भा.	पुष्य	अनु	शनि	रे.	आश्ले.	ज्ये.	बुध

महर्षि पाराशर के अनुसार जन्म नक्षत्र के आधार पर विभिन्न ग्रहों की महादशा तथा अवधि निम्न प्रकार है।

विंशोत्तरी दशा तालिका

जन्म नक्षत्र	अनुजन्म नक्षत्र	त्रिजन्म नक्षत्र	महादशा (दशेश)	दशा वर्ष
3 कृतिका	12 उ.फा.	21 उ.षाढ़	सूर्य	6
4 रोहिणी	13 हस्त	22 श्रवण	चन्द्र	10
5 मृगशिर	14 चित्रा	23 धनिष्ठा	मंगल	7
6 आर्द्रा	15 स्वाति	24 शतभिषा	राहू	18
7 पुनर्वसु	16 विशाखा	25 पू.षाढ़	गुरु	16
8 पुष्य	17 अनुराधा	26 उ.षाढ़	शनि	19
9 आश्लेषा	18 ज्येष्ठा	27 रेवती	बुध	17
10 मघा	19 मूल	1 अश्विनी	केतू	7
11 पू.फा.	20 पू.षाढ़	2 भरणी	शुक्र	20

जन्म के समय प्रथम महादशा किस ग्रह की होगी, यह जन्म नक्षत्र के आधार पर निर्धारित होता है। जैसे पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में जन्म होने पर प्रथम महादशा गुरु की होगी जिसकी अवधि 16 वर्ष की होगी।

प्रथम महादशा का भुक्त एवं भोग्य काल चन्द्रमा की जन्म नक्षत्र में कोणात्मक स्थिति के आधार पर ज्ञात किया जाता है।

प्रथम महादशा का भुक्त एवं भोग्य काल—प्रथम महादशा के भुक्त एवं भोग्य काल ज्ञात करने के दो आधार हो सकते हैं—

(*i*) चन्द्र स्पष्ट द्वारा (*ii*) नक्षत्र के भयात-भभोग द्वारा।

एक उदाहरण द्वारा दोनों विधियों से भुक्त एवं भोग्य काल की गणना बता रहे हैं।

(*i*) **चन्द्र स्पष्ट द्वारा**—जन्म के समय चन्द्रमा के राश्यंश के आधार पर भुक्तांश-दशा भुक्तकाल को तथा भोग्यांश उपभोग्य काल को प्रदर्शित करता है। दशा वर्ष को भुक्तांश से गुणा कर नक्षत्र मान (13 अंश 20 कला) से भाग लगाने पर दशा का भुक्त काल आ जाता है। इसी प्रकार भोग्यांश से दशा वर्ष से गुणा कर नक्षत्र मान से भाग लगाने पर दशा का भोग्य काल आ जाता है।

उदाहरण—जन्म नक्षत्र विशाखा—चन्द्र स्पष्ट 6 राशि 27 अंश 21 कला 0 विकला। विशाखा नक्षत्र का भभोग 64 घटी 24 पल तथा भयात 35 घटी 30 पल।

इसी उदाहरण को दोनों विधियों से हल कर रहे हैं—प्रथम महादशा गुरु 16 वर्ष।

(*i*) चन्द्र के भुक्तांश व भोग्यांश द्वारा—

(अ) भुक्तांश द्वारा (भुक्त काल)

		राशि	अंश	कला	विकला	
चन्द्र स्पष्ट		6	27	21	0	
	(–)	6	20	0	0	विशाखा नक्षत्र का प्रारम्भ
		—	7	21	0	भुक्तांश

गुरु महादशा का भुक्त काल $= \dfrac{\text{भुक्तांश} \times 16}{\text{नक्षत्र मान}} = \dfrac{7 \text{ अंश } 21 \text{ कला} \times 16}{800 \text{ कला}}$ वर्ष

$= \dfrac{441 \text{ कला} \times 16}{800 \text{ कला}}$ वर्ष

भुक्त काल = 8 वर्ष 9 माह 25 दिन

(ब) भोग्यांश द्वारा (भोग्य काल)

	राशि	अंश	कला	विकला	
	7	3	20	0	विशाखा नक्षत्र की समाप्ति
(–)	6	27	21	0	चन्द्र स्पष्ट
	—	5	59	0	भोग्यांश

गुरु महादशा का भोग्य काल $= \dfrac{\text{भोग्यांश} \times 16}{800 \text{ कला}}$ वर्ष

$= \dfrac{5 \text{ अंश } 59 \text{ कला} \times 16}{800}$ वर्ष

$= \dfrac{359 \text{ कला} \times 16}{800}$ वर्ष

भोग्यकाल = 7 वर्ष 2 माह 5 दिन

(*ii*) नक्षत्र के भयात-भभोग द्वारा—

भ = नक्षत्र, भभोग = चन्द्रमा द्वारा नक्षत्र पार करने में लिया गया समय।

भयात = जन्म तक निकल चुका समय, भभोग्य = जन्म से नक्षत्र समाप्ति तक का समय।

भभोग 64 घटी 24 पल भयात 35 घटी 30 पल

अतः भभोग्य = भभोग (–) भयात

	64 घटी	24 पल
(–)	35 घटी	30 पल
भभोग्य	28 घटी	54 पल

गुरु दशा का भुक्तकाल

$$\frac{\text{भयात} \times \text{दशा वर्ष}}{\text{भभोग}}$$

$$\frac{35 \text{ घटी } 30 \text{ पल} \times 16}{64 \text{ घटी } 24 \text{ पल}} \text{ वर्ष}$$

$$= \frac{2130 \text{ पल} \times 16}{3864 \text{ पल}} \text{ वर्ष}$$

= 8 वर्ष 9 माह 25 दिन

गुरु दशा का भोग्य काल

$$\frac{\text{भभोग्य} \times \text{दशा वर्ष}}{\text{भभोग}}$$

$$\frac{28 \text{ घटी } 54 \text{ पल} \times 16}{64 \text{ घटी } 24 \text{ पल}} \text{ वर्ष}$$

$$= \frac{1734 \text{ पल} \times 16}{3864 \text{ पल}}$$

= 7 वर्ष 2 माह 5 दिन

नोट—1. गणना में दिन दशमलव में आएं तो चाहे उन्हें पूर्णांक में परिवर्तित कर लें अथवा घटी पल बना लें।

2. भुक्त एवं भोग्य काल का योग दशा वर्ष के बराबर आ जाना चाहिए।

मान लीजिए जन्म 1 फरवरी 1997 को हुआ है तो गुरु की महादशा समाप्त होने की तिथि निम्न प्रकार से निकाली जा सकती है।

		ता.	मा.	सन्
	जन्म	1	2	97
गुरु की भोग्य अवधि	(+)	5	2	7
		दिन	माह	वर्ष
		6	4	2004

6-4-2004 में अगली महादशाओं के दशा वर्ष जोड़ते चले जाएं। विंशोत्तरी महादशा चक्र बन जाएगा।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

से	गुरु (शेष)	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	दशा
जन्म 1	6	6	6	6	6	6	6	6	6	तारीख
2	4	4	4	4	4	4	4	4	4	मास
1997	2004	2023	2040	2047	2067	2073	2083	2090	2108	ई० सन्
दशाक्रम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	तक

अन्तर्दशा (Sub Period)—किसी भी ग्रह के पूरे के पूरे दशा वर्ष समान शुभाशुभ नहीं होते। इसलिए प्रत्येक ग्रह के दशा वर्षों को पुनः 9 ग्रहों के उपकालों (Sub Periods) में बांटा गया है। इन उपकालों को अन्तर्दशा, भुक्ति या अन्तर कहते हैं। अन्तर्दशाएं भी दशा वर्षों के अनुपात में ही होती हैं। अन्तर्दशाओं का क्रम

तो यही रहता है परन्तु प्रथम अन्तर्दशा उसी ग्रह की होती है जिसकी महादशा होती है।

जिस ग्रह की महादशा होती है उसे महादशानाथ, दशानाथ या दशेश (Dasa Lord) कहते हैं जबकि अन्तर्दशा वाले ग्रह को अन्तर्दशानाथ या भुक्तिनाथ (Sub Lord) कहते हैं।

इस प्रकार 9 ग्रहों की महादशाओं को 9-9 कुल 81 सूक्ष्म विभागों में (अन्तर्दशाओं में) बांट दिया जाता है।

अन्तर्दशा गणित—

$$\text{अन्तर्दशा अवधि} = \frac{\text{दशा वर्ष} \times \text{भुक्तिनाथ के वर्ष}}{120} = \text{वर्ष}$$

उदाहरण—गुरु की महादशा (16 वर्ष) में बुध (17 वर्ष) की अन्तर्दशा की अवधि ज्ञात करनी है।

$$\text{अन्तर्दशा} = \frac{\text{गुरु के 16 वर्ष} \times \text{बुध के 17 वर्ष}}{120} = \text{वर्ष}$$

$$\text{अथवा } \frac{16 \times 17}{120} \times 12 \text{ माह} = \frac{272}{10} \text{ माह}$$

$$= 27 \text{ माह} + \frac{2}{10} \text{ माह} \times 30$$

$$= 27 \text{ माह } 6 \text{ दिन}$$

या 2 वर्ष 3 माह 6 दिन

सरल सूत्र—दशानाथ व भुक्तिनाथ के वर्षों को परस्पर गुणा करें। गुणनफल में इकाई को छोड़कर शेष संख्या को महीने तथा इकाई को 3 से गुणा कर दिन मानें। अन्तर्दशा की अवधि माह व दिन में प्राप्त हो जाएगी।

उपरोक्त उदाहरण में $16 \times 17 = 272$

अन्तर्दशा = 27 माह तथा 2×3 दिन

गुरु में बुध की अन्तर्दशा = 27 माह 6 दिन या 2 वर्ष 3 माह 6 दिन

इसी प्रकार किसी भी ग्रह की दशा में किसी भी ग्रह की अन्तर्दशा आसानी से ज्ञात की जा सकती है।

जैसे—(*i*) गुरु में गुरु	$16 \times 16 = 256$	2 वर्ष	1 माह	18 दिन
(*ii*) गुरु में शनि	$16 \times 19 = 304$	2 वर्ष	6 माह	12 दिन
(*iii*) गुरु में बुध	$16 \times 17 = 272$	2 वर्ष	3 माह	6 दिन
(*iv*) गुरु में केतू	$16 \times 7 = 112$	—	11 माह	6 दिन
(*v*) गुरु में शुक्र	$16 \times 20 = 320$	2 वर्ष	8 माह	—
(*vi*) गुरु में सूर्य	$16 \times 6 = 96$	—	9 माह	18 दिन
(*vii*) गुरु में चन्द्र	$16 \times 10 = 160$	1 वर्ष	4 माह	—

(*viii*) गुरु में मंगल 16 × 7 = 112	—	11 माह	6 दिन
(*ix*) गुरु में राहू 16 × 18 = 288	2 वर्ष	4 माह	24 दिन
	16 वर्ष	—	--

प्रथम महादशा की भुक्त-भोग्य अन्तर्दशाएं—प्रथम ग्रह की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशाएं ज्ञात कीं। अब यह ज्ञात करना है कि महादशा का जो भुक्तकाल आया था उसमें किस-किस ग्रह की अन्तर्दशाएं भोग्य हैं।

इसकी दो विधियां हैं—

(*i*) भुक्तकाल के आधार पर

उपरोक्त उदाहरण में गुरु की महादशा का भुक्तकाल

	वर्ष	माह	दिन
(आगे से घटाएं)	8	9	25
गुरु भुक्त (–)	2	1	18
	6	8	7
शनि भुक्त (–)	2	6	12
	4	1	25
बुध भुक्त (–)	2	3	6
	1	10	19
केतू भुक्त (–)		11	6
शुक्र भुक्त	—	11	13
शुक्र की अन्तर्दशा	2 वर्ष	8 माह	0 दिन
शुक्र भुक्त (–)		11	13
शुक्र भोग्य	1 वर्ष	8 माह	17 दिन

(*ii*) भोग्य काल के आधार पर

गुरु महादशा का	वर्ष	माह	दिन	(पीछे से घटाएं)
भोग्य काल	7	2	5	
राहू भोग्य (–)	2	4	24	
	4	9	11	
मंगल भोग्य (–)		11	6	
	3	10	5	
चन्द्र भोग्य (–)	1	4	—	
	2	6	5	

सूर्य भोग्य (–)   9   18

1   8   17 शुक्र भोग्य

उपरोक्त दोनों विधियों से गुरु की महादशा में शुक्र की प्रथम अन्तर्दशा 1 वर्ष 8 माह 17 दिन शेष थी।

गुरु महादशा में अन्तर्दशा चक्र

से	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र (शेष)	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	अन्तर
1					18	6	6	12	6	तारीख
2			भुक्त		10	8	12	11	4	मास
1997					1998	1999	2000	2001	2004	ई० सन्

इसी प्रकार सभी नौ ग्रहों की महादशाओं में 9-9 ग्रहों की अन्तर्दशाएं ज्ञात कर अन्तर्दशा चक्र बना लेने चाहिए।

प्रत्यन्तर दशा—जिस प्रकार महादशा को अन्तर्दशाओं में विभाजित किया जाता है, उसी प्रकार अन्तर्दशाओं को प्रत्यन्तर दशाओं में उसी अनपात, क्रम एवं विधि के अनुसार बांटा जाता है।

प्रत्यन्तर दशा गणित—महादशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर दशा के ग्रहों के वर्षों को आपस में गुणा करें तथा गुणनफल में 40 का भाग लगा दें। प्रत्यन्तर दशा दिनों में प्राप्त हो जाएगी।

उदाहरण—गुरु में गुरु में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करें।

गुरु 16 वर्ष चन्द्र 10 वर्ष ;

$$\text{प्रत्यन्तर} \quad \frac{16 \times 16 \times 10}{40} \text{ दिन} = 64 \text{ दिन या } 2 \text{ माह } 4 \text{ दिन}$$

यदि 40 का भाग लगाने पर शेष बचे तो 60 से गुणा कर पुनः 40 का भाग लगाने से घटी एवं इसी प्रकार पल आ जाएंगे। आवश्यकता हो तो 30 घटी से अधिक होने पर 1 दिन बढ़ा दें।

इसी विधि से सभी 9 ग्रहों की 81 अन्तर्दशाओं को 81 × 9 = 729 प्रत्यन्तर दशाओं में विभाजित किया जा सकता है तथा उपरोक्त विधि से प्रत्यन्तर चक्र बनाए जा सकते हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति

स्व० ज्योतिष मार्तण्ड प्रोफेसर के.एस. कृष्णमूर्ति दक्षिणी भारत (चेन्नई) के प्रकाण्ड ज्योतिर्विद रहे हैं। उन्होंने विंशोत्तरी दशा पद्धति के महत्व को सर्वोपरि मानते हुए इस पद्धति को कोणात्मक स्वरूप प्रदान कर कृष्णमूर्ति पद्धति (K.P.) का सूत्रपात

किया जो अपने आप में सूक्ष्म एवं विशिष्ट विधा है। प्रो. कृष्णमूर्ति आधुनिक भारत में नाक्षत्र-ज्योतिषं (Stellar Astrology) के प्रणेता कहे जा सकते हैं।

प्रो. कृष्णमूर्ति के अनुसार कोई भी ग्रह जिस राशि में होता है उस राशि के स्वामी ग्रह के अनुसार तो शुभाशुभ फल देता ही है परन्तु उस राशि के अन्तर्गत जिस नक्षत्र में वह स्थित होता है, उस नक्षत्र के स्वामी की शुभाशुभता भी उक्त फल की प्रकृति में संशोधन करती है। विंशोत्तरी दशा पद्धति में नक्षत्र के स्वामी को दशानाथ (Dasa Lord) कहा जाता है। के.पी. के अनुसार नक्षत्र का स्वामी नक्षत्रेश (Star Lord या Constellation Lord) कहलाता है। नक्षत्रेश ही दशानाथ की भूमिका निभाता है।

जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा पद्धति में अन्तर्दशाएं वर्ष माह और दिन में निकाली जाती हैं, उसी प्रकार के.पी. में नक्षत्र के कोणात्मक उपविभाग किए जाते हैं जो ग्रहों के दशा-वर्षों के अनुपात में होते हैं। विंशोत्तरी दशा पद्धति में अन्तर्दशा के स्वामी को अन्तर्दशानाथ या भुक्तिनाथ कहा जाता है जबकि के.पी. के अनुसार नक्षत्र के उपविभागों के स्वामियों को उपस्वामी (Sub-Lord) कहा जाता है। नक्षत्र के उपविभाग एवं उनके स्वामी विंशोत्तरी दशा क्रम में ही होते हैं। जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा पद्धति में दशा वर्षों के आधार पर अन्तर्दशा की गणना की जाती है, उसी प्रकार कृष्णमूर्ति पद्धति में दशा वर्षों के अनुपात व उसी क्रम में एक नक्षत्र के कोणात्मक मान (800 कला) को नौ उपविभागों में बांटा जाता है। जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा-पद्धति में पहली अन्तर्दशा दशानाथ की होती है, उसी प्रकार के.पी. में भी सबसे पहले दशेश का कोणात्मक विभाग आता है।

प्राचीन ज्योतिर्विद एक नक्षत्र को चार चरणों में विभाजित कर एक राशि को नौ नवांश तुल्य उपविभागों में बांटते रहे हैं परन्तु के.पी. में एक नक्षत्र को ही नौ उपविभागों में विभाजित किया जाता है। अतः इस पद्धति में अधिक सूक्ष्मता है।

के.पी. गणना—कृष्णमूर्ति पद्धति में गणना कोणात्मक मान पर आधारित है। परमायु 120 वर्ष तथा नक्षत्र का कोणात्मक मान 800 कला है। पहले हम एक वर्ष का मान ज्ञात करते हैं—एक वर्ष का मान $\frac{800}{120} = 6\ 2/3$ कला या 6 कला 40 विकला।

एक वर्ष के कोणात्मक मान को प्रत्येक ग्रह के दशा वर्षों से गुणा करने पर प्रत्येक ग्रह का उपनक्षत्रीय कोणात्मक मान प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार विंशोत्तरी पद्धति में भुक्तिनाथ तथा के.पी. में उपनक्षत्रेश एक ही बात है। अन्तर केवल इतना है कि विंशोत्तरी में भुक्ति वर्ष माह दिन में होती है जबकि के.पी. में उपनक्षत्र अंश कला विकला में। जिस प्रकार एक ग्रह की अन्तर्दशाओं का योग उसके दशा वर्षों के बराबर होता है, उसी प्रकार सभी उपनक्षत्रों के कोणात्मक मान का योग 800 कला होता है। आगे के विवेचन में हम इन उपविभागों को उपनक्षत्र (Sub)

तथा इसके स्वामी को उपस्वामी (Sub Lord) कहेंगे। दोनों पद्धतियों में गणना की समानता निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगी।

मान लीजिए एक जातक का जन्म अश्विनी नक्षत्र में हुआ। चन्द्र स्पष्ट 0/8/16/40 था। अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने से केतू की महादशा में जन्म हुआ माना जाएगा। केतू की महादशा में हमें अन्तर्दशाएं निकालनी हैं तो हम विंशोत्तरी दशा पद्धति से अन्तर्दशा ज्ञात करेंगे। हम के.पी. के आधार पर भी यह ज्ञात कर सकते हैं कि जन्म के समय किसकी महादशा में किसकी भुक्ति थी? यह हम इस गणना के बाद बताएंगे।

गणना—

(अ) विंशोत्तरी दशा पद्धति के आधार पर

अन्तर्दशा (Sub Dasa)					वर्ष	माह	दिन
केतू में	केतू	7 × 7	= 49	=	0	4	27
	शुक्र	7 × 20	= 140	=	1	2	0
	सूर्य	7 × 6	= 42	=	0	4	6
	चन्द्र	7 × 10	= 70	=	0	7	0
	मंगल	7 × 7	= 49	=	0	4	27
	राहू	7 × 18	= 126	=	1	0	18
	गुरु	7 × 16	= 112	=	0	11	6
	शनि	7 × 19	= 133	=	1	1	9
	बुध	7 × 17	= 119	=	0	11	27
				योग	7 वर्ष	—	

(ब) कृष्णमूर्ति पद्धति के आधार पर

उपस्वामी (Sub Lord) का कोणात्मक मान

एक वर्ष का मान 6 2/3 कला निकाल चुके हैं।

उप नक्षत्र	वर्ष		अंश	कला	विकला
केतू का मान	7 × 6 2/3 कला	=	0	46	40
शुक्र	20 × 6 2/3 कला	=	2	13	20
सूर्य	6 × 6 2/3 कला	=	0	40	0
चन्द्र	10 × 6 2/3 कला	=	1	6	40
मंगल	7 × 6 2/3 कला	=	0	46	40
राहू	18 × 6 2/3 कला	=	2	0	0
गुरु	16 × 6 2/3 कला	=	1	46	40
शनि	19 × 6 2/3 कला	=	2	6	40
बुध	17 × 6 2/3 कला	=	1	53	20
		योग	13 अंश	20 कला	

इस प्रकार केतू के 7 वर्ष अश्विनी नक्षत्र के मान 13 अंश 20 कला के बराबर होते हैं। प्रत्येक ग्रह के दशा वर्षों का मान 13 अंश 20 कला होता है। किसी भी अन्तर्दशा की अवधि सम्बन्धित उपस्वामी के कोणात्मक मान के बराबर होती है क्योंकि दोनों पद्धतियों का आधार नक्षत्र तथा 120 वर्ष है।

आइए हम उपरोक्त में से किसी अन्तर्दशा (केतू में चन्द्र) की अवधि को उपस्वामी के कोणात्मक मान में परिवर्तित करके उपरोक्त समानता की पुष्टि करते हैं।

(अ) विंशोत्तरी से के.पी. में परिवर्तन—केतू की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा 7 माह तथा चन्द्र का उपस्वामित्व 1 अंश 6 कला 40 विकला है। (उपरोक्त गणना के आधार पर)

$\because$ केतू के 7 वर्ष (84 माह) = 800 कला (नक्षत्र मान)

$\therefore$ केतू में चन्द्र के 7 माह = $\frac{800}{84} \times 7$ कला = $\frac{200}{3}$ कला या 66 कला 40 विकला

= 1 अंश 6 कला 40 विकला

(ब) के० पी० से विंशोत्तरी में परिवर्तन

800 कला = केतू के 7 वर्ष या 84 माह

$\therefore$ $1^\circ 6' 40''$ या $\frac{200}{3}$ कला (केतू में चन्द्र) = $\frac{84 \times 200}{800 \times 3}$ माह

= 7 माह

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह में प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा तथा उपस्वामी का कोणात्मक मान समान होता है, चाहे दशा वर्ष कितने ही हों।

विंशोत्तरी (समयावधि) तथा के.पी. (अंशात्मक मान) के पारस्परिक परिवर्तन से यह स्पष्ट हो गया कि **कृष्णमूर्ति पद्धति विंशोत्तरी दशा पद्धति का ही परिवर्तित कोणात्मक स्वरूप है।**

विंशोत्तरी दशा पद्धति में नौ ग्रहों की दशाओं को 9-9 उपविभागों कुल 81 अन्तर्दशाओं में बांटा जाता है। प्रत्येक ग्रह की महादशा तीन नक्षत्रों में होने से हम कह सकते हैं कि 81 × 3 = 243 उपविभाग हुए। परन्तु के.पी. में सीधे ही 27 नक्षत्रों (दशाओं) को 9-9 उपविभागों (अन्तर्दशाओं या उपस्वामियों) कुल 27 × 9 = 243 उप (Sub) में बांटा जाता है। चन्द्रमा और राहू के अंशात्मक उपविभाग दो-दो राशियों में तीन बार बंट जाने के कारण के.पी. में उप (Sub) की संख्या 243 + 6 = 249 होती है।

विंशोत्तरी के अन्तर्दशा क्रम की भांति के.पी. में भी उपस्वामियों का क्रम वही रहता है तथा प्रथम उपस्वामी (भुक्तिनाथ) वही होता है जो नक्षत्रेश (दशानाथ) होता है। सुविधा की दृष्टि से के.पी. में उपस्वामियों की क्रम संख्या लगातार 1 से 249

तक रखी जाती है। जिस नक्षत्रेश के उपस्वामियों की तालिका बनानी हो उसी नक्षत्र के प्रारम्भिक राश्यंश में उसी नक्षत्रेश के 'उप' के अंश कला विकला को सर्वप्रथम जोड़ते हुए विंशोत्तरी क्रम में अन्य उपस्वामियों के अंश कलादि जोड़ते जाएं। तालिका तैयार हो जाएगी। यदि कोई नक्षत्र अगली राशि में सम्मिलित हो तथा अन्तिम 'उप' के अंश कलादि राशि के अन्त में बच जाएं तो शेष अंशादि अगली राशि में लिख दिए जाते हैं। अगली राशि में भी नक्षत्र वही रहेगा। सूर्य के नक्षत्रों (कृतिका, उफा. व उषा.) में राहू के कलादि दो राशियों में विभाजित होंगे। इसी प्रकार गुरु के नक्षत्रों (पुनर्वसु, विशाखा व पू.भाद्र) में चन्द्रमा के कलादि दो राशियों में बंट जाएंगे। इसी कारण 3 + 3 = 6 'उप' बढ़कर 243 के बजाय 249 हो जाते हैं।

जिस प्रकार प्रत्येक तृतीयांश (4 राशि या 9 नक्षत्रों) में नक्षत्रों के अंश कलादि समान होते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक तृतीयांश में 83 उप (Sub) होते हैं। कुल 83 × 3 = 249 'उप' होते हैं जिनके अंश कलात्मक विस्तार समान होते हैं।

उप (Sub) की संख्या निम्नानुसार होती है।

1 मेष	5 सिंह	9 धनु	प्रत्येक में	22 × 3	=	66 उप
2 वृषभ	6 कन्या	10 मकर	प्रत्येक में	19 × 3	=	57 उप
3 मिथुन	7 तुला	11 कुम्भ	प्रत्येक में	21 × 3	=	63 उप
4 कर्क	8 वृश्चिक	12 मीन	प्रत्येक में	21 × 3	=	63 उप
			योग	83 × 3	=	249 उप (Subs)

प्रत्येक तृतीयांश में 83 उप होने के कारण उप क्रम संख्या 1, 84 तथा 167 के अंश कलादि समान होंगे। इसी प्रकार किसी भी उप क्रम संख्या में 83 जोड़ने पर तथा पुनः 83 जोड़ने पर जो उप क्रमांक आता है उन तीनों उप क्रम संख्या के अंश कलादि समान होते हैं परन्तु राशियां भिन्न (त्रिकोणात्मक) होती हैं।

इस प्रकार प्रथम द्वितीय व तृतीय तृतीयांशों के उपस्वामियों के कोणात्मक मान में एकरूपता होती है।

जैसे—

1.	उपसंख्या 70 (प्रथम तृतीयांश)	कर्क राशि में 10 अंश 20 कला से 11 अंश तक राशि स्वामी चन्द्र, नक्षत्र पुष्य, स्वामी शनि, उपस्वामी सूर्य, कोणीय विस्तार 40 कला
2.	उप संख्या 153 (द्वितीय तृतीयांश) (70 + 83)	वृश्चिक राशि में 10 अंश 20 कला से 11 अंश तक राशि स्वामी मंगल, नक्षत्र अनुराधा, स्वामी शनि, उपस्वामी सूर्य, कोणीय विस्तार 40 कला
3.	उपसंख्या 236 (तृतीय तृतीयांश) (153 + 83)	मीन राशि में 10 अंश 20 कला से 11 अंश तक राशि स्वामी गुरु, नक्षत्र उत्तरा भाद्रपद, स्वामी शनि, उपस्वामी सूर्य, कोणीय विस्तार 40 कला

तीनों में नक्षत्र स्वामी शनि तथा उपस्वामी सूर्य है।

शनि दशा में सूर्य की अन्तर्दशा—

(अ) विंशोत्तरी के अनुसार 19 × 6 = 114 = 11 माह 12 दिन

(ब) के० पी० के अनुसार

शनि के 19 वर्ष (228 माह) = 800 कला

$$\text{सूर्य के 11 माह 12 दिन या } \frac{57}{5} \text{ माह} = \frac{800}{228} \times \frac{57}{5} \text{ कला} = 40 \text{ कला}$$

उपरोक्त समानता का तात्पर्य यह है कि इन तीनों राशियों में उत्पन्न तीन अलग-अलग जातकों का चन्द्र स्पष्ट यदि 10 अंश 20 कला से 11 अंश के मध्य हो तो उन तीनों जातकों की राशियां तो भिन्न-भिन्न होंगी परन्तु तीनों के जन्म के समय शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी। दशा में अन्तर्दशा का भुक्त-भोग्य काल भी उपरोक्त चन्द्र स्पष्टानुसार कोणात्मक मान के बराबर ही आएगा।

उदाहरण—मान लीजिए किसी जातक का जन्म कालीन चन्द्र स्पष्ट कर्क राशि में 10 अंश 20 कला है तो चन्द्र पुष्य नक्षत्र में होगा—महादशा शनि की होगी।

	राशि	अंश	कला	विकला
चन्द्र स्पष्ट	3	10	20	0
पुष्य नक्षत्रारम्भ (–)	3	3	20	0
पुष्य के भुक्तांश =		7	0	0

$$\text{शनि की महादशा भुक्त} = \frac{7 \text{ अंश} \times 19 \text{ वर्ष}}{13 \text{ अंश } 20 \text{ कला}}$$

$$= \frac{420 \text{ कला} \times 19 \text{ वर्ष}}{800 \text{ कला}} = 9 \text{ वर्ष } 11 \text{ माह } 21 \text{ दिन}$$

शनि की महादशा भुक्त		9 वर्ष	11 माह	21 दिन	
अन्तर्दशा	(–)	3	0	3	शनि भुक्त
		6	11	18	
	(–)	2	8	9	बुध भुक्त
		4	3	9	
	(–)	1	1	9	केतू भुक्त
		3	2	0	
	(–)	3	2	0	शुक्र भुक्त
		शेष शून्य			

शुक्र का भुक्त काल घटाने के पश्चात् शेष कुछ नहीं बचा। इसका अर्थ यह हुआ कि ठीक जन्म के समय शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा समाप्त होकर सूर्य की अन्तर्दशा प्रारम्भ हो गई।

यदि हम के० पी० उपस्वामी तालिका देखें तो ज्ञात होगा पुष्य नक्षत्र के अन्तर्गत क्रमांक 5 पर सूर्य का उप 10 अंश 20 कला से ही प्रारम्भ होता है।

वृश्चिक तथा मीन राशियों में भी 10 अंश 20 कला से सूर्य का 'उप' प्रारम्भ होगा अर्थात् सूर्य की अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी। अतः दोनों पद्धतियां गणित की दृष्टि से समानार्थी हैं।

महत्वपूर्ण निष्कर्ष—इस गणितीय समानता तथा चन्द्रमा के राश्यंशों के अनुसार एक निष्कर्ष और निकलता है जो महादशा गणित में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस जातक के लिए जन्म से 11 माह 12 दिन पश्चात् जिस **दिन** शनि में सूर्य की अन्तर्दशा समाप्त होकर चन्द्रमा की अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी चन्द्रमा पुष्य, अनुराधा अथवा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में होगा तथा जिस **समय** चन्द्रमा 11 अंश पर पहुंचेगा उसी समय शनि की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी।

महादशा के गणित कर्त्ताओं को इस बात का ज्ञान एवं अभ्यास होना आवश्यक है। इससे महादशा-अन्तर्दशा अवधि की शुद्धता की जांच की जा सकती है।

प्रत्यन्तर स्वामी (Sub Sub Lord)—के० पी० की उपस्वामी व्यवस्था को और भी सूक्ष्म करें और 243 उप नक्षत्रों को पुनः उसी अनुपात में 9-9 लघु विभागों में बांटें तो ये लघु विभाग विंशोत्तरी दशा पद्धति के प्रत्यन्तरों के समानार्थी होंगे। इनको के० पी० के अनुसार उप-उप नक्षत्र (Sub-Sub-Lord) कहेंगे।

एक उदाहरण द्वारा उप-उप नक्षत्र (प्रत्यन्तर) को स्पष्ट कर रहे हैं।

उदाहरण—केतू की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में शुक्र का प्रत्यन्तर ज्ञात करना है। विंशोत्तरी के अनुसार, केतू में शुक्र की अन्तर्दशा 1 वर्ष 2 माह (14 माह) तथा के० पी० के अनुसार शुक्र का 'उप' 2 अंश 13 कला 20 विकला है।

प्रत्यन्तर—

(*i*) विंशोत्तरी पद्धति द्वारा—

केतू में शुक्र में शुक्र का प्रत्यन्तर—

$$14 \text{ माह या } \frac{420 \text{ दिन } \times 20 \text{ वर्ष}}{120 \text{ वर्ष}} = 70 \text{ दिन या } 2 \text{ माह } 10 \text{ दिन}$$

(*ii*) कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा—2 अंश 13 कला 20 विकला = 4400 विकला

अतः केतू में शुक्र में शुक्र

$$\frac{4400 \text{ विकला } \times 20}{120} = 733\ 1/3 \text{ विकला}$$

$$= 12 \text{ कला } 13.3 \text{ विकला।}$$

पारस्परिक परिवर्तन—

विंशोत्तरी से के० पी० में

420 दिन = 4400 विकला

$$70 \text{ दिन} = \frac{4400 \times 70}{420} \text{ विकला}$$

= 733 1/3 विकला

= 12 कला 13.3 विकला

के० पी० से विंशोत्तरी में

4400 विकला = 420 दिन

$$\therefore \frac{2200}{3} \text{ विकला} = \frac{420}{4400} \times \frac{2200}{3} \text{ दिन}$$

= 70 दिन

= 2 माह 10 दिन

इस प्रकार विंशोत्तरी दशा पद्धति के प्रत्यन्तर काल को भी कोणात्मक मान (के० पी०) में बदला जा सकता है।

के० पी० के अनुसार उपस्वामियों (Sub Lords) का अंशात्मक विस्तार संलग्न तालिका में दिया जा रहा है। ये तालिकाएं इस प्रकार तैयार की गई हैं कि एक पृष्ठ पर तीन-तीन त्रिकोण राशियों के तीन-तीन नक्षत्रों का उपविभाजन दर्शाया गया है। इसीलिए उपस्वामियों के क्रमांक 1, 84 तथा 167 से प्रारम्भ किए गए हैं जो क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय त्रिकोण राशि के लिए हैं। कृष्णमूर्ति पद्धति का उपयोग करने वाले विद्वानों के लिए ये तालिकाएं आवश्यक हैं।

राशि-राशीश-नक्षत्र-नक्षत्रेश व उपस्वामी (के० पी०)

त्रिकोण राशियां—1 मेष (मंगल) 5 सिंह (सूर्य) 9 धनु (गुरु)

1 अश्विनी 10 मघा 19 मूल (केतू) $0^\circ 0'$ से $13^\circ 20'$ तक

क्र०					से			तक		
सं०	उपस्वामी क्रमांक			उपस्वामी	अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
1	1	84	167	केतू	0	0	0	0	46	40
2	2	85	168	शुक्र	0	46	40	3	0	0
3	3	86	169	सूर्य	3	0	0	3	40	0
4	4	87	170	चन्द्र	3	40	0	4	46	40

राशि-राशीश-नक्षत्र-नक्षत्रेश-उपस्वामी (के० पी०)

त्रिकोण राशियां—1 मेष (मंगल) 5 सिंह (सूर्य) 9 धनु (गुरु)

1 अश्विनी 10 मघा 19 मूल (केतू) 0°0' से 13°20' तक

क्र० सं०	उपस्वामी क्रमांक			उपस्वामी	से			तक		
					अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
5	5	88	171	मंगल	4	46	40	5	33	20
6	6	89	172	राहू	5	33	20	7	33	20
7	7	90	173	गुरु	7	33	20	9	20	0
8	8	91	174	शनि	9	20	0	11	26	40
9	9	92	175	बुध	11	26	40	13	20	0
2 भरणी 11 पू० फाल्गुनी 20 पू० षाढ़ (शुक्र) 13°20' से 26°40' तक										
1	10	93	176	शुक्र	13	20	0	15	33	20
2	11	94	177	सूर्य	15	33	20	16	13	20
3	12	95	178	चन्द्र	16	13	20	17	20	0
4	13	96	179	मंगल	17	20	0	18	6	40
5	14	97	180	राहू	18	6	40	20	6	40
6	15	98	181	गुरु	20	6	40	21	53	20
7	16	99	182	शनि	21	53	20	24	0	0
8	17	100	183	बुध	24	0	0	25	23	20
9	18	101	184	केतू	25	23	20	26	40	0
3 कृतिका 1 12 उ० फाल्गुनी 1 21 उ० षाढ़ 1 (सूर्य) 26°40' से 30°0' तक										
1	19	102	185	सूर्य	26	40	0	27	20	0
2	20	103	186	चन्द्र	27	20	0	28	26	40
3	21	104	187	मंगल	28	26	40	29	13	20
4	22	105	188	राहू	29	13	20	30	0	0

राशि-राशीश-नक्षत्र-नक्षत्रेश-उपस्वामी (के० पी०)

त्रिकोण राशियां—2 वृषभ (शुक्र) 6 कन्या (बुध) 10 मकर (शनि)

3 कृतिका II III IV 12 उ० फा० II III IV 21 उ० षाढ़ II III IV (सूर्य) 0°0' से 10°0' तक

क्र० सं०	उपस्वामी क्रमांक			उपस्वामी	से			तक		
					अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
4 अ	23	106	189	राहू (क्रमशः)	0	0	0	1	13	20
5	24	107	190	गुरु	1	13	20	3	0	0
6	25	108	191	शनि	3	0	0	5	6	40
7	26	109	192	बुध	5	6	40	7	0	0
8	27	110	193	केतू	7	0	0	7	46	40
9	28	111	194	शुक्र	7	46	40	10	0	0
4 रोहिणी 13 हस्त 22 श्रवण (चन्द्र) 10°0' से 23°20' तक										
1	29	112	195	चन्द्र	10	0	0	11	6	40
2	30	113	196	मंगल	11	6	40	11	53	20
3	31	114	197	राहू	11	53	20	13	53	20
4	32	115	198	गुरु	13	53	20	15	40	0
5	33	116	199	शनि	15	40	0	17	46	40
6	34	117	200	बुध	17	46	40	19	40	0
7	35	118	201	केतू	19	40	0	20	26	40
8	36	119	202	शुक्र	20	26	40	22	40	0
9	37	120	203	सूर्य	22	40	0	23	20	0
5 मृगशिर I II 14 चित्रा I II 23 धनिष्ठा I II (मंगल) 23°20' से 30°0' तक										
1	38	121	204	मंगल	23	20	0	24	6	40
2	39	122	205	राहू	24	6	40	26	6	40
3	40	123	206	गुरु	26	6	40	27	53	20
4	41	124	207	शनि	27	53	20	30	0	0

राशि-राशीश-नक्षत्र-नक्षत्रेश-उपस्वामी (के० पी०)										
त्रिकोण राशियां—3 मिथुन (बुध) 7 तुला (शुक्र) 11 कुम्भ (शनि)										
5 मृगशिर 14 चित्रा 23 धनिष्ठा (मंगल) 0° 0′ से 6° 40′ तक III IV III IV III IV										
क्र० सं०	उपस्वामी क्रमांक			उपस्वामी	से			तक		
					अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
5	42	125	208	बुध	0	0	0	1	53	20
6	43	126	209	केतू	1	53	20	2	40	0
7	44	127	210	शुक्र	2	40	0	4	53	20
8	45	128	211	सूर्य	4	53	20	5	33	20
9	46	129	212	चन्द्र	5	33	20	6	40	0
6 आर्द्रा 15 स्वाति 24 शतभिषा (राहू) 6°40' से 20°0' तक										
1	47	130	213	राहू	6	40	0	8	40	0
2	48	131	214	गुरु	8	40	0	10	26	40
3	49	132	215	शनि	10	26	40	12	33	20
4	50	133	216	बुध	12	33	20	14	26	40
5	51	134	217	केतू	14	26	40	15	33	20
6	52	135	218	शुक्र	15	33	20	17	26	40
7	53	136	219	सूर्य	17	26	40	18	6	40
8	54	137	220	चन्द्र	18	6	40	19	13	20
9	55	138	221	मंगल	19	13	20	20	0	0
7 पुनर्वसु 16 विशाखा, 25 पू० भाद्र (गुरु) 20°0' से 30°0' तक I II III I II III I II III										
1	56	139	222	गुरु	20	0	0	21	46	40
2	57	140	223	शनि	21	46	40	23	53	20
3	58	141	224	बुध	23	53	20	25	46	40
4	59	142	225	केतू	25	46	40	26	33	20
5	60	143	226	शुक्र	26	33	20	28	46	40
6	61	144	227	सूर्य	28	46	40	29	26	40
7	62	145	228	चन्द्र	29	26	40	30	0	0

राशि-राशीश-नक्षत्र-नक्षत्रेश-उपस्वामी (के० पी०)

त्रिकोण राशियां—4 कर्क (चन्द्र) 8 वृश्चिक (मंगल) 12 मीन (गुरु)

7 पुनर्वसु IV 16 विशाखा IV 25 पू० भाद्र IV (गुरु) 0°0' से 3°20' तक

क्र० सं०	उपस्वामी क्रमांक			उपस्वामी	से			तक		
					अंश	कला	विकला	अंश	कला	विकला
7 अ	63	146	229	चन्द्र (क्रमश:)	0	0	0	0	33	20
8	64	147	230	मंगल	0	33	20	1	20	0
9	65	148	231	राहू	1	20	0	3	20	0
				8 पुष्य 17 अनुराधा 26 उ० भाद्र (शनि) 3°20' से 16°40' तक						
1	66	149	232	शनि	3	20	0	5	26	40
2	67	150	233	बुध	5	26	40	7	20	0
3	68	151	234	केतू	7	20	0	8	6	40
4	69	152	235	शुक्र	8	6	40	10	20	0
5	70	153	236	सूर्य	10	20	0	11	0	0
6	71	154	237	चन्द्र	11	0	0	12	6	40
7	72	155	238	मंगल	12	6	40	12	53	20
8	73	156	239	राहू	12	53	20	14	53	20
9	74	157	240	गुरु	14	53	20	16	40	0
				9 आश्लेषा 18 ज्येष्ठा 27 रेवती (बुध) 16°40' से 30°0' तक						
1	75	158	241	बुध	16	40	0	18	33	20
2	76	159	242	केतू	18	33	20	19	20	0
3	77	160	243	शुक्र	19	20	0	21	33	20
4	78	161	244	सूर्य	21	33	20	22	13	20
5	79	162	245	चन्द्र	22	13	20	23	20	0
6	80	163	246	मंगल	23	20	0	24	6	40
7	81	164	247	राहू	24	6	40	26	6	40
8	82	165	248	गुरु	26	6	40	27	53	20
9	83	166	249	शनि	27	53	20	30	0	0

तालिका का उपयोग—जन्मपत्री रचना के समय लग्न स्पष्ट, दशम भाव स्पष्ट तथा ग्रह स्पष्ट बहुत ही सावधानीपूर्वक किए जाने चाहिए ताकि उनके आधार पर नक्षत्र, चरण, नक्षत्रेश तथा उपस्वामियों का सही निर्धारण हो सके। ग्रह स्पष्ट में थोड़ा-सा भी कला विकला का अन्तर रह जाए तो उपस्वामी बदल सकता है। जिसके फलस्वरूप ग्रह का फल ही परिवर्तित हो सकता है। हो सकता है उसी अन्तर के कारण नक्षत्र ही परिवर्तित हो जाए।

उदाहरण—एक जातक का लग्न स्पष्ट मकर राशि में 9 अंश 58 कला है जो उत्तराषाढ़ नक्षत्र से चतुर्थ चरण में है। उक्त तालिका के अनुसार उत्तराषाढ़ का चतुर्थ चरण होने से नक्षत्रेश सूर्य है तथा उप क्रम संख्या 194 के अनुसार उपस्वामी शुक्र है।

1. इस जातक का लग्नेश **शनि,** लग्न नक्षत्रेश **सूर्य** तथा उपस्वामी **शुक्र** है। यदि लग्न स्पष्ट दूसरे ज्योतिर्विद द्वारा 10 अंश 3 कला आता है तो लग्न तो मकर ही रहा परन्तु नक्षत्रेश चन्द्रमा हो गया क्योंकि 10 अंश 0 कला से श्रवण नक्षत्र प्रारम्भ हो गया। अन्तर केवल 5 कला का ही है जो जन्म समय में केवल 20 सेकण्ड के अन्तर का द्योतक है। परन्तु केवल इतनी छोटी सी त्रुटि के कारण लग्न नक्षत्र ही बदल गया। जहां तक उपस्वामी का प्रश्न है अब उप क्रम संख्या 195 के अनुसार उपस्वामी चन्द्रमा हो गया।

2. अब इस जातक का लग्नेश **शनि,** लग्न नक्षत्रेश **चन्द्र** तथा उपस्वामी भी **चन्द्र** है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार फलकथन की विधा को अपनाने के लिए लग्न व ग्रह स्पष्ट अत्यन्त सूक्ष्म गणित द्वारा किया जाना चाहिए। अन्यथा केवल 5 कला (जन्म समय में 20 सेकण्ड) का अन्तर पड़ने से दोनों जातकों के रंग, रूप, स्वभाव, प्रकृति आदि सभी में अन्तर आ जाएगा। यहां पहली गणना के अनुसार जातक पर शनि, सूर्य तथा शुक्र का प्रभाव पड़ेगा। यदि दूसरी गणना को सही मानते हैं तो जातक पर शनि, चन्द्र व चन्द्र का प्रभाव पड़ेगा। यह निश्चित है कि दोनों की प्रकृति में अन्तर होगा।

इसी सूक्ष्म मापदण्ड के आधार पर ही हम यह सिद्ध कर सकते हैं कि जुड़वां बच्चे जो 5-7 मिनट के अन्तर से उत्पन्न होते हैं क्यों एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

उपरोक्त उदाहरण में नक्षत्रेश व उपस्वामी दोनों ही बदल गए। कई बार ऐसा भी होता है कि राशीश व नक्षत्रेश तो समान ही रहें और केवल उपस्वामी बदल जाए। के० पी० के अनुसार ग्रह के शुभाशुभ फल का अन्तिम निर्णायक उपस्वामी ही होता है।

यदि उपरोक्त उदाहरण में लग्न स्पष्ट 11 अंश 8 कला होता तो मकर राशि

में श्रवण नक्षत्र का प्रथम चरण ही आता पर उपस्वामी चन्द्र के बजाय मंगल हो जाता।

3. इस जातक का लग्नेश **शनि,** नक्षत्रेश **चन्द्र** तथा उपस्वामी क्रम संख्या 196 के अनुसार **मंगल** हो जाता। केवल उपस्वामी बदलने से फल की शुभाशुभता में अंतर आ जाता है। नक्षत्र बदलने से फल की प्रकृति में परिवर्तन आ जाता है।

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार उक्त तीनों लग्न स्पष्ट के अनुसार फल दिया जा रहा है।

1. लग्न स्पष्ट—मकर 9 अंश 58 कला—लग्नेश **शनि,** लग्न-नक्षत्रेश **सूर्य,** उपस्वामी **शुक्र** (क्रमांक 194)

फल—सुन्दर, दुबला-पतला, एकान्त प्रिय, असामाजिक प्राणी, यातायात विभाग—विशेष रूप से भारतीय वायु सेना (Air Force) में नौकरी, क्रानिक चर्म रोग—विशेष रूप से छाती या घुटने की चमड़ी पर, गुप्त प्यार सम्बन्ध, दूसरों के धन से (सट्टा लाटरी आदि) लाभ।

2. लग्न स्पष्ट—मकर 10 अंश 3 कला—लग्नेश **शनि,** लग्न नक्षत्रेश **चन्द्र,** उपस्वामी **चन्द्र** (क्रमांक 195)

फल—दुबला-पतला, कायर, डरपोक, निराशावादी, प्रथम प्रयास में असफल, छाती या घुटने में मवाद या घुटने का फ्रेक्चर, बर्फ, सीमेन्ट, बालों या ऊन का व्यापार, नगरपालिका के बिजली या सेनिटरी विभाग में नौकरी, पसलियों में फ्रेक्चर।

3. लग्न स्पष्ट—मकर 11 अंश 8 कला—लग्नेश **शनि,** लग्न-नक्षत्रेश **चन्द्र,** उपस्वामी **मंगल** (क्रमांक 196)

फल—वाहन से यात्रा करते समय दुर्घटना एवं गम्भीर चोट, रक्त विषाक्तता, नशीली फसलों (चाय कॉफी आदि) की कृषि, यातायात, ठेकेदारी, प्रापर्टी क्रय-विक्रय आदि से लाभ, मिलिटरी पुलिस या रेलवे में नौकरी, मुकदमे या परीक्षा में सफलता, प्रसिद्ध, मंत्री या उच्च पद।

इस प्रकार लग्न स्पष्ट में थोड़ा सा भी अन्तर हो जाने पर एक ही राशि में नक्षत्रेश या उपस्वामी या दोनों बदल जाने से जातक का जीवन ही बदल जाता है।

अभ्यास की दृष्टि से एक जन्म कुण्डली के लग्न, ग्रह तथा दशम स्पष्ट के आधार पर नक्षत्रेश व उपस्वामी निकालकर बताए जा रहे हैं।

उदाहरण—जन्म 14 दिसम्बर, 1996 प्रातः 7 बजकर 35 मिनट, जन्म स्थान बारां अक्षांश 25''6' उत्तरी तथा रेखांश 76''30' पूर्वी।

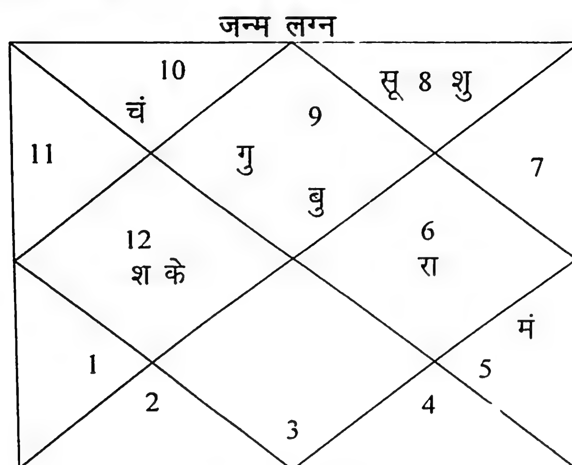
चित्रापक्षीय अयनांश 23 अंश 48 कला 53 विकला। राहू एवं केतू स्पष्ट लिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति में यह निर्देश दिया गया है कि केवल कृष्णमूर्ति अयनांश

ही प्रयोग में लें अन्यथा फलित सही नहीं होगा। के० पी० अयनांश चित्रापक्षीय (लाहिरी) अयनांश से लगभग 6 कला कम है।

विधि—लग्न, ग्रह स्पष्ट एवं दशम स्पष्ट (मध्यान्ह) सभी को एक तालिका में लिख लें तथा प्रत्येक के तात्कालिक राश्यंशों के अनुसार गत पृष्ठों में दी गई तालिका के अनुसार वांछित कालमों की पूर्ति कर लें। सुविधा के लिए प्रत्येक कालम में नीचे उप क्रमांक संख्या दे दी गई है। कम्प्यूटर द्वारा बनी जन्मपत्रियों में भी इसी आधार पर उपस्वामी दिए जाते हैं।

जन्म लग्न



तात्कालिक ग्रहादि स्पष्ट

ग्रहादि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	केतू	दशम
गत राशि	8	7	9	4	8	8	7	11	5	11	5
अंश	5	28	14	28	18	27	2	6	10	10	17
कला	18	33	38	34	48	18	15	54	36	36	54
विकला	45	2	14	10	49	13	31	5	29	29	27
राशि	धनु	वृश्चिक	मकर	सिंह	धनु	धनु	वृश्चिक	मीन	कन्या	मीन	कन्या
स्वामी	गुरु	मंगल	शनि	सूर्य	गुरु	गुरु	मंगल	गुरु	बुध	गुरु	बुध
नक्षत्र	मूल	ज्ये०	श्र०	उ.फा.	पू.षा.	उ.षा.	विशा.	उ.भा.	हस्त	उ.भा.	हस्त
चरण	2	4	2	1	2	1	4	2	1	3	3
नक्षत्रेश	केतू	बुध	चन्द्र	सूर्य	शुक्र	सूर्य	गुरु	शनि	चन्द्र	शनि	चन्द्र
उपस्वामी	मंगल	शनि	शुक्र	मंगल	राहू	सूर्य	राहू	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध
उप क्रमांक	171	166	198	104	180	185	148	233	112	236	117

प्रो० कृष्णमूर्ति द्वारा कृष्णमूर्ति पद्धति की अवधारणा—प्रो० कृष्णमूर्ति ने ग्रह पर राशि, नक्षत्र तथा उपनक्षत्र के प्रभाव को एक सुन्दर उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है।

प्रो० कृष्णमूर्ति के अनुसार ग्रह एक वृत्ताकार कमरे में जलता हुआ बल्ब है। वृत्ताकार कमरे में 12 रोशनदान हैं जिनमें 12 रंगीन कांच (राशि स्वामी के रंग के अनुसार) लगे हैं। अलग-अलग कांच में से देखने पर बल्ब का रंग भिन्न प्रकार का दिखाई देगा। अर्थात् भिन्न-भिन्न राशियों में एक ही ग्रह अलग-अलग फल देगा। (जैसे उच्च राशि, स्व राशि, मित्र राशि, शत्रु राशि, नीच राशि आदि)।

इस वृत्ताकार कमरे के बाहर एक बरामदा है उसमें 27 रोशनदान हैं जिनमें भी रंगीन कांच लगे हैं। ये कांच 9 रंग के हैं। पहले, दसवें तथा उन्नीसवें रोशनदान के कांच का रंग एक सा है। इसी प्रकार 27 नक्षत्रों के स्वामी 9 ग्रह होने से 9 रंगों के कांचों की कल्पना की गई है। यदि बरामदे के बाहर से बल्ब को देखें तो दो भिन्न-भिन्न रंग के कांच बीच में होने से बल्ब के रंग में अधिक बदलाव नजर आएगा।

इस उदाहरण द्वारा विद्वान ने ग्रह पर राशि के प्रभाव में नक्षत्र द्वारा संशोधन की ओर इशारा किया है। अर्थात् किसी राशि में ग्रह जो फल प्रस्तावित करता है नक्षत्रेश उस फल की प्रकृति में संशोधन करता है।

जैसे यदि गुरु वृश्चिक राशि में है। अर्थात् गुरु स्वरूप बल्ब के आगे मंगल स्वरूप लाल कांच लगा है। गुरु का पीला रंग तथा मंगल का लाल कांच मिलकर नारंगी रंग दिखाई देगा। यदि इसी गुरु को विशाखा (गुरु) के पीले कांच में से देखें तो यह नारंगी रंग और चमकदार हो जाएगा, परन्तु इसी गुरु को अनुराधा (शनि) के नीले कांच में से देखें तो नारंगी व नीला रंग मिलकर हल्का बैंगनी दिखाई देगा। इस प्रकार राशि के रंग को नक्षत्र का रंग परिवर्तित कर देता है।

यदि इसी बरामदे के बाहर पुनः एक बरामदा हो और उसमें भी 27 नक्षत्रों के 9 कांच लग जाएं तो अब तीन प्रकार के कांचों में बल्ब का रंग बिल्कुल बदला हुआ दिखाई देगा। **परन्तु रंग में अन्तिम परिवर्तन का श्रेय सबसे बाहर वाले कांच को जाएगा।** बीच के 27 कांच नक्षत्रेशों की तथा सबसे बाहर के 27 कांच उपनक्षत्रेश (उपस्वामी) की भूमिका निभाते हैं। नक्षत्रेश दशानाथ तथा उपस्वामी भुक्तिनाथ के समकक्ष हैं। हमारी दशा पद्धति भी यह कहती है।

कृष्णमूर्ति पद्धति की अवधारणा के अनुसार—

(*i*) किसी राशि में ग्रह फल का स्त्रोत (Source) है।

(*ii*) ग्रह का नक्षत्रेश (दशानाथ) उस फल की प्रकृति (Nature) को इंगित करता है।

(*iii*) परन्तु उपनक्षत्रेश (उपस्वामी या भुक्तिनाथ) यह निर्धारित करता है कि उक्त फल जातक के लिए शुभ होगा अथवा अशुभ।

इस प्रकार भुक्तिनाथ (Sub Lord) की भूमिका अन्तिम एवं निर्णायक होती है, विंशोत्तरी पद्धति के अनुसार भी भुक्तिनाथ दशानाथ को प्रभावित करता है।

प्रो० कृष्णमूर्ति के शब्दों में—

"**Planet** is the source of the result, **Constellation** indicates the nature of the result and the **Sub** is the deciding factor whether the matter is favourable or unfavourable."

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार नक्षत्राधारित फल—

जैसा कि ऊपर बताया गया है, कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार फलित में नक्षत्रेश (दशानाथ) का अधिक महत्व है और उपस्वामी (भुक्तिनाथ) का उससे भी अधिक।

यदि कोई ग्रह ऐसे नक्षत्र में स्थित है जिसका स्वामी शुभ भाव/भावों का स्वामी है तो वह ग्रह शुभ फल देगा परन्तु साथ ही वह ऐसे उप में हो जिसका स्वामी अर्थात् उपस्वामी अशुभ भावेश हो तो शुभ नक्षत्रेश द्वारा इंगित शुभ फल प्राप्त नहीं हो सकेगा।

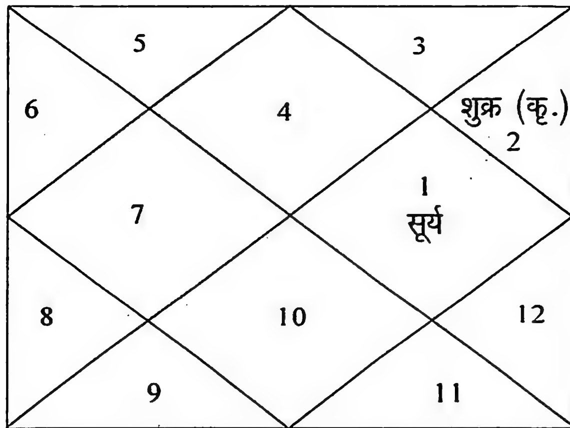
इसलिए इस पद्धति के अनुसार ग्रह के शुभाशुभ फल पर विचार करने से पूर्व ग्रह से सम्बन्धित निम्न जानकारी लिख लेनी चाहिए।

(*i*) ग्रह किस नक्षत्र में है?
(*ii*) इस नक्षत्र का स्वामी कौन-सा ग्रह है?
(*iii*) यह नक्षत्रेश किस भाव में स्थित है?
(*iv*) नक्षत्रेश किस भाव/किन भावों का स्वामी है?
(*v*) भावेश के रूप में नक्षत्रेश शुभ है अथवा अशुभ?

सम्बन्धित ग्रह उन भावों का फल देगा (*i*) जिसमें नक्षत्रेश स्थित है और (*ii*) जिन भावों का वह नक्षत्रेश स्वामी है। यह फल सम्बन्धित ग्रह व नक्षत्रेश की दशान्तर्दशा में प्राप्त होगा। इस प्रकार जो ग्रह जिस नक्षत्र में होता है वह उसी नक्षत्रेश के प्रतिनिधि (Agent) के रूप में कार्य करता है। इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कोई भी ग्रह अपने नक्षत्रों में स्थित ग्रह के माध्यम से शुभाशुभ फल देता है।

उदाहरण 1. मान लीजिए इस जातक की शुक्र की दशा चल रही है। हम शुक्र से सम्बन्धित जानकारी लिख रहे हैं।

(*i*) शुक्र किस नक्षत्र में है? कृतिका में
(*ii*) कृतिका नक्षत्र का स्वामी कौन है? सूर्य
(*iii*) नक्षत्रेश (सूर्य) किस भाव में स्थित है? दशम भाव में
(*iv*) नक्षत्रेश (सूर्य) किस भाव का स्वामी है? द्वितीय भाव का
(*v*) भावेश के रूप में नक्षत्रेश शुभ है अथवा अशुभ? शुभ



उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर शुक्र सूर्य के नक्षत्र में है, अतः शुक्र सूर्य अधिष्ठित भाव (दशम) तथा द्वितीय जिसका कि सूर्य स्वामी है, का फल अपनी दशम अन्तर्दशा में देगा।

(अ) सूर्य के द्वितीय भाव के स्वामित्व के अनुसार राज्य सरकार या स्वयं के उद्यम से लाभ, उत्तरदायित्व का निर्वाह तथा खेलकूद व मनोरंजन के कार्यों में रुचि जैसे फल शुक्र देगा।

(ब) दशम भाव में सूर्य के स्थित होने से आय वृद्धि, जीवन स्तर में उच्चता, मान व अधिकार में वृद्धि, पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति, पदोन्नति तथा राजनैतिक जीवन में सफलता आदि फल शुक्र देगा।

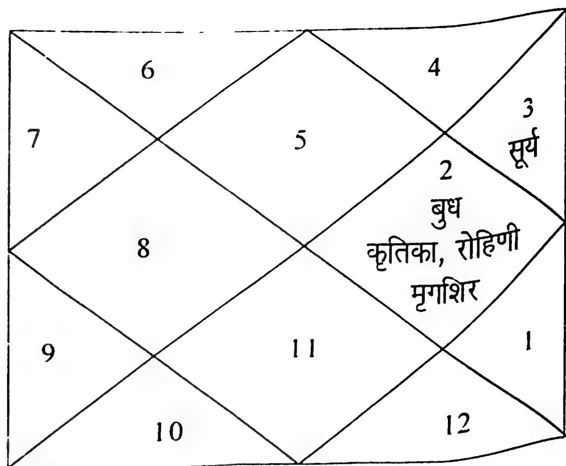
हमने देखा कि द्वितीय व दशम का फल शुक्र ने दिया क्योंकि वह सूर्य के नक्षत्र में स्थित है। सूर्य द्वितीयेश होने से शुभ है तथा दशम में उच्च व दिक्बली है। अतः शुभ फल प्रदान करेगा। परन्तु यदि शुक्र स्वयं अपने 'उप' में हुआ तो शुभ फल में वृद्धि होगी। इसके विपरीत गुरु (षष्ठेश), बुध (द्वादशेश व तृतीयेश), शनि (अष्टमेश) तथा राहू व केतू के उप में हुआ तो शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। वृष राशि के कृतिका नक्षत्र (2, 3, 4 चरण) में सूर्य, चन्द्र व मंगल के 'उप' नहीं आते। वे कृतिका के प्रथम चरण (मेष) में निकल जाते हैं।

उदाहरण 2. सिंह लग्न की संलग्न जन्म कुण्डली में दशम भाव में बुध वृष राशि में स्थित है। दशम भाव में कृतिका (2, 3, 4), रोहिणी तथा मृगशिर (1, 2) हैं। प्रत्येक नक्षत्र में स्थित बुध का फल निम्नानुसार होगा।

***(i)* बुध कृतिका में होने पर**—बुध कृतिका नक्षत्र में है। नक्षत्रेश सूर्य लग्नेश होने से शुभ है तथा एकादश भाव में बली है। अतः बुध लग्न व एकादश से सम्बन्धित भावों का फल अपनी महादशा में भुक्तिनाथ की शुभाशुभता के अनुसार देगा।

लग्न से सम्वन्धित फल—उत्तम स्वास्थ्य, दृढ़ प्रतिज्ञ, सम्माननीय, परन्तु निर्वल दृष्टि।

एकादश से सम्वन्धित फल—इच्छा पूर्ति, उत्तम मित्र, उत्तम व्यापार एवं वाहन, आशावादी।



जन्म लग्न

(ii) बुध रोहिणी में होने पर—बुध रोहिणी नक्षत्र में है, जिसका स्वामी चन्द्र द्वादशेश है। अतः बुध द्वादश भाव से सम्बन्धित फल अपनी दशा में देगा।

द्वादश भाव से सम्बन्धित फल—हानि, स्थानान्तरण, सम्मान को ठेस, निम्नस्तरीय व्यवहार, अस्पताल व जेल, कर्जा चुकाना आदि।

(iii) बुध मृगशिर में होने पर—बुध मृगशिर में है, जिसका स्वामी मंगल सुखेश व भाग्येश होने से शुभ है। अतः बुध अपनी दशा में चतुर्थ व नवम भावों का फल देगा।

चतुर्थ भाव से सम्वन्धित फल—उच्च शिक्षा, प्रशिक्षण परन्तु माता-पिता के लिए अशुभ, छाती में दर्द, मुकदमेबाजी, चोरी एवं अग्नि से हानि।

नवम भाव से सम्बन्धित फल—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, आयात-निर्यात में वृद्धि, शक्ति एवं मान-सम्मान में वृद्धि, स्व प्रयासों से जीवन निर्माण, साहसी, परन्तु कृषि में हानि।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि एक ग्रह एक ही राशि में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में होने से नक्षत्रेश के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार का फल देने लग जाता है।

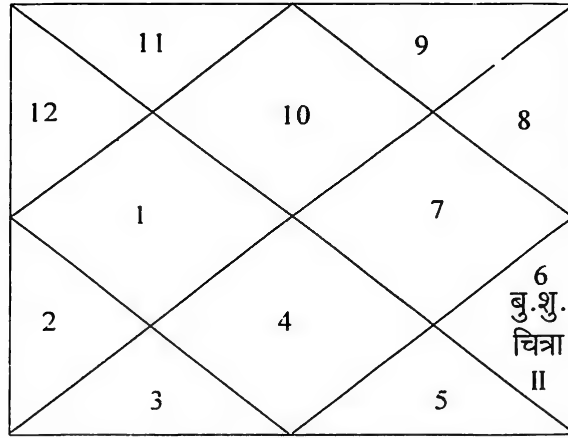
उदाहरण 3. मकर लग्न की संलग्न जन्म कुण्डली में शुक्र कन्या राशि में 27 अंश 55 कला पर तथा बुध भी कन्या राशि में 26 अंश 55 कला पर है।

(i) दोनों ग्रह कन्या राशि में हैं। बुध उच्च राशिस्थ तथा शुक्र नीच राशिस्थ है।

(ii) दोनों ग्रह चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हैं, जिनका स्वामी मंगल चतुर्थेश व एकादशेश होने के कारण स्वास्थ्य को छोड़ कर अन्य बातों में शुभ है।

(iii) बुध, गुरु के 'उप' (26°6'40" से 27°53'20" के मध्य) में है। गुरु द्वादशेश

व तृतीयेश होने से अशुभ भावेश है, अतः बुध उच्च राशिस्थ होते हुए भी अपनी महादशा में गुरु की भुक्ति में असफलता, निराशा, बंटवारा व साथी से विछोह आदि फल देगा।



(*iv*) शुक्र शनि के उप (27"53'20" से 30"0'0" के मध्य) में है। शनि लग्नेश व द्वितीयेश है। अतः शुक्र नीच राशिस्थ होते हुए भी अपनी महादशा व शनि की भुक्ति में लाभ, उत्तम स्वास्थ्य, पारिवारिक प्रसन्नता प्रदान करेगा। जातक की इच्छाओं की पूर्ति कराएगा तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि करेगा।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि ग्रह अपने नक्षत्रेश के भावों का फल उन भावेशों की शुभाशुभता के आधार पर उपस्वामी की शुभाशुभता के अनुसार देते हैं।

उपरोक्त उदाहरणों से नक्षत्र तथा उप के सम्मिलित फल के सम्बन्ध में निम्न नियम स्पष्ट होता है।

'उपस्वामी' फल की शुभाशुभता का अन्तिम निर्णायक होता है।

'उपस्वामी' के अनुसार शुभाशुभ फल का मापदण्ड

(अ)	(*i*)	शुभ नक्षत्रेश + शुभ उपस्वामी	अत्यन्त शुभ फल।
	(*ii*)	शुभ नक्षत्रेश + अशुभ उपस्वामी	कार्य सफल होने की आशा परन्तु असफलता प्राप्त होगी। अशुभ फल।
(ब)	(*i*)	अशुभ नक्षत्रेश + शुभ उपस्वामी	प्रारम्भ में कष्ट एवं निराशा परन्तु अन्त में सफलता।
	(*ii*)	अशुभ नक्षत्रेश + अशुभ उपस्वामी	अत्यन्त अशुभ फल।

जुड़वां सन्तान और नाक्षत्र ज्योतिष—जुड़वां सन्तानों के जन्म में 5 से 10 मिनट का अन्तराल होता है। सामान्यतया दोनों जातकों की जन्म पत्रिकाएं समान होती हैं। दोनों की जन्म लग्न राशि व चन्द्र लग्न राशि समान होती हैं तथा ग्रह स्थिति भी समान होती है। फिर भी यह देखा जाता है कि दोनों जातकों के व्यक्तित्व यथा आकृति, रंग, रूप, स्वास्थ्य, प्रकृति, रुचियों, योग्यता, स्वभाव, व्यवहार और व्यवसाय आदि में असमानता होती है।

परम्परागत ज्योतिष के अनुसार दोनों जातकों के उपरोक्त गुणों में समानता होनी चाहिए परन्तु जब अन्तर है तो इस अन्तर का कोई कारण भी होना चाहिए। यदि जन्मपत्री का सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो नाक्षत्र ज्योतिष एवं कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा इस अन्तर का कारण खोजा जा सकता है।

यदि एक जातक के जन्म से दूसरे जातक के जन्म के अन्तराल में जन्म लग्न, चन्द्र या अन्य ग्रह राशि परिवर्तन कर ले तब तो जन्मपत्री ही बदल जाएगी। जन्म लग्न अथवा चन्द्र लग्न का नक्षत्र बदल जाए तो भी दोनों जातकों के गुणों में अन्तर आ जाना स्वाभाविक है क्योंकि जातक के गुणावगुण लग्न या चन्द्रमा के नक्षत्र से प्रभावित होते हैं। परन्तु दोनों के सम्बन्धित नक्षत्र भी समान हों तब भी अन्तर पाया जाता है। नक्षत्र बदलने के उदाहरण कम ही मिलते हैं।

दोनों जातकों के लग्न, चन्द्र लग्न (राशि), ग्रह स्थिति, लग्न व चन्द्र नक्षत्र समान होने पर भी उनमें अन्तर का कारण उपस्वामी (भुक्तिनाथ) का बदल जाना है। यदि कृष्णमूर्ति पद्धति के आधार पर दोनों जन्मपत्रियों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो समस्या का समाधान हो सकता है।

एक वास्तविक उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि जुड़वां बच्चों (Twins) के व्यक्तित्व में असमानता का कारण लग्न के उपस्वामी का बदल जाना है।

उदाहरण—जन्म विवरण—जन्म स्थान—बारां (राजस्थान) अक्षांश 25''6' उत्तरी, रेखाशं 76''30' पूर्वी, जन्म दिनांक 13/14 अगस्त 1964

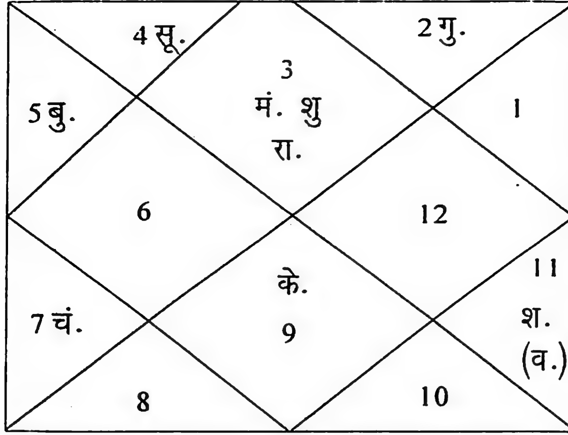
जन्म समय—1. लव मिश्रा—रात्रि 1 बजकर 56 मिनट, लग्न स्पष्ट मिथुन 3 अंश 53 कला 46 विकला।

2. कुश मिश्रा—रात्रि 2 बजकर 1 मिनट, लग्न स्पष्ट मिथुन 5 अंश 3 कला 18 विकला।

दोनों के जन्म में केवल 5 मिनट का अन्तराल है तथा दोनों ही एक लब्ध प्रतिष्ठित चिकित्सक के पुत्र हैं। दोनों का लग्न नक्षत्र मृगशिर चतुर्थ चरण है।

दोनों जातकों की जन्मकुण्डली निम्न है—

जन्म लग्न—लव कुश मिश्रा



चन्द्र स्पष्ट—1. लव मिश्रा—तुला 13 अंश 17 कला 59 विकला
लग्नेश—शुक्र, नक्षत्र—स्वाति, द्वितीय चरण नक्षत्रेश—राहू।
उपस्वामी—बुध, नवांश राशि—मकर, नवांश स्वामी—शनि।
2. कुश मिश्रा—तुला 13 अंश 20 कला 35 विकला
लग्नेश—शुक्र, नक्षत्र—स्वाति, तृतीय चरण नक्षत्रेश—राहू।
उपस्वामी—बुध, नवांश राशि—कुम्भ, नवांश स्वामी—शनि।

दोनों जातकों में चन्द्र स्पष्ट के आधार पर चरण भेद के अतिरिक्त कोई अन्तर नहीं है। नवांश भिन्न होने पर भी नवांशपति शनि ही है।

लग्न स्पष्ट के आधार—

1. लव मिश्रा—लग्न स्पष्ट—मिथुन 3 अंश 53 कला 46 विकला, लग्नेश बुध, लग्न नक्षत्र मृगशिर चतुर्थ चरण, नक्षत्रेश मंगल, उपस्वामी शुक्र, नवांश राशि वृश्चिक, नवांशपति मंगल।

लग्नेश बुध—सिंह राशि, 23 अंश 10 कला 32 विकला, नक्षत्र पू० फा०, स्वामी शुक्र, उपस्वामी शनि।

नक्षत्रेश मंगल—मिथुन राशि 15 अंश 59 कला 12 विकला, नक्षत्र आर्द्रा, स्वामी राहू, उपस्वामी शुक्र।

उपस्वामी शुक्र—मिथुन राशि 13 अंश 0 कला 52 विकला, नक्षत्र आर्द्रा, स्वामी राहू, उपस्वामी बुध।

2. कुश मिश्रा—लग्न स्पष्ट मिथुन 5 अंश 3 कला 18 विकला, लग्नेश बुध, लग्न नक्षत्र मृगशिर चतुर्थ चरण, नक्षत्रेश मंगल, उपस्वामी सूर्य, नवांश राशि वृश्चिक, नवांशपति मंगल।

लग्नेश बुध—सिंह राशि, 23 अंश 10 कला 39 विकला, नक्षत्र पू० फा०, स्वामी शुक्र, उपस्वामी शनि।

नक्षत्रेश मंगल--मिथुन राशि, 15 अंश 59 कला, 20 विकला नक्षत्र आर्द्रा, स्वामी राहू, उपस्वामी शुक्र।

उपस्वामी सूर्य—कर्क राशि, 27 अंश 43 कला 59 विकला, नक्षत्र आश्लेषा, स्वामी बुध, उपस्वामी गुरु।

दोनों की ग्रह स्थिति में समानता—(*i*) लग्नेश बुध व नक्षत्रेश मंगल दोनों की स्थिति समान है।

(*ii*) लग्न का नवांश व नवांशपति समान है।

(*iii*) चन्द्र स्पष्ट के आधार पर दोनों में समानता है।

असमानता—(*i*) लव मिश्रा के लग्न स्पष्ट का उपस्वामी शुक्र है जो राहू के नक्षत्र में है तथा स्वयं शुक्र का उपस्वामी बुध है। जबकि कुश मिश्रा के लग्न स्पष्ट का उपस्वामी सूर्य है तथा स्वयं सूर्य बुध के नक्षत्र व आश्लेषा तथा गुरु के उप स्वामित्व में है।

(*ii*) इस प्रकार लव मिश्रा के जीवन पर बुध, मंगल, शुक्र के अतिरिक्त राहू का दोहरा प्रभाव है जबकि कुश मिश्रा के जीवन पर बुध, मंगल, सूर्य के अतिरिक्त गुरु का प्रभाव है।

शारीरिक गठन—वर्तमान में मिश्रा बन्धुओं की आयु 32 वर्ष है। दोनों की ऊंचाई समान है। दोनों सामान्य गौरवर्ण हैं। शारीरिक गठन लगभग समान है परन्तु लव अपेक्षाकृत दुबला है तथा इनका चेहरा भी थोड़ा लम्बोतरा है। नेत्र लगभग समान हैं। देखने पर दोनों जुड़वां भाई लगते हैं। दोनों की शक्ल लगभग 90% मिलती है।

विशेषताएं—1. लव मिश्रा (अग्रज)—लव मिश्रा ने प्राणी विज्ञान (कीट विज्ञान व मत्स्य विज्ञान सहित) में स्नातकोत्तर उपाधि ग्रहण की है। फार्मेसी में डिप्लोमा करने के उपरान्त आयुर्वेदिक दवा विक्रेता के रूप में सफल व्यवसायी हैं। इन्हें बागवानी, पेड़, पौधों व पशुओं से प्रेम है। कुश की अपेक्षा लव कम लोकप्रिय हैं। एक विशेष बात यह है कि इनका विवाह कुश मिश्रा (अनुज) के विवाह से लगभग 3 वर्ष पश्चात् हुआ है। इनके एक पुत्र व एक पुत्री है।

2. कुश मिश्रा (अनुज)—कुश मिश्रा ने वाणिज्य तथा विधि में स्नातक उपाधियां प्राप्त की हैं। ये अधिवक्ता हैं, साथ ही एक उच्च स्तरीय पत्रकार एवं संवाददाता हैं। कुश मिश्रा राष्ट्रीय पत्रकारिता से भी सम्बद्ध हैं। इनका उच्चाधिकारियों से निकट का सम्बन्ध है। कुश मिश्रा को पूरा जिला एवं नगर जानता है। इनको भ्रमण तथा नेतागिरी में रुचि है। कुश मिश्रा के दो पुत्र व एक पुत्री हैं।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि जुड़वां सन्तानों की परम्परागत जन्मपत्रिकाएं समान होते हुए भी नक्षत्र और/अथवा उपस्वामी बदल जाने के कारण दोनों के गुणावगुणों, जीवन शैली एवं व्यवसाय में भिन्नता आ जाती है।

ज्योतिर्विदों के ज्ञानवर्द्धन हेतु यह शोध का एक रुचिकर विषय है। ◻◻

नक्षत्र और योग, मुहूर्त व संस्कार

प्रत्येक व्यक्ति किसी शुभ कार्य को शुभ समय में प्रारम्भ करना चाहता है ताकि वह कार्य सफल, लाभकारी तथा मंगलमय हो। ऐसे अनेक शुभ समय (अवसर) विभिन्न कालांगों यथा वार, तिथि, नक्षत्र आदि के सम्मिश्रण से बनते हैं जिन्हें 'योग' कहा जा सकता है। इसी प्रकार के शुभ योग प्रत्येक कार्य के लिए आचार्यों ने निर्धारित किए हैं। शुभ योगों की भांति अशुभ योग (कुयोग) भी इन्हीं कालांगों से मिलकर बनते हैं जिनमें शुभ कार्यों का प्रारम्भ वर्जित है। हम इस प्रकरण में उन्हीं योगों का वर्णन करेंगे जिनकी रचना में नक्षत्रों की भूमिका रहती है।

सुविधा की दृष्टि से ऐसे योगों को निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) योग—1. शुभाशुभ योग, 2. सुयोग, 3. कुयोग

(ब) कार्यारम्भ मुहूर्त

(स) संस्कार मुहूर्त

उपरोक्त तीनों वर्गों में से निम्न महत्वपूर्ण एवं अधिक उपयोगी योगों का वर्णन किया जा रहा है।

(अ) योग—1. शुभाशुभ योग—

(*i*) आनन्दादि योग, (*ii*) द्विपुष्कर योग, (*iii*) त्रिपुष्कर योग।

2. सुयोग—(*i*) सिद्धि योग, (*ii*) अमृत सिद्धि योग, (*iii*) सर्वार्थ सिद्धि योग, (*iv*) कुमार योग, (*v*) राज योग, (*vi*) गुरु पुष्य योग, (*vii*) रवि पुष्य योग, (*viii*) पुष्कर योग, (*ix*) रवि योग।

3. कुयोग—(*i*) से (*ix*)—कालदण्ड, वज्र, लुम्बक, उत्पात, मृत्यु, काण, मूसल, गदा व रक्ष, (*x*) यमदंष्ट्र योग, (*xi*) यमघण्ट योग, (*xii*) ज्वालामुखी योग, (*xiii*) दग्ध नक्षत्र, (*xiv*) मासशून्य नक्षत्र, (*xv*) घात नक्षत्र, (*xvi*) जन्म नक्षत्र, (*xvii*) अशुभ तारा, (*xviii*) विरुद्ध योग।

(ब) कार्यारम्भ मुहूर्त—1. स्तनपान, 2. सूतिका स्नान, 3. दोलारोहण, 4. प्रसूति का जल पूजन, 5. वाग्दान, 6. वधू प्रवेश, 7. द्विरागमन, 8. चूड़ी धारण, 9. क्रय, 10. विक्रय, 11. गृह निर्माण, 12. गृह प्रवेश, 13. व्यापार प्रारम्भ, 14. नौकरी, 15. यात्रा।

(स) संस्कार मुहूर्त—1. पुंसवन व सीमान्त संस्कार, 2. जातकर्म (नामकर्म), 3. चूड़ाकर्म (मुण्डन), 4. अक्षरारम्भ, 5. विवाह।

(अ) योग

1. शुभाशुभ योग—(*i*) आनन्दादियोग—अभिजित सहित 28 नक्षत्रों को 7 वारों से मिलाने पर आनन्दादि 28 योगों की रचना होती है। चन्द्र और सूर्य के राश्यंतर के आधार पर विषकुम्भादि 27 योग बनते हैं, वे अलग हैं।

आनन्दादि योगों की रचना में नक्षत्रों को वारों के साथ निम्न प्रकार से मिलाया जाता है।

प्रथम वार रविवार के साथ प्रथम नक्षत्र अश्विनी को मिलाने से आनन्द योग बनता है। यहां मिलाने से तात्पर्य है कि रविवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो उस दिन आनन्द योग होगा। इसके पश्चात् तीन नक्षत्र छोड़कर चौथे नक्षत्र को अगले वारों से क्रमशः मिलाने से भी आनन्द योग बनेगा, जैसे सोमवार + मृगशिर, मंगलवार + आश्लेषा, बुधवार + हस्त, गुरुवार + अनुराधा, शुक्रवार + उत्तराषाढ़ तथा शनिवार + शतभिषा। उपरोक्त सात वार तथा सात नक्षत्र मिलाने से आनन्द योग बनता है। इसी प्रकार रविवार के साथ दूसरा नक्षत्र भरणी मिलाने से कालदण्ड योग बनता है। इसके पश्चात् सोमवार के साथ आर्द्रा, मंगलवार + मघा, बुधवार + चित्रा, गुरुवार + ज्येष्ठा, शुक्रवार + अभिजित तथा शनिवार + पूर्वा भाद्रपद मिलकर भी कालदण्ड योग बनता है। इसी क्रम में 28 योग बनते हैं। आनन्दादि योग प्रातः कालीन नक्षत्र के आधार पर होते हैं जिससे पूरे दिन वही योग माना जाता है जबकि अन्य योग समयानुसार होते हैं।

नक्षत्र एवं वार से मिलकर बनने वाले योग संलग्न तालिका में दिए जा रहे हैं। तालिका के अन्तिम कालम में प्रत्येक योग से सम्बन्धित फल दिया गया है जो योग के नाम के अनुरूप है।

आनन्दादि योग का शुभाशुभत्व—

1. आनन्द, धाता, सौम्य, श्रीवत्स, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, सिद्धि, शुभ, अमृत, मातंग, सुस्थिर तथा प्रवर्द्धमान योग सदैव शुभ होते हैं।

2. कालदण्ड, उत्पात, मृत्यु तथा रक्ष योगों में प्रारम्भ किए हुए कार्य अपूर्ण रहते हैं।

3. धूम्र योग की प्रथम एक घटी, काण तथा मूसल योगों की प्रथम दो घटियां, पद्म तथा लुम्ब योगों की प्रथम चार घटियां, ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गर योगों की प्रथम पांच घटियां तथा गदा योग की प्रथम सात घटियां शुभ कार्य प्रारम्भ करने हेतु त्याज्य मानी गई हैं।

(*ii*) **द्विपुष्कर योग**—यह निम्न स्थिति में बनता है—

तिथि	वार	नक्षत्र
2, 7 या 12	मंगलवार, शनिवार या रविवार	मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा (मंगल के तीन नक्षत्र)

उपरोक्त तीनों कालांगों से मिलकर 27 प्रकार से यह योग बन सकता है। यह एक शुभाशुभ योग है जिसका नामानुरूप अर्थ 'दोहरा' होता है अर्थात् इस योग में कोई कार्य होने पर दोहरा लाभ या दोहरी हानि होती है। यदि कोई लाभकारी कार्य हो तो वह एक बार और होता है, इसी प्रकार यदि कोई वस्तु खो जाए तो पुनः एक बार कोई वस्तु खोती है। अतः शुभ कार्य करते समय ऐसे योग की तलाश की जाती है।

आनन्दादि योग									
क्र. सं.	वार योग	रवि-वार	सोम-वार	मंगल-वार	बुध-वार	गुरु-वार	शुक्र-वार	शनि-वार	फल
1	आनन्द	अश्वि.	मृग	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	सिद्धि
2	कालदण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	मृत्यु
3	धूम्र	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कष्ट
4	धाता	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	सौभाग्य
5	सौम्य	मृग	अश्वि.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	बहुसुख
6	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भरणी	धनहानि
7	केतु	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	दुर्भाग्य
8	श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	सुख-सम्पत्ति
9	वज्र	अश्वि.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	क्षय
10	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीनाश
11	छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	राज सम्मान
12	मित्र	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	पुष्टि
13	मानस	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	सौभाग्य
14	पद्म	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा.	धनागम
15	लुम्ब	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	धनक्षय
16	उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	प्राणनाश
17	मृत्यु	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग	आश्ले.	हस्त	प्राणनाश
18	काण	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
19	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	कार्यसिद्धि
20	शुभ	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	सुख
21	अमृत	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	राज सम्मान
22	मूसल	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	धनक्षय
23	गदा	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मूल	रोग
24	मातंग	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	कुल वृद्धि
25	रक्ष	शत	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	महाकष्ट
26	चर	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	कार्यसिद्धि
27	सुस्थिर	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मूल.	श्रवण	गृहारम्भ
28	प्रवर्द्धमान	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	विवाह

(*iii*) **त्रिपुष्कर योग**—उपरोक्त की भांति त्रिपुष्कर योग में शुभ अथवा अशुभ कार्य हो तो वह कुल तीन बार होता है, जैसे किसी की मृत्यु इस योग में हो जाए तो दो अन्य व्यक्तियों की मृत्यु की आशंका हो जाती है। यदि इस योग में कोई विशिष्ट कारण से धनागम हो तो दो बार और धन प्राप्ति होती है। इसीलिए मकान खरीदने, गहने बनवाने या लाटरी-रेस आदि में धन प्राप्ति हो तो इसकी पुनरावृत्ति दो बार और होती है। अतः शुभ कार्यों के लिए त्रिपुष्कर योग का उपयोग किया जाता है।

त्रिपुष्कर योग निम्न स्थिति में बनता है—

तिथि	वार	नक्षत्र
2, 7 या 12	मंगलवार, शनिवार या रविवार	कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भाद्रपद

(गुरु के तीन तथा सूर्य के तीन नक्षत्र)

उपरोक्त कालांगों के मिलने से 54 प्रकार से त्रिपुष्कर योग बनता है।

वार तो सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक माना जाता है। परन्तु तिथि व नक्षत्र का समाप्ति काल दिन अथवा रात्रि में भिन्न-भिन्न हो सकता है। अतः ये दोनों योग उतनी ही देर के लिए होते हैं जितनी देर तीनों सम्बन्धित कालांगों का एक साथ ठहराव हो। पंचांगों में ऐसे योगों का प्रारम्भिक व समाप्ति काल दिया रहता है।

2. सुयोग—ये योग शुभ होते हैं जिनमें शुभ कार्य प्रारम्भ करने से सफलता एवं लाभ प्राप्त होते हैं।

(*i*) **सिद्धि योग**—वार, तिथि तथा नक्षत्रों के सम्मिश्रण से निम्न प्रकार से सिद्धि योग की रचना होती है।

(क) रविवार को अष्टमी तिथि तथा अश्विनी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, मूल, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होने पर।

(ख) सोमवार को नवमी या दशमी तिथि तथा रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, श्रवण या शतभिषा नक्षत्र होने पर।

(ग) मंगलवार को तृतीया, अष्टमी या त्रयोदशी तिथि तथा अश्विनी, मृगशिर, आश्लेषा, मूल या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होने पर।

(घ) बुधवार को द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी तिथि तथा कृतिका, रोहिणी, मृगशिर या अनुराधा नक्षत्र होने पर।

(ङ.) गुरुवार को पंचमी, दशमी या पूर्णिमा तिथि तथा अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, विशाखा, अनुराधा या रेवती नक्षत्र होने पर।

(च) शुक्रवार को प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि तथा अश्विनी, पुनर्वसु, चित्रा, श्रवण, पूर्वा भाद्रपद या रेवती नक्षत्र होने पर।

(छ) शनिवार को चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी तिथि तथा रोहिणी, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, स्वाति या श्रवण नक्षत्र होने पर।

पंचागों में सिद्धि योग प्रत्येक माह में दिए जाते हैं।

(ii) **अमृत सिद्धि योग**—निम्न वारों व नक्षत्रों के संयोग से अमृत सिद्धि योग की रचना होती है जो सभी शुभ कार्यों के लिए उत्तम है। परन्तु अमृत सिद्धि योग के दिन 'दुष्ट तिथि' हो तो यह योग नष्ट होकर 'त्रितयत' नामक विष योग बन जाता है, जो सभी शुभ कार्यों के लिए वर्जित है। प्रत्येक वार नक्षत्र युग्म के साथ दुष्ट तिथि का उल्लेख किया जा रहा है।

(क) रविवार को हस्त नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु पंचमी तिथि भी हो तो अशुभ।

(ख) सोमवार को मृगशिर नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु षष्ठी तिथि भी हो तो अशुभ।

(ग) मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु सप्तमी तिथि भी हो तो अशुभ।

(घ) बुधवार को अनुराधा नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु अष्टमी तिथि भी हो तो अशुभ।

(ड.) गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु दशमी तिथि भी हो तो अशुभ।

(च) शुक्रवार को रेवती नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु दशमी तिथि भी हो तो अशुभ।

(छ) शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होने पर अमृत सिद्धि योग परन्तु एकादशी तिथि भी हो तो अशुभ।

अतः इस योग का उपयोग करते समय तिथि का ध्यान रखा जाना चाहिए। दुष्ट तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों को अमृत सिद्धि योग पूर्ण शुभ फलदायक होता है।

(iii) **सर्वार्थ सिद्धि योग**—जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह योग सर्व प्रकार से अर्थ-सिद्धि प्रदान करने वाला योग है। यह योग निम्न वारों व नक्षत्रों के संयोग से बनता है। परन्तु इसमें भी दुष्ट तिथियां आ जाने से सर्वार्थ सिद्धि योग नष्ट हो जाता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग चक्र

वार	नक्षत्र	युग्म संख्या	योगनाशक दुष्ट तिथियां
रविवार	अश्विनी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, मूल, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद	7	प्रतिपदा या तृतीया
सोमवार	रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, श्रवण	5	द्वितीया या एकादशी

वार	नक्षत्र	युग्म संख्या	योगनाशक दुष्ट तिथियां
मंगलवार	अश्विनी, कृतिका, आश्लेषा, उत्तरा भाद्रपद	4	तृतीया, नवमी या द्वादशी
बुधवार	कृतिका, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, अनुराधा	5	सप्तमी, नवमी या एकादशी
गुरुवार	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती	5	कोई नहीं
शुक्रवार	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती	5	कोई नहीं
शनिवार	रोहिणी, स्वाति, श्रवण	3	एकादशी व त्रयोदशी
	कुल योग	34	

गुरुवार व शुक्रवार को सर्वार्थ सिद्धि योग को नष्ट करने वाली कोई दुष्ट तिथि नहीं होती।

(*iv*) **कुमार योग**—यह शुभ योग है। यह योग निम्न तिथियों, वारों तथा नक्षत्रों के संयोग से बनता है।

तिथि	वार	नक्षत्र
प्रतिपदा पंचमी षष्ठी, दशमी या एकादशी	सोमवार, मंगलवार बुधवार या शुक्रवार	अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा मूल, श्रवण या पूर्वा भाद्रपद

उपरोक्त में से किसी भी तिथि, वार एवं नक्षत्र के संयोग से कुमार योग की रचना हो सकती है, अतः ऐसे 180 समूह बन सकते हैं। उक्त योग में मैत्री करना, शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करना, गृह प्रवेश तथा व्रत आदि रखना शुभ होता है।

(*v*) **राजयोग**—राजयोग निम्नलिखित तिथियों, वार एवं नक्षत्रों के संयोग से बनता है।

तिथि	वार	नक्षत्र
द्वितीया, तृतीया, सप्तमी द्वादशी या पूर्णिमा	रविवार, मंगलवार बुधवार या शुक्रवार	भरणी, मृगशिर, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा अनुराधा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा या उत्तरा भाद्रपद

उपरोक्त में से किसी भी तिथि, वार एवं नक्षत्र के संयोग से राजयोग की रचना हो सकती है, अतः ऐसे 180 समूह बन सकते हैं। राजयोग मांगलिक कार्यों एवं धार्मिक कार्यों के लिए शुभ होता है।

(*vi*) **गुरु पुष्य योग**—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, गुरुवार को यदि पुष्य नक्षत्र हो तो गुरु पुष्य योग घटित होता है। विद्यारम्भ, व्यापार प्रारम्भ, गृह प्रवेश एवं अन्य शुभ कार्यों के लिए गुरु पुष्य योग अत्यन्त शुभ है।

(vii) **रवि पुष्य योग**—उपरोक्त प्रकार से यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग होता है। रवि पुष्य योग शुभ कार्यों के लिए उपयोगी है। मन्त्रादि साधन के लिए भी यह श्रेयस्कर है।

(viii) **पुष्कर योग**—सूर्य विशाखा नक्षत्र में हो तथा चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में तो ऐसा संयोग 'पुष्कर योग' कहलाता है। यह शुभ योग अत्यन्त दुर्लभ है।

सूर्य एक नक्षत्र में 13-14 दिन पूरे वर्ष में केवल एक बार रहता है। विशाखा नक्षत्र में सूर्य लगभग 6 नवम्बर से 19 नवम्बर तक रहता है। यह आवश्यक नहीं कि उन्हीं दिनों में चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में आए। इसलिए इस योग के लिए अनेक वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यह योग अत्यन्त शुभ माना जाता है।

(ix) **रवि योग**—रवि योग अत्यन्त शक्तिशाली शुभ योग है। इस योग के दिन यदि तेरह प्रकार के कुयोग में से कोई भी कुयोग हो तो रवि योग उस कुयोग की अशुभता नष्ट कर शुभ कार्यों के प्रारम्भ करने हेतु मार्ग प्रशस्त करता है।

रवि योग निम्न स्थिति में घटित होता है।

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से चौथे, छठे, दसवें, तेरहवें अथवा बीसवें नक्षत्र में यदि चन्द्रमा हो तो उस दिन रवि योग घटित होता है।

उदाहरण के लिए यदि सूर्य पूर्वा फाल्गुनी (11) नक्षत्र में हो और चन्द्रमा चित्रा 14 (पू० फा० से चौथा), विशाखा 16 (पू० फा० से छठा), पूर्वाषाढ़ 20 (पू० फा० से दसवां), धनिष्ठा 23 (पू० फा० से तेरहवां) अथवा कृतिका 3 (पू० फा० से बीसवां) नक्षत्र में हो तो रवि योग घटित होता है।

यदि किसी दिन किसी प्रकार के कुयोग के कारण कोई शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सके तो विद्वज्जन रवि योग के आधार पर उस शुभ कार्य को प्रारम्भ करवाते हैं।

3. **कुयोग**—वार, तिथि एवं नक्षत्रों के संयोग से अथवा केवल नक्षत्र के आधार पर कुछ ऐसे अशुभ योग बनते हैं जिन्हें 'कुयोग' कहा जा सकता है। इन कुयोगों में कोई शुभ कार्य प्रारम्भ किया जाए तो वह सफल नहीं होता अपितु उसमें हानि, कष्ट एवं भारी संकट का सामना करना पड़ता है।

कुयोग सुयोग—यदि किन्हीं कारणों से एक कुयोग तथा एक सुयोग एक ही दिन पड़ जाए तो सुयोग कुयोग को नष्ट कर शुभ फलदायक हो जाता है।

सर्वप्रथम कुछ ऐसे कुयोग दिए जा रहे हैं जो आनन्दादि योगों में सम्मिलित हैं परन्तु विशेष अशुभ होने से स्पष्ट रूप से परिभाषित किए जा रहे हैं। कुयोग के सामने आनन्दादि योग क्रम संख्या दी गई है।

(*i*) से (*ix*) कुयोग—

योग → वार ↓	कालदण्ड (2)	वज्र (9)	लुम्बक (15)	उत्पात (16)	मृत्यु (17)	काण (18)	मुसल (22)	गदा (23)	रक्ष (25)
रविवार	भरणी	आश्लेषा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	अभि.	श्रवण	शत.
सोमवार	आर्द्रा	हस्त	मूल	पू.षाढ़	उ.षाढ़	अभि.	पू.भा.	उ.भा.	अश्वि.
मंगलवार	मघा	अनुराधा	श्रवण	धनिष्टा	शत.	पू.भा.	भरणी	कृति.	मृगशिर
बुधवार	चित्रा	उ.षाढ़	उ.भाद्र	रेवती	अश्विनी	भरणी	आर्द्रा	पुनर्वसु	आश्लेषा
गुरुवार	ज्येष्ठा	शत.	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	मघा	पू.फा.	हस्त
शुक्रवार	अभि.	अश्विनी	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाति	अनुराधा
शनिवार	पू.भा.	मृगशिर	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	ज्येष्ठा	मूल	उ.षाढ़
फल	मृत्यु तुल्य कष्ट	हानि	धन हानि	प्राणभय	मृत्यु	क्लेश	धन हानि	रोग	महाकष्ट

(*x*) यमदंष्ट्र योग—यह कुयोग निम्नलिखित वारों व नक्षत्रों से मिलकर बनता है।

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
नक्षत्र	मघा	विशाखा	भरणी	पुनर्वसु	अश्विनी	रोहिणी	श्रवण
	धनिष्ठा	मूल	कृतिका	रेवती	उ० षाढ़	अनुराधा	शतभिषा

उक्त कुयोग में शुभ कार्य प्रारम्भ करने से सफलता नहीं मिलती।

(*xi*) यमघण्ट योग—यह कुयोग निम्नलिखित वारों व नक्षत्रों से मिलकर बनता है।

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
नक्षत्र	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृतिका	रोहिणी	हस्त

यह योग शुभ कार्य तथा यात्रा के लिए निन्दनीय है।

(*xii*) ज्वालामुखी योग—यह कुयोग तिथि तथा नक्षत्र के संयोग से बनता है। यह भी मूल संज्ञक नक्षत्र की भांति भयावह है। इस कुयोग में उत्पन्न जातक की भी मूल शान्ति की भांति शान्ति करवाई जाती है। इसे ज्वालामुखी मूल भी कहा जाता है। यह कुयोग निम्न तिथियों व नक्षत्रों के संयोग से बनता है।

तिथि	प्रतिपदा	पंचमी	षष्ठी	नवमी	दशमी
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृतिका	रोहिणी	आश्लेषा

इस कुयोग में कोई भी शुभ कार्य वर्जित है—इस कुयोग के विषय में स्थानीय कहावत है जो पद्यात्मक है—

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजाड़ होय।
कामिनी पहने चूड़ियां, निश्चय विधवा होय।।

कुएं नीर जाके नहीं, खाट पड़े न उठन्त।
ज्योतिषी जो जाने नहीं, ज्योतिष कहता ग्रन्थ।।

(*xiii*) **दग्ध नक्षत्र**—रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाढ़, बुधवार को धनिष्ठा, गुरुवार को उत्तरा फाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा, शनिवार को रेवती नक्षत्र दग्ध नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाना चाहिए।

(*xiv*) **मास शून्य नक्षत्र**—चैत्र में अश्विनी और रोहिणी, वैशाख में चित्रा और स्वाति, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ और पुष्य, आषाढ़ में पूर्वा फाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रवण में उत्तराषाढ़ और श्रवण, भाद्रपद में शतभिषा और रेवती, अश्विनी में पूर्वा भाद्रपद, कार्तिक में कृतिका और मघा, मार्गशीर्ष में चित्रा और विशाखा, पौष में आर्द्रा और अश्विनी, माघ में श्रवण और मूल तथा फाल्गुन में भरणी और ज्येष्ठा मास शून्य नक्षत्र होते हैं। इनमें शुभ कार्य करने से धन नाश होता है।

(*xv*) **घात नक्षत्र**—प्रत्येक राशि के जातक के लिए एक-एक नक्षत्र घात नक्षत्र होता है। इनका उल्लेख जन्मपत्री में भी किया जाता है। अतः शुभ कार्य प्रारम्भ करने वाले जातक को अपनी चन्द्र राशि के अनुसार घात नक्षत्र में शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए अन्यथा हानि एवं संकट का सामना करना पड़ सकता है।

प्रत्येक राशि के लिए घात नक्षत्र निम्नानुसार हैं।

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण
जन्म राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा

(*xvi*) **जन्म नक्षत्र**—जातक का जन्म नक्षत्र, 10वां अनुजन्म नक्षत्र तथा 19वां त्रिजन्म नक्षत्र कहलाते हैं। ये तीनों ही समान रूप से जन्म नक्षत्र की श्रेणी में आते हैं।

शुभ कार्य प्रारम्भ करने हेतु जन्म नक्षत्र त्यागना चाहिए।

जैसे किसी जातक का जन्म कृतिका नक्षत्र में हुआ तो उसे कृतिका (3), उत्तरा फाल्गुनी (12) तथा उत्तराषाढ़ (21) में शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

(*xvii*) **अशुभ तारा**—जैसा कि गत प्रकरणों में बताया गया है कि जातक के जन्म नक्षत्र से तीसरा, बारहवां व इक्कीसवां नक्षत्र विपत्, पांचवां, चौदहवां व तेईसवां नक्षत्र प्रत्यरि (शत्रुवत) तथा सातवां, सोलहवां व पच्चीसवां नक्षत्र वध नक्षत्र होता है। अतः इन नक्षत्रों में शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

जैसे मोहनलाल (पू० फा०) व्यापारिक प्रतिष्ठान प्रारम्भ करना चाहते हैं तो इन्हें जन्म नक्षत्र (पू० फा०, पू० षा० व भरणी उपरोक्त (*xvi*) के अनुसार), विपत् नक्षत्र (हस्त, श्रवण, रोहिणी), प्रत्यरि नक्षत्र (स्वाति, शतभिषा, आर्द्रा) तथा वध नक्षत्र (अनुराधा, पू० भाद्र व पुष्य) नक्षत्रों में कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

(*xviii*) **विरुद्ध योग**—निम्नलिखित वार, तिथि एवं नक्षत्र शुभ कार्यों के लिए

त्याज्य हैं।

वार	तिथि	नक्षत्र
रविवार	सप्तमी, द्वादशी, चतुर्दशी	विशाखा, भरणी, अनुराधा, मघा, ज्येष्ठा
सोमवार	षष्ठी, एकादशी, त्रयोदशी	चित्रा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, विशाखा
मंगलवार	प्रतिपदा, दशमी	आर्द्रा, धनिष्ठा, उ० षाढ़, शतभिषा, पू० भाद्र
बुधवार	प्रतिपदा, तृतीया, नवमी	भरणी, धनिष्ठा, अश्विनी, मूल, रेवती
गुरुवार	चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी	कृतिका, रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिर, उ० फाल्गुनी, शतभिषा
शुक्रवार	द्वितीया, सप्तमी	रोहिणी, ज्येष्ठा, पुष्य, आश्लेषा, मघा
शनिवार	षष्ठी, सप्तमी	अश्विनी, भरणी, चित्रा, उत्तराषाढ़, पूर्वाषाढ़, रेवती।

(ब) कार्यारम्भ मुहूर्त—शुभ कार्यों के लिए शुभ अवसर मुहूर्त कहलाते हैं। अधिक प्रयोग में आने वाले उन मुहूर्तों का विवरण दिया जा रहा है जिनमें नक्षत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. स्तनपान—नवजात शिशु को प्रथम स्तनपान हेतु शुभ मुहूर्त निम्नानुसार है।

तिथि—2, 3, 5, 7, 10, 12 व पूर्णिमा

वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार

नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण व रेवती।

2. सूतिका स्नान (सूर्य पूजा)—प्रसव के पश्चात् जच्चा को प्रथम स्नान कराने का मुहूर्त निम्नानुसार है।

तिथि—कोई भी शुभ तिथि

वार—रविवार, मंगलवार या गुरुवार

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद या रेवती।

सूतिका स्नान प्रसव के सातवें या नवें दिन कराया जाना शुभ है।

3. दोलारोहण (झूला झुलाना)

तिथि—2, 3, 5, 7, 10, 11 या पूर्णिमा (शुक्ल पक्ष)

वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद या रेवती।

जन्म से 10, 12, 16, 22 या 32वें दिन नवजात शिशु को प्रथम बार झूले में डालना चाहिए।

4. प्रसूति जल पूजन

शुभ तिथि—रिक्ता तिथि (4, 9, 14) को छोड़कर शेष।

वार—सोमवार, बुधवार या गुरुवार

नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल या श्रवण।

विशेष—(*i*) जन्म से 1 माह पश्चात्।

(*ii*) शुक्र व गुरु अस्त न हों।

(*iii*) चैत्र व पौष माह तथा मल मास न हो।

5. वाग्दान मूहूर्त (सगाई) शुभ नक्षत्र—

कृतिका, रोहिणी, मृगशिर, मघा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, तीनों पूर्वा व तीनों उत्तरा।

6. वधू प्रवेश—विवाह के पश्चात् वधू को घर में लेने का मुहूर्त

तिथि—रिक्ता तिथि (4, 9, 14 को छोड़कर)

शुभ वार—सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार व शनिवार

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती या तीनों उत्तरा।

7. द्विरागमन (गौना का मुहूर्त)

शुभ तिथि—1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु या शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती या तीनों उत्तरा।

विशेष—सम्मुख शुक्र त्याज्य है।

8. चूड़ी पहनाने का मुहूर्त

तिथि—शुभ तिथि

वार—रविवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती तथा तीनों उत्तरा।

परन्तु चूड़ी चक्र का ध्यान रखना आवश्यक है।

चूड़ी चक्र—सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। इस संख्या के अनुसार निम्न चूड़ी चक्र से शुभाशुभ नक्षत्र देखकर चूड़ी का मुहूर्त निर्धारित करना चाहिए।

सूर्यभात् चूड़ी चक्र

1 से 3 3	4 से 8 5	9 से 11 3	12 से 13 2	14 से 20 7	21 से 22 2	23 1	24 से 26 3	27 1
सूर्य	मंगल	शुक्र	राहू	बुध	शनि	गुरु	चन्द्र	केतू
नेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट

9. क्रय करने के लिए शुभ नक्षत्र—अश्विनी, स्वाति, श्रवण, चित्रा, शतभिषा और रेवती।

10. विक्रय करने के लिए शुभ नक्षत्र—भरणी, कृतिका, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वा भाद्रपद।

क्रय नक्षत्रों में विक्रय तथा विक्रय नक्षत्रों में क्रय कार्य लाभदायक नहीं होता।

11. गृह निर्माणारम्भ मुहूर्त—नवीन गृह निर्माण निम्न कालांगों में शुभ होता है।

मास—वैशाख, श्रावण, माघ, पौष या फाल्गुन

तिथि—2, 3, 5, 7, 10. 11, 13 या पूर्णिमा

वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार या शनिवार

नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, हस्त-चित्रा, स्वाति, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ या उत्तरा भाद्रपद।

लग्न—स्थिर लग्न उत्तम, द्विस्वभाव लग्न मध्यम।

12. नूतन गृह प्रवेश

तिथि—2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12 या 13

वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र या शनिवार।

नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद या रेवती।

लग्न—स्थिर या द्विस्वभाव

13. व्यापार (प्रतिष्ठान) प्रारम्भ

तिथि—2, 3, 5, 7, 11 या 13

वार—बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार

नक्षत्र—पुष्य, हस्त, चित्रा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ या उत्तरा भाद्रपद।

14. नौकरी करने या पदग्रहण मुहूर्त

वार—बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार

नक्षत्र—हस्त, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी, मृगशिर या पुष्य।

15. यात्रा करने का मुहूर्त—यात्रा प्रारम्भ करने के लिए निम्न नक्षत्र शुभ हैं।

(अ) उत्तम—हस्त, मृगशिर, अनुराधा, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्रवण एवं पुनर्वसु।

(ब) मध्यम—रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, मूल, आर्द्रा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ व उत्तरा भाद्रपद।

परन्तु उपरोक्त नक्षत्रों में से जन्म नक्षत्र, विपत्, प्रत्यरि तथा वध (1, 3, 5, 7) नक्षत्रों को त्याज्य करें।

दिक्शूल—पूर्व—ज्येष्ठा नक्षत्र, शनिवार व सोमवार।

दक्षिण—पूर्वा भाद्रपद व गुरुवार।

पश्चिम—रोहिणी, रविवार व शुक्रवार।

उत्तर—उत्तरा फाल्गुनी, मंगलवार व बुधवार।

(स) संस्कार मुहूर्त—जातक के जीवन में षोडश संस्कार शास्त्रोक्त हैं। इनमें से कुछ संस्कारों के लिए शुभ नक्षत्रों का उल्लेख किया जा रहा है।

1. पुंसवन व सीमन्त संस्कार—गर्भाधान से दूसरे या तीसरे माह गर्भपुष्टि के लिए पुंसवन संस्कार तथा छठे से आठवें माह तक गर्भ शुद्धि के लिए सीमन्त संस्कार किए जाते हैं।

शुभ वार—रविवार, मंगलवार, गुरुवार

तिथि—2, 3, 5, 7, 10

नक्षत्र—2, 3, 5, 7, 10

2. जात कर्म (नामकरण)—कन्या का नामकरण संस्कार जन्म से सम दिनों में तथा पुत्र का विषम दिनों में किया जाना चाहिए।

शुभ वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार

तिथि—कृष्ण प्रतिपदा—शुक्ला 2, 3, 7, 10, 11, 13

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, उ० फा०, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उ० षाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, उ० भाद्र व रेवती।

3. चूड़ा कर्म (मुण्डन) संस्कार—मुण्डन संस्कार विषम वर्षों में उत्तरायन सूर्य में कराया जाता है।

शुभ वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार

तिथि—2, 3, 5, 7, 9, 12 या पूर्णिमा

नक्षत्र—अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, मृगशिर, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

4. अक्षरारम्भ

शुभ वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार

तिथि—शुक्ल पक्ष—2, 3, 5, 7, 10, 12

नक्षत्र—अश्विनी, आश्लेषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा या रेवती।

5. विवाह संस्कार—विवाह संस्कार अपने आप में एक बड़ा विषय है, जिस पर बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। अतः यहां हम विवाह के लिए केवल शुभ (ग्राह्य) नक्षत्रों का ही उल्लेख कर रहे हैं।

विवाह निम्नलिखित नक्षत्रों में शुभ होता है।

रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद, रेवती।

❑ ❑

नक्षत्र जात फल

नक्षत्रों का जातक के जीवन के सभी पक्षों पर प्रभाव पड़ता है। जन्म नक्षत्र के अनुसार ही जातक की आकृति, रूप, रंग, स्वभाव, गुणावगुण तथा व्यवसाय होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र का कालपुरुष के किसी न किसी बाह्य एवं आन्तरिक अंग पर आधिपत्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न नक्षत्र भिन्न-भिन्न रोगों के लिए उत्तरदायी हैं। यद्यपि नक्षत्र 27 हैं तथापि 9 नक्षत्रों का विस्तार दो-दो राशियों में होने से एक ही नक्षत्र का प्रभाव दो राशियों में होता है। जैसे कृतिका नक्षत्र मेष व वृष दोनों राशियों में है। अतः जहां कृतिका प्रथम चरण (मेष) में उत्पन्न जातक पर मंगल व सूर्य का प्रभाव पड़ेगा, वहीं कृतिका द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक पर शुक्र व सूर्य का प्रभाव पड़ेगा। अतः 27 के स्थान पर 36 नक्षत्रों के अनुसार मानव अंग, रोग, विशेषताओं तथा व्यवसाय का उल्लेख संक्षेप में किया जा रहा है। जहां नक्षत्र दो राशियों में जा रहा है, वहां उसका क्रमांक अ तथा ब से दिया गया है।

जन्म लग्न व चन्द्र लग्न दोनों का ही प्रभाव जातक पर पड़ता है। दोनों लग्नों में से जो बली (कम दूषित) हो उसके नक्षत्र का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ता है। निम्न वर्णन चन्द्र नक्षत्र व लग्न नक्षत्र दोनों के आधार पर ही समझा जाना चाहिए। सामान्यतया 'जन्म नक्षत्र' का अर्थ जन्म कालीन चन्द्र नक्षत्र से ही लिया जाता है, परन्तु जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदयरत नक्षत्र अर्थात् लग्न नक्षत्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। जिस प्रकार परम्परागत ज्योतिष में जन्म राशि व लग्न राशि दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार नाक्षत्र-ज्योतिष में चन्द्र नक्षत्र की भांति लग्न नक्षत्र भी महत्वपूर्ण है।

1. अश्विनी—मेष राशि 0 अंश 0 कला से 13 अंश 20 कला तक, राशीश मंगल, नक्षत्र स्वामी केतू।

(*i*) **अंग**—सिर एवं मस्तिष्क।

(*ii*) **रोग**—सिर में चोट, घाव, वातशूल, मूर्छा, मस्तिष्क में रक्त संचय, मिर्गी, आधा सीसी का दर्द, पक्षाघात, मस्तिष्क ज्वर, मस्तिष्कीय रक्तस्त्राव, आत्मविस्मृति, अनिद्रा, मलेरिया, चेचक।

(*iii*) **विशेषताएं**—स्थूलकाय, सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान, लोकप्रिय, भाग्यवान, ईमानदार, कार्य कुशल, सम्मानित, कुशल सलाहकार, ज्योतिष प्रेमी, अपव्ययी, क्रोधी, बातूनी, जल्दबाज, भ्रमणप्रिय, कलहप्रिय, अल्प संपत्तिवान, भूसम्पत्ति के लिए चिन्तित, भ्राता से तनावपूर्ण सम्बन्ध।

(*iv*) **व्यवसाय**—पुलिस, सेना, उद्योग, न्यायालय, जेल, रेलवे में नौकरी, मशीनरी, लौह इस्पात, तांबा व्यवसाय, अध्यापन, लेखन, योग प्रशिक्षण, शल्य चिकित्सक, घुड़सवार या घोड़ों से सम्बन्धित व्यवसाय।

2. भरणी—मेष राशि 13 अंश 20 कला से 26 अंश 40 कला तक, राशीश मंगल, नक्षत्र स्वामी शुक्र।

(i) **अंग**—सिर, मस्तिष्क, मस्तक, नेत्र एवं नेत्र ज्योति।

(ii) **रोग**—सिर या मस्तक पर नेत्रों के निकट चोट, रतिरोग, सूजाक, चर्म रोग, ठंड कम्पन, ज्वर, गर्मी (सूजाक) से चेहरा व दृष्टि प्रभावित।

(iii) **विशेषताएं**—चतुर, प्रसन्न, सत्यवक्ता, नीरोग, साहसी, दृढ़ प्रतिज्ञ, सुखी, धनी, रसिक, मनोरंजन के कार्यों (संगीत, नाटक, खेलकूद आदि) के प्रति रुझान, धूम्रपान व मद्यपान में रुचि, भाग्यवादी, स्वार्थी, कठोर, निर्दयी, कृतघ्न, चटोरा, इन्द्रिय सुख लिप्त।

(iv) **व्यवसाय**—आमोद-प्रमोद, सिनेमा-थियेटर, खेलकूद, संगीत, वाद्ययंत्र, ललित कला, विज्ञापन, प्रदर्शनी, रजत आभूषण, रेशम, ऑटोमोबाइल्स, खाद, उद्योग, रेलवे, पशुपालन, पशु चिकित्सा, चाय एवं कॉफी के बागान, होटल व रेस्तरां, न्यायाधीश, अपराध विशेषज्ञ अधिवक्ता, चर्म उद्योग, खाल-हड्डियां, भवन निर्माण, इंजीनियर, शल्य चिकित्सक, रति एवं मातृ रोग विशेषज्ञ, कृषक, नेत्र रोग विशेषज्ञ, चश्मा व्यवसाय, प्लास्टिक, खेलकूल उपकरण, कसाईखाना आदि।

3. (अ) कृतिका प्रथम चरण—मेश राशि 26 अंश 40 कला से 30° तक राशीश, मंगल, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(i) **अंग**—सिर, मस्तिष्क, नेत्र एवं नेत्र ज्योति।

(ii) **रोग**—तीव्र ज्वर, मलेरिया, प्लेग, चेचक, खसरा, मस्तिष्क ज्वर, दुर्घटना, घाव, चोट, अग्नि दुर्घटना, फाइलेरिया, विस्फोट से दुर्घटना।

(iii) **विशेषताएं**—उत्तम स्वास्थ्य, शक्ति एवं उत्साह, आगे बढ़ने की प्रवृत्ति, नेतृत्वशील, वाक्पटुता, तर्क शक्ति, प्रसिद्ध, न्यायप्रिय, प्रतिस्पर्द्धात्मक भावना, बहुभोजी, अन्य स्त्रियों की ओर आकर्षित, आक्रामक।

(iv) **व्यवसाय**—सेना, पुलिस, उद्योग, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, रक्षा विभाग, रसायन उद्योग, आयुध शस्त्र निर्माण, भूमि भवन एवं पैतृक सम्पत्ति से लाभ, उत्खनन, विस्फोटक पदार्थ निर्माण, अग्नि से सम्बन्धित व्यवसाय, माचिस, लौह स्टील व पीतल बर्तन उद्योग, नाई, कुम्हार, पंडिताई ज्योतिष आदि।

3. (ब) कृतिका द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण—वृषभ राशि 0 अंश से 10 अंश तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(i) **अंग**—चेहरा, गर्दन, टॉन्सिल, निचला जबड़ा, सिर के पीछे का भाग।

(ii) **रोग**—मुंहासे, चोट, रक्त-नेत्र, नेत्र सूजन (आंखें आना), गले के रोग, टॉन्सिल बढ़ जाना, गर्दन में सूजन व अकड़न, नाक में पॉलीपस, फोड़े, फुन्सी, चक्कर आना, घुटने में ट्यूमर।

(iii) **विशेषताएं**—सामाजिकता, अतिथि सम्मान, दयालु, अच्छे मित्र, ऐशो-आराम पसन्द, जनप्रिय, प्रभावशाली व्यक्तित्व, प्रसन्न, क्रियात्मक मस्तिष्क, कार्यों में सफलता,

चतुर, बुद्धिमान, सफल व्यापारी, लोकप्रिय तथा सम्पन्न, शत्रुहन्ता, सट्टा-लाटरी में रुचि।

(*iv*) **व्यवसाय**—राज्य सरकार से लाभ, विदेशियों के सम्पर्क से लाभ, उत्तम वस्त्र एवं रत्नादि से लाभ, पुराने ऋण की पुनः प्राप्ति, संगीत, नृत्य, ड्रामा, कविता, कला-चित्रकला, मानचित्रकारिता, मूर्तिकारी, रेशम, फोटोग्राफी, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सजावट, उद्योग, चिकित्सा विभाग, इन्जीनियर, कर-विभाग, ऊन व बालों का निर्यात, रति रोग विशेषज्ञ।

4. रोहिणी वृषभ राशि—10 अंश से 13 अंश 20 कला तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी चन्द्र।

(*i*) **अंग**—चेहरा, मुंह, जीभ, टॉन्सिल, तालू, गर्दन, गर्दन की अस्थियां।

(*ii*) **रोग**—गले में सूजन, घेंघा, शीत ज्वर, ठंड, कफ, ज्वर, पैरों में दर्द, सिरदर्द, छाती में दर्द (स्त्रियों के लिए), अनियमित मासिक धर्म, सूजन, कुक्षिशूल, रक्तस्राव।

(*iii*) **विशेषताएं**—मृदु स्वभाव, प्रसन्नचित्त, प्रकृति प्रेमी, सहानुभूतिप्रद व्यवहार, संगीत, नाट्यकला, ललित कला तथा साहित्य में रुचि, सत्यवादी, मिष्ठभाषी, स्थिर मस्तिष्क, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, मातृप्रेमी, कृतज्ञ, परोपकारी, कविहृदय, ईमानदार परन्तु विषय वासनारत एवं परस्त्रीगामी।

(*iv*) **व्यवसाय**—होटल, रेस्तरां, सुसज्जित आवास व्यवसाय, फल, पेट्रोल, ऑटोमोबाइल, तेल, दूध, डेयरी, आइसक्रीम, कांच, प्लास्टिक, साबुन, सेन्ट, इत्र, चन्दन, रंग-रोगन, एसिड, तरल पदार्थ, जलयान, नौ-सेना, सूत, शक्कर, गन्ना, दवाइयां, जलीय पदार्थ आदि से सम्बन्धित व्यवसाय, विवाह ब्यूरो, पशु, कृषि, चर्म उद्योग, रेडीमेड गारमेन्ट्स, प्रॉपर्टी डीलर, ज्योतिष, पंडिताई, नृत्य संगीत, ललित कला से सम्बन्धित कार्य, न्यायाधीश, वकील।

5. (अ) मृगशिर प्रथम व द्वितीय चरण—वृषभ राशि 23 अंश 20 कला से 30 अंश तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(*i*) **अंग**—चेहरा, ठोड़ी, गाल, टॉन्सिल, तालू।

(*ii*) **रोग**—मुंहासे, चेहरे पर चोट, गले में सूजन, दर्द, गलफेड़े, कान के पीछे गांठें, नाक में पॉलीपस, गलघोंटू, रतिरोग, खांसी-जुकाम, कब्जी, मल-मूत्रावरोध।

(*iii*) **विशेषताएं**—सचेत, हाजिरजवाब, शक्तिशाली, उत्साही, आकर्षक, वाक्पटु, कार्य कुशल परन्तु कटुभाषी, स्वार्थी, झगड़ालू।

(*iv*) **व्यवसाय**—भूमि भवन, वाद्ययंत्र एवं संगीत, प्रदर्शनी, दर्जी का कार्य, खाद, चांदी, प्लेटिनम, ऑटोमोबाइल, खालें व हड्डियां, तम्बाकू, मिठाई से सम्बन्धित व्यवसाय, पशु चिकित्सक, पशुपालन विभाग, गाड़ी, रिक्शा व टैक्सी ड्राइवर, फल, वस्त्र, हीरे, मूंगा, वेसलीन, बर्फ, टेल्कम पाउडर, चन्दन पाउडर, तेल, मंजन, ब्रुश आदि का क्रय-विक्रय, चलचित्र, उद्योग, फोटोग्राफी, ध्वनि तकनीशियन, विवाह मण्डप से

सम्बन्धित व्यवसाय, आयकर एवं विक्रय कर विभाग।

5. (ब) मृगशिर—तृतीय व चतुर्थ चरण—मिथुन राशि 0 अंश से 6 अंश 40 कला तक, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(i) **अंग**—गला, भुजा, कंधे, कान, स्वर-तंत्र, थाइमस ग्रन्थि, ऊपरी पसलियां।

(ii) **रोग**—रक्त दोष, खुजली, साइटिका, भुजाओं में घाव या फ्रेक्चर, कन्धों में दर्द, गुप्तांगों में रोग, हृदय की बाहरी झिल्ली में सूजन।

(iii) **विशेषताएं**—फुर्तीला, वाक्पटु, हाजिर जवाब, शौकीन, व्यवहार कुशल, व्यापारिक बुद्धि युक्त, तीव्र स्मरण शक्ति का धनी, नेतृत्वशील, मेहनती, धनी परन्तु स्वार्थी, डरपोक व कामी।

(iv) **व्यवसाय**—मशीनरी, औजार विद्युत उपकरण, शल्य चिकित्सा के यंत्र, टेलीफोन, तार, पोस्टल विभाग, शल्य चिकित्सक, सैनिक, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, भवन निर्माण ठेकेदार, रेडियो, टेपरिकार्ड, केल्क्यूलेटर, कम्प्यूटर आदि के विक्रेता, विक्रय प्रतिनिधि, दलाल, पत्रकार, प्रकाशन, रेडीमेड गारमेन्ट्स, फलफूल विक्रेता, अनुसंधान, जासूसी, ऑडिटर, लेखाकार, शिक्षक।

6. आर्द्रा—मिथुन राशि 6 अंश 40 कला स 20 अंश तक, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी राहू।

(i) **अंग**—गला, भुजाएं, कन्धे, कान।

(ii) **रोग**—गले में खराबी, गलफेड़े, अस्थमा (दमा), सूखी खांसी, गलघोटू, श्वास के रोग, कान के रोग।

(iii) **विशेषताएं**—साहित्य में रुचि, कृतघ्न, असत्यवादी, चोर, दुष्ट, पापी, बदमाश, मद्यपानप्रिय, निन्दनीय।

(iv) **व्यवसाय**—व्यापार, पुस्तक विक्रेता, डाक-तार विभाग, यातायात, लेखन, प्रकाशन एवं विज्ञापन, अनुसंधानकर्ता, आविष्कर्ता, दवा विक्रेता, भौतिकी एवं सांख्यिकी विभाग, भविष्यवक्ता, हस्तरेखा, हस्तलेख्र एवं हस्ताक्षर विशेषज्ञ, कारीगर, पुलिस या सेना में नौकरी, तांत्रिक, ओझा, जादूगर।

7. (अ) पुनर्वसु—प्रथम द्वितीय व तृतीय चरण—मिथुन राशि, 20 अंश से 30 अंश तक, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(i) **अंग**—कान, गला, कंधा, फेफड़े।

(ii) **रोग**—निमोनिया, प्लूरिसी, कान में सूजन व दर्द, फेफड़ों में कष्ट, घेंघा, क्षयरोग, रक्त विकार, कमर दर्द, सिरदर्द, ज्वर, ब्रोंकाइटिस, हृदय की बाहरी झिल्ली में सूजन।

(iii) **विशेषताएं**—बुद्धिमान, उत्तम स्मरण शक्ति, उचित निर्णय क्षमता, सदाचारी, सत्यभाषी, दानी, आकर्षक, धनी, संतोषी, लोकप्रिय, मित्रप्रिय, अन्तःज्ञान युक्त, आलसी।

(*iv*) **व्यवसाय**—पत्रकार, सम्पादक, प्रकाशक, निरीक्षक, ऑडीटर, कहानी लेखक, बीमा, विज्ञापन, दलाली, ज्योतिष व गणित से सम्बन्धित व्यवसाय, धार्मिक व कानूनी साहित्य के अनुवादक, कवि, लेखाकार, न्यायाधीश, इन्जीनियर, प्रवक्ता, सलाहकार, शिक्षक, सचिव, पोस्टमैन, दन्त विषेपज्ञ, उद्घोषक, राजदूत, ऊनी वस्त्र विक्रेता, दुभाषिया, ग्राम प्रधान।

7. (ब) पुनर्वसु—चतुर्थ चरण—कर्क राशि 0 अंश से 3 अंश 20 कला, राशीश चन्द्र, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(*i*) **अंग**—फेफड़े, श्वसनतंत्र, छाती, आमाशय, भोजन नली, अग्नाशय।

(*ii*) **रोग**—क्षय रोग, निमोनिया, कफ-कास, रक्तविकार, वेरी-बेरी, जलशोथ, आमाशय में सूजन, अनियमित भूख, श्वासनली में सूजन, पीलिया।

(*iii*) **विशेषताएं**—उच्च कल्पना शक्ति, ईमानदार, सत्यमार्गी, वफादार, विश्वसनीय, क्षमाशील, उच्च तर्क तथा निर्णय शक्ति, सहानुभूतिप्रद, धनी, राजनयिक।

(*iv*) **व्यवसाय**—चिकित्सक, पुरोहित, पादरी, मौलवी, अर्थशास्त्री, वकील, न्यायाधीश, व्याख्याता, प्राचार्य, व्यापारी, बैंक कर्मचारी, नाविक, यात्रा-व्यवसायी, नर्स, जलप्रदाय विभाग, तरल पदार्थ से सम्बन्धित व्यवसाय।

8. पुष्य—कर्क राशि—3 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला, राशीश चन्द्र, नक्षत्र स्वामी शनि।

(*i*) **अंग**—फेफड़े, आमाशय, पसलियां।

(*ii*) **रोग**—क्षय, कैन्सर, पीलिया, पायरिया, गजचर्म (एग्जीमा), स्कर्वी, मितली, आमाशय में छाले, श्वासनलिका में घाव, पित्ताशय में पथरी।

(*iii*) **विशेषताएं**—सावचेत, कार्य निपुण, गुणवान, विद्वान, शास्त्रज्ञ, धैर्यवान, जनप्रिय, नियमपालक, व्यवस्थाप्रिय, धनी, चतुर।

(*iv*) **व्यवसाय**—उत्खनन, तेल, पेट्रोल, कोयला, पेट्रोल पम्प, वन विभाग, कृषि, कुआं, नहर, खाई, तालाब, सुरंग की खुदाई एवं निर्माण, शमशान या कब्रिस्तान में रात्रि में चौकीदारी, रात्रि के अन्य कार्य, जेलर व न्यायाधीश, भूमिगत कार्य एवं जलीय पदार्थों से सम्बन्धित व्यवसाय।

9. आश्लेषा—कर्क राशि—16 अंश 40 कला से 30 अंश तक, राशीश चन्द्र, नक्षत्र स्वामी बुध।

(*i*) **अंग**—फेफड़े, आमाशय, भोजन नली, पित्ताशय, अग्नाशय, यकृत।

(*ii*) **रोग**—वातरोग, श्वास विकार, जलशोथ, अपच, पीलिया, घबराहट, उन्माद, स्नायु दौर्बल्य, कफज रोग, उदर विकार, गुर्दों की सूजन, घुटनों व पैरों में दर्द।

(*iii*) **विशेषताएं**—हाजिर जवाब, उत्तम वक्ता एवं लेखक, विनोदी, अन्य भाषाओं का ज्ञाता, कला, संगीत व साहित्य में रुचि, यात्राप्रिय, अविश्वासी, पापी, कृतघ्न, आलसी, धोखेबाज, कुसंगत, स्वार्थी।

(*iv*) **व्यवसाय**—व्यापारी, दलाल, विक्रय प्रतिनिधि, कलाकार, संगीतकार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, पत्रकार, लेखक, स्याही व रंग के निर्माता, टाइपिस्ट, लेखाकार, ऑडिटर, दुभाषिया, राजदूत, यात्रा दलाल, गाइड, परिचारिका, नर्स, दाई, ज्योतिषी, गणितज्ञ, जलदाय विभाग, वस्त्र निर्माण इंजीनियर, ठेकेदार, सूत, कागज, पेन, स्टेशनरी, स्याही, चूना का व्यापारी।

10. मघा—सिंह राशि—0 अंश से 13 अंश 20 कला, राशीश सूर्य, नक्षत्र स्वामी केतू।

(*i*) **अंग**—हृदय, पीठ मेरुरज्जु, प्लीहा, महाधमनी।

(*ii*) **रोग**—हृदयाघात, पीठ, दर्द, मेरुरज्जु की झिल्ली में सूजन, हैजा, दिल धड़कना, मूर्च्छा, किडनी में पथरी, त्रिदोष, मानसिक रोग।

(*iii*) **विशेषताएं**—प्रभावशाली व्यक्तित्व, उत्साही, उत्तरदायी, अधिकारपूर्ण, शक्तिशाली, उत्तम खिलाड़ी, परोपकारी, विश्वसनीय, निर्भीक, महत्वाकांक्षी, धनी, अग्रजभक्त परन्तु मुंहफट, जल्दबाज, झगड़ालू, आत्मरक्षक, क्रोधी, घमण्डी, निर्लज्ज, कामुक।

(*iv*) **व्यवसाय**—उद्योगों का ठेकेदार, रासायनिक दवा उत्पादक, अपराध विशेषज्ञ, रक्षासेवा, शल्य चिकित्सक, चिकित्सा विभाग, सस्ते व नकली (इमिटेशन) गहनों के निर्माता, विद्युत पॉलिश, आयुध शस्त्र निर्माण।

11. पूर्वा फाल्गुनी—सिंह राशि—13 अंश 20 कला से 26 अंश 40 कला, राशीश सूर्य, नक्षत्र स्वामी शुक्र।

(*i*) **अंग**—हृदय, मेरुरज्जु।

(*ii*) **रोग**—सन्तान हानि, गर्भपात, प्यार में धोखा खाने अथवा अन्य हानि से हृदयाघात, हृदय रोग, हृदय में सूजन, वाल्व में खराबी, मेरुदण्ड में बल पड़ना, रक्ताल्पता, रक्तचाप, नाड़ी दोष, टांगों में दर्द, टखने में सूजन।

(*iii*) **विशेषताएं**—सत्यभाषी, ईमानदार, सचेत, मिष्ठभाषी, संगीत, नृत्य, नाट्यकला, चित्रकारी, काव्यकला, ललित कला में रुचि, आकर्षक व्यक्तित्व, दयालु, ऐशो-आराम व उत्तम वस्त्रादि प्रिय, रत्नों का शौकीन।

(*iv*) **व्यवसाय**—राजकीय नौकरी, यातायात, रेडियो, संगीत, सिनेमा, थियेटर, होटल, रेस्तरां, कैन्टीन आदि से सम्बन्धित व्यवसाय, सूत, शहद, नमक, ऑटोमोबाइल्स का व्यापार, संग्रहालय, एन्टीक्स (पुरानी कलात्मक वस्तुओं) का व्यापार, खेलकूद, पशुपालन, पशु चिकित्सा, खाल, हड्डी व चमड़े का व्यापार, रतिरोग विशेषज्ञ, शिक्षक, शिक्षाविद, चश्मे के कांच व सिगरेट के निर्माता, जेल व कन्या विद्यालय में नौकरी, राजस्व विभाग, स्त्री रोग विशेषक्ष एवं शल्य चिकित्सक।

12. (अ) उत्तरा फाल्गुनी—प्रथम चरण सिंह राशि—26 अंश 40 कला से 30 अंश, राशीश सूर्य, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(*i*) **अंग**—मेरुरज्जु।

(*ii*) **रोग**—पीठ व सिर में दर्द, वात-विकार, प्लेग, खसरा, रक्तचाप, मियादी बुखार, मूर्च्छा, मानसिक रोग।

(*iii*) **विशेषताएं**—महत्वाकांक्षी, स्वावलम्बी, अधिकारपूर्ण, उत्साही, शक्तिशाली, दयालु, आशावादी, संतोषी, प्रसन्न, विद्वान, विनम्र, धनी, जनप्रिय, महान परन्तु स्वप्रशंसक, अभिमानी, ईर्ष्यालु तथा दिखावा करने वाला, अड़ियल।

(*iv*) **व्यवसाय**—राज्यसेवा, चिकित्सा, रक्षा, नौसेना, जलयान उद्योग, व्यापार, शेयर व्यापार, हृदय रोग एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ, व्यापारी।

12. (ब) उत्तरा फाल्गुनी—द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण—कन्या राशि 0 अंश से 10 अंश तक, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(*i*) **अंग**—आंतें, यकृत।

(*ii*) **रोग**—आन्त्रशोथ, आंतों में रुकावट, आमाशय के रोग, गले व गर्दन में सूजन व दर्द, यकृत विकार, पैत्तिक ज्वर।

(*iii*) **विशेषताएं**—उत्तम तर्क शक्ति, बुद्धिमान, चतुर, उद्यमी, विद्यावसनी, व्यापारिक बुद्धि, गणित, ज्योतिष, इन्जीनियरिंग, लेखापालन, स्वास्थ्य-इन्जीनियरिंग, राजनयिक, आलोचक।

(*iv*) **व्यवसाय**—मुद्रण, पत्रकार, प्रकाशन, जन-सम्पर्क, संदेशवाहन, कम्पनी प्रबन्धन, खगोलशास्त्री, ज्योतिषी, हस्तलेख विशेषज्ञ, टेलीफोन व ध्वनि यंत्रों के निर्माता, उत्खनन कार्य, ठेकेदार, दलाल, हृदय रोग व नेत्र रोग विशेषज्ञ, अस्पताल में नौकरी, रासायनिक उद्योग, लेखक, पर्यटन व डाक तार विभाग, वैद्य, दवा विक्रेता, वाद्य यंत्रों से सम्बन्धित व्यवसाय।

13. हस्त—कन्या राशि-10 अंश से 23 अंश 20 कला, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी चन्द्र।

(*i*) **अंग**—आंतें, स्त्रावी ग्रन्थियां, एन्जाइम्स।

(*ii*) **रोग**—गैस बनना, पेट दर्द, आंतों में रुकावट व सूजन, मन्दाग्नि, अफारा, हैजा, आन्त्र ज्वर, पेचिश, श्वास रोग, आंतों में कीड़े, स्नायु शूल, उन्माद।

(*iii*) **विशेषताएं**—उत्साही, उद्यमी, वेदज्ञ परन्तु लापरवाह, अभिमानी, झूठा, मद्यप्रिय, वाचाल, पाखण्डी, झगड़ालू, ढीठ, निर्लज्ज, चोर, डाकू।

(*iv*) **व्यवसाय**—व्यापारी, विक्रय कार्य, डाक-तार विभाग, संदेशवाहन, जलयान, सूती-वस्त्र व सूत उद्योग, पुल, बांध, नहर व सुरंग निर्माता, स्याही व रंग निर्माता, कलाकार, चित्रकार, राजनयिक, राजदूत, वकील, आयातक-निर्यातक।

14. (अ) चित्रा—प्रथम व द्वितीय चरण—कन्या राशि, 23 अंश 20 कला से 30 अंश तक, राशीश बुध, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(*i*) **अंग**—उदर, गर्भाशय, कोख।

(*ii*) **रोग**—पेट में घाव, तीव्र दर्द, कीड़े, पेट में खुजली, टांगों में दर्द, कीड़ों, सर्पों व जंगली जानवरों द्वारा काटने के घाव, हैजा, मूत्रविकार, पथरी।

(*iii*) **विशेषताएं**—सुन्दर, परिश्रमी, दूरदर्शी, उत्साही, वाक्‌पटु, निडर, साहसी, महत्वाकांक्षी, विद्वान, विनोदी परन्तु क्षणिक रुष्ट, तर्कप्रिय, अधीर, चिड़चिड़ा।

(*iv*) **व्यवसाय**—प्रकाशन, लेखन मुद्रण, भवन ठेकेदार, दलाल, यातायात पुलिस, रक्षा, सेना, बिक्रीकर, आयकर, राजस्व, वित्त विभाग, उद्योग, विद्युत, खान, मैकेनिक, इन्जीनियर, जेल विभाग, चिकित्सा, अपराध विशेषज्ञ, फिंगर प्रिन्ट विशेषज्ञ, लेखाकार, चित्रकार, बुनकर, इत्र विक्रेता।

14. (ब) चित्रा—तृतीय व चतुर्थ चरण—तुला राशि, 0 अंश से 6 अंश 40 कला तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(*i*) **अंग**—यकृत, हर्निया, एपेन्डिक्स।

(*ii*) **रोग**—गुरदे (किडनी) व ब्लेडर में सूजन, बहुमूत्र रोग, पथरी, सिरदर्द, मस्तिष्क ज्वर, कमर दर्द, लू।

(*iii*) **विशेषताएं**—महत्वाकांक्षी, उच्च विचार, साहसी, दूरदृष्टि, सूझबूझ, आदर्श स्वभाव, विज्ञान प्रेमी, उत्तम रुचियां, अन्तःज्ञान युक्त।

(*iv*) **व्यवसाय**—वकील, शल्य चिकित्सक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, धर्मप्रधान, व्यापार, सेना-रक्षा विभाग, उद्योग, व्यापारिक साझेदारी, ठेकेदार, मुद्रणालय, कलात्मक विज्ञापन, सजावट विशेषज्ञ, इत्र, तेल, पाउडर के निर्माता व व्यापारी, वैवाहिक दलाल, खेलकूद, संगीत के वाद्य यंत्रों के निर्माता व व्यापारी, सूक्ष्मदर्शी, रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकार्ड, दूरदर्शी आदि का व्यापारी, दर्जी, लेडी डॉक्टर, शल्य चिकित्सक, सिगरेट, सूंघनी, तेल-पेट्रोल के विक्रेता।

15. स्वाति—तुला राशि—6 अंश 40 कला से 20 अंश तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी राहू।

(*i*) **अंग**—चमड़ी (चर्म) गुरदे, मूत्रनली, मूत्राशय, हार्निया, एपेन्डिक्स।

(*ii*) **रोग**—मूत्ररोग, मूत्रनली में छाले या मवाद, चर्म रोग, कोढ़, श्वेत दाग, बहुमूत्र रोग, गुरदों के रोग।

(*iii*) **विशेषताएं**—ईमानदार, विनम्र, न्यायप्रिय, बुद्धिमान, अन्तःज्ञानयुक्त, मधुर व्यवहार युक्त, सहानुभूतिप्रद, व्यापारिक चतुराई, मधु-भाषी, समायोजनप्रिय।

(*iv*) **व्यवसाय**—विद्युत उपकरण, ट्यूबलाइट, पंखे, हीटर, कूलर, एक्सरे आदि का निर्माता, ऑटोमोबाइल, यातायात, पर्यटन, संगीत, नाटक, थियेटर, कला, चित्रकारी, सजावट, प्रदर्शनी, वैज्ञानिक, न्यायाधीश, कवि, उद्‌घोषक, नृतक, फेंसी व हार्डवेयर सामान निर्माता, हलवाई, बेकरी, दूध डेयरी, चमड़े का सामान, रसोइया, नौकरानी, कशीदाकारी, फोटोग्राफी, रेडीमेड गारमेन्ट्स, इत्र, सेन्ट, प्लास्टिक व कांच का निर्माता व व्यापारी।

16. (अ) विशाखा—प्रथम द्वितीय व तृतीय चरण—तुला राशि 20 अंश से 30 अंश तक, राशीश शुक्र, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(*i*) **अंग**—पेट का निचला भाग, मूत्राशय, गुरदे, अग्नाशयी ग्रन्थियां।

(*ii*) **रोग**—डायविटीज, वेहोशी, गुरदे के रोग, गुरदे में मवाद, इन्सुलिन की कमी, चक्कर आना।

(*iii*) **विशेषताएं**—आकर्षक व्यक्तित्व, मधुर व्यवहार, विनम्र, ईश्वर भक्त, दयालु, उदार, सत्यमार्गी, न्यायप्रिय, वुद्धिमान, सभ्य एवं सुसंस्कृत।

(*iv*) **व्यवसाय**—यात्रा-दलाल, पर्यटन विभाग, विदेशियों से सम्पर्क द्वारा लाभ, जल एवं वायु यात्रा, धावक, भवन ठेकेदार, विदेशी व्यापार, फल, बागान, साझेदारी, कर एवं राजस्व विभाग, चलचित्र, विज्ञापन, अभिनय, खान, रत्न, इत्र, प्रकाशक, सम्पादक, समालोचक, वैद्य, न्यायाधीश, आडीटर, व्याख्याता, प्राचार्य।

16. (ब) विशाखा—चतुर्थ चरण—वृश्चिक राशि 0 अंश से 3 अंश 20 कला, राशीश मंगल, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(*i*) **अंग**—मूत्राशय, मूत्रनली, गर्भाशय एवं अन्य प्रजननांग, मलाशय, पौरुष ग्रन्थि (प्रोस्टेट ग्लेण्ड)।

(*ii*) **रोग**—गर्भाशय के रोग, प्रोस्टेट वृद्धि, मूत्ररोग, अधिक रक्तस्त्राव, गुरदे में पथरी, घाव व मवाद, नकसीर, जलोदर।

(*iii*) **विशेषताएं**—प्रभावशाली, उत्साही, सम्मानित, कुलीन, ईमानदार, हितैषी, निष्कपट, स्वच्छन्द, दयालु, अतिउदार, स्पष्टवक्ता, अतिव्ययी, तर्कप्रिय।

(*iv*) **व्यवसाय**—बीमा, बैंक व्यवसाय, न्यायाधीश, अपराध विशेषज्ञ, रसायन एवं दवा निर्माण एवं विक्रय, भूमि-भवन व कृषि भूमि से सम्बन्धित व्यवसाय, उद्योग, बन्दरगाह या रक्षा विभाग में नौकरी, आयुर्वेदिक दवाइयां, दलाल।

17. अनुराधा—वृश्चिक राशि—3 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला तक, राशीश मंगल, नक्षत्र स्वामी शनि।

(*i*) **अंग**—मूत्राशय, मलाशय, प्रजननांग, गुदा, प्रजननांगों के निकट की अस्थियां।

(*ii*) **रोग**—मासिक धर्म में रुकावट एवं रक्तस्त्राव की कमी, दर्द, बन्ध्यत्व, कब्जी, सूखी बवासीर, कूल्हे की हड्डी का फ्रेक्चर, गले में दर्द, कफ, नजला।

(*iii*) **विशेषताएं**—उत्साही, प्रभावशाली, आत्मविश्वासी, शक्तिशाली, स्वार्थी, कठोर हृदयी, निर्दयी, असत्यवादी, बेईमान, अतिभोजी।

(*iv*) **व्यवसाय**—उत्खनन इन्जीनियर, कोयला तेल पेट्रोल, कच्ची धातुएं, दवा निर्माता, शल्य-चिकित्सक तथा होम्योपैथ, अपराध विशेषज्ञ, वाद्य यंत्र, चमड़े, हड्डियां व ऊनी वस्त्रों के व्यापारी, दंत विशेषज्ञ, जलक्षय विभाग, खाद्य तेल निर्माता एवं विक्रेता, रात्रि चौकीदार, न्यायाधीश, जेल सेवा, अभिनेता, गुप्त विधाओं से आय।

18. ज्येष्ठा—वृश्चिक राशि—16 अंश 40 कला से 30 अंश तक, राशीश मंगल,

नक्षत्र स्वामी बुध।

(i) **अंग**—अंडाशय, गर्भाशय, बड़ी आंत, प्रजननांग, मलद्वार।

(ii) **रोग**—श्वेत प्रदर, खूनी बवासीर, रतिरोग, प्रजननांग सम्बन्धी रोग, भुजाओं व कन्धों में दर्द, ट्यूमर।

(iii) **विशेषताएं**—विद्वान, कुशल, चतुर, हाजिरजवाब, क्रियात्मक, विद्याभिलाषी, स्फूर्तिवान, निडर, साधनयुक्त परन्तु कटुभाषी, झगड़ालू।

(iv) **व्यवसाय**—प्रकाशन मुद्रण, स्याही, टंकण कार्य, केलक्यूलेटर व केबिल निर्माता, विज्ञापन, सूती वस्त्र उद्योग, पम्पसेट, बॉयलर विक्रेता, रासायनिक इन्जीनियर, बांध, नहर खुदाई, बीमा, चिकित्सा, सेना, नौ सेना, न्यायाधीश, डाक-तार, जेल विभाग।

19. मूल—धनु राशि 0 अंश से 13 अंश 20 कला, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी केतू।

(i) **अंग**—कूल्हे, जांघें, उरु-अस्थियां, नितम्ब अस्थियां, साइटिक तंत्र।

(ii) **रोग**—कटिवात, गठिया, कमर दर्द, श्वास रोग, न्यून रक्तचाप, मतिभ्रम।

(iii) **विशेषताएं**—दयालु, उदार, सम्मानित, क्षमाशील, दानी, आशावादी, न्यायप्रिय, स्नेहिल, धनी, प्रसन्नचित्त, परोपकारी, प्रफुल्लित, धर्मपरायण, सामाजिक कार्यकर्ता, श्रद्धा का पात्र, अंधविश्वासी।

(iv) **व्यवसाय**—वेदज्ञ, ज्योतिषी, पुरोहित, मौलवी, पादरी, कथावाचक, शिक्षक, राजदूत, सचिव, दुभाषिया, चिकित्सक, वैद्य, जड़ी-बूटी व औषधि विक्रेता, सलाहकार, सामाजिक कार्यकर्ता, वकील, न्यायाधीश, सलाहकार, राजनेता, सम्पादक, ग्राम मुखिया।

20. पूर्वाषाढ़—धनु राशि—13 अंश 20 कला से 26 अंश 40 कला तक, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी शुक्र।

(i) **अंग**—जांघें, कूल्हे।

(ii) **रोग**—गठिया, कटिवात, साइटिका, मधुमेह (डाइबिटीज), प्रमेह, अफारा, फेफड़ों में कैन्सर, श्वास रोग, घुटनों में सूजन, शीत प्रकोप, रक्त प्रदूषण, धातुक्षय।

(iii) **विशेषताएं**—ईमानदार, विनम्र, मधुर व्यवहार, दयालु, न्यायप्रिय, आशावादी, सहनशील, क्षमाशील, कोमल हृदय, ललित कला व नाट्यकला में रुचि, उच्च स्तरीय जीवन।

(iv) **व्यवसाय**—वकील, न्यायाधीश, बैंक, कैशियर, निदेशक, राजस्व व वित्त विभाग, पशुपालन, समाज कल्याण विभाग, रेलवे, सड़क, वायु यातायात, रेशम, सूत रबर व शक्कर व्यवसाय, समाज कल्याण विभाग, बाग, नर्सरी, संगीत, चलचित्र, रेस्तरां, होटल व्यवसाय, स्वास्थ्य केन्द्र, आयुर्वेदिक दवाइयां, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार।

21. उत्तराषाढ़—प्रथम चरण—धनु राशि 26 अंश 40 कला से 30 अंश तक, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(i) **अंग**—जांघें, उरु-अस्थि, धमनी।

(*ii*) **रोग**—साइटिका, गठिया, कमर दर्द, पक्षाघात, उदर दर्द, चर्म रोग, नेत्र रोग, श्वसन सम्बन्धी रोग।

(*iii*) **विशेषताएं**—विद्वान, विनोदी, उच्च आदर्शवादी, प्रसन्नचित्त, आशावादी परोपकारी, कृतज्ञ।

(*iv*) **व्यवसाय**—शिक्षा, धर्म, न्यायाधीश, बैंक, वित्त, राजनयिक, राजदूतावास, अस्पताल, जेल व कस्टम विभाग, जलयान, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, आयुर्वेदिक दवाइयां, सैनिक, पहलवान, घुड़सवार, महावत।

21. (ब) उत्तराषाढ़—द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण—मकर राशि 0 अंश से 10 अंश तक, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी सूर्य।

(*i*) **अंग**—चर्म, घुटना, पटेला (घुटने का ढक्कन)।

(*ii*) **रोग**—गैस से सम्बन्धित रोग, गज चर्म (एक्जीमा), चर्म रोग, कोढ़, श्वेत कुष्ठ, गठिया, हृदय रोग, धड़कन, पाचन असंतुलन।

(*iii*) **विशेषताएं**—तीक्ष्ण बुद्धि, दूर दृष्टि, विनम्र, उदार, कुशल वक्ता, कृतज्ञ, सत्यमार्गी एवं सत्यभाषी, विश्वसनीय, गणितज्ञ, मितव्ययी।

(*iv*) **व्यवसाय**—भूमिगत व्यवसाय, खान, कोयला, वित्त विभाग, वैज्ञानिक, आयकर विभाग, अनुसंधान, जेल एवं नियंत्रण (कन्ट्रोल) विभाग, इन्जीनियर, ऊन, चमड़ा, खालें व हड्डियां, होम्योपैथी, पुरातत्व विभाग, दुर्लभ वस्तुएं, प्राचीन भाषाएं, दुभाषिया।

22. श्रवण—मकर राशि, 10 अंश से 23 अंश 20 कला, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी चन्द्र।

(*i*) **अंग**—घुटने, चर्म।

(*ii*) **रोग**—गज चर्म, चर्म रोग, कोढ़, फोड़े, गठिया, क्षयरोग, प्लूरिसी, अतिसार, संग्रहणी, अपच, फाइलेरिया।

(*iii*) **विशेषताएं**—सचेत, कार्यकुशल, सच्चा, वफादार, आशावादी, धैर्यवान, धनी, प्रसिद्ध चंचल, साहस की कमी।

(*iv*) **व्यवसाय**—आइसक्रीम, फ्रिज, कूलर, वाहन चालक, रात्रि में भूमिगत कार्य, खान एवं खान उत्पाद, तेल, केरोसीन, पेट्रोल, पेट्रोल पम्प, कोयला, नम भूमि, कुएं, तालाब, नहरें, सुरंग खोदना, सिंचाई विभाग, मछुवारा, मोती, कृषक, मंत्री, नर्स, दाई, चमड़ा, मदारी, जादूगर।

23. (अ) धनिष्ठा—प्रथम व द्वितीय चरण—मकर राशि 23 अंश 20 कला से 30 अंश तक, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(*i*) **अंग**—घुटने का ढक्कन (पटेला) घुटने की हड्डियां, पैर।

(*ii*) **रोग**—पैरों में चोट, लंगड़ा, टांगों का काटा जाना, फोड़े, हिचकी, मितली, सूखी खांसी।

(*iii*) **विशेषताएं**—दानी, धनी, सचेत, सक्रिय, साहसी, प्रभावशाली, महत्वाकांक्षी, दृढ़प्रतिज्ञ परन्तु लालची, स्वार्थी, प्रतिशोधात्मक, आक्रामक, नपुंसक।

(*iv*) **व्यवसाय**—आयुर्वेद, होम्योपैथी, अस्थि विशेषज्ञ, खान व भूमिगत कार्यों का इन्जीनियर, श्रम, पुनर्वास विभाग, मृत्युकर संग्रह, जेल विभाग, उद्योग, उपकरण, स्पेयर पार्ट्स, जस्ता, सीमेन्ट, धातु सीसा, शराब, जूट आदि से सम्बन्धित व्यवसाय, बूचड़खाना।

23. (ब) धनिष्ठा—तृतीय व चतुर्थ चरण—कुम्भ राशि 0 अंश से 6 अंश 40 कला तक, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी मंगल।

(*i*) **अंग**—टखने, पिंडली, भुजाएं।

(*ii*) **रोग**—टांग में फ्रेक्चर, रक्त विचार, रक्तोष्णता, धड़कन, मूर्च्छा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, स्नायुगुच्छ (वेरीकोज) रोग।

(*iii*) **विशेषताएं**—धनी, दानी, धर्मावलम्बी, समाजप्रिय, हाजिर जवाब, वैज्ञानिक एवं अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति, परन्तु लोभी, क्रोधी, लड़ाकू।

(*iv*) **व्यवसाय**—दूरदर्शन, दूरभाष, तार, विद्युत, अणुशक्ति, अनुसंधान केन्द्र, संदेशवाहन, मुद्रणालय, अन्वेषक, कृषि, चाय, रेशम, जूट, खान कोयला, लौह-स्टील, चमड़ा खाल, पुलिस मिलिटरी, पोस्टमार्टम, भूचाल, दंगों व युद्ध के पीड़ितों को सहयोग।

24. शतभिषा—कुम्भ राशि 6 अंश 40 कला से 20 अंश तक, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी राहू।

(*i*) **अंग**—पिंडली व पिंडली की मांसपेशियां।

(*ii*) **रोग**—टांग में फ्रेक्चर, लंगड़ाना, टांग काटा जाना, गठिया, हृदय रोग, गज चर्म, कोढ़ उच्च रक्तचाप।

(*iii*) **विशेषताएं**—सत्यमार्गी, हितैषी, प्रभावशाली, धैर्यवान, स्वतंत्र, अलगावप्रिय।

(*iv*) **व्यवसाय**—ज्योतिष, खगोलशास्त्र, विज्ञान, भौतिकी, विद्युत, अणुविद्युत, वायु यातायात, तकनीशियन, प्रयोगशाला, चर्म उद्योग, जनगणना, राशन एवं जेल विभाग, दुभाषिया, अनुवादक, गुप्त विद्या।

25. (अ) पूर्वा भाद्रपद—प्रथम, द्वितीय व तृतीय चरण—कुम्भ राशि 20 अंश से 30 अंश तक, राशीश शनि, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(*i*) **अंग**—टखने।

(*ii*) **रोग**—न्यून रक्तचाप, टखनों में सूजन, दिल का आकार बढ़ जाना, जलशोथ।

(*iii*) **विशेषताएं**—सच्चा, सत्यमार्गी एवं सत्यभाषी, ईमानदार, दार्शनिक, विश्वसनीय, निस्वार्थ, व्यवस्थाप्रिय, आशावादी परन्तु आलसी।

(*iv*) **व्यवसाय**—खगोलशास्त्र, गणित, ज्योतिष आदि का शिक्षण, स्थानीय निकाय, नगरपालिका, पंचायत, निगम आदि, शेयर दलाल, अनुसंधानकर्ता, विदेशी विनिमय, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, वित्त, राजस्व, टकसाल, सी० आई० डी० विभाग, उत्खनन, वायुयान, बीमा मन्दिर व दवाइयों आदि से सम्बन्धित व्यवसाय।

25. (ब) पूर्वा भाद्रपद—चतुर्थ चरण—मीन राशि, 0 अंश से 3 अंश 20 कला तक, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी गुरु।

(*i*) **अंग**—पैर, अंगूठा।

(*ii*) **रोग**—पैरों में सूजन, पैरों में गांटें, लीवर वृद्धि, आन्त्ररोग, हर्निया, पीलिया, अतिसार।

(*iii*) **विशेषताएं**—उदार, दानी, दयालु, सत्यमार्गी, सत्यभाषी, विनम्र, दार्शनिक, साहित्य, संगीत व कला में रुचि, नियमपालक।

(*iv*) **व्यवसाय**—शिक्षा-प्राध्यापक, राजनयिक, मंत्री, सलाहकार, कानूनी शिक्षण, न्यायाधीश, अपराध विशेषज्ञ, वित्त विभाग, जेल, अस्पताल, अकाल राहत, आयोजन विभाग, पर्यटन, चिकित्सा, बैंक व विदेशी विनिमय से सम्बन्धित व्यवसाय।

26. उत्तरा भाद्रपद—मीन राशि, 3 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला तक, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी शनि।

(*i*) **अंग**—पैर।

(*ii*) **रोग**—गठिया, पैर में फ्रेक्चर, अपच, कब्ज, हर्निया, जलोदर, क्षयरोग, उदरवात।

(*iii*) **विशेषताएं**—सच्चरित्र, उदार, परोपकारी, अपाहिजों की सेवा करने वाला, स्वतंत्र।

(*iv*) **व्यवसाय**—उत्खनन, नहर, खाई तालाब की खुदाई, गृह विभाग, जेल, पागलखाना, सेनीटोरियम, सेना, अस्पताल, धर्मादा संस्थान, सोसाइटी, क्लब आदि में नौकरी, बीमा, आयात-निर्यात, बन्दरगाह पर नौकरी, छतरी, रेनकोट एवं नाव से सम्बन्धित सामान का व्यापार, तेल, मत्स्य पालन, नौकायन, सैनिक या राजनयिक के रूप में कैदी।

27. रेवती—मीन राशि—16 अंश 40 कला से 30 अंश तक, राशीश गुरु, नक्षत्र स्वामी बुध।

(*i*) **अंग**—पैर व पंजा।

(*ii*) **रोग**—पैरों में ऐंठन व दर्द, पैरों की विकृति, आंतों में छाले, बहरापन, कानों में मवाद, गुरदे में सूजन, थक्का।

(*iii*) **विशेषताएं**—धर्मपरायण, ईमानदार, परिश्रमी, परोपकारी, सम्मानित परन्तु अस्थिर मस्तिष्क।

(*iv*) **व्यवसाय**—संदेशवाहन, रेडियो, टेपरिकार्ड का रख-रखाव व व्यापार, प्रकाशन, सम्पादन, धार्मिक व कानूनी साहित्य, विज्ञापन, शिक्षण, न्यायाधीश, राजनयिक, राजदूत, लेखाकार, ऑडीटर, ज्योतिषी, गणितज्ञ, दलाल, बैंक कर्मचारी, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, टकसाल, वकील, फिंगर प्रिंट विशेषज्ञ।

नक्षत्र और फलकथन

विंशोत्तरी महादशा के प्रकरण में कृष्णमूर्ति पद्धति के आधार पर नक्षत्रों (दशाओं) तथा उपनक्षत्रों (भुक्तियों) द्वारा जातक के जीवन पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव को उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है। प्रस्तुत प्रकरण में नक्षत्रों के आधार पर ग्रहों के राशि सापेक्ष फल में परिवर्तन पर चर्चा करेंगे। परम्परागत ज्योतिष के अन्तर्गत हम केवल राशियों के आधार पर ही ग्रहों के फल का अध्ययन करते हैं परन्तु एक राशि में तीन नक्षत्र होते हैं जिनके स्वामी भिन्न-भिन्न ग्रह होते हैं। अतः यह स्वाभाविक है कि एक ग्रह एक ही राशि में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में होने पर असमान फल देगा। मान लीजिए धनु लग्न की जन्म कुण्डली में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशिस्थ है। परम्परागत ज्योतिष के अनुसार तो हम लग्नेक्ष गुरु को चतुर्थ केन्द्र में स्वराशिस्थ मानते हुए ही फलकथन करेंगे। परन्तु मीन राशि में पूर्वा भाद्रपद चतुर्थ चरण, उत्तरा भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र हैं जिनके स्वामी क्रमशः गुरु, शनि व बुध हैं। मीन राशि में गुरु 0° से $3^\circ20'$ के मध्य है तो वह स्वयं अपने ही नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद में होगा। यदि गुरु स्पष्ट $3^\circ20'$ से $16^\circ40'$ के मध्य हुआ तो वह शनि के उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में होगा। यदि गुरु के अंशादि $16^\circ40'$ से $30^\circ0'$ के मध्य हों तो वह बुध से प्रभावित होगा क्योंकि रेवती का स्वामी बुध है। इस प्रकार एक ही राशि में अंशात्मक भिन्नता के कारण गुरु तीन प्रकार का फल देगा। प्रत्येक नक्षत्र में गुरु के फल की शुभाशुभता इस बात पर निर्भर करेगी कि धनु लग्न की जन्म कुण्डली में गुरु, शनि या बुध शुभ भावेश हैं अथवा अशुभ। भावेश के रूप में इन ग्रहों की शुभाशुभता का प्रभाव इनके नक्षत्रों के माध्यम से गुरु द्वारा जातक पर होगा।

जिस प्रकार परम्परागत ज्योतिष में भावेश, राशि एवं ग्रह के आधार पर फलकथन किया जाता है, उसी प्रकार यदि पारम्परिक ज्योतिष के सूत्रों व नियमों को नक्षत्र के स्तर पर भी लागू करें तो बारह राशियों के छत्तीस नक्षत्रात्मक उपविभाग हो जाते हैं। तब जातक पर ग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि के स्वामी के प्रभाव के साथ-साथ अधिष्ठित नक्षत्र के स्वामी के प्रभाव का अध्ययन भी हो सकता है।

कई बार ग्रहों के राशिगत सम्बन्धों के आधार पर की गई भविष्यवाणियां सटीक नहीं बैठती। इसका मुख्य कारण यही है कि ग्रहों के नक्षत्रगत सम्बन्धों का ध्यान नहीं रखा जाता। राशि ज्योतिष के अनुसार एक शुभ फलदायक ग्रह अशुभ फल दे सकता है। इसके विपरीत एक अशुभ ग्रह शुभ फल दे सकता है। यदि ग्रह के नक्षत्र-सम्बन्धों पर भी ध्यान दिया जाए तो इस विरोधाभास का समाधान मिल सकता है। नक्षत्रों के आधार पर फलकथन में अधिक सूक्ष्मता आ जाती है।

नाक्षत्र ज्योतिष के अनुसार फलकथन के लिए निम्न जानकारी होना आवश्यक है।

1. जिस प्रकार हम चन्द्र स्पष्ट के आधार पर नक्षत्र एवं चरण ज्ञात करते हैं, उसी प्रकार लग्न एवं प्रत्येक ग्रह के नक्षत्र व चरण भी ज्ञात करने होंगे। इसके लिए यह आवश्यक है कि जन्मपत्री सही तथा ग्रह स्पष्ट शुद्ध हों। अन्यथा अंशात्मक भिन्नता से चरण एवं राशि वदल भी सकती है।

2. प्रत्येक लग्न की जन्मकुण्डली में किस भाव में (राशि में) कौन-कौन से नक्षत्र आते हैं, यह जानकारी होना आवश्यक है। तभी नक्षत्रों के आधार पर फलकथन का अभ्यास हो सकेगा। भावगत नक्षत्रों को जानने की विधि *छटे अध्याय* में मेष कुण्डली का उदाहरण देकर समझाई जा चुकी है।

3. जैसा कि ऊपर वताया गया है शुभ नक्षत्र में स्थित ग्रह शुभ फलदायक तथा अशुभ नक्षत्र में स्थित ग्रह अशुभ फलदायक होता है। इसलिए यह जानना भी आवश्यक है कि अमुक लग्न की जन्म कुण्डली में कौन-सा नक्षत्र शुभ या अशुभ है। इसका निर्धारण नक्षत्रेश के आधार पर निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(*i*) नैसर्गिक मित्रता या शत्रुता के आधार पर।
(*ii*) नक्षत्र के मूल गुणों के आधार पर।
(*iii*) जन्म नक्षत्र से शुभाशुभ तारे (नक्षत्र) के आधार पर।
(*iv*) बाधक ग्रह के नक्षत्र के आधार पर।
(*v*) भावेश की शुभाशुभता के आधार पर।
(*vi*) नक्षत्रेश के बलाबल (स्थिति, युति, दृष्टि) के आधार पर।
(*vii*) नक्षत्र परिवर्तन के आधार पर।
(*viii*) भाव के जीव व शरीर पर शुभाशुभ प्रभाव के आधार पर।

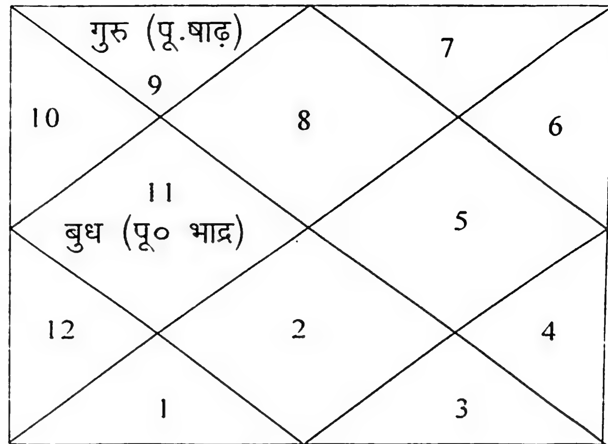
उपरोक्त सभी आधारों का समग्र प्रभाव ग्रह के फल पर पड़ता है न कि अकेले एक का। अतः यदि हम फलकथन में नक्षत्रों की भूमिका का ध्यान रखें तो फल अधिक सूक्ष्म, स्पष्ट एवं सटीक हो सकेगा। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि राशि ज्योतिष को भूल जाएं। राशि ज्योतिष तो फलकथन का मुख्य आधार है ही, उसी में सूक्ष्मता के स्तर तक पहुंचने के लिए नक्षत्र ज्योतिष एक सशक्त विधा है। राशि ज्योतिष स्थूल है तो नक्षत्र ज्योतिष सूक्ष्म।

नक्षत्र ज्योतिष का महत्वपूर्ण फलित-सूत्र—ग्रह जिस नक्षत्र में स्थित होता है, वह उसी के स्वामी (नक्षत्रेश) के बल एवं शुभाशुभता के अनुसार फल देता है। यदि नक्षत्रेश बली होगा तो शुभाशुभ फल प्राप्ति में निश्चितता होगी। इसके विपरीत नक्षत्रेश निर्बल होगा तो फल में अनिश्चितता होगी। इसी प्रकार नक्षत्रेश शुभ होगा तो फल भी शुभ होगा। इसके विपरीत नक्षत्रेश अशुभ होने पर फल भी अशुभ होगा।

इसे निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

स्वयं ग्रह	नक्षत्रेश	फलादेश
(अ) शुभ फलदायक	शुभ एवं बली	अत्यन्त शुभफल
(ब) शुभ फलदायक	अशुभ एवं निर्बल	शुभ फल में न्यूनता-अशुभ फल में वृद्धि।
(स) अशुभ फलदायक	शुभ एवं बली	अशुभ फल में न्यूनता-शुभ फल में वृद्धि।
(द) अशुभ फलदायक	अशुभ एवं निर्बल	अत्यन्त अशुभ फल।

उदाहरण—संलग्न वृश्चिक लग्न की जन्म कुण्डली में द्वितीयेश व पंचमेश गुरु अपनी मूल त्रिकोण राशि धनु के अन्तर्गत पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में द्वितीय भाव में स्थित है। परम्परागत ज्योतिष के अनुसार गुरु शुभ फलदायक है। परन्तु पूर्वाषाढ़ नक्षत्र का स्वामी शुक्र द्वादशेश है। शुक्र की मूल त्रिकोण राशि तुला द्वादश भाव में है।



जन्म लग्न

सप्तमेश होने से शुक्र में केन्द्राधिपत्य दोष है। शुक्र वृश्चिक लग्न की कुण्डली के लिए अशुभ फलदायक है। इसलिए गुरु शुक्र के नक्षत्र में स्थित होने के कारण अशुभ फलदायक रहेगा। इसी जन्म कुण्डली में बुध अष्टमेष व एकादशेश होने से पापी है। बुध चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि में पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित है। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु द्वितीयेश व पंचमेश होने से शुभ भावेश है, अतः बुध शुभ फलदायक होगा।

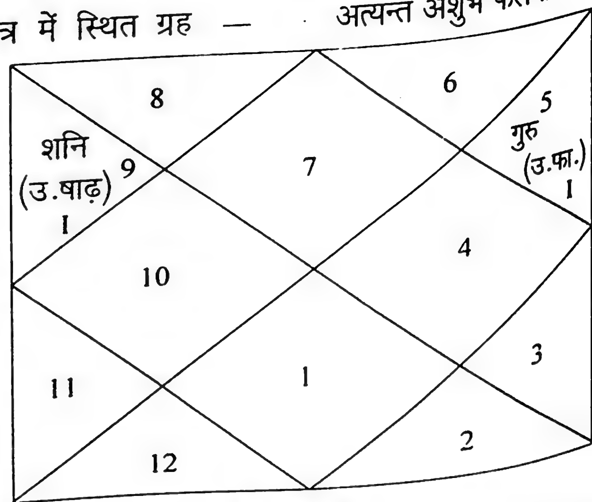
उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि अशुभ नक्षत्र में स्थित शुभ ग्रह भी अशुभ फलदायक होता है। इसके विपरीत शुभ नक्षत्र में स्थित अशुभ ग्रह शुभ फलदायक हो जाता है।

पिछले पृष्ठ पर बिन्दु संख्या (3) के अन्तर्गत बताया गया है कि नक्षत्र किन कारणों से शुभ या अशुभ होते हैं। उन कारणों को स्पष्ट करते हुए नक्षत्रों की शुभाशुभता का ग्रह के फल पर प्रभाव बताया जा रहा है।

(I) नैसर्गिक मित्रता या शत्रुता के आधार पर—नैसर्गिक मित्र के नक्षत्र में स्थित ग्रह अपेक्षाकृत बली होने से शुभ फलदायक होता है जबकि नैसर्गिक शत्रु के नक्षत्र में स्थित ग्रह अपेक्षाकृत निर्बल होने से अशुभ फलदायक होता है। ग्रहों की पारस्परिक

मित्रामित्रता के अनुसार नक्षत्रों के आधार पर ग्रह के फल को निम्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

(अ) अपने स्वयं के नक्षत्र में स्थित ग्रह — सर्वोत्तम फलदायक।
(व) परम मित्र के नक्षत्र में स्थित ग्रह — उत्तम फलदायक।
(स) मित्र के नक्षत्र में स्थित ग्रह — शुभ फलदायक।
(द) समग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह — शुभाशुभ फलदायक (मिलाजुला फल)।
(य) शत्रु ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह — अशुभ फलदायक।
(फ) परम शत्रु के नक्षत्र में स्थित ग्रह — अत्यन्त अशुभ फलदायक।



जन्म लग्न

उदाहरण—तुला लग्न की संलग्न जन्म कुण्डली में शनि चतुर्थेश (केन्द्रेश) व पंचमेश (त्रिकोणेश) होने से कारक ग्रह है। शनि तृतीय भाव में धनु राशि में उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रथम चरण में होने से वर्गोत्तम है। तृतीय भाव में शनि शुभ फलदायक होता है। अपनी मूल त्रिकोण राशि कुम्भ से एकादश भाव में शनि की स्थिति भी उत्तम है। परन्तु सूर्य के नक्षत्र उत्तराषाढ़ नक्षत्र प्रथम चरण में होने से अशुभ फलदायक होगा। शनि के शुभ फल में न्यूनता आ जाएगी क्योंकि सूर्य शनि का परम शत्रु है।

इसी कुण्डली में गुरु सिंह राशि में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में स्थित है। गुरु तुला लग्न की कुण्डली में पापी होता है परन्तु यहां एकादश भाव में अपने परम मित्र सूर्य के नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी में होने के कारण गुरु के अशुभ फल में न्यूनता आ जाएगी तथा गुरु अपेक्षाकृत शुभ फलदायक हो जाएगा।

(II) नक्षत्रों के मूल गुणों के आधार पर—ग्रहों के गुणों के अनुसार नक्षत्रों के गुणों की चर्चा *'नक्षत्र वर्गीकरण'* अध्याय में की जा चुकी है जिसके अनुसार सूर्य, चन्द्र व गुरु के नक्षत्र सतोगुणी, बुध व शुक्र के नक्षत्र रजोगुणी तथा मंगल, शनि, राहू व केतू के नक्षत्र तमोगुणी होते हैं।

ग्रह जिस प्रकार के नक्षत्र में स्थित होता है, वही गुण उसमें आ जाता है। जैसे सूर्य शुक्र के नक्षत्र में हो तो रजोगुणी हो जाता है। इसी प्रकार बुध मंगल के नक्षत्र में स्थित होने पर तमोगुणी हो जाता है।

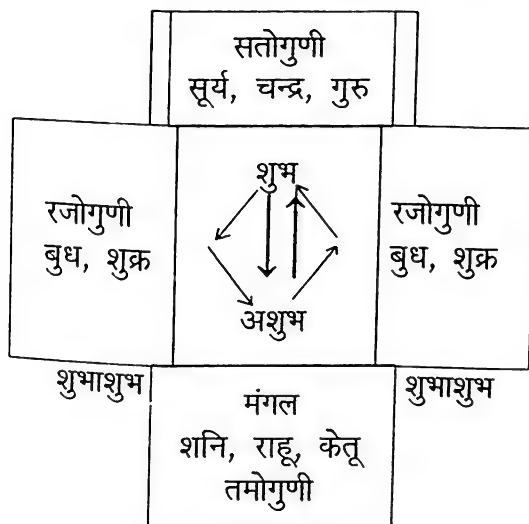
गुण पर आधारित फलित सूत्र—

(*i*) सतोगुणी नक्षत्रों में स्थित ग्रह शुभ फलदायक, रजोगुणी नक्षत्रों में स्थित ग्रह शुभाशुभ फलदायक तथा तमोगुणी नक्षत्रों में स्थित ग्रह अशुभ फलदायक होते हैं।

(*ii*) नक्षत्र स्थिति के कारण यदि तमोगुणी ग्रह रजोगुणी या सतोगुणी हो जाए अथवा रजोगुणी ग्रह सतोगुणी हो जाए तो अपेक्षाकृत शुभ फलदायक हो जाता है।

(*iii*) यदि उपरोक्त कारण से सतोगुणी ग्रह रजोगुणी या तमोगुणी हो जाए अथवा रजोगुणी ग्रह तमोगुणी हो जाए तो अपेक्षाकृत अशुभ फलदायक हो जाता है।

उपरोक्त फलित सूत्र को निम्न रेखाचित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।



नक्षत्रानुसार ग्रह-गुण परिवर्तन

ऊपर के रेखाचित्र से स्पष्ट है कि ग्रह के गुण ज्यों-ज्यों सात्विकता से राजसिकता व तामसिकता की ओर बढ़ेंगे उसके फल में अशुभता बढ़ती जाएगी। इसके विपरीत तामसिकता से राजसिकता व सात्विकता की ओर बढ़ने पर शुभता बढ़ती जाएगी। सतोगुणी ग्रह सतोगुणी नक्षत्र में स्थित होने पर अधिक सतोगुणी होगा। इसके विपरीत तमोगुणी ग्रह तमोगुणी नक्षत्र में स्थित होने पर अधिक तमोगुणी होगा।

उदाहरण—1. गुरु (सतोगुणी) शुक्र (रजोगुणी) के नक्षत्र (दशा) में अशुभ फलदायक परन्तु शुक्र, गुरु के नक्षत्र (दशा) में शुभ फलदायक हो जाता है। अर्थात् शुक्र की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा अशुभ, परन्तु गुरु में शुक्र शुभ।

2. शनि (तमोगुणी) बुध (रजोगुणी) के नक्षत्र (दशा) में अपेक्षाकृत शुभ परन्तु बुध शनि के नक्षत्र में अपेक्षाकृत अशुभ होता है। अर्थात् बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा शुभ परन्तु शनि में बुध अशुभ।

3. मंगल (तमोगुणी) बुध (रजोगुणी) के नक्षत्र में अपेक्षाकृत शुभ परन्तु बुध मंगल के नक्षत्र में अशुभ फलदायक होता है। अर्थात् बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा शुभ परन्तु मंगल में बुध अशुभ।

4. गुरु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा अपेक्षाकृत शुभ परन्तु शनि की दशा में गुरु की अन्तर्दशा अशुभ होती है।

5. इसी प्रकार गुरु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा शुभ परन्तु मंगल की दशा में गुरु की अन्तर्दशा थोड़ी शुभ होती है।

नवांश में उच्च या नीच होने पर ग्रहों के गुण परिवर्तन—जन्म के समय ग्रह जिस नक्षत्र में होने पर उच्च अथवा नीच नवांश में होता है उसी नक्षत्र का गुण उसकी उच्चता या नीचता में आता है। जैसे जन्म के समय सूर्य धनु राशि में मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में है तो वह मेष के नवांश में होने से उच्च होगा परन्तु मूल नक्षत्र (स्वामी केतू) में स्थित होने के कारण 'तामसिक उच्च' कहलाएगा। इसी स्थिति में शनि 'तामसिक नीच' होगा।

नवांश चक्र में प्रत्येक ग्रह की उच्च व नीच राशियां 9-9 बार आती हैं अर्थात् प्रत्येक ग्रह 9 नक्षत्रों के किसी एक चरण में उच्च अथवा नीच होता है। ये नौ नक्षत्र तीन-तीन नक्षत्रों के तीन समूहों से मिलकर बनते हैं जिनका स्वामी एक ही ग्रह होता है तथा एक समूह के तीनों नक्षत्रों के समान (एक ही) ही चरण में ग्रह उच्च या नीच होता है। जैसे सूर्य जन्म में अश्विनी, मघा, मूल (केतू) के प्रथम चरण, रोहिणी, श्रवण, हस्त (चन्द्र) के प्रथम चरण तथा पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भाद्रपद (गुरु) के प्रथम चरण में (कुल 9 स्थितियों में) होने पर नवांश में उच्चस्थ होता है। शनि उपरोक्त नौ स्थितियों में नवांश में नीचस्थ होता है।

चन्द्रमा वृष राशि में उच्च होता है। इस राशि में कोई ग्रह नीचस्थ नहीं होता। इसी प्रकार चन्द्रमा की नीच राशि वृश्चिक राशि में कोई ग्रह उच्चस्थ नहीं होता। शेष ग्रहों के उच्च-नीच युग्म हैं। अर्थात् जिस राशि, नक्षत्र, चरण में एक ग्रह उच्च होता है ठीक उसी स्थिति में दूसरा नीच होता है। ये युग्म हैं—सूर्य-शनि, गुरु-मंगल, बुध-शुक्र तथा राहू-केतू। नवांश में 'सात्विक उच्च' ग्रह सर्वश्रेष्ठ तथा 'तामसिक नीच' ग्रह सबसे अधिक कष्टदायक।

संलग्न तालिका में राहू-केतू को छोड़कर सभी ग्रहों की उच्च-नीच स्थितियां तथा गुण परिवर्तन दिए जा रहे हैं।

नक्षत्र चरणानुसार नवांश में उच्च-नीचस्थ ग्रह (1)

नवांश में उच्च	सूर्य (मेष)	चन्द्र (वृषभ)	वृश्चिक में कोई नहीं	मंगल (मकर)
नवांश में नीच	शनि (मेष)	वृषभ में कोई नहीं	चन्द्र (वृश्चिक)	गुरु (मकर)
राशि	मेष, सिंह, धनु	मेष, सिंह, धनु	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर
नक्षत्र	अश्विनी, मघा, मूल	अश्विनी, मघा, मूल	भरणी, पू.फा., पू.षा.	कृतिका, उ.फा. उ.षा.
चरण	प्रथम (0°0' से 3°20')	द्वितीय (3°20' से 6°40')	चतुर्थ (23°20' से 26°40)	द्वितीय (0°0' से 3°20')
नक्षत्रेश	केतू	केतू	शुक्र	सूर्य
गुण	तमोगुणी	तमोगुणी	रजोगुणी	सतोगुणी
राशि	वृष, कन्या, मकर	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	मिथुन, तुला, कुम्भ
नक्षत्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण	रोहिणी, हस्त, श्रवण	मृग., चित्रा, धनिष्ठा	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
चरण	प्रथम (10°0' से 13°20')	द्वितीय (13°20' से 16°40')	चतुर्थ (3°20' से 6°40')	द्वितीय (10°0' से 13°20')
नक्षत्रेश	चन्द्र	चन्द्र	मंगल	राहू
गुण	सतोगुणी	सतोगुणी	तमोगुणी	तमोगुणी
राशि	मिथुन, तुला, कुम्भ	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	कर्क, वृश्चिक, मीन
नक्षत्र	पुन०, विशाखा, पू० भा०	पुन०, विशाखा, पू० भा०	पुष्य, अनु०, उ० भा०	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
चरण	प्रथम (20°0' से 23°20')	द्वितीय (23°20' से 26°40')	चतुर्थ (13°20' से 16°40')	द्वितीय (20°0' से 23°20')
नक्षत्रेश	गुरु	गुरु	शनि	बुध
गुण	सतोगुणी	सतोगुणी	तमोगुणी	रजोगुणी

नक्षत्र चरणानुसार नवांश में उच्च-नीचस्थ ग्रह (2)

नवांश में उच्च	बुध (कन्या)	गुरु (कर्क)	शुक्र (मीन)	शनि (तुला)
नवांश में नीच	शुक्र (कन्या)	मंगल (कर्क)	बुध (मीन)	सूर्य (तुला)
राशि	मेष, सिंह, धनु	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर	मेष, सिंह, धनु
नक्षत्र	भरणी, पू० फा०, पू० षा०	अश्विनी, मघा, मूल	कृतिका, उ० फा०, उ० षा०	भरणी, पू० फा०, पू० षा
चरण	द्वितीय (16°40' से 20°0')	चतुर्थ (10°0' से 13°20')	चतुर्थ (16°40' से 20°0')	तृतीय (10°0' से 23°20')
नक्षत्रेश	शुक्र	केतू	सूर्य	शुक्र
गुण	रजोगुणी	तमोगुणी	सतोगुणी	रजोगुणी
राशि	वृष, कन्या, मकर	कर्क, वृश्चिक, मीन	मिथुन, तुला, कुम्भ	मिथुन, तुला, कुम्भ
नक्षत्र	मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा	पुनर्वसु, विशाखा, पू० भाद्र	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा	मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा
चरण	द्वितीय (26°40' से 30°0')	चतुर्थ (0°0' से 3°20')	चतुर्थ (16°10' से 20°0)	तृतीय (0°0' से 3°20')
नक्षत्रेश	मंगल	गुरु	राहू	मंगल
गुण	तमोगुणी	सतोगुणी	तमोगुणी	तमोगुणी
राशि	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर	कर्क, वृश्चिक, मीन	कर्क, वृश्चिक, मीन
नक्षत्र	पुष्य, अनुराधा, उ० भाद्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	पुष्य, अनुराधा, उ० भाद्र
चरण	द्वितीय (0°40' से 10°0')	चतुर्थ (10°0' से 13°20')	चतुर्थ (26°40' से 30°0')	तृतीय (10°0' से 13°20')
नक्षत्रेश	शनि	चन्द्र	बुध	शनि
गुण	तमोगुणी	सतोगुणी	रजोगुणी	तमोगुणी

(III) जन्म नक्षत्र से अशुभ नक्षत्र में स्थिति के आधार पर— *'नक्षत्र वर्गीकरण'* अध्याय में समझाया गया है कि जन्म नक्षत्र से तृतीय (विपत्), पंचम (प्रत्यरि) तथा सप्तम (वध) नक्षत्र अशुभ होते हैं। भचक्र में नक्षत्र क्रम की तीन आवृत्तियां होने के कारण जन्म नक्षत्र से तीसरा, बारहवां व इक्कीसवां नक्षत्र विपत्, पांचवां, चौदहवां व तैतीसवां नक्षत्र प्रत्यरि तथा सातवां, सोलहवां व पच्चीसवां नक्षत्र वध की श्रेणी में आने से ये नौ नक्षत्र अशुभ होते हैं।

यदि कोई ग्रह जन्म नक्षत्र से गिनने पर विपत्, प्रत्यरि अथवा वध नक्षत्र में स्थित हो तो वह अपेक्षाकृत अशुभ फलदायक होता है। शेष नक्षत्रों में स्थित ग्रह शुभ फलदायक।

उदाहरण—मान लीजिए किसी जातक का जन्म नक्षत्र भरणी (2) है। उसकी जन्म कुण्डली में बुध (17) अनुराधा नक्षत्र में स्थित है। भरणी जन्म नक्षत्र जातक के लिए अनुराधा दूसरी आवृत्ति में वध तारा है। अतः बुध अपेक्षाकृत अशुभ फलदायक होगा। यहीं बुध (19) मूल नक्षत्र में होता तो नवें (अतिमैत्र) तारे में होने से अपेक्षाकृत शुभ फलदायक होगा।

(IV) बाधक ग्रह के नक्षत्र में स्थिति के आधार पर—प्रत्येक लग्न के लिए निम्नानुसार बाधक भाव होते हैं। बाधक भाव के स्वामी को 'बाधक स्थानाधिपति' कहते हैं।

(अ) चर लग्न के लिए एकादश भाव बाधक स्थान तथा उसकी राशि का स्वामी बाधक स्थानाधिपति होता है।

(ब) स्थिर लग्न के लिए नवम भाव बाधक स्थान तथा उसकी राशि का स्वामी बाधक स्थानाधिपति होता है।

(स) द्विस्वभाव लग्न के लिए सप्तम भाव बाधक स्थान तथा उसकी राशि का स्वामी बाधक स्थानाधिपति होता है।

विभिन्न लग्नों की जन्मकुण्डलियों में बाधक स्थान व बाधक स्थानाधिपति निम्न तालिका में मय उनके नक्षत्रों के दिए जा रहे हैं।

लग्न राशि	चरादि	बाधक स्थान	बाधक राशि	बाधक स्थानाधिपति	बाधक नक्षत्र
1. मेष	चर	एकादश	कुम्भ	शनि	पुष्य, अनुराधा, उ० भाद्रपद
2. वृषभ	स्थिर	नवम	मकर	शनि	पुष्य, अनुराधा, उ० भाद्रपद
3. मिथुन	द्विस्वभाव	सप्तम	धनु	गुरु	पुनर्वसु विशाखा, पू० भाद्रपद
4. कर्क	चर	एकादश	वृषभ	शुक्र	भरणी, पू० फाल्गुनी, पू० षाढ़
5. सिंह	स्थिर	नवम	मेष	मंगल	मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा
6. कन्या	द्विस्वभाव	सप्तम	मीन	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पू० भाद्रपद
7. तुला	चर	एकादश	सिंह	सूर्य	कृतिका, उ० फाल्गुनी, उ० षाढ़

8. वृश्चिक	स्थिर	नवम	कर्क	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
9. धनु	द्विस्वभाव	सप्तम	मिथुन	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
10. मकर	चर	एकादश	वृश्चिक	मंगल	मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा
11. कुम्भ	स्थिर	नवम	तुला	शुक्र	भरणी, पू० फाल्गुनी, पू० षाढ़
12. मीन	द्विस्वभाव	सप्तम	कन्या	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

वाधक स्थानाधिपति तथा बाधक भाव में स्थित ग्रहों के नक्षत्रों में स्थित ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में कष्टदायक होते हैं। परन्तु *जातक पारिजात (अध्याय II श्लोक 48 के अनुसार)* वाधक स्थानाधिपति उसी स्थिति में अशुभ फलदायक होता है जब यह मान्दि व खरेश द्वारा अधिष्ठित भाव का स्वामी भी हो। मान्दि व खर द्रेस्काण निम्नानुसार होते हैं।

मान्दि—दिन या रात के आठ समान भागों में से सात भागों के स्वामी सात ग्रह होते हैं। आठवाँ भाग स्वामी रहित होता है। वार क्रम में शनि का भाग गुलिक या मान्दि कहलाता है। ये दोनों शनि के दुष्ट पुत्र हैं।

दिन में **सूर्योदय** से मान्दि का इष्ट रविवार से शनिवार तक क्रमशः 26, 22, 18, 14, 10, 6 तथा 2 घटी होता है परन्तु रात में वारेश से पांचवें ग्रह का पहला (रविवार को रात का पहला भाग (गुरु का) भाग होने के कारण **सूर्योदय** से मान्दि का इष्ट क्रमशः 10, 6, 2, 26, 22, 18 तथा 14 घटी होता है। उपरोक्त इष्टमान दिनमान/रात्रिमान 30-30 घटी मानकर निर्धारित किया गया है। दिनमान/रात्रिमान न्यूनाधिक होने पर त्रैराशिक से इष्टमान संशोधित कर लेने चाहिए।

उपरोक्त इष्ट के आधार पर लग्न साधन करने से मान्दि स्पष्ट हो जाता है। मान्दि अधिष्ठित राशि का स्वामी अशुभ होता है।

खर (Khara) द्रेस्काण—जन्म लग्न स्पष्ट से 22वां द्रेस्काण खर द्रेस्काण कहलाता है। लग्न स्पष्ट में 210 अंश (7 राशि) जोड़ने पर खर द्रेस्काण आता है। एक राशि में तीन द्रेस्काण होने से 7 राशि (210 अंश) में 21 द्रेस्काण समाप्त होकर 22 वां द्रेस्काण आ जाता है।

बाधक स्थानाधिपति की अशुभता की ऊपर दी गई शर्त का तात्पर्य यह है कि बाधक स्थानाधिपति मान्दि लग्न स्पष्ट एवं 22वें द्रेस्काण के स्वामी द्वारा अधिष्ठित राशि का स्वामी भी हो।

इस सम्बन्ध में एक अपवाद यह है कि यदि बाधक स्थानाधिपति त्रिकोण में स्थित हो तो वह साधक बन जाता है। ऐसी स्थिति में इस ग्रह के नक्षत्र अशुभ नहीं होते।

(V) शुभाशुभ भावेश के नक्षत्र में स्थिति के आधार पर—जन्म कुण्डली के जिस भाव में जो राशि होती है उसका स्वामी उस भाव का स्वामी, भावाधिपति या भावेश (House Lord) होता है। ग्रह नैसर्गिक रूप से शुभ, क्रूर या पापी होते हैं। इसी प्रकार

भाव भी शुभाशुभ होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के अतिरिक्त प्रत्येक सपिण्ड ग्रह दो-दो भावों के स्वामी होते हैं। लग्न, पंचम व नवम त्रिकोणों के स्वामी शुभ होते हैं। केन्द्र (4, 7, 10) भी शुभ भाव होते हैं परन्तु शुभ ग्रहों को इनके स्वामित्व से केन्द्राधिपत्य दोष होता है। द्वितीयेश व द्वादशेश तटस्थ होते हैं परन्तु 3, 6, 8, 11वें भावों के स्वामी अशुभ होते हैं। प्रत्येक लग्न की कुण्डली में भावों की राशियां बदल जाने से भावेश भी बदल जाते हैं।

महर्षि पाराशर ने प्रत्येक लग्न की जन्म कुण्डली में शुभाशुभता के आधार पर भावेशों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। महर्षि पाराशर के अनुसार भावेशों की शुभाशुभता निम्न तालिका में दी जा रही है।

शुभाशुभ भावेश

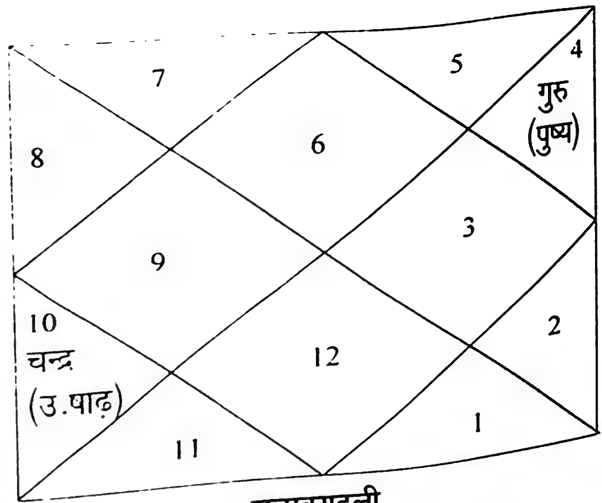
लग्न राशि	शुभ (कारक) भावेश	अशुभ (अकारक) भावेश	तटस्थ भावेश
मेष	सूर्य, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र
वृषभ	सूर्य, बुध, शनि	चन्द्र, गुरु	शुक्र, मंगल
मिथुन	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, मंगल, गुरु	चन्द्र
कर्क	चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य
सिंह	सूर्य, मंगल	बुध, गुरु, शुक्र, शनि	चन्द्र
कन्या	बुध, शुक्र	चन्द्र, मंगल, गुरु	सूर्य, शनि
तुला	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, चन्द्र, गुरु	मंगल
वृश्चिक	सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र, शनि	
धनु	सूर्य, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र
मकर	शुक्र, शनि	चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु	सूर्य
कुम्भ	सूर्य, शुक्र, शनि	चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु	—
मीन	चन्द्र, मंगल, गुरु	सूर्य, बुध, शुक्र, शनि	—

शुभाशुभ नक्षत्र—

1. लग्नेश, द्वितीयेश, चतुर्थेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश तथा दशमेश के नक्षत्रों में स्थित ग्रह शुभ फलदायक होते हैं।

2. एकादश भाव का स्वामी अशुभ माना जाता है परन्तु केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से। आर्थिक क्षेत्र के लिए अशुभ नहीं होता। अतः एकादशेश के नक्षत्र में स्थित ग्रह धनागम के लिए शुभ होते हैं।

3. तृतीयेश, षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश के नक्षत्रों में स्थित ग्रह अशुभ फलदायक होते हैं।

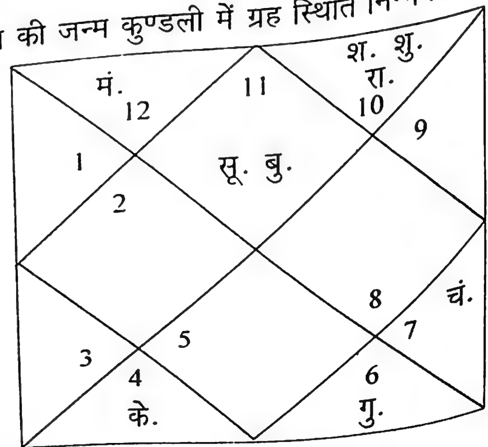


जन्मकुण्डली

उदाहरण—संलग्न कन्या लग्न की जन्म कुण्डली में लाभेश चन्द्रमा पंचम त्रिकोण में मकर राशि (उत्तराषाढ़ नक्षत्र) में तथा सुखेश गुरु लाभ भाव में उच्च राशि में पुष्य नक्षत्र में स्थित है। गुरु व चन्द्र परस्पर केन्द्र (समसप्तक) में होने से 'गजकेसरी योग' का सृजन कर रहे हैं। परम्परागत ज्योतिष के अनुसार गजकेसरी योग जातक को विनम्र, तेजस्वी, वुद्धिमान, धनी, लोकप्रिय बनाता है। गजकेसरी योग बनाने वाले गुरु व चन्द्र को यदि नक्षत्रों के आधार पर देखें तो चन्द्रमा उत्तराषाढ़ नक्षत्र में है जिसका स्वामी सूर्य द्वादशेश है। गुरु पुष्य नक्षत्र में है जिसका स्वामी शनि षष्ठेश (शनि की मूल त्रिकोण राशि षष्ट भाव में है) है। दोनों ग्रह त्रिकेशों (दुः स्थानों के स्वामियों) के नक्षत्रों में होने के कारण दूषित होकर गजकेसरी योग को अत्यन्त निर्बल बना रहे हैं। इस प्रकार नक्षत्रों का दूषित प्रभाव शुभ योग नाशक सिद्ध हो जाता है।

उदाहरण (2)—प्रस्तुत कुम्भ लग्न की जन्म कुण्डली में ग्रह स्थिति निम्न प्रकार है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्रेश
सूर्य	पू० भाद्रपद	गुरु
चन्द्र	स्वाति	राहू
मंगल	पू० भाद्रपद	गुरु
बुध	पू० भाद्रपद	गुरु
गुरु	चित्रा	मंगल
शुक्र	श्रवण	चन्द्र
शनि	धनिष्ठा	मंगल
राहू	धनिष्ठा	मंगल
केतू	आश्लेषा	बुध



जन्मकुण्डली

विश्लेषण—(अ) परम्परागत ज्योतिष के अनुसार—

(i) लाभेश व धनेश गुरु अष्टम भाव में स्थित है।

(ii) लग्नेश शनि द्वादश भाव में है।

(*iii*) षष्ठेश चन्द्र नवम भाव में है।

(*iv*) तृतीयेश व दशमेश मंगल धन भाव में है।

(*v*) दशमेश मंगल तथा एकादशेश व धनेश गुरु में पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध है।

(*vi*) एक भी ग्रह उच्चस्थ नहीं है। केवल शनि स्वराशिस्थ है।

(*vii*) शुक्र चन्द्र लग्नेश है तथा दो लग्नों से द्वादश है।

उपरोक्त विश्लेषण से केवल शुक्र इस जातक के धनी होने का संकेत देता है परन्तु अन्य ग्रह स्थिति उतनी प्रभावशाली नहीं लगती।

(ब) नाक्षत्र ज्योतिष के अनुसार—

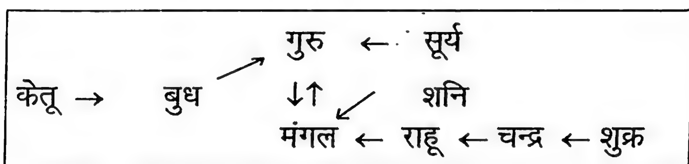
(*i*) सूर्य, मंगल व बुध पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में हैं जिसका स्वामी गुरु है।

(*ii*) गुरु, शनि व राहू मंगल के नक्षत्रों (क्रमशः चित्रा, धनिष्ठा व धनिष्ठा) में हैं।

(*iii*) शुक्र श्रवण (चन्द्र) नक्षत्र में, चन्द्र स्वाति (राहू) नक्षत्र में तथा राहू स्वयं धनिष्ठा (मंगल) में है।

(*iv*) केतू आश्लेषा (बुध) नक्षत्र में है और बुध गुरु के पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में।

(*v*) इस प्रकार तीन ग्रह सीधे दशमेश (मंगल) के नक्षत्रों में तथा तीन ग्रह सीधे एकादशेश (गुरु) के नक्षत्र में हैं। शेष तीन ग्रह (चन्द्र, शुक्र व केतू) भी अप्रत्यक्ष रूप से मंगल व गुरु से नक्षत्र-सम्बन्ध रखते हैं।



ग्रहों का नाक्षत्र सम्बन्ध

(*vi*) दशमेश (मंगल) व लाभेश (गुरु) में राशि परिवर्तन तो नहीं है परन्तु पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध तथा नक्षत्र परिवर्तन योग है।

(*vii*) लगभग सभी ग्रहों का एकादशेश गुरु तथा दशमेश मंगल के नक्षत्रों से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

वास्तव में यह व्यक्ति करोड़ों रुपए वार्षिक आय का धनी है। यह फल परम्परागत ज्योतिष की अपेक्षा नाक्षत्र ज्योतिष से अधिक सिद्ध हो रहा है।

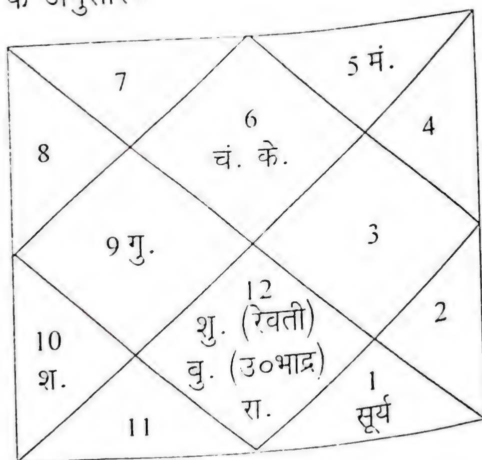
(VI) नक्षत्रेश के बलाबल व स्थिति के आधार पर—किसी भी ग्रह का फल उसके नक्षत्र स्वामी की स्थिति, शक्ति, युति, दृष्टि आदि पर निर्भर करता है। यदि नक्षत्रेश शुभ भाव में हो, बली हो, शुभ ग्रहों से युत व दृष्ट हो तो उस ग्रह का

फल अत्यन्त शुभ होता है। इसके विपरीत निर्बल नक्षत्रेश पापयुत व दृष्ट होकर अशुभ भाव में स्थित होने पर उस ग्रह का फल अशुभ होता है।

उदाहरण—प्रस्तुत जन्म कुण्डली के अनुसार—

(*i*) धनेश व भाग्येश शुक्र उच्च राशि में सप्तम भाव में रेवती नक्षत्र में है।

(*ii*) शुक्र द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र का स्वामी बुध नीच राशि में सप्तम में ही स्थित है। बुध उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में है जिसका स्वामी शनि षष्ठेश है।



जन्मकुण्डली

(*iii*) शुक्र व बुध के साथ राहू स्थित है।

(*iv*) शुक्र, बुध व राहू पर षष्ठेश शनि तथा तृतीयेश व अष्टमेश मंगल की दृष्टि है।

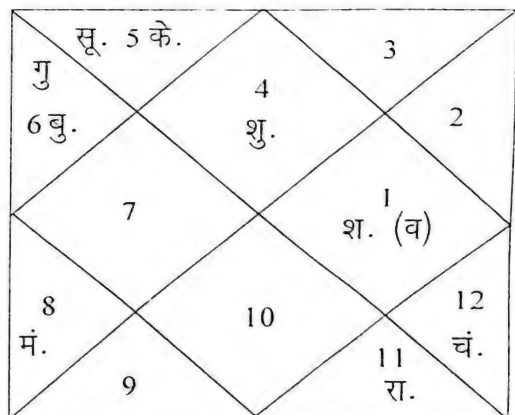
इस प्रकार बुध जो शुक्र का नक्षत्रेश है, साथ ही लग्नेश व दशमेश है, बलहीन हो गया है। नक्षत्रेश के बलहीन होने तथा युति-दृष्टि से दूषित होने के कारण शुक्र उच्चस्थ होते हुए भी निर्बल एवं अशुभ फलदायक हो गया है।

शुक्र अपने भावों (द्वितीय व नवम) के साथ-साथ बुध के भावों (लग्न तथा दशम) का अशुभ फल अपनी दशा-अन्तर्दशा में देगा क्योंकि शुक्र, बुध के नक्षत्र में होने से बुध का प्रतिनिधि (Agent) है। बुध स्वयं शनि का प्रतिनिधि है।

(VII) नक्षत्र परिवर्तन के आधार पर—जिस प्रकार परम्परागत ज्योतिष में शुभ भावों का राशि परिवर्तन योग शुभ-फलदायक होता है, उसी प्रकार नक्षत्र-परिवर्तन योग अत्यन्त शुभ एवं प्रभावशाली होता है। विश्व के महान व्यक्तियों तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हस्तियों की जन्म कुण्डलियों में राशि परिवर्तन के साथ-साथ नक्षत्र परिवर्तन योग पाए जाते हैं।

उदाहरण—प्रस्तुत जन्मकुण्डली में ग्रहों की नाक्षत्र स्थिति निम्न प्रकार है—

लग्न	पुनर्वसु	गुरु
सूर्य	मघा	केतू
चन्द्र	पू० भाद्र	गुरु
मंगल	ज्येष्ठा	बुध
बुध	उ० फा०	सूर्य
गुरु	हस्त	चन्द्रमा
शुक्र	पुष्य	शनि
शनि	भरणी	शुक्र
राहू	पू० भाद्र	गुरु
केतू	पू० फा०	शुक्र



जन्मकुण्डली

परम्परागत ज्योतिष के अनुसार लग्नेश चन्द्र भाग्य भाव में मीन राशि में तथा भाग्येश गुरु तृतीय भाव में उच्च राशिस्थ बुध के साथ है। दोनों परस्पर केतु (समसप्तक) होने से गजकेसरी योग का सृजन हुआ है।

नक्षत्रों के आधार पर देखा जाए तो लग्नेश चन्द्रमा भाग्येश गुरु के नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद में है तथा भाग्येश गुरु लग्नेश चन्द्रमा के हस्त नक्षत्र में है। इस प्रकार लग्न और भाग्य भावों के स्वामियों में राशि परिवर्तन न होते हुए भी नक्षत्र परिवर्तन एवं पारस्परिक दृष्टि से घनिष्ठ शुभ सम्बन्ध स्थापित हो गया है। इससे गजकेसरी योग में उत्कृष्टता आ गई है।

इस जन्मकुण्डली में एक नक्षत्र परिवर्तन योग और भी है। एकादशेश शुक्र, शनि के नक्षत्र पुष्य में लग्न में स्थित है जबकि शनि (अष्टमेश) शुक्र के नक्षत्र भरणी में है। शनि नीच व वक्री होने के कारण उच्च-तुल्य है।

उक्त जातक अत्यन्त भाग्यवान, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, कीर्तिवान, साधन सम्पन्न व तेजस्वी है। भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी है।

लग्नेश व नवमेश में नक्षत्र परिवर्तन होने के कारण अनेक बार विदेश यात्रा कर चुका है। अष्टमेश व एकादशेश के नक्षत्र परिवर्तन ने भी विदेश यात्रा में सहयोग प्रदान किया है।

(VIII) जीव व शरीर पर शुभाशुभ प्रभाव के आधार पर—नक्षत्रों के आधार पर जन्म कुण्डली के भावों का बल एवं शुभता आंकने की एक और विधा है, वह है जीव-शरीर सिद्धान्त (Jeeva-Sareera Theory)।

सर्वप्रथम यह समझने का प्रयास करेंगे कि जीव व शरीर क्या होते हैं।

1. जीव—किसी भाव का स्वामी जिस नक्षत्र में स्थित है उस नक्षत्र का स्वामी (नक्षत्रेश) उस भाव का 'जीव' होता है। जैसे मेष लग्न की जन्म कुण्डली में लग्नेश

मंगल पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित है तो पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु लग्न का 'जीव' हुआ।

2. शरीर—भाव का जीव जिस नक्षत्र में स्थित है, उस नक्षत्र का स्वामी उस भाव का 'शरीर' होता है। उपरोक्त उदाहरण में लग्न का जीव गुरु पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में स्थित है तो पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी शुक्र लग्न का शरीर हुआ।

इस प्रकार जन्म कुण्डली के सभी बारहों भावों के 'जीव' व 'शरीर' ज्ञात कर एक तालिका बना ली जाती है। इसके आधार पर भावों के शुभाशुभ फल का आंकलन किया जाता है।

जीव-शरीर सम्बन्धी फलित सूत्र—(अ) जिस भाव के जीव व शरीर पर अधिकाधिक शुभ प्रभाव (स्थिति, युति, दृष्टि, मध्यत्व आदि द्वारा) होता है उस भाव का फल उतना ही शुभ होता है।

(ब) जिस भाव के जीव व शरीर पर जितना अधिक अशुभ प्रभाव (स्थिति, युति, दृष्टि, मध्यत्व आदि द्वारा) होता है उस भाव का फल उतना ही अशुभ होता है।

(स) जिस प्रकार परम्परागत ज्योतिष में राशि परिवर्तन से तथा नाक्षत्र ज्योतिष में नक्षत्र परिवर्तन के आधार पर शुभाशुभ फलकथन किया जाता है, उसी प्रकार नाक्षत्र ज्योतिष के अन्तर्गत ही 'जीव-शरीर परिवर्तन' भी एक सूक्ष्म विधा है, जिसके आधार पर जन्मकुण्डली की शुभता का स्तर नापा जा सकता है।

विश्व के महान पुरुषों, पुरस्कार विजेताओं, राष्ट्राध्यक्षों एवं विशिष्ट व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों में जीव-शरीर के दो-तीन परिवर्तन मिल जाते हैं। जीव शरीर के जितने अधिक परिवर्तन होंगे जन्मकुण्डली उतनी ही अधिक शुभ एवं शक्तिशाली होगी।

उदाहरण—भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्री मोरारजी देसाई की जन्म कुण्डली के प्रत्येक भाव के जीव-शरीर ज्ञात कर उसके आधार पर जीव-शरीर सिद्धान्त को स्पष्ट किया जा रहा है।

4 गु
2
चं.
3
1
5
रा.
6
12
सू
7
9
11
श.
बु.
के.
8
मं. 10 शु.

स्व० मोरारजी देसाई की जन्मकुण्डली

मोरारजी देसाई की संलग्न जन्मकुण्डली में ग्रहों की नक्षत्रीय स्थिति के आधार पर जीव व भावेश का निर्धारण निम्न तालिका में दिया जा रहा है।

भावानुसार जीव व शरीर

भाव	भावेश	अधिष्ठित नक्षत्र	जीव	जीव द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र	शरीर
प्रथम (लग्न)	बुध	श्रवण	चन्द्र	पू० फाल्गुनी	शुक्र
द्वितीय	चन्द्र	पू० फाल्गुनी	शुक्र	श्रवण	चन्द्र
तृतीय	सूर्य	शतभिषा	राहू	मघा	केतू
चतुर्थ	बुध	श्रवण	चन्द्र	पू० फाल्गुनी	शुक्र
पंचम	शुक्र	श्रवण	चन्द्र	पू० फाल्गुनी	शुक्र
षष्ठ	मंगल	उ० षाढ़	सूर्य	शतभिषा	राहू
सप्तम	गुरु	पुष्य	शनि	विशाखा	गुरु
अष्टम	शनि	विशाखा	गुरु	पुष्य	शनि
नवम	शनि	विशाखा	गुरु	पुष्य	शनि
दशम	गुरु	पुष्य	शनि	विशाखा	गुरु
एकादश	मंगल	उ० षाढ़	सूर्य	शतभिषा	राहू
द्वादश	शुक्र	श्रवण	चन्द्र	पू० फाल्गुनी	शुक्र

विश्लेषण—

(अ) परम्परागत ज्योतिष के अनुसार—

(*i*) भाग्येश शनि, दशमेश व सप्तमेश गुरु तथा लाभेश मंगल उच्च राशिस्थ हैं।

(*ii*) दिन का जन्म है, लग्न, सूर्य और चन्द्र तीनों विषम राशि में हैं, अतः महाभाग्य योग है।

(*iii*) पंचमेश (शुक्र) तथा अष्टमेश-नवमेश (शनि) में राशि परिवर्तन योग है।

(ब) नाक्षत्र ज्योतिष के अनुसार—

(*i*) चन्द्रमा पूर्वा फाल्गुनी में है तथा शुक्र श्रवण में है। दोनों एक-दूसरे के नक्षत्र में हैं। इसके आधार पर द्वितीयेश व पंचमेश का नक्षत्र परिवर्तन हुआ।

(*ii*) शनि विशाखा नक्षत्र में तथा गुरु पुष्य नक्षत्र में है। दोनों एक-दूसरे के नक्षत्र में हैं। इसके आधार पर नवमेश व दशमेश का नक्षत्र परिवर्तन हुआ।

(स) जीव-शरीर परिवर्तन—

(*i*) चन्द्र व शुक्र का जीव शरीर के रूप में परिवर्तन—
द्वितीय एवं लग्न के मध्य, द्वितीय एवं चतुर्थ के मध्य,

द्वितीय एवं पंचम के मध्य, द्वितीय एवं द्वादश के मध्य

= कुल 4 परिवर्तन

(*ii*) गुरु व शनि का जीव शरीर के रूप में परिवर्तन—

सप्तम एवं अष्टम के मध्य, सप्तम एवं नवम के मध्य,

अष्टम एवं दशम के मध्य, नवम एवं दशम के मध्य,

= कुल 4 परिवर्तन

जीव शरीर के परिवर्तन योग से मोरारजी देसाई की जन्मकुण्डली कितनी बलशाली एवं शुभ हो गई, यह इसी वात से स्पष्ट हो जाता है कि वे धनी, उद्यमी, कीर्तिमान, दीर्घायु एवं लोकप्रिय रहे हैं। भारत के उच्च पद को सुशोभित किया है तथा राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। श्री मोरारजी देसाई को 'निशाने पाकिस्तान' उपाधि से भी अलंकृत किया जा चुका है।

इसी प्रकार उच्च स्तर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों का अध्ययन जीव-शरीर सिद्धान्त के आधार पर किया जाए तो इस सिद्धान्त के सटीक होने की पुष्टि हो सकती है।

हमने देखा कि परम्परागत ज्योतिष को नाक्षत्र ज्योतिष से अनुपूरित (Supplement) एवं संवर्द्धित (Enrich) किया जाए तो फलकथन सत्यता के अधिक निकट पहुंच सकता है। नाक्षत्र ज्योतिष कोई नई विधा नहीं है। हमें केवल इसे पुनर्जीवित करना है। ❑❑

नक्षत्र और गोचर

महादशा पद्धति के आधार पर जीवन में ग्रहों के फल का समय जाना जा सकता है। इसी प्रकार वर्ष फल पद्धति एवं प्रश्न विधा से भी सामयिक घटनाओं की जानकारी की जा सकती है। गोचर पद्धति शुभाशुभ फल के समय का अनुमान लगाने की सर्वोत्तम विधि है।

तात्पर्य—गोचर शब्द दो शब्दों से मिलकर वना है। 'गो' आकाश का समानार्थी है तथा 'चर' का अर्थ है 'विचरने वाले'। इस प्रकार गोचर का तात्पर्य है आकाश में विचरने वाले ग्रह-उपग्रह आदि। प्रत्येक ग्रह किसी भी समय आकाश में एक निश्चित कोणात्मक स्थिति पर होता है। परन्तु चलायमान होने से पल-पल पर कोणात्मक स्थिति बदलती रहती है। यह कोणात्मक स्थिति अश्विनी के प्रथम बिन्दु से नापी जाती है।

जन्म समय पर ग्रहों की गोचर स्थिति को जन्म कुण्डली में राश्यंश के आधार पर विभिन्न भावों में दर्शाया जाता है परन्तु जन्म के पश्चात् भी ग्रह तो आकाश में अपनी-अपनी गति के अनुसार चलते ही रहते हैं। चलायमान ग्रह भिन्न-भिन्न कोणात्मक रश्मियों से जातक के जीवन को भी प्रभावित करते रहते हैं। किसी भी समय ग्रहों की कोणात्मक स्थिति (गोचर) ज्ञात कर उसका जातक के जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव जाना जा सकता है।

चन्द्रमा मन है—**'चन्द्रमा मनसो जायतः।'** इसीलिए भारतीय ज्योतिष में चन्द्र राशि व चन्द्र नक्षत्र को महत्वपूर्ण मानते हुए गोचर कुण्डली में चन्द्र-राशि को लग्न माना जाता है। जन्म नक्षत्र से प्रत्येक ग्रह की नक्षत्रीय दूरी के आधार पर ही फलकथन किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक नक्षत्रों से सम्बन्धित है, अतः इस अध्याय में गोचर के उन्हीं सूत्रों की चर्चा करेंगे जो नक्षत्रों पर आधारित हैं।

एक राशि एवं नक्षत्र पर प्रत्येक ग्रह का भ्रमणकाल भिन्न-भिन्न है। प्रत्येक ग्रह की मध्यम गति एवं औसत भ्रमणकाल तो निश्चित है परन्तु वक्री, स्तम्भी, मन्द गति या तीव्र गति होने के कारण गोचर काल न्यूनाधिक हो जाता है तथा अलग-अलग समय ग्रह की गति असमान रहती है।

पंचांगों व एफेमरीज में प्रत्येक ग्रह की एक निश्चित समय पर कोणात्मक स्थिति तथा दैनिक गति दी रहती है। मार्गी अथवा वक्री होने का संदर्भ तथा प्रत्येक नक्षत्र में प्रवेश की तिथि एवं समय भी दिए रहते हैं। नक्षत्र गोचर पूर्णतया निरयन पद्धति पर आधारित है।

नक्षत्र-गोचर—परम्परागत ज्योतिष में चन्द्र लग्न से गोचर में प्रत्येक ग्रह की भावगत स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल का अध्ययन गोचर-ज्योतिष के अन्तर्गत

किया जाता है। परन्तु जन्म नक्षत्र से गिनने पर जिस नक्षत्र में ग्रह गोचर वश है उसके आधार पर शुभाशुभ फलकथन को नाक्षत्र-गोचर ज्योतिष कहा जाता है। ग्रहों के गोचर का सूक्ष्म फल जानने के लिए नाक्षत्र-गोचर पद्धति सर्वोत्तम है।

प्रत्येक ग्रह जन्म नक्षत्र से गिनने पर कुछ नक्षत्रों में शुभ फल देते हैं तो कुछ नक्षत्रों में अशुभ फल। इस शुभाशुभ फल को आंकने के लिए प्रयोग में ली जाने वाली निम्न विधाएं उल्लेखनीय हैं।

1. जन्म नक्षत्र से शुभाशुभ तारे में ग्रह की गोचर स्थिति के अनुसार।
2. जन्म नक्षत्र से ग्रह के अंग-भ्रमण के अनुसार।
3. सूर्य संक्रांति के आधार पर नक्षत्रानुसार।
4. पुरोलता एवं पृष्ठलता के अनुसार।
5. नक्षत्र वेध के अनुसार।
6. बाधक नक्षत्रानुसार।
7. कृष्णमूर्ति पद्धति और गोचर।

उपरोक्त विधाओं पर संक्षेप में चर्चा करेंगे।

1. शुभाशुभ तारे (नक्षत्र) में गोचरानुसार ग्रहों का फल—*नक्षत्र वर्गीकरण* अध्याय में बताया गया है कि जन्म नक्षत्र से गिनने पर तृतीय (विपत्), पंचम (प्रत्यरि) तथा सप्तम (वध) नक्षत्र जातक के लिए अशुभ होते हैं। गोचर पद्धति में जन्म नक्षत्र भी अशुभ माना जाता है। नक्षत्रों की तीन आवृत्तियों के आधार पर तीन जन्म नक्षत्र (1, 10, 19) तीन विपत् नक्षत्र (3, 12, 21), तीन प्रत्यरि नक्षत्र (5, 14, 23) तथा तीन वध नक्षत्र (7, 16, 23) अशुभ नक्षत्र माने जाते हैं। इस प्रकार जन्म नक्षत्र से 1, 3, 5, 7, 10, 12, 14, 16, 19, 21, 23 व 25वें नक्षत्र पर गोचरवश जब ग्रह आते हैं तो वे अशुभ फल देते हैं। शेष नक्षत्रों में शुभ फल देते हैं।

फल का प्रकार—1. विपत्, प्रत्यरि (शत्रु) तथा वध (निधन) तारे अपने नामों के अनुरूप फल देते हैं। इनमें उत्तरोत्तर शुभाशुभ फल में वृद्धि होती है अर्थात् सम्पत (2) से क्षेम (4), क्षेम से साधक (6) तथा साधक से मैत्र (8) व अतिमैत्र (9) उत्तरोत्तर शुभ होते हैं। इसी प्रकार विपत् (3) से प्रत्यरि (5) तथा प्रत्यरि से वध (7) उत्तरोत्तर अशुभ होते हैं। जन्म तारा (जन्म 1, अनुजन्म 10 व त्रिजन्म 19) भी गोचर में अशुभ माने जाते हैं।

तारे के अनुसार शुभ या अशुभ फल किस विषय से सम्बन्धित होगा, इस पर निम्न का प्रभाव पड़ता है।

(अ) स्वयं गोचरस्थ ग्रह—गोचरस्थ ग्रह अपने कारकत्व, अपने भावों (जिनका कि वह स्वामी है) तथा जिस भाव में वह स्थित है, से सम्बन्धित विषयों का शुभाशुभ फल देता है।

(ब) गोचरस्थ नक्षत्र का स्वामी—जिस नक्षत्र में ग्रह गोचरवश भ्रमणरत है

उसके स्वामी के कारकत्व एवं भावों सम्बन्धी विषयों का फल प्राप्त होगा।

(स) जन्म नक्षत्र का स्वामी—जातक के जन्म नक्षत्र एवं नक्षत्रेश से सम्बन्धित फल भी प्राप्त होंगे।

किसी भी नाक्षत्र-गोचर काल में तारे के अनुसार गोचरस्थ ग्रह, गोचरस्थ नक्षत्र के स्वामी तथा जन्म नक्षत्र के स्वामियों से सम्बन्धित शुभाशुभ फल जातक को प्राप्त होंगे।

उदाहरण 1.—गुरु 6 फरवरी 97 से 13 अप्रैल 97 तक तथा पुनः 8 अगस्त 97 से 4 दिसम्बर 97 तक श्रवण नक्षत्र (मकर राशि) में भ्रमणरत रहेगा।

मान लीजिए किसी जातक का जन्म नक्षत्र मृगशिर (वृषभ) है। मृगशिर नक्षत्र वाले जातक के लिए श्रवण नवां (अतिमैत्र) तारा है। अतः गुरु का फल शुभ होगा। मृगशिर नक्षत्र का स्वामी मंगल तथा श्रवण नक्षत्र का स्वामी चन्द्रमा है। अतः इस अवधि में जातक को गुरु जो शुभ फल देगा उसको मंगल व चन्द्रमा भी प्रभावित करेंगे। इस अवधि में जातक को उच्चस्तरीय व्यक्तियों से संरक्षण, अग्रजों से लाभ, भ्राता से सहयोग, संतान प्राप्ति, सफलता, पदोन्नति, सट्टा-लाटरी से लाभ तथा जलीय पदार्थों से लाभ आदि फल प्राप्त होंगे।

उदाहरण 2.—गुरु 13 अप्रैल 97 से 8 अगस्त 97 तक तथा पुनः 4 दिसम्बर 97 से 7 जनवरी 98 तक धनिष्ठा नक्षत्र में गोचरवश भ्रमणरत रहेगा।

मान लीजिए किसी जातक का जन्म नक्षत्र कृतिका (मेष) है। कृतिका से गिनने पर धनिष्ठा 21वां नक्षत्र है। 21 ÷ 9 शेष 3 अर्थात् विपत् तारे की श्रेणी में आता है। अतः धनिष्ठा नक्षत्र में गोचरस्थ गुरु, कृतिका नक्षत्र के जातक को अशुभ फल देगा।

कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य तथा धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। गुरु फल देने वाला ग्रह है।

इस अवधि में जातक को दुर्घटना या शस्त्र द्वारा चोट लगने से रक्तस्त्राव का खतरा होगा। किसी तरल ज्वलनशील पदार्थ या अग्नि से जलने का भय रहेगा। राज्य पक्ष से पदावनति या वेतन वृद्धि रुकने का दण्ड प्राप्त हो सकता है। भ्राता से अनबन हो सकती है। अत्यधिक व्यय होगा तथा मानसिक अशान्ति रहेगी।

2. जन्म नक्षत्र से ग्रहों का गोचरानुसार अंग भ्रमण का फल—(काल पुरुष अंग विधि)—इस विधा में जन्मकालीन चन्द्र नक्षत्र से गोचरस्थ नक्षत्र तक गिनने पर प्रत्येक ग्रह को काल पुरुष के विभिन्न अंगों में भ्रमणरत मानकर उनका शुभाशुभ फलकथन किया जाता है। नक्षत्र संख्या गिनते समय जन्म नक्षत्र व गोचर नक्षत्र दोनों को गिनना चाहिए। जैसे जन्म नक्षत्र भरणी है और सूर्य हस्त में है तो सूर्य जन्म नक्षत्र से 12वें नक्षत्र में है।

उपरोक्त नक्षत्र संख्या के आधार पर प्रत्येक ग्रह का अंग भ्रमण तथा फल

संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है।

गोचरस्थ सूर्य का अंगानुसार फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र	काल पुरुष अंग भ्रमण	फल
1 (जन्म नक्षत्र)	चेहरा	हानि (नाश)
2, 3, 4, 5	सिर	वैभव एवं धन लाभ
6, 7, 8, 9	छाती	विजय एवं सफलता
10, 11, 12, 13	दायां बाजू	लाभ
14, 15, 16, 17, 18, 19	दोनों पैर	विपन्नता (आर्थिक हानि)
20, 21, 22, 23	बायां बाजू	शारीरिक पीड़ा
24, 25	दोनों नेत्र	आर्थिक लाभ
26, 27	गुप्तांग	मृत्युभय (कष्ट)

गोचरस्थ चन्द्र का अंगानुसार फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र	काल पुरुष अंग भ्रमण	फल
1, 2	चेहरा	भय
3, 4, 5, 6	सिर	कुशल क्षेम
7, 8	पीठ	विरोधियों पर विजय
9, 10	दोनों नेत्र	धन लाभ
11, 12, 13, 14, 15	हृदय	सुख एवं प्रसन्नता
16, 17, 18	बायां हाथ	वाद-विवाद एवं झगड़ा
19 से 24	दोनों पैर	यात्रा
25, 26, 27	दायां हाथ	धन लाभ (आर्थिक सम्पन्नता)

गोचरस्थ मंगल का अंगानुसार फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र	काल पुरुष अंग भ्रमण	फल
1, 2	चेहरा	मृत्यु तुल्य कष्ट
3 से 8	दोनों पैर	वाद-विवाद एवं झगड़ा
9, 10, 11	गोद	सफलता एवं विजय
12, 13, 14, 15	बायां हाथ	निर्धनता (धन हानि)
16, 17	सिर	धनलाभ
18 से 21	चेहरा	भय
22 से 25	दायां हाथ	कुशल क्षेम
26, 27	नेत्र	विदेश गमन

गोचरस्थ बुध, गुरु व शुक्र का अंगानुसार फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र	काल पुरुष अंग भ्रमण	फल
1, 2, 3	सिर	कष्ट, शोक
4, 5, 6	चेहरा व गर्दन	आर्थिक लाभ
7, 8, 9	दायां हाथ	शुभ
10, 11, 12	बायां हाथ	मानसिक चिन्ता
13 से 17	कुक्षि (कोख) या उदर	धनलाभ
18, 19	नितम्ब व गुप्तांग	कष्ट (नाश)
20 से 27	दोनों पैर	लाभ, सम्मान वृद्धि

गोचरस्थ शनि, राहू व केतू का अंगानुसार फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र	काल पुरुष अंग भ्रमण	फल
1 (जन्म)	चेहरा	कष्ट, दुःख
2, 3, 4, 5	दायां हाथ	सुख
6, 7, 8	दायां पैर	यात्रा
9, 10, 11	बायां हाथ	नाश (हानि)
12, 13, 14, 15	बायां पैर	धनलाभ
16 से 20	कुक्षि (कोख) या उदर	भोग, एश्वर्य
21, 22, 23	सिर	सुख
24, 25	नेत्र	सुख
26, 27	पीठ	मृत्यु तुल्य कष्ट

उदाहरण—गुरु 6 फरवरी 97 से 13 अप्रैल 97 तक तथा पुनः 8 अगस्त 97 से 4 दिसम्बर 97 तक श्रवण नक्षत्र में रहेगा। श्रवण नक्षत्र, श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातकों के लिए पहला, उत्तराषाढ़ नक्षत्र वाले जातकों के लिए दूसरा तथा पूर्वाषाढ़ में उत्पन्न जातकों के लिए तीसरा होगा। इन जातकों के लिए गुरु सिर में भ्रमणरत माना जाएगा। सिर में भ्रमणरत गुरु कष्ट एवं हानि देगा।

3. सूर्य संक्रांति के आधार पर नक्षत्र गोचर का फल—जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो उसे सूर्य संक्रांति कहते हैं। जिस समय सूर्य संक्रांति हो उस समय चन्द्रमा का नक्षत्र ज्ञात करें तथा इसके आधार पर चन्द्रमा का गत नक्षत्र ज्ञात कर लें। इस गत नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक (दोनों नक्षत्रों सहित) गिनें। जो संख्या प्राप्त हो उसके आधार पर एक माह (संक्रांति से संक्रांति तक) निम्नानुसार फल होता है।

गत नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक संख्या	फल
1, 2, 3	यात्रा, परदेश गमन
4 से 9	भोग एवं ऐश्वर्य
10, 11, 12	कष्ट
13 से 18	नवीन वस्त्रादि की प्राप्ति
19, 20, 21	हानि
22 से 27	धनागम

उदाहरण—मान लीजिए किसी जातक का जन्म नक्षत्र पुष्य है। 14 मई 1997 को रात्रि 7 बजकर 46 मिनट पर सूर्य मेष से वृष राशि में प्रवेश कर गया। 14 मई को सांय 4 बजकर 41 मिनट पर मघा नक्षत्र में चन्द्रमा ने प्रवेश किया। अर्थात् संक्रांति के समय चन्द्रमा मघा नक्षत्र में था। इससे गत नक्षत्र आश्लेषा हुआ। अब आश्लेषा से जन्म नक्षत्र (पुष्य) तक गिना तो संख्या 27 आई। इसके अनुसार जातक को धन लाभ होगा।

4. लता (पुरोलता एवं पृष्ठलता) के अनुसार फल—

(*i*) **पुरोलता**—जिस दिन का गोचर फल ज्ञात करना हो उस दिन एवं समय पर सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे (सव्य क्रम में) बारहवां नक्षत्र, मंगल के गोचर नक्षत्र से तीसरा नक्षत्र, गुरु के गोचर नक्षत्र से छठा नक्षत्र तथा शनि के गोचर नक्षत्र से आठवां नक्षत्र—ये सब नक्षत्र पुरोलता से दूषित होते हैं।

मान लीजिए सूर्य रोहिणी नक्षत्र में हो तो रोहिणी से बारहवें (स्वाति) नक्षत्र पर पुरोलता होगी।

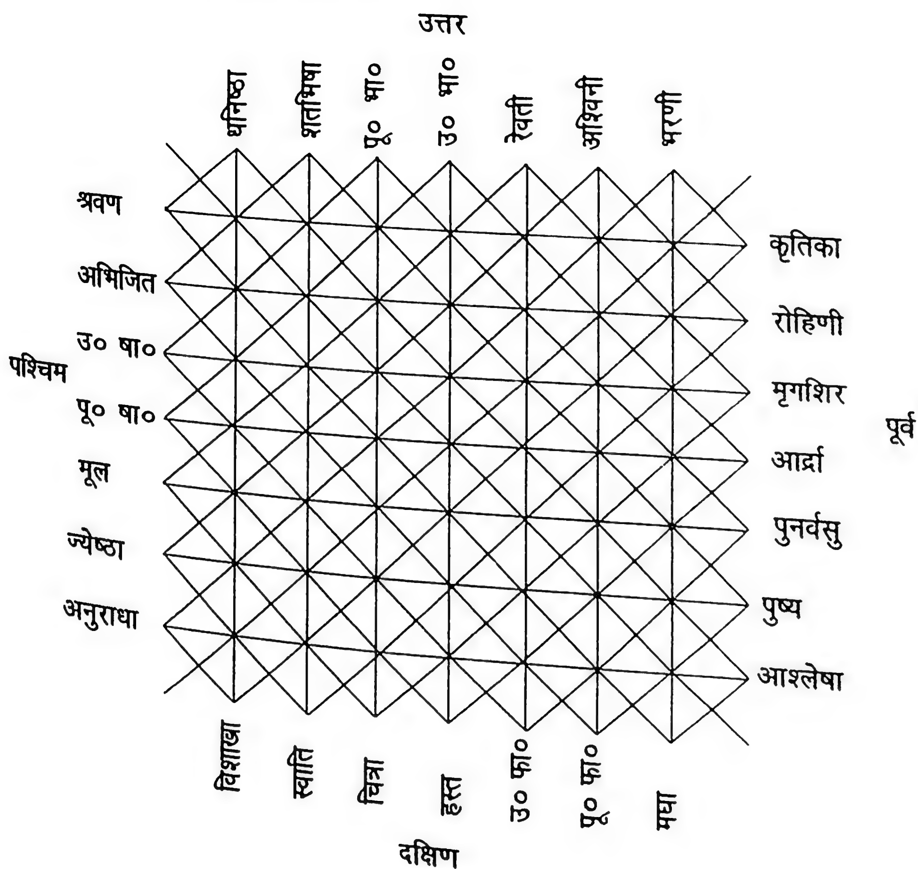
(*ii*) **पृष्ठलता**—शुक्र, बुध, चन्द्रमा व राहू के लिए गिनती विपरीत (अपसव्य) क्रम में की जाती है। शुक्र के गोचर नक्षत्र से विपरीत क्रम में पांचवां नक्षत्र, बुध के गोचर नक्षत्र से सातवां नक्षत्र, चन्द्र गोचर नक्षत्र से बाईसवां नक्षत्र तथा राहू के गोचर नक्षत्र से नवां नक्षत्र—ये सब नक्षत्र पृष्ठलता से दूषित होते हैं। जैसे बुध चित्रा नक्षत्र में है तो चित्रा से विपरीत गिनने पर सातवें अर्थात् पुष्य नक्षत्र पर पृष्ठलता होगी।

यदि किसी भी ग्रह के गोचरस्थ नक्षत्र से पुरोलता या पृष्ठलता जन्म नक्षत्र पर पड़े तो अशुभ फल होता है। विवाह लग्न साधन में भी लता दोष एक बलवान दोष माना जाता है। अर्थात् लता से दूषित नक्षत्रों को विवाह हेतु वर्जित माना जाता है।

सूर्य की लता जन्म नक्षत्र पर पड़े तो अनेक प्रकार की हानि होती है। मंगल की लता से मृत्यु भय होता है, बुध की लता कष्टदायक होती है, गुरु की लता बन्धु नाशक होती है, शुक्र की लता दुखदायक, शनि की लता कुल नाशक तथा

राहू का लता हानिकारक होती है।

यदि किसी भी समय जन्म नक्षत्र पर एक ग्रह की लता पड़े तो साधारण अशुभ फल होता है परन्तु एक साथ तीन-चार ग्रहों की लता (लात) जन्म नक्षत्र पर पड़े तो अधिक कष्ट होता है।



नक्षत्र वेध चक्र

5. नक्षत्र वेध के अनुसार फल—गोचर पद्धति की एक विधा नक्षत्र वेध भी है। किस नक्षत्र का किस नक्षत्र से वेध होता है, इसके लिए संलग्न रेखाचित्र बनाकर अपने पास रखें। इस रेखाचित्र में उत्तरी पूर्वी कोने में कृतिका नक्षत्र से प्रारम्भ कर अभिजित नक्षत्र सहित 28 नक्षत्र घड़ी के चालन की दिशा में ऐसे बिन्दुओं पर लिखे जाते हैं जहां से तीन-तीन रेखाएं दूसरे तीन नक्षत्रों को मिलाती हैं। जैसे अनुराधा नक्षत्र से एक रेखा भरणी को, एक रेखा आश्लेषा को तथा तीसरी रेखा विशाखा को मिलाती है।

इस प्रकार एक नक्षत्र का तीन नक्षत्रों से रेखाओं द्वारा सम्बन्ध होने का तात्पर्य यह है कि उस नक्षत्र में स्थित ग्रह का वेध उन तीन नक्षत्रों तथा उनमें स्थित ग्रहों से होता है।

मान लीजिए सूर्य अनुराधा नक्षत्र में है तो सूर्य का वेध भरणी, आश्लेषा तथा विशाखा से होगा। यदि भरणी में मंगल है तो सूर्य का वेध मंगल से भी होगा।

यदि सूर्य जिस नक्षत्र में गोचर वश है उसका वेध जन्म नक्षत्र से हो तो मृत्युभय होता है। यदि दसवें (अनुजन्म) नक्षत्र से हो तो धन नाश तथा उन्नीसवें (त्रिजन्म) नक्षत्र में हो तो चिन्ता होती है। यदि सूर्य के साथ अन्य क्रूर/पाप ग्रह भी उसी नक्षत्र में हों तो परिणाम अधिक अनिष्टकारी होता है।

यदि क्रूर एवं पाप ग्रहों का वेध जिन नक्षत्रों से हो, वे जन्म नक्षत्र से तीसरे, पांचवें या सातवें नक्षत्र हों तो मृत्युभय होता है। यदि इन नक्षत्रों से शुभ ग्रहों का वेध भी हो रहा हो तो सामान्य हानि होती है।

6. बाधक नक्षत्रानुसार फल—बाधक स्थानाधिपति एवं बाधक भाव में स्थित ग्रहों के नक्षत्रों में गोचरवश आए ग्रह अशुभ फलदायक होते हैं। बाधक स्थान तथा बाधक ग्रहों के विषय में पिछले अध्याय में बताया जा चुका है।

7. कृष्णमूर्ति पद्धति और गोचर—कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार ग्रह जिस नक्षत्र में स्थित होता है वह उस नक्षत्र के स्वामी का प्रतिनिधि बन जाता है तथा उस नक्षत्रेश द्वारा अधिष्ठित एवं आधिपत्य वाले भावों का फल देता है। नक्षत्रेश स्वयं भी जिस भाव में स्थित होता है उसके साथ-साथ उन भावों का फल भी देता है जिनका कि वह अधिपति है।

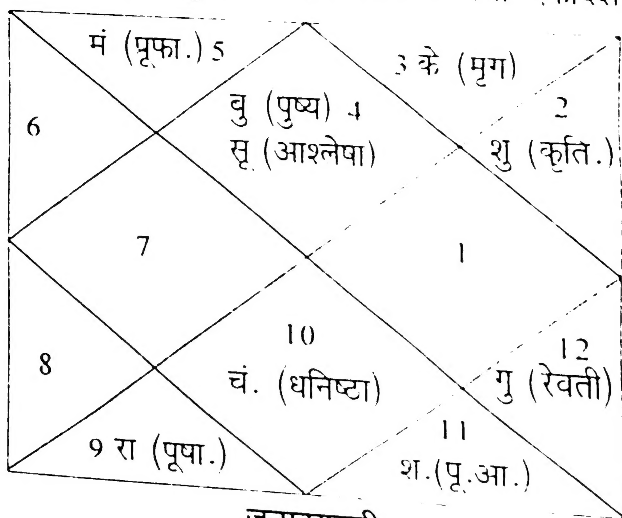
इस प्रकार एक ग्रह सीधा भी अपने भावों का फल देता है तो अपने नक्षत्र में स्थित ग्रह/ग्रहों के माध्यम से भी। जो ग्रह जिस-जिस भाव का फल देने में सक्षम होता है, वह उन भावों का कारक (Significator) कहलाता है। उपरोक्त विवेचन के आधार पर प्रत्येक ग्रह दोहरी भूमिका निभाता है। अपने भावों का कारक बनकर तथा नक्षत्र स्थिति के अनुसार दूसरे ग्रह के भावों का कारक बनकर। इस प्रकार एक ही ग्रह अनेक भावों का कारक (फलदाता) बन सकता है तो एक ही भाव के अनेक ग्रह कारक हो सकते हैं।

के० पी० के अनुसार ये कारक अपनी दशा में सम्बन्धित भावों का फल देते हैं तथा इनके फल की शुभाशुभता भुक्तिनाथ (उपस्वामी) की शुभाशुभता पर निर्भर करती है।

कृष्णमूर्ति पद्धति में उपरोक्त सिद्धान्त को गोचर पद्धति में भी अपनाया गया है। के० पी० के अनुसार एक कारक के नक्षत्रीय कोणात्मक क्षेत्र में कोई भी ग्रह गोचर में आता है तो वह अपने कारकत्व के माध्यम से कारक के भावों का फल देता है। परन्तु फल शुभ होगा या नहीं इसके लिए उप (भुक्तिनाथ) उत्तरदायी है। अर्थात् नक्षत्र मान तो 13°20' होता है। उसमें फल की शुभाशुभता इस बात पर निर्भर करेगी कि उपस्वामी शुभ है या अशुभ।

उदाहरण—प्रस्तुत कुण्डली में मंगल निम्न भावों का कारक है।

1. एकादश व चतुर्थ भावों का कारक है क्योंकि मंगल पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में है, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी शुक्र चतुर्थेश व एकादशेश है तथा एकादश में ही स्थित है।



जन्मकुण्डली

2. द्वितीय भाव का कारक है क्योंकि मंगल स्वयं द्वितीय भाव में स्थित है।

3. पंचम व दशम भावों का कारक है क्योंकि वह इन भावों का स्वामी है।

इसी प्रकार शुक्र कृतिका नक्षत्र में होने के कारण सूर्य के द्वितीय व लग्न भावों का कारक है। सूर्य द्वितीयेश है तथा लग्न में स्थित है। शुक्र चतुर्थेश व एकादशेश होकर एकादश में स्थित होने से चतुर्थ व एकादश का कारक है ही।

अब मान लीजिए शुक्र मंगल के नक्षत्रों (मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा) में होकर गोचरवश गुजरे तो वह द्वितीय, चतुर्थ व एकादश भावों का फल देगा।

पारिवारिक प्रसन्नता, स्थायी सम्पत्ति, जनता में सम्मान, लाभ व इच्छापूर्ति आदि फल देगा। फल की प्रकृति निम्नानुसार होगी।

नक्षत्र का कोणात्मक मान तो 13°20' है जो 9 उप में बांटा गया है। इनमें कुछ उप शुभ हैं तो कुछ अशुभ। यदि शुक्र उपरोक्त नक्षत्रों के शुभ उप से गुजरेगा तो शुभ फल होगा परन्तु इसके विपरीत अशुभ उप में से गुजरने पर अशुभ फल होगा।

जैसे—(*i*) शुक्र जब मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा (क्रमशः वृष, कन्या या मकर राशि में) 23°20' से 26°6'40" (मंगल के ही उप) में होकर गुजरेगा तो अत्यन्त शुभ फल प्राप्त होंगे क्योंकि स्वयं मंगल पंचमेश व दशमेश होने से शुभ है।

(*ii*) शुक्र जब मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा (क्रमशः मिथुन, तुला या कुम्भ राशि में) 0°0' से 1°53'20" (बुध के उप) के मध्य होकर गुजरेगा तो शुभ फल नहीं दे पाएगा क्योंकि बुध तृतीयेश व द्वादशेश होने से अशुभ उपस्वामी है।

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह गोचर में कारकत्व के अनुसार अपने भावों का शुभाशुभ फल उपस्वामी के आधार पर देता है।

निष्कर्ष—1. एक ग्रह गोचर की उपरोक्त विधाओं में से यदि सभी या अधिकांश

विधाओं के अनुसार अशुभ फलदायक निकले तो वह ग्रह समग्र रूप से अशुभ फलदायक सिद्ध होगा।

2. यदि उपरोक्त विधाओं में से ग्रह की शुभाशुभता बराबर निकले तो मिलाजुला प्रभाव होता है।

3. जातक के जीवन में अकेले एक ग्रह का ही प्रभाव नहीं पड़ता वरन् अन्य ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है, अतः सभी ग्रहों के फल को ध्यान में रखकर ही फलकथन आवश्यक है।

4. यहां एक बात और स्पष्ट करना आवश्यक है। गोचर फल के सूत्र राशि एवं भावों के आधार पर भी हैं। उनका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

जैसे गुरु चन्द्र राशि से 2, 5, 7, 9 व 11वें भावों में शुभ फल देता है। एक जातक का जन्म पूर्वाषाढ़ (धनु राशि) में है। धनु राशि वाले जातक के लिए मकर राशिस्थ गुरु द्वितीय होने से शुभ है परन्तु मकर राशि में तीन नक्षत्र हैं—उत्तराषाढ़, श्रवण व धनिष्ठा। पूर्वाषाढ़ के लिए उत्तराषाढ़ द्वितीय (सम्पत), श्रवण तृतीय (विपत्) तथा धनिष्ठा चतुर्थ (क्षेम) तारे हैं। अतः पूर्वाषाढ़ नक्षत्र वाले जातक के लिए पूरा मकर राशिस्थ गुरु शुभ नहीं हो सकता। केवल उत्तराषाढ़ व धनिष्ठा में गोचरस्थ गुरु शुभ होगा परन्तु श्रवण नक्षत्र में गोचरस्थ गुरु की अवधि अपेक्षाकृत अशुभ रहेगी।

अतः गोचर फलकथन करते समय राशि (भाव), नक्षत्रों तथा महादशा एवं अन्तर्दशा के अनुसार समेकित प्रभाव का ध्यान रखना आवश्यक है।





नाक्षत्र ज्योतिष

(कृष्णमूर्ति पद्धति सहित)

ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारतीय ज्योतिष द्वारा राशियों को अंगीकृत करने के पश्चात धीरे-धीरे राशियों ने फलकथन के क्षेत्र में नक्षत्रों का स्थान ले लिया। तब से हम नक्षत्रों के आधार पर फलकथन की विधा को भूल से गए हैं।

गणित एवं फलित ज्योतिष के साथ-साथ खगोल शास्त्र के ज्ञाता एवं अनेक ज्योतिष ग्रन्थों के रचयिता श्री रघुनन्दन प्रसाद गौड़ ने इस ग्रन्थ में न केवल मानचित्रों-रेखाचित्रों द्वारा आकाश में नक्षत्रों की स्थिति, आकृति एवं पहचान प्रस्तुत की है वरन् अपनी सशक्त लेखनी द्वारा नक्षत्राधारित फलकथन की बारीकियों को भी उजागर किया है।

आशा है नाक्षत्र ज्योतिष पर लिखा यह अद्वितीय ग्रन्थ फलकथन में नक्षत्रें की महती भूमिका को पुनर्स्थापित करने में सक्षम होगा।

मनोज
पॉकेट
बुक्स